प्रकाशक :—

शांतिलाल वी. शेठ,

गुरुकुल प्रिंटिंग प्रेस. ब्यावर।

प्रथमावृत्ति १०००	मूल्य ५) रुपया पांच रुपया	वीर सम्वत् २४७९ वि० संवत् २०१०

मुद्रक :—

जालमसिंह मेड़तवाल,

गुरुकुल प्रिंटिंग प्रेस, ब्यावर.

|| अर्हन् ||

— अपनी बात —

—:०:—

मानव जाति के ज्ञान विकास के आन्तरिक साधनों में जिज्ञासा-वृत्ति प्रधान है। अब तक मनुष्य ने जो कुछ भी पाया है वह जिज्ञासा के सहारे ही।

जिज्ञासा मानव का एक सहज गुण है, अज्ञ या विज्ञ सभी में जिज्ञासा रहती है।

जिज्ञासावृत्ति की प्रेरणा से अर्थात् जानने की इच्छा से ही मनुष्य देश-विदेश पर्यटन, दृश्य-दर्शन, भाषण-श्रवण, अन्वेषण, अध्ययनादि कार्यों में प्रवृत्ति करता है।

अतीतकाल में इन कार्यों में, लगे हुए या इस समय लग रहे धन के तथा समय के सही आंकड़े किसी गणित-विशेषज्ञ द्वारा एकत्रित होकर आपके सामने आवें तो आपको आश्चर्य होगा और पता चलेगा कि मानवजीवन में जिज्ञासा का स्थान कितना महत्त्वपूर्ण है ?

जिज्ञासुओं का वर्गीकरण नन्दीसूत्र में इस प्रकार उपलब्ध होता है:—

जाणिया १ अजाणिया २ दुव्वियड्ढा ३

जाणिया – समझदार

अजाणिया – नासमझ

और दुव्वियड्ढा – (दुर्विदग्ध) न कुछ जानते हुए भी सब कुछ समझने का दावा करने वाले।

किन्तु जिज्ञासु की उत्तमता और अधमता उसकी जिज्ञासा की पृष्ठभूमि में रही हुई मनोवृत्ति पर आश्रित है।

जो व्यक्ति "देखकर, सुनकर या पढ़कर स्व-पर के आत्मकल्याण के लिए क्या हेय है और क्या उपादेय है ?" सदा ऐसी जिज्ञासा करता है

वह उत्तम जिज्ञासु कहा गया है और जो ऐसी जिज्ञासा नहीं करता, जिसकी जिज्ञासा कोरे कुतूहल से प्रेरित होती है और क्षणिक मनोरंजन में ही परिसमाप्त हो जाती है उसे मध्यम या अधम जिज्ञासु कहा जा सकता है।

इसी सिद्धान्त का सहारा लेकर प्रत्येक व्यक्ति अपने…जीवन का पर्यवेक्षण करके "स्वयं कैसा जिज्ञासु है" यह निर्णय कर सकता है।

जैन दर्शन आध्यात्मिक दर्शन है। जैनों का सारा…आगम-साहित्य हेय, ज्ञेय और उपादेय के वर्णन वाली मूलभित्ति पर स्थित है।

अतएव उत्तम जिज्ञासुओं के लिए जैनागमों का स्वाध्याय करना आत्मज्ञान की प्राप्ति में अद्वितीय सहायक सिद्ध हुआ है।

स्वाध्याय जैन साधुओं के जीवन का प्रमुख अंग है। वह जैन-शास्त्रों में उत्तम कोटि का तप माना गया है। चित्त की स्थिरता के लिए तो स्वाध्याय से बढ़कर और कोई अनुष्ठान ही नहीं है। स्वाध्याय ज्ञाना-वरण के क्षय के लिए अमोघ अस्त्र है। यही कारण है कि—जैन श्रमण समाचारी में केवल स्वाध्याय-ध्यान के लिए ही आठ पहर में से चार प्रहर नियत किए गए हैं।

प्रतिदिन नियत काल तक स्वाध्याय करके श्रुत का पारायण करने की परिपाटी भी प्राचीन काल में जैन श्रमणों की अवश्य रही होगी। जैनागमों में उपलब्ध कतिपय* पंक्तियों से ऐसा अनुमान होता है।

---

*पन्नत्तीए आइमाणं अट्ठण्हं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति, णवरं चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ, बिइयदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति, नवमाओ सयाओ आरद्धं जावइयं जावइयं एइ तावइयं तावइयं एगदिव-सेणं उद्दिसिज्जइ।

उक्कोसेणं सयंपि एगदिवसेणं, मज्झिमेणं दोहिं दिवसेहिं सयं, जहन्नेणं तिहिं दिवसेहिं सयं एवं…जाव वीसइमं सयं, णवरं गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ जइठिओ एगेण चेव……आयंबिलेण अणुण्ण-विज्जइ; अह ण ठिओ आयंबिलेणं छट्ठेणं अणुण्णवइ,
एकावीस–बावीस–तेवीस इमाइं सयाइं एक्केक्क दिवसेणं उद्दिसिज्जंति चउवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा,

किन्तु वर्तमान में चार प्रहर तक आगम-साहित्य का स्वाध्याय करने वाले जैन श्रमण कितने हैं ?

सारे आगमों का पारायण करने की परिपाटी भी आज कहाँ है ? प्रातः सायं "इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं" का पाठ करने वालों की आगम-स्वाध्याय के प्रति उमंग भी आज पहले जैसी कहां है ?

यद्यपि आज भी श्रमणसंघ की आगमों के प्रति श्रद्धा-भक्ति यथावत् है फिर भी उनकी स्वाध्याय की ओर इतनी अरुचि क्यों ?

मेरे खयाल से आगम-स्वाध्याय के प्रति अरुचि होने में निम्न लिखित कारणों का प्राधान्य है।

पंचवीसइमं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा,
बंधिसयाइ अट्ठसयाइं एगेणं दिवसेणं
सेढिसयाइं बारस एगेणं
एगिंदिय महाजुम्म सयाइं बारस एगेणं ...
एवं बेइंदियाण बारस, तेइंदियाण बारस, चउरिंदियाण बारस, एगेणं—
असन्निपंचेंदियाण बारस, सन्निपंचिंदिय महाजुम्म सयाइं एक्कवीसं एग-
दिवसेणं उद्दिसिज्जंति।
रासीजुम्मसयं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ।

+ + + +

उवासगदसाणं सत्तमस्स अंगस्स एगो सुयखंधो दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, तओ ...... सुयखंधो समुद्दिसिज्जइ दोसु दिवसेसु।

+ + + +

अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयखंध अट्ठ वग्गा अट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति।

+ + + +

अणुत्तरोववाइयदसाणं एगो सुयखंधो, तिण्णि वग्गा तिसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति।

+ + + +

पण्हावागरणेणं एगो सुयखंधो, दस अज्झयणा, एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति। एगंतरेसु आयंबिलेसु निरुद्धेसु आउत्त-भत्तपाणएणं।

१ अव्यवस्थित शिक्षण—

वर्तमान में नवदीक्षित श्रमण के लिए जिन प्रचलित-पद्धतियों से शिक्षण दिया जारहा है, उनसे युगानुकूल विशिष्टज्ञान प्राप्त नहीं होता।

क आजकल श्रमणों में सर्व प्रथम संस्कृत भाषा का अध्ययन करने की पद्धति अधिक प्रचलित है। संस्कृत का अध्ययन कराने के लिये प्रायः अजैन अध्यापक बुलाये जाते हैं। उन्हें जैन श्रमण जीवन से प्रायः घृणा सी होती है।

दूसरी बात यह है कि-वे श्रमणचर्या और जैन सिद्धान्तों के मर्म से अनभिज्ञ होते हैं।

यदि किसी विद्वान को जैन सिद्धांतों की सामान्य जानकारी हुई भी तो उस जानकारी का जैन सिद्धान्तों के प्रति अरुचि के कारण हितकर परिणाम नहीं निकलता।

प्रायः नवदीक्षित श्रमण ही पंडितों से पढ़ते हैं, नव दीक्षितों का पहला स्व अध्ययन केवल प्रतिक्रमण या २-४ थोकड़ों से अधिक नहीं होता, अतएव दृढ़ श्रद्धा के अभाव में उनके कोमल हृदय पर श्रमण संस्कृति से विपरीत विचारों का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

संस्कृत का अध्ययन कठिन होने से सामान्य ज्ञान प्राप्त करने में और कुछ काव्यों के पढ़ने में ही ४-५ वर्ष पूरे होजाते हैं। बाद में श्रमणों के वयस्क होजाने पर तथा आवश्यकता पड़ने पर संस्कृत टीकाओं से आगमों का अर्थ समझ सकने की धारणा बन जाने से उनका मूल आगमों के स्वाध्याय के लिए उत्साहपूर्ण प्रयत्न नहीं होता।

दुह-विवागे दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, एवं सुहविवागे-वि।

निरयावलि उवंगेणं एगो सुयखंधो पंचवग्गा पंचसु दिवसेसु उद्दिसिज्जंति।

नोट- आचाराङ्ग आदि बहुत से सूत्रों के अन्त में ऐसे पाठ क्यों नहीं है यह विचारणीय है।

ख. जब से स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित हुई है, तब से श्रमण भी हिन्दी का अध्ययन करने की ओर विशेषरूप से आकृष्ट हुए हैं, वे प्रभाकर, विशारद, एवं रत्न आदि परीक्षाएं भी देते हैं और इन परीक्षाओं के पाठ्य ग्रंथों का अध्ययन करने में ही उनके ४-५ वर्ष पूरे होजाते हैं। इस प्रकार सामान्य रूप से हिन्दी का अच्छा ज्ञान हो जाने पर भी संस्कृत, प्राकृत के पर्याप्त ज्ञान से वंचित रह जाते हैं और इस कारण आगम का स्वाध्याय करना उन्हें कठिन प्रतीत होता है।

ग. आजकल जैन श्रमणों में तीसरी यह भी पद्धति देखी जाती है कि दो चार अधिक प्रचलित आगम पढ़ लिए जाते हैं, कुछ थोकड़े याद करलिये जाते हैं और शेष आगमों के प्रति उदासीनता प्रदर्शित की जाती है।

किन्तु इतने मात्र से भाषा ज्ञान के अभाव में पठितसूत्रों के सिवा अन्य सूत्रों का स्वाध्याय नहीं हो सकता।

२ प्रसिद्ध वक्ता बनने की उमंग—

दो चार वर्ष के कच्चे अध्ययन के बाद ही श्रमणों के मनमें प्रसिद्ध वक्ता बन जाने की उमंग पैदा हो जाती है, यह भी जैनागमों के स्वाध्याय में सबसे बड़ी बाधा है।

श्रावक समाज प्रायः सबसे अधिक महत्व उसी श्रमण को देता है जिसका व्याख्यान मनोरंजक होता है इसलिए युवा श्रमणों को वक्ता बनजाने की धुन लग जाती है।

यद्यपि वक्ता बनना बहुत अच्छा है, परन्तु वक्ता बनने के लिए पहले उच्च कोटि का श्रोता बनना नितान्त आवश्यक है। आगमों का मार्मिक ज्ञान, बहुमुखी प्रतिभा, और अनेक ..विषयों के अध्ययन के बिना सही अर्थ में वक्ता नहीं बना जा सकता।

वक्तृत्व-शक्ति को प्रस्फुटित करने के लिए स्वरमाधुर्य, तेज आवाज, और प्रतिपाद्य विषय का पूर्णज्ञान होना भी अत्यंत आवश्यक होता है। पर वक्ता बनने की धुन रखने वाले इन बातों पर कहां ध्यान देते हैं?

क. स्वरमाधुर्य के अभाव में भी नए नए सिनेमा के गाने की अनिधिकार चेष्टा करके जनता को आकर्षित करने का... विफल प्रयास करना भी आज जैन श्रमणों में देखा जाता है।

ख. स्वरमाधुर्य वाले श्रमण भी जब विशाल परिषदा में अधिकतर जोर लगाकर तेज आवाज से व्याख्यान देते हैं तो उनका व्याख्यान भी नीरस हो जाता है।

ग. आगम-ज्ञान के अभाव में भी आगम की ही एक दो गाथाएँ कहकर उन पर शास्त्रीय विषय का प्रतिपादन करने वाले श्रमण से किसे आश्चर्य न होगा ?

यदि ऐसे वक्ता से शास्त्रज्ञ-श्रावक प्रस्तुत विषय को लेकर अधिक स्पष्टीकरण करना चाहे या उनसे एक दो प्रश्न पूछ ले तो वक्ता का मुंह विवर्ण हुए बिना नहीं रहता।

३ बड़ों का अनुकरण—

जब तक सराग अवस्था है, तब तक मानव हृदय से महत्वाकांक्षा दूर नहीं हो सकती। बड़े श्रमणों की प्रतिष्ठा व प्रतिभा देखकर छोटे श्रमणों के मन में भी वैसी ही प्रतिष्ठा व प्रतिभा प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा पैदा होती है। एतदर्थ छोटे श्रमण भी बड़े श्रमणों की कार्य प्रणाली का अनुसरण करते हैं। प्रायः बड़े श्रमण भी व्याख्यान और आवश्यक के अतिरिक्त स्वाध्याय में समय नहीं लगाते। इसका असर यह होता है कि-छोटे श्रमण भी व्याख्यान की तैयारी के लिए व्याख्यान चन्द्रिका दृष्टान्त सागर आदि को पढ़ने में और नई तर्जों के स्तवनों को याद करने में ही लगे रहते हैं, "आवश्यक" से अधिक स्वाध्याय वे नहीं कर पाते।

ऐसा भी देखा जाता है कि प्रायः बड़े संत भक्तमंडली से सदा घिरे हुए रहते हैं। लघुवयस्क संत भी अपने गुरुजनों के पथ पर चलने के लिए अपने समवयस्क श्रावकों की भक्त मंडली का संगठन करने लग जाते हैं और इससे उनके स्वाध्याय का समय समाप्त हो जाता है।

४ आधुनिक संपादन-कला से संपादित आगमों का अभाव।

वर्तमान में नवदीक्षितों के अध्ययन के लिए प्रायः मुद्रित प्रतियां ही दी

जाती हैं, क्योंकि लिखित प्रतियां अधिक मूल्य वाली और अधिक परिश्रम से लिखी हुई होती हैं, अतः उनके फटने या बिगड़ने का भय सदा बना रहता है, इसके अतिरिक्त नवदीक्षित सहसा शास्त्रीय लिपि पढ़ भी नहीं सकता।

इसके विपरीत मुद्रित प्रतियां सुलभ तथा नागरी लिपिवाली होती हैं। एक प्रति के बिगड़ने या फटने पर दूसरी प्रति का मिलना कोई कठिन नहीं होता। परिणामतः अध्ययन की समाप्ति के बाद श्रमण को जब गुरुजन लिखित प्रतियां देते हैं तब श्रमण का मन उन लिखित प्रतियों के अध्ययन में नहीं लगता क्योंकि अलग अलग लेखकों की अलग अलग लिपियां होती हैं, और उनमें अशुद्धियां भी अधिक होती हैं, अतएव प्राचीन... पद्धति से लिखित प्रतियों से स्वाध्याय करना कठिन हो जाता है।

आगमों के अद्यावधि मुद्रित संस्करण भी प्रायः हस्त लिखित प्रतियों की तरह ही पदच्छेद, प्रश्न सूचक चिह्न, विराम चिह्न और विषय निर्देश आदि से रहित और प्राचीन ढंग के हैं।

आधुनिक पद्धति से सुसंपादित और मुद्रित पुस्तकों से संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी आदि का अध्ययन करने वाले इस युग के श्रमणों का मन प्राचीन ढंग से मुद्रित आगमों की प्रतियों से स्वाध्याय करने का नहीं होता।

५ ज्ञान भंडारों की कमी—

जैन श्रमण पैदल विहार में अपने उपयोगी उपकरणों का भार स्वयं उठाते हैं, इसलिये वे एक दो आगम जो सरल तथा अधिक प्रचलित होते हैं उन्हें ही सदा साथ में रख सकते हैं।

दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दी आदि जिन आगमों के कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और जिनकी प्रतियां सर्वत्र सुलभ होती हैं, उन्हीं आगमों का स्वाध्याय किया जाता है, अन्य आगमों का नहीं।

उल्लिखित कारणों के निराकरण के लिए नीचे लिखे प्रयत्न होने चाहिए—

१ नवदीक्षित श्रमणों का अध्ययन विद्वान् श्रमणों द्वारा या जैन अध्यापकों द्वारा ही होना चाहिए।

२ श्रमणों के लिए एक ऐसा पाठ्यक्रम निर्धारित करना चाहिए जिससे संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का ज्ञान जैन काव्यों का, जैन दर्शन ग्रन्थों का और जैनागमों का अध्ययन तथा प्राचीन लिपियों के पढ़ने का अभ्यास व्यवस्थित रूप से होसके।

३ जिन श्रमणों ने अध्ययन पूरा कर लिया हो उनसे नए श्रमणों का अध्ययन कराना चाहिए। ऐसा करने से उनका ज्ञान परिपक्व हो जाता है।

४ साधारण अभ्यासियों के लिए-आगमों के मूलपाठ के साथ सरल भाषा में शब्दार्थ, भावार्थ से संकलित पूरी आगम बत्तीसी का संपादन होना चाहिए।

विदेशों में प्रचार के लिए—भिन्न भिन्न भाषाओं में समस्त आगमों का आधुनिक शैली से सुन्दर से सुन्दर संपादन होना चाहिए।

५ चातुर्मास करने योग्य सभी क्षेत्रों में ज्ञान भण्डार अवश्य होने चाहिए प्रत्येक ज्ञान भण्डार में मूलपाठ की तथा हिन्दी अनुवाद वाली पूरी बत्तीसी होनी चाहिए, संस्कृत टीका वाले सब आगम तथा प्राकृत का कोष आदि मुख्य मुख्य ग्रंथों का संग्रह अवश्य होना चाहिए, यदि स्वाध्याय उपयोगी साहित्य सर्वत्र सुलभ होगा तो संघ में स्वाध्याय का प्रचार अवश्य अधिक होगा। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

प्रस्तुत संस्करण—

मूल आगमों के स्वाध्याय के लिए दो प्रकार के संस्करण तैयार करने की बहुत दिनों से मेरी प्रबल इच्छा थी।

प्रथम प्रकार के संस्करण में—

क. पद्यविभाग में—पद्यों का छन्दों के अनुसार अलग अलग आलेखन हो।

ख. संवाद वाले अध्ययनों में तथा कथानक वाले अध्ययनों में यथा स्थान पात्रों के नामों का निर्देश हो।

ग. भिन्न भिन्न विषय के भिन्न भिन्न पेरेग्राफ हों।

घ. जहां जहां मूलपाठ में संख्या का निर्देश हो वहां वहां क्रमांक लगा दिए जाएं।

गद्य विभाग में—

लम्बे समासान्त पदों में भिन्नता सूचक (हाइफन) चिन्ह हों और जहां प्रश्नोत्तर हों वहां प्रश्नोत्तर रूप में ही दिखाए जांय।

सूचना-पाठ यथा-एवं .... और....... जाव........ से जितना पाठ जहां जहां लेना आवश्यक हो वहां वहां पूरे पाठ वाले सूत्रों के सूत्राङ्क, पृष्ठ और पंक्ति के अंक दिए जावें तथा भिन्न-प्रकार के अक्षरों में दिखाए जावें। प्रत्येक वाक्य अलग अलग हों।

अपनी चिर-आकांक्षा की पूर्ति के हेतु इसी शैली का अनुसरण करके "मूल सुत्ताणि" को मैंने तैयार किया है।

मैं चाहता हूं कि-दूसरे प्रकार के संस्करण में एक ही विषय के समान पाठों की पुनरावृत्ति के बिना ३२ सूत्रों के पूरे मूल पाठ हों और एक ही जिल्द में छोटे साइज का ग्रन्थ हो जिसे प्रत्येक स्वाध्याय प्रेमी अनायास ही सदा अपने साथ रख सके। इसके लिए भी प्रयत्न चालू है।

मूल सूत्र संज्ञा की सार्थकता—

प्रस्तुत संस्करण में दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दी, और अनुयोग द्वार इन चार मूल सूत्रों का संकलन किया गया है, इसलिए इस संस्करण का नाम "मूल सुत्ताणि" रक्खा गया है।

किन्तु इन सूत्रों का नाम "मूल" क्यों पड़ा? यह अभी तक अन्वेषण का ही विषय बना हुआ है। क्योंकि बहुत कुछ अन्वेषण करने पर भी मुझे अभी तक इन सूत्रों की "मूल" संज्ञा के संबंध में ऐतिहासिक-सामग्री नहीं मिल सकी है, फिर भी निम्नलिखित तथ्यों के आधार से इन सूत्रों की "मूल" संज्ञा पर काफी प्रकाश पड़ता है।

१ दशवैकालिक आदि चारों सूत्रों का प्रधानतया प्रतिपाद्य विषय भव-भ्रमण का मूल और मोक्ष का मूल बताना है, सम्भव है इसी आशय को लेकर इन सूत्रों को "मूल" कहा गया हो।

आचराङ्ग सूत्र के टीकाकार श्री आचार्य शीलांक ने "*मूल"

---

*अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे, पलिच्छिंदियाणं निक्कम्मदंसी।
आचारांग—प्रथम श्रुत स्कंध, तृतीय अध्य० उद्दे० २।

शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि साधक को भव-भ्रमण के मूल को छोड़ कर मोक्ष के मूल को स्वीकार करना चाहिए। आचार्य ने चार घाति कर्म-मोहनीय, मिथ्यात्व, असंयम आदि को भव-भ्रमण का मूल बताया है। क्योंकि इन्हीं के सम्बंध से आत्मा कर्मों से आबद्ध होती है।

मोक्ष का मूल धर्म है। मोक्ष का अर्थ होता है आत्मा का कर्मों से अलग हो जाना। धर्म से अपना सम्बन्ध स्थापित करके ही आत्मा कर्म-बन्धन से मुक्त हो सकती है। इसीलिए यह बताया गया है कि मोक्ष का मूल धर्म है।

अहिंसा आदि पांच महाव्रत, विनय, ज्ञान दर्शन चारित्र आदि ही तो वस्तुतः जीवन के मूल धर्म हैं।

मूल धर्म अहिंसा को लेकर ही दशवैकालिक सूत्र प्रारंभ किया गया है "अहिंसा संजमो तवो" यह दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की पहली गाथा का दूसरा पद है। इसमें अहिंसा का वर्णन किया गया है अतः यह मूल सूत्र है।

उत्तराध्ययन सूत्र मूल धर्म विनय को लेकर प्रारंभ किया गया है। उत्तराध्ययन के पहले अध्ययन का नाम भी विनय अध्ययन है। इसलिए यह मूल सूत्र है।

नंदी सूत्र में ज्ञान का विषय है। "पढमं नाणं तओ दया" "णाणेन विणा न हुंति चरण गुणाः" ये सूत्र वाक्य बतलाते हैं कि ज्ञान के बिना जीवन का विकास नहीं हो सकता। इसलिए ज्ञान मूल धर्म है और नन्दी सूत्र में ज्ञान का वर्णन है अतः नन्दी सूत्र मूलसूत्र है।

अनुयोग द्वार सूत्र में भी श्रुतज्ञान का ही विस्तृत वर्णन है अतः उसकी भी मूल सूत्रों में गणना संगत है।

इस प्रकार इन सूत्रों में ज्ञान दर्शन चारित्र आदि मोक्ष के मूल धर्मों के वर्णन, और मिथ्यात्व आदि भवभ्रमण के मूलधर्मों के वर्णन ही हैं। इसलिए इन सूत्रों को "मूल" कहना किसी भी दृष्टि से अयुक्त प्रतीत नहीं होता।

२ नंदी सूत्र में जहां कालिक और उत्कालिक सूत्रों की गणना की गई है वहां कालिकों में सर्व प्रथम उत्तराध्ययन का नाम तथा उत्कालिकों में

सर्व प्रथम दशवैकालिक का नाम आया है इसलिए भी इन सूत्रों को मूल सूत्र कहना संगत जान पड़ता है

३ नंदी सूत्र में अनुयोग द्वार सूत्र के नाम के साथ मूल शब्द लगा हुआ है। सम्भव है इसी दृष्टि से अनुयोगद्वार सूत्र की गणना मूलसूत्रों में की गई हो।

४ नए शिष्यों के प्रारम्भिक अध्ययन के लिये ये सूत्र ही अधिक उपयुक्त माने गये हैं। इनके अध्ययन के बाद ही नवीन साधक अंगादि सूत्रों में सरलता से प्रवेश कर सकता है इस दृष्टि से भी ये मूलसूत्र हैं।

यद्यपि कई प्राचीन विचारक नन्दी और अनुयोग द्वार को मूलसूत्र न मानकर ओघनिर्युक्ति आदि अन्य सूत्रों को मूलसूत्र मानते हैं। किन्तु ऐतिहासिक प्रमाण के अभाव में किसी निर्णय पर पहुँचना सम्भव नहीं है अतः आगम साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान इसी विषय पर अधिक प्रकाश डालेंगे, यही अभ्यर्थना है।

आभार-प्रदर्शन—

श्रद्धेय परम पूज्य मेरे गुरुदेव श्री फतेचंद्रजी महाराज तथा श्री प्रतापचंद्रजी महाराज के असीम उपकार से ही मैं श्रमणजीवन और श्रुतसेवा के क्षेत्र में प्रवेश कर सका हूँ।

भद्र हृदय शान्तस्वभावी श्रद्धेय स्वामीजी महाराज श्री हजारीलालजी महाराज का भी मैं अत्यंत आभारी हूं। आपके स्नेहपूर्ण सहयोग से ही मैंने आगमों का अध्ययन किया है।

पंडित मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज "मधुकर" के परिश्रमपूर्ण सहयोग से तो यह संस्करण सर्वाङ्ग सुन्दर बन सका है, अतएव आपकी स्मृति तो आजीवन रहेगी ही।

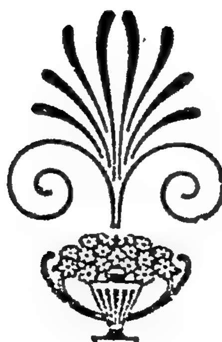
श्रीयुत् पं० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल से इस "मूल सुत्ताणि" के संपादन में सारा मार्ग दर्शन जिस स्नेह से मिला है उसे भुलाया नहीं जासकता।

अंत में गुरुकुल प्रेस के मैनेजर श्रीयुत शान्तिलालजी वनमाली सेठ का भी स्मरण करना ही होगा, जिनके सत् प्रयत्नों से यह संस्करण इतने प्रशस्त रूप में स्वाध्याय प्रेमियों के सामने आसका है।

छद्मस्थ जीवन के नाते इस संस्करण में अनेक त्रुटियों का हो जाना असंभव बात नहीं है, आशा है पाठक व समालोचक रही हुई भूलों की अवश्य सूचना देंगे।

जैन स्थानक
पिपलिया बाजार,
ब्यावर

मुनि कन्हैयालाल जैन
(कमल)



दशवैकालिक-सूत्रान्तर्गत

पद्यानामनुक्रमाणिका

(अ)

(त)

(न)

(प)

(ब)

(भ)

(म)

(र)

(ल)

(व)

(स)

(ह)

श्री उत्तरज्झयणसुत्तं

(अ)

(आ)

(इ)

(उ)

(ऊ)

(ए)

(गि)

(गु)

(गो)

(घा)

(घो)

(च)

(जो)

(ठा)

(त)

(ता)

(ति)

(ती)

(तु)

(ते)

(तो)

(थ)

(था)

(थे)

(द)

(दा)

(दि)

(दी)

(दु)

(नं)

(ना)

(नि)

(नी)

(ने)

(नो)

(प)

(पं)

(पा)

(पिं)

(पि)

(पु)

[पे]

[पो]

[फा]

(मं)

[मा]

[मि]

[मु]

[मो]

(र)

(रा)

(रू)

(ल)

(ला)

(ले)

(सं)

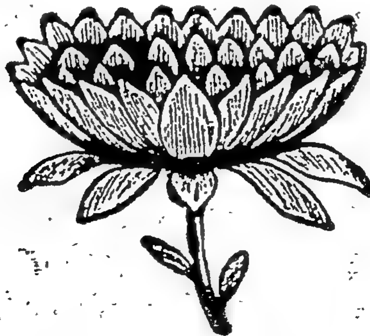
[हि]

(हिं)

(हु)

(हे)

[हो]



परिशिष्ट २

मूल-सूत्रों में निर्दिष्ट दृष्टान्तों की अकारादि अनुक्रमणिका



(ख)

(खी)

(ग)

(गि)

[गु]

(गो)

(घ)

(छि)

(ज)

(म)

(मे)

(मि)

[रा]

(रे)

(रो)

(व)

(वा)

[वि]



॥ अर्हन् ॥

श्री वर्द्धमान वाणी प्रचारक कार्यालय की आय व्यय का विवरण

मिती वैशाख दुजा सुदी ३ सं० २०१० विक्रम

आय

दानवीरों द्वारा प्राप्त सहायता

१५०१) श्री श्वे० स्था० जैन संघ पीही मारवाड़

५००) श्रीमान् बछराजजी कन्हैयालालजी सुराणा पीही हाल मुकाम बागलकोट

६०१) समस्त खटोड़ परविार लाडपुरा

३२३) समस्त लुणावत परिवार ,,

१०१) गुप्तदानी श्राविका ,,

११) श्री धनराजजी कर्नावट ,,

८८१) श्री श्वे० स्था० जैन संघ भकरी मारवाड़

६०१) श्री श्वे० स्था० जैन संघ राबडियाद मारवाड़

१११) श्रीमान् दीपचंदजी सुराणा बड़ीपादू

१२१) श्री श्वे० स्था० जैन संघ मोरियाना मारवाड़

१०१) श्रीमान् सूरजमलजी बुलराजजी बूंटीवाला

५१) श्रीमान् बगतावरमलजी टांटीयां बेलडांगा

५०) दस अग्रिम ग्राहकों से प्राप्त

३०॥) गुदड़मल खटोड लाडपुरा (मारवाड़)

५२८५॥)

निवेदक
गुदड़मल खटोड
मंत्री
श्री वर्द्धमान वाणी प्रचारक
कार्यालय, लाडपुरा (मारवाड़)

व्यय

११०३) बत्तीस आकमों की विषय सूची बनाने का व प्राचीन प्रतियों के पाठ मिलाने का पंडितों को परिश्रम दिया गया

६००) श्रीमान् शांतिलाल बनमाली सेठ मैनेजर श्री गुरुकुल प्रेस, ब्यावर को मूल सुत्ताणि (दशवेकालिक उत्तराध्ययन नंदी अणुयोगद्वार) के छपाई के लिये दिये

८३१।) रेमिंगटन टाइप राइटर हिन्दी की बड़ी मशीन सूत्रों की प्रतिलिपियां व प्रेस कापियां तैयार करने के लिए मंगाई गई

६४=) संपादन कार्य के लिए आगमादि ग्रंथ मंगाये गये

७५) नंदीसूत्र का ब्लाक बनवाया

८) कार्यकर्त्ता का जाने आने का खर्च

३१०२।=)

२८६३=) श्री पोते बाकी रहे

१८०३॥।) श्रीमान् शंकरलालजी मुणोत ब्यावर वालों के पास

२२५) अमर सिल्क स्टोर खगड़ा मा० प्रेमचन्दजी खटोड लाडपुरा वालों में बाकी रहे

६४।=) स्वर्गीय श्रीमान् मूलचन्दजी मोदी फर्म लालचन्द हगामचन्द ब्यावर में रहे

२१८३=)

५२८५॥)

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(१)

दसवेआलियसुत्तं

[उक्कालियं]

नामकरणं—

मणगं पडुच्च सेज्जंभवेण, निज्जूहिया दसज्झयणा ।
वेयालियाइ ठविया, तम्हा दसकालियं नाम ॥

उद्धरणं—

आयप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ धम्म-पन्नत्ती ।
कम्मप्पवायपुव्वा, पिंडस्स उ एसणा तिविहा ॥

सच्चप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ वक्कसुद्धीउ ।
अवसेसा निज्जूढा, नवमस्स उ तइयवत्थूओ ॥

बीओऽवि अ आएसो, गणिपिडगाओ दुवालसंगाओ ।
एयं किर निज्जूढं, मणगस्स अणुग्गहट्ठाए ॥

विसयानिद्देसो—

पढमे धम्म-पसंसा, सो य इहेव जिणसासणम्मित्ति ।
बिइए धिइए सक्का, काउं जे एस धम्मोत्ति ॥

तइए आयार-कहाउ, खुड्डिया आयसंजमोवाओ ।
तह जीव-संजमोऽवि य, होइ चउत्थंमि अज्झयणे ॥

भिक्ख-विसोही तव, संजमस्स गुणकारिया उ पंचमए ।
छट्ठे आयार-कहा, महई जोग्गा महयणस्स ॥

वयण-विभत्ती पुण, सत्तमम्मि पणिहाण-मट्ठमे भणियं ।
नवमे विणओ दसमे, समाणियं एस भिक्खुत्ति ॥

दो अज्झयणा चूलिय, विसीययंते थिरीकरणमेगं ।
बिइय विवित्त चरिया, असीयणगुणाइरेग फला ॥

—भद्रबाहु नियुक्ति गाथा १५, १६, १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४,

विषय-संबंध-निर्देशः—

प्रथमाध्ययने धर्मप्रशंसा—

सच्चात्रैव-जिनशासने धर्मो, नान्यत्र इहैव निर्वद्यवृत्तिसद्भावात् ।

धर्माभ्युपगमे च सत्यपि माभूदभिनवप्रव्रजितस्याधृतेः सम्मोह-

इत्यत-स्तन्निरा-करणार्थाधिकारवदेव **द्वितीयाध्ययनम्** ।

सा पुनर्धृतिराचारे कार्या न त्वनाचारे-इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव-

तृतीयाध्ययनम् ।

स च आचारः षड्जीवनिकायगोचरः प्राय-इत्यतश्चतुर्थमध्ययनम् ।

स च देहे स्वस्थे सति सम्यक् पाल्यते, स चाहारमन्तरेण प्रायः स्वस्थो न भवति, स च सावद्येतरभेद-इत्यनवद्यो ग्राह्य-इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव **पञ्चममध्ययनम्** ।

गोचरप्रविष्टेन च सता स्वाचारं पृष्टेन तद्विदापि न महाजनसमक्षं तत्रैव-विस्तरतः कथयितव्यः अपि तु आलये-गुरवो वा कथयन्तीति वक्तव्यम् इत्यतस्त-दर्थाधिकारवदेव **षष्ठमध्ययनम्** ।

आलयगतेनाऽपि तेन, गुरुणा वा वचनदोषगुणाभिज्ञेन निरवद्यवचसा कथयितव्य इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव **सप्तममध्ययनम्** ।

तच्च निरवद्यं वचः आचारे प्रणिहितस्य भवति इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेवा-**ष्टममध्ययनम्** ।

आचारप्रणिहितश्च यथोचितविनयसंपन्न एव भवतीत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव-**नवममध्ययनम्** ।

एतेषु एव नवस्वध्ययनार्थेषु यो व्यवस्थितः स सम्यग् भिक्षुरित्यनेन-सम्बन्धेन **दसमं सभिक्खध्ययनम्** ।

स एवं गुणयुक्तोऽपि भिक्षुः कदाचित् कर्मपरतन्त्रत्वात्कर्मणश्च बलवत्त्वात्सीदेत् ततस्तस्य स्थिरीकरणं कर्त्तव्यमतस्तदर्थाधिकारवदेव-**चूडाद्वयम्** ।

—**श्री हरिभद्रसूरिः**

❀ णमोऽत्थु णं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ❀

दसवेआलियसुत्तं

दुमपुप्फिया नामं पढमज्झयणं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ ।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरो जहा ॥ ४ ॥

महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥ त्ति बेमि ॥

अह सामण्णपुव्वयं नामं दुइअमज्झयणं

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए।
पए-पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥

वत्थ-गंध-मलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से 'चाइ' त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठि कुव्वई।
साहीणे चयइ भोए, से हु 'चाइ'—त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥

समाए पेहाए परिव्वयंतो,
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा।
'न सा महं नोवि अहंपि तीसे'
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥

आयावयाही चय सोगमल्लं,
कामे कमाही कमियं खु दुक्खं।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं,
एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥ ६ ॥

धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥

अहं च भोगरायस्स, तं चऽसि अंधगवण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥१०॥

एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ त्ति बेमि ॥११॥

अह खुड्डियायारकहा नामं तइयमज्झयणं

संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं ।
तेसिमेयमणाइण्णं, निग्गंथाणं महेसिणं ॥ १ ॥

उद्देसियं[1] कीयगडं,[2] नियागं[3] अभिहडाणि[4] य ।
राइ-भत्ते[5] सिणाणे[6] य, गंध[7] मल्ले[8] य वीयणे[9] ॥ २ ॥

सन्निही[10] गिहि-मत्ते[11] य, रायपिंडे[12] किमिच्छए[13]।
संवाहणा[14] दंतपहोयणा[15] य,
संपुच्छणा[16] देह-पलोयणा[17] य ॥ ३ ॥

अट्ठावए[18] य नालीए[19], छत्तस्स[20] य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छं[21] पाहणा[22] पाए, समारंभं च जोइणो[23] ॥ ४ ॥

सेज्जायर-पिण्डं[24] च, आसंदीपलियंकए[25] ।
गिहंतरनिसज्जा[26] य, गायस्सुव्वट्टणाणि[27] य ॥ ५ ॥

गिहिणो वेआवडियं[28], जा य आजीववत्तिया[29] ।
तत्तानिवुडभोइत्तं[30], आउरस्सरणाणि[31] य ॥ ६ ॥

मूलए[32] सिंगबेरे[33] य, उच्छुखंडे[34] अनिव्वुडे ।
कंदे[35] मूले[36] य सच्चित्ते, फले[37] बीए[38] य आमए ॥ ७ ॥

सोवच्चले[39] सिंधवे[40] लोणे, रोमा-लोणे[41] य आमए।
सामुद्दे[42] पंसुखारे[43] य, काला-लोणे[44] य आमए ॥ ८ ॥

धूवणेत्ति[45] वमणे[46] य, वत्थीकम्म[47] विरेयणे[48] ।
अंजणे[49] दंतवणे[50] य, गायब्भंग[51] विभूसणे[52] ॥ ९ ॥

सव्वमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं ।
संजमम्मि अ जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं ॥१०॥

पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया ।
पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥११॥

आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया ॥१२॥

परिसह-रिऊ-दंता, धूअमोहा जिइंदिया ।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ॥१३॥

दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य ।
केइऽत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झंति नीरया ॥१४॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडा ॥ त्ति बेमि ॥१५॥

अह छज्जीवणिया नामं चउत्थमज्झयणं

सुयं मे आउसं !
तेणं भगवया एवमक्खायं—
इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं—
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया-
सुअक्खाया सुपन्नत्ता ।

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं—
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया-
सुअक्खाया सुपण्णत्ता।
सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती।

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं—
समणेणं भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइया-
सुअक्खाया सुपन्नत्ता।
सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती।
तं जहा—
पुढवि-काइया १, आउ-काइया २, तेउ-काइया ३,
वाउ-काइया ४, वणस्सइ-काइया ५, तस-काइया ६,।

१ पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता
अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं।

२ आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता
अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं।

३ तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता
अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं।

४ वाउ चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता
अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं।

५ वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता
अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं।

तं जहा—
अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा-
सम्मुच्छिमा तणलया—
वणस्सइकाइया सबीया चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा
पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं ।

६ से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा—
तं जहा—
अंडया पोयया जराउया रसया—
संसेइमा संमुच्छिमा उब्भिया उववाइया ।
जेसिं केसिं च पाणाणं—
अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं—
रुयं भंतं तसियं पलाइयं—
आगइ-गइ-विन्नाया, जे य कीडपयंगा—
जा य कुंथुपिवीलिया—
सव्वे बेइंदिया सव्वे तेइंदिया—
सव्वे चउरिंदिया सव्वे पंचिंदिया—
सव्वे तिरिक्ख-जोणिया सव्वे नेरइया—
सव्वे मणुआ सव्वे देवा—
सव्वे पाणा परमाहम्मिया ।
एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ 'तसकाउ त्ति' पवुच्चइ ।

इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं—
नेव सयं दंडं समारंभिज्जा—
नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा—
दंडं समारंभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—

मणेणं वायाए काएणं—
न करेमि न कारवेमि—
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि—
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ।

पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ।
सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि—
से सुहुमं वा बायरं वा
तसं वा थावरं वा
नेव सयं पाणे अइवाइज्जा—
नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा—
पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—
मणेणं वायाए काएणं—
न करेमि न कारवेमि—
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि—
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ।
पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं ।
सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि ।
से कोहा वा लोहा वा

भया वा हासा वा
नेव सयं मुसं वएज्जा
नेवऽन्नेहिं मुसं वायावेज्जा
मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—
मणेणं वायाए काएणं—
न करेमि न कारवेमि—
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि—
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ।
दोच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि
सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं ।
सव्वं भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि ।
से गामे वा नगरे वा रण्णे वा—
अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा—
चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा—
नेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा—
नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हावेज्जा—
अदिन्नं गिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—
मणेणं वायाए काएणं—
न करेमि न कारवेमि
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भंते !

पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ।
तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि
सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं—
सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि
से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्ख-जोणियं वा
नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा—
नेवन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा—
मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जिवाए तिविहं तिविहेणं—
मणेणं वायाए काएणं
न करेमि न कारवेमि
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि—
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ।
चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि—
सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ।

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं—
सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि ।
से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा
चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा
नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा—
नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हावेज्जा—

परिग्गहं परिगिण्हते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं—
न करेमि न कारवेमि—
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ।
पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि—
सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राइ-भोयणाओ वेरमणं
सव्वं भंते ! राइ-भोयणं पच्चक्खामि
से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—
नेव सयं राइं भुंजेज्जा
नेवन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा
राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—
मणेणं वायाए काएणं
न करेमि न कारवेमि
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ।
छट्ठे भंते वए उवट्ठिओमि ।
सव्वाओ राइ-भोयणाओ वेरमणं ।

इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइ-भोयण-वेरमण-छट्ठाइं
अत्त-हियट्ठयाए उवसंपजित्ताणं विहरामि ॥ ६ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा––
संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे
दिआ वा राओ वा
एगओ वा परिसागओ वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा
से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं वा––
स-सरक्खं वा कायं स-सरक्खं वा वत्थं–––
हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा––
अंगुलियाए वा सलागाए वा सलाग-हत्थेण वा–
न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा––
न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा–––
अन्नं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा
न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा
अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा
घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं–––
न करेमि न कारवेमि
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा

संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे—
दिआ वा राओ वा—
एगओ वा परिसा-गओ वा—
सुत्ते वा जागरमाणे वा—
से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा—
करगं वा हरितणुगं वा सुद्धोदगं वा—
उदउल्लं वा कायं उदउल्लं वा वत्थं—
ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं—
न आमुसेज्जा न संफुसेज्जा—
न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा—
न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा—
न आयावेज्जा न पयावेज्जा।
अन्नं न आमुसावेज्जा न संफुसावेज्जा—
न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा—
न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा—
न आयावेज्जा न पयावेज्जा—
अन्नं आमुसंतं वा संफुसंतं वा
आवीलंतं वा पवीलंतं वा
अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा
आयावंतं वा पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं
न करेमि न कारवेमि
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा--
संजय-विरय-पड़िहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे
दिआ वा राओ वा
एगओ वा परिसा-गओ वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा
से अगणिं वा इंगालं वा मुमुरं-वा अच्चिं वा—
जालं-वा अलायं वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा—
न उंजेज्जा न घट्टेजा न भिंदेज्जा—
न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा—
अन्नं न उंजावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा
न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निवावेज्जा
अन्नं उजंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा—
उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं—
न करेमि न कारवेमि
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥ ३ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
संजय-विरय-पड़िहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे—
दिआ वा राओ वा—
एगओ वा परिसा-गओ वा—
सुत्ते वा जागरमाणे वा--

से सिएण वा विहुणेण वा तालियंटेण वा—
पत्तेण वा पत्तभंगेण वा—
साहाए वा साहा-भंगेण वा—
पिहुणेण वा पिहुण-हत्थेण वा—
चेलेण वा चेल-कण्णेण वा—
हत्थेण वा मुहेण वा—
अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं
न फूमेज्जा न वीएज्जा—
अन्नं न फूमावेजा न वीआवेज्जा—
अन्नं फूमंतं वा वीयंतं वा न समणुजाणेज्जा—
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं
न करेमि न कारवेमि
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ॥ ४ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय पावकम्मे—
दिआ वा राओ वा
एगओ वा परिसा-गओ वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा
से बीएसु वा बीय-पइट्ठेसु वा—
रूढेसु वा रूढ-पइट्ठेसु वा—
जाएसु वा जाय-पइट्ठेसु वा—

हरिएसु वा हरिय-पइट्ठेसु वा—
छिन्नेसु वा छिन्न-पइट्ठेसु वा—
सचित्तेसु वा सचित्त-कोल-पड़ि-निस्सिएसु वा
न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा—
अन्नं न गच्छावेजा न चिट्ठावेज्जा—
न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा—
अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा—
निसीयंतं वा तुयट्टंतं वा न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—
मणेणं वायाए काएणं—
न करेमि न कारवेमि—
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि—
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—
संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे—
दिआ वा राओ वा—
एगओ वा परिसा-गओ वा—
सुत्ते वा जागर-माणे वा—
से कीडं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिवीलियं वा—
हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा—
उरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा—
वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कंबलगंसि वा
पाय-पुच्छणंसि वा रय-हरणंसि वा गुच्छगंसि वा

उडुगंसि वा दंडगंसि वा पीढगंसि वा
फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा

अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए—

तओ संजयामेव—

पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय—

एगंतमवणेज्जा—

नो णं संघाय-मावजेज्जा ॥ ६ ॥

अजयं चरमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥
अजयं चिट्ठमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥
अजयं आसमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥
अजयं सयमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥
अजयं भुंजमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥
अजयं भासमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसइ।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥
कहं चरे ? कहं चिट्ठे ?, कहमासे ? कहं सए ?
कहं भुंजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न बंधइ ? ॥ ७ ॥
जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न बंधइ ॥ ८ ॥

सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ ।
पिहियासवस्स दंतस्स, पाव-कम्मं न बंधइ ॥ ९ ॥
पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए ।
अन्नाणी किं काही, किं वा नाहिइ सेय-पावगं ॥१०॥
सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं ।
उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥११॥
जो जीवे वि न याणाइ, अजीवे वि न याणइ ।
जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाहीइ संजमं ॥१२॥
जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ ।
जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहीइ संजमं ॥१३॥
जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ ।
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥
जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ।
तया पुण्णं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणइ ॥१५॥
जया पुण्णं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणइ ।
तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
जया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ।
तया चयइ संजोगं, सब्भिंतर-बाहिरं ॥१७॥
तया चयइ संजोगं, सब्भिंतर-बाहिरं ।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइय अणगारियं ॥१८॥
जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइय अणगारियं ।
तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥
जया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ।
तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥
जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ।
तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ॥२१॥

जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ।
तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥२२॥

जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ॥२३॥

जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥

जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥

सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणापहोअस्स, 'दुलहा सुगइ' तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुण-पहाणस्स, उज्जुमइ-खंति-संजमरयस्स ।
परीसहे जिणंतस्स, 'सुलहा सुगइ' तारिसगस्स ॥२७॥

पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमर-भवणाइं ।
जेसिं पिओ तवो संजमो य, खंति य बंभचेरं च ॥२८॥

इच्चेयं छज्जीवणियं, सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मुणा न विराहिज्जासि ॥२९॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह पिंडेसणा नामं पंचमज्झयणं

पढमो उद्देसो

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ ।
इमेण कमजोगेण, भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥
से गामे वा नयरे वा, गोयरग्गगओ मुणी ।
चरे मंदमणुव्विग्गो, अवक्खित्तेण चेयसा ॥ २ ॥
पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जंतो बीय-हरियाए, पाणे य दग-मट्टियं ॥ ३ ॥
ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए ।
हिंसेज्ज पाण-भूयाइं, तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥
तम्हा तेण न गच्छेज्जा, संजए सुसमाहिए ।
सइ अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥
इंगालं छारियं रासिं, तुसरासिं च गोमयं ।
ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नइक्कमे ॥ ७ ॥
न चरेज्ज वासे वासंते, महियाए व पडंतिए ।
महावाए व वायंते, तिरिच्छ-संपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
न चरेज्ज वेसा-सामंते, बंभचेरवसाणुए ।
बंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥
अणायणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं ।
होज्ज वयाणं पीला, सामण्णम्मि य संसओ ॥१०॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वज्जए वेस-सामंतं, मुणी एगंतमस्सिए ॥११॥

साणं सूइयं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं ।
संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए ॥१२॥

अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले ।
इंदियाइं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥

दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे ।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया ॥१४॥

आलोयं थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि य ।
चरंतो न विनिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥

रन्नो गिहवईणं च, रहस्सारक्खियाण य ।
संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥१६॥

पडिकुट्ठ-कुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए ।
अचियत्त-कुलं न पविसे, चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥

साणीपावारपिहियं, अप्पणा नावपंगुरे ।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा, ओग्गहंसि अजाइया ॥१८॥

गोयरग्गपविट्ठो उ, वच्च-मुत्तं न धारए ।
ओगासं फासुयं नच्चा, अणुन्नविय वोसिरे ॥१९॥

नीयंदुवारं तमसं, कोट्ठगं परिवज्जए ।
अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥

जत्थ पुप्फाइं बीयाइं, विप्पइण्णाइं कोट्ठए ।
अहुणोवलित्तं उल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए ॥२१॥

एलगं दारगं साणं, वच्छगं वावि कोट्ठए ।
उल्लंघिया न पविसे, विउहित्ताण व संजए ॥२२॥

असंसत्तं पलोएज्जा, नाइदूरावलोयए ।
उप्फुल्लं न विनिज्झाए, नियट्टिज्ज अयंपिरो ॥२३॥
अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी ।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिय-भूमिं परक्कमे ॥२४॥
तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागं वियक्खणो ।
सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए ॥२५॥
दगमट्टियआयाणे, बीयाणि हरियाणि य ।
परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा, सव्विंदियसमाहिए ॥२६॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहरे पाणभोयणं ।
अकप्पियं न गेण्हिज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥२७॥
आहरंती सिया तत्थ, परिसाडेज्ज भोयणं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥

संमद्दमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
असंजमकरिं नच्चा, तारिसं परिवज्जए ॥२९॥
साहट्टु निक्खिवित्ताणं, सचित्तं घट्टियाणि य ।
तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥
ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहरे पाणभोयणं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥

पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥

एवं उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टियाऊसे ।
हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥३३॥
गेरुय-वण्णिय-सेढिय, सोरट्ठिय-पिट्ठ-कुक्कुस-कए य ।
उक्किट्ठमसंसट्ठे, संसट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥३४॥

असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, पच्छा-कम्मं जहिं भवे ॥३५॥
संसट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥

दोण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा, छंदं से पडिलेहए ॥३७॥
दोण्हं तु भुंजमाणाणं, दो वि तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥

गुव्विणीए उवन्नत्थं, विविहं पाणभोयणं ।
भुंजमाणं विवज्जेज्जा, भुत्तसेसं पडिच्छए ॥३९॥
सिया य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी ।
उट्ठिया वा निसीएज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥४०॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥

थणगं पिज्जमाणी, दारगं वा कुमारियं ।
तं निक्खवित्तु रोअंतं, आहरे पाणभोयणं ॥४२॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥

जं भवे भत्तपाणं तु, कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥
दगवारएण पिहियं, नीसाए पीढएण वा ।
लोढेण वा वि लेवेण, सिलेसेण व केणइ ॥४५॥
तं च उब्भिदिआ दिज्जा, समणट्ठाए व दावए ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, दाणट्ठा पगडं इमं ॥४७॥
तारिसं भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥४९॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, वणिमट्ठा पगडं इमं ॥५१॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥

असणं पाइगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं ॥५३॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे; न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥

उद्देसियं कीयगडं, पूइकम्मं च आहडं ।
अज्झोयर पामिच्चं, मीसजायं च वज्जए ॥५५॥
उग्गमं से अ पुच्छेज्जा, कस्सट्ठा केण वा कडं ।
सोच्चा निस्संकियं सुद्धं, पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥
असगं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
पुप्फेसु होज्ज उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५८॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
उदगंमि होज्ज निक्खित्तं उत्तिंग-पणगेसु वा ॥५९॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
तेउम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिया दए ॥६१॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६२॥

एवं उस्सक्किया ओसक्किया, उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया।
उस्सिंचिया निस्सिंचिया, उवत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥

होज्ज कट्ठं सिलं वा वि, इट्टालं वा वि एगया।
ठवियं संकमट्ठाए, तं च होज्ज चलाचलं ॥६५॥
न तेण भिक्खू गच्छेज्जा, दिट्ठो तत्थ असंजमो।
गंभीरं झुसिरं चेव, सव्विंदियसमाहिए ॥६६॥
निस्सेणिं फलगं पीढं, उस्सवित्ताणमारुहे।
मंचं कीलं च पासायं, समणट्ठाए व दावए ॥६७॥
दुरुहमाणी पवडेज्जा, हत्थं पायं व लूसए।
पुढविजीवे वि हिंसेज्जा, जे य तं निस्सिया जगे ॥६८॥
एयारिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो।
तम्हा मालोहडं भिक्खं, न पडिगिण्हंति संजया ॥६९॥
कंदं मूलं पलंबं वा, आमं छिन्नं च सन्निरं।
तुंबागं सिंगबेरं च, आमगं परिवज्जए ॥७०॥

तहेव सत्तु-चुरणाइं, कोल-चुरणाइं आवणे ।
सक्कुलिं फाणियं पूयं, अन्नं वा वि तहाविहं ॥७१॥
विक्कायमाणं पसढं, रएण परिफासियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥७२॥

वहुअट्ठियं पोग्गलं, अणिमिसं वा बहुकंटयं ।
अत्थियं तिंदुयं बिल्लं, उच्छुखंडं च सिंबलिं ॥७३॥
अप्पे सिया भोयणजाए, वहुउज्झियधम्मिए ।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥

तहेवुच्चावयं पाणं, अदुवा वारधोअणं ।
संसेइमं चाउलोदगं, अहुणाधोअं विवज्जए ॥७५॥
जं जाणेज्ज चिराधोयं, मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा, जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥
अजीवं परिणयं नच्चा, पडिगाहेज्ज संजए ।
अह संकियं भवेज्जा, आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूइं, नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥
तं च अच्चंबिलं पूइं, नालं तण्हं विणित्तए ।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥

तं च होज्ज अकामेणं, विमणेण पडिच्छियं ।
तं अप्पणा न पिवे, नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८१॥

सिया य गोयरग्गओ, इच्छेज्जा परिभोत्तुअं ।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा, पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥

अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता, तत्थ भुंजिज्ज संजए ॥८३॥
तत्थ से भुंजमाणस्स, अट्ठियं कंटओ सिया ।
तण-कट्ठ-सक्करं वा वि, अन्नं वा वि तहाविहं ॥८४॥
तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डए ।
हत्थेण तं गहेऊणं, एगंतमवक्कमे ॥८५॥
एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८६॥

सिया य भिक्खू इच्छेज्जा, सेज्जमागम्म भोत्तुअं ।
सपिंडपायमागम्म, उड्डुअं पडिलेहिया ॥८७॥
विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी ।
इरियावहियमायाय, आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
आभोएत्ताण नीसेसं, अइयारं जहक्कमं ।
गमणागमणे चेव, भत्तपाणे य संजए ॥८९॥
उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
आलोए गुरुसगासे, जं जहा गहियं भवे ॥९०॥
न सम्ममालोइयं होज्जा, पुव्विं पच्छा व जं कडं ।
पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसिट्ठो चिंतए इमं ॥९१॥
अहो जिणेहिऽसावज्जा, वित्ती साहूण देसिया ।
मोक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥
नमोक्कारेण पारेत्ता, करेत्ता जिणसंथवं ।
सज्झायं पट्ठवित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥
वीसमंतो इमं चिंते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू होज्जामि तारिओ ॥९४॥
साहवो तो चियत्तेणं, निमंतेज्ज जहक्कमं ।
जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥९५॥

अह कोइ न इच्छेज्जा, तओ भुंजेज्ज एक्कओ ।
आलोए भायणे साहू, जयं अपरिसाडियं ॥९६॥
तित्तगं व कडुयं व कसायं, अंबिलं व महुरं लवणं वा ।
एयलद्धमन्नट्ठपउत्तं, महु-घयं व भुंजेज्ज संजए ॥९७॥
अरसं विरसं वा वि, सूइयं वा असूइयं ।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथुकुम्मासभोयणं ॥९८॥
उप्पन्नं नाइहीलेज्जा, अप्पं वा बहु फासुयं ।
मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जियं ॥९९॥
दुल्लहा उ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गई ॥१००॥
॥ त्ति बेमि ॥

पंचमज्झयणे—बीओ उद्देसो

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाए संजए ।
दुग्गंधं वा सुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए ॥ १ ॥
सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे ।
अयावयट्ठा भोच्चाणं, जइ तेण न संथरे ॥ २ ॥
तओ कारणमुप्पन्ने, भत्तपाणं गवेसए ।
विहिणा पुव्वउत्तेणं, इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥
कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि ।
अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥
सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारियं ।
अलाभो त्ति न सोएज्जा, तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥

तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया ।
तं उज्जुयं न गच्छिज्जा, जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥

गोयरग्गपविट्ठो उ, न निसीयज्ज कत्थइ ।
कहं च न पबंधेज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥

अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए ।
अवलंबिया न चिट्ठेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी ॥ ९ ॥

समणं माहणं वा वि, किविणं वा वणीमगं ।
उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥१०॥

तं अइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोयरे ।
एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठेज्ज संजए ॥११॥

वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा ।
अप्पत्तियं सिया होज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ॥१२॥

पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए ।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए ॥१३॥

उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संलुंचिया दए ॥१४॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥

उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संमद्दिया दए ॥१६॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥

सालुयं वा विरालियं, कुमुयं उप्पलनालियं ।
मुणालियं सासवनालियं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥१८॥

तरुणगं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वा वि हरियस्स, आमगं परिवज्जए ॥१९॥
तरुणियं वा छिवाडिं, आमियं भज्जियं सइं ।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥

तहा कोलमणस्सिन्नं, वेलुयं कासवनालियं ।
तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए ॥२१॥
तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
तिलपिट्ठ-पूइपिण्णागं, आमगं परिवज्जए ॥२२॥
कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगत्तियं ।
आमं असत्थपरिणयं, मणसा वि न पत्थए ॥२३॥
तहेव फलमंथूणि, बीयमंथूणि जाणिया ।
बिहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥२४॥
समुयाणं चरे भिक्खू, कुलं उच्चावयं सया ।
नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥

अदीणो वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ भोयणम्मि, मायन्ने एसणारए ॥२६॥

बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइमसाइमं ।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो न वा ॥२७॥
सयणासणवत्थं वा, भत्त-पाणं व संजए ।
अदितस्स न कुप्पेज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥

इत्थियं पुरिसं वा वि, डहरं वा महल्लगं ।
वंदमाणं न जाएज्जा, नो य णं फरुसं वए ॥२९॥
जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे ।
एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ ॥३०॥

सिया एगइओ लद्धुं, लोभेण विणिगूहइ ।
मा मेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए ॥३१॥
अत्तट्ठा गुरुओ लुद्धो, बहुं पावं पकुव्वइ ।
दुत्तोसओ य से होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥३२॥

सिया एगइओ लद्धुं, विविहं पाणभोयणं ।
भद्दगं भद्दगं भोच्चा, विवण्णं विरसमाहरे ॥३३॥
जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी ।
संतुट्ठो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥
पूयणट्ठा जसोकामी, माण-संमाणकामए ।
बहुं पसवइ पावं, मायासल्लं च कुव्वइ ॥३५॥

सुरं वा मेरगं वा वि, अन्नं वा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिबे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥
पियए एगओ तेणो, न मे कोइ वियाणइ ।
तस्स पस्सह दोसाइं, नियडिं च सुणेह मे ॥३७॥
वड्ढइ सोंडिया तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो ।
अयसो य अनिव्वाणं, सययं च असाहुया ॥३८॥
निच्चुव्विग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मई ।
तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ संवरं ॥३९॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसे ।
गिहत्था वि णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४०॥
एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विवज्जओ ।
तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ संवरं ॥४१॥

तवं कुव्वइ मेहावी, पणीयं वज्जए रसं ।
मज्ज-प्पमायविरओ, तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेगसाहुपूइयं ।
विउलं अत्थसंजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥
एवं तु स गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जओ ।
तारिसो मरणंते वि, आराहेइ संवरं ॥४४॥
आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसे ।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥
तवतेणे वयतेणे, रूवतेणे य जे नरे ।
आयारभावतेणे य, कुव्वइ देवकिव्विसं ॥४६॥
लद्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिव्विसे ।
तत्थावि से न याणाइ, किं मे किच्चा इमं फलं ॥४७॥
तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भिही एलमूअयं ।
नरयं तिरिक्खजोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥
एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं ।
अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं,
संजयाण बुद्धाण सगासे ।
तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइंदिए,
तिव्वलज्जगुणवं-विहरेज्जासि ॥५०॥ त्ति बेमि ॥

अह महल्लियायार कहा नामं छट्ठमज्झयणं

(धम्मत्थकाम)

नाण-दंसण-संपन्नं संजमे य तवे रयं ।
गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥
रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया ।
पुच्छंति निहुयप्पाणो, कहं मे आयारगोयरो ॥ २ ॥

तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूयसुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आयक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥
हंदि धम्मत्थकामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे ।
आयारगोयरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठियं ॥ ४ ॥
नन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं ।
विउलट्ठाणभाइस्स, न भूयं न भविस्सइ ॥ ५ ॥
सखुड्डगवियत्ताणं, वाहियाणं च जे गुणा ।
अखंडफुडिया कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥

दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झइ ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथत्ताओ भस्सइ ॥ ७ ॥
वयछक्कं[६] कायछक्कं[१२], अकप्पो[१३] गिहिभायणं[१४] ।
पलियंक[१५] निसेज्जा[१६] य, सिणाणं[१७] सोहवज्जणं[१८] ॥ ८ ॥

(१) तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं ।
अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥
जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा, न हणे नो वि घायए ॥१०॥
सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥११॥

(२) अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूया, नो वि अन्नं वयावए ॥१२॥
मुसावाओ य लोगंमि, सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥१३॥

(३) चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं ।
दंतसोहणमेत्तं पि, ओग्गहंसि अजाइया ॥१४॥

तं अप्पणा न गेरहंति, नो वि गिरहावए परं ।
अन्नं वा गिरहमाणं पि, नाणुजाणंति संजया ॥१५॥

(४) अबंभचरियं घोरं, पमायं दुरहिट्ठियं ।
नायरंति मुणी लोए, भेयाययणवज्जिणो ॥१६॥
मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१७॥

(५) विडमुब्भेइमं लोणं, तेल्लं सप्पिं च फाणियं ।
न ते सन्निहिमिच्छंति, नायपुत्त-वओरया ॥१८॥
लोहस्सेस अणुप्फासो, मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहीकामे, गिही पव्वइए न से ॥१९॥
जं पि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछणं ।
तं पि संजमलज्जट्ठा, धारंति परिहरंति य ॥२०॥
न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ॥२१॥
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खणपरिग्गहे ।
अवि अप्पणो वि देहंमि, नायरंति ममाइयं ॥२२॥

(६) अहो निच्चं तवोकम्मं, सव्वबुद्धेहिं वरिणयं ।
जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोयणं ॥२३॥

संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा ।
जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणियं चरे ॥२४॥
उदउल्लं बीयसंसत्तं, पाणा निव्वडिया महिं ।
दिआ ताइं विवज्जेज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ॥२५॥
एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं ।
सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइभोयणं ॥२६॥

(१) पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥२७॥
पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२८॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
पुढविकायसमारंभे, जावज्जीवाए वज्जए ॥२९॥

(२) आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥३०॥
आउकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३१॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
आउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३२॥

(३) जायतेयं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए।
तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओ वि दुरासयं ॥३३॥
पाईणं पडिणं वा वि, उड्ढं अणुदिसामवि।
अहे दाहिणओ वा वि, दहे उत्तरओ वि य ॥३४॥
भूयाणमेसमाघाओ, हव्ववाहो न संसओ।
तं पईवपयावट्ठा, संजया किंचि नारभे ॥३५॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
तेउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३६॥
अनिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जबहुलं चेयं, नेयं ताईहिं सेवियं ॥३७॥

(४) तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा।
न ते वीइउमिच्छंति वीयावेऊण वा परं ॥३८॥

जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं ।
न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति य ॥३६॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४०॥

(५) वणस्सइं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥४१॥
वणस्सइं विहिंसंतो हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४२॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वणस्सइ-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४३॥

(६-१२) तसकायं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥४४॥
तसकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४५॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तसकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४६॥

(१३) जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं, इसिणाहारमाइणि ।
ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अणुपालए ॥४७॥
पिंडं सेज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य ।
अकप्पियं न इच्छेज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४८॥

जे नियागं ममायंति, कीयमुद्देसियाहडं ।
वहं ते समणुजाणंति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥४६॥
तम्हा असणपाणाइं, कीयमुद्देसियाहडं ।
वज्जयंति ठियप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो ॥५०॥

(१४) कंसेसु कंसपाएसु, कुंडमोएसु वा पुणो ।
भुंजंतो असणपाणाइ आयारा परिभस्सइ ॥५१॥
सीओदगसमारंभे, मत्तधोयणछड्डणे ।
जाइं छंणंति भूयाइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५२॥
पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिया तत्थ न कप्पइ ।
एयमट्ठं न भुंजंति, निग्गंथा गिहिभायणे ॥५३॥

(१५) आसंदीपलियंकेसु, मंचमासालएसु वा ।
अणायरियमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥
नासंदीपलियंकेसु, न निसेज्जा न पीढए ।
निग्गंथाऽपडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५५॥
गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा ।
आसंदीपलियंको य, एयमट्ठं विवज्जिया ॥५६॥

(१६) गोयरग्गपविट्ठस्स, निसेज्जा जस्स कप्पइ ।
इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहियं ॥५७॥
विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो ।
वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ॥५८॥
अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वावि संकणं ।
कुसीलवड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥५९॥
तिण्हमन्नयरागस्स, निसेज्जा जस्स कप्पइ ।
जराए अभिभूयस्स[1] वाहियस्स तवस्सिणो[3] ॥६०॥

(१७) वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए ।
वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ॥६१॥
संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु य ।
जे उ भिक्खू सिणायंतो, सीएण उसिणेण वा ॥६२॥

तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा ।
जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाणमहिट्ठगा ॥६३॥
सिणाणं अदुवा कक्कं, लोद्धं पउमगाणि य ।
गायस्सुवट्टणट्ठाए, नायरंति कयाइ वि ॥६४॥

(१८) नगिणस्स वा वि मुंडस्स, दीहरोमनहंसिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स, किं विभूसाए कारियं ॥६५॥
विभूसावत्तियं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं ।
संसारसायरे घोरे, जेणं पडइ दुरुत्तरे ॥६६॥
विभूसावत्तियं चेयं, बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्ज-बहुलं चेयं, नेयं ताईहिं सेवियं ॥६७॥

खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो,
तवे रया संजमअज्जवे गुणे ।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं,
नवाइं पावाइं न ते करेंति ॥६८॥
सओवसंता अममा अकिंचणा,
सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो ।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा,
सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो ॥६९॥ त्ति बेमि ॥

अह वक्कसुद्धी नामं सत्तमज्झयणं

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पण्णवं ।
दोण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा य सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा य बुद्धेहिऽणाइण्णा, न तं भासेज्ज पण्णवं ॥ २ ॥

असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकक्कसं ।
समुप्पेहमसंदिद्धं, गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
एयं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं ।
स भासं सच्चमोसं पि, तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
वितहं पि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुण जो मुसं वए ॥ ५ ॥
तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ ।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ॥ ६ ॥
एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि संकिया ।
संपयाईयमट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥

अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा, एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥
अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
जत्थ संका भवे जं तु, एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए ।
निस्संकियं भवे जं तु, एवमेयं ति निद्दिसे ॥१०॥

तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ॥११॥
तहेव काणं काणे त्ति, पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहियं वा वि रोगि त्ति, तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥
एएणन्नेण अट्ठेण, परो जेणुवहम्मइ ।
आयारभावदोसन्नू, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥

तहेव होले गोले त्ति, साणे वा वसुले त्ति य ।
दमए दूहए वा वि, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥

अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिए त्ति य ।
पिउसिए भाइणेज्ज त्ति, धुए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥
हले हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले गोले वसुले त्ति, इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥

नामधेज्जेण णं बूया, इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥
अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
माउलो भाइणेज्ज त्ति, पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥

हे हो हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टे सामिय गोमिय ।
होले गोले वसुले त्ति, पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥
नामधेज्जेण णं बूया, पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥
पंचिंदियाणं पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं ।
जाव णं न विजाणेज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥

तहेव माणुसं पसुं, पक्खिं वा वि सरीसवं ।
थूले पमेइले वज्झे, पायमित्ति व नो वए ॥२२॥
परिवूढत्ति णं बूया, बूया उवचिए त्ति य ।
संजाए पीणिए वा वि, महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥

तहेव गाओ दोज्झाओ, दम्मा गोरहग त्ति य ।
वाहिमा रहजोग्गत्ति, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥

जुवं गवे त्ति णं बूया, धेणुं रसदय त्ति य ।
रहस्से महल्लए वा वि, वए संवहणे त्ति य ॥२५॥
तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२६॥

अलं पासायखंभाणं, तोरणाणं गिहाण य ।
फलिहग्गलनावाणं, अलं उदगदोणिणं ॥२७॥
पीढए चंगबेरे य, नंगले मइयं सिया ।
जंतलट्ठी व नाभी वा, गंडिया व अलं सिया ॥२८॥
आसणं सयणं जाणं, होज्जा वा किंचुवस्सए ।
भूओवघाइणिं भासं, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२९॥

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥

जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया ।
पयायसाला विडिमा, वए दरिसणित्ति य ॥३१॥
तहा फलाइं पक्काइं, पायखज्जाइं नो वए ।
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइं ति नो वए ॥३२॥
असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वडिमा फला ।
वएज्ज बहुसंभूया, भूयरूवत्ति वा पुणो ॥३३॥

तहेवोसहीओ पक्काओ, नीलियाओ छवी इय ।
लाइमा भज्जिमाओ त्ति, पिहुखज्जत्ति नो वए ॥३४॥
रूढा बहुसंभूया, थिरा ऊसढा वि य ।
गब्भियाओ पसूयाओ, संसाराओ त्ति आलवे ॥३५॥
तहेव संखडिं नच्चा, किच्चं कज्जं त्ति नो वए ।
तेणगं वा वि वज्झे त्ति, सुतित्थे त्ति य आवगा ॥३६॥
संखडिं संखडिं बूया, पणियट्ठत्ति तेणगं ।
बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥३७॥
तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्जत्ति नो वए ।
नावाहिं तारिमाओ त्ति, पाणिपेज्जत्ति नो वए ॥३८॥

बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
बहुवित्थडोदगा यावि, एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३९॥

तहेव सावज्जं जोगं, परस्सट्ठाए निट्ठियं ।
कीरमाणं ति वा नच्चा, सावज्जं नालवे मुणी ॥४०॥
सुकडे त्ति सुपक्के त्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥
पयत्तपक्कत्ति व पक्कमालवे,
पयत्तछिन्नत्ति व छिन्नमालवे ।
पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउयं,
पहारगाढत्ति व गाढमालवे ॥४२॥
सव्वुक्कसं परग्घं वा, अउलं नत्थि एरिसं ।
अविक्कियमवत्तव्वं, अवियत्तं चेव नो वए ॥४३॥
सव्वमेयं वइस्सामि, सव्वमेयं ति नो वए ।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एव भासेज्ज पन्नवं ॥४४॥

सुक्कीयं वा सुविक्कीयं, अकिज्जं किज्जमेव वा ।
इमं गेण्ह इमं मुंच, पणियं नो वियागरे ॥४५॥
अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा
पणियट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं वियागरे ॥४६॥
तहेवासंजयं धीरो, आस एहि करेहि वा ।
सयं, चिट्ठ, वयाहि त्ति, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥४७॥

बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो ।
न लवे असाहुं साहु त्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥४८॥
नाण-दंसण-संपन्नं, संजमे य तवे रयं ।
एवं गुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे ॥४९॥

देवाणं मणुयाणं च, तिरियाणं च वुग्गहे ।
अमुयाणं जओ होउ, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥
वाओ वुट्ठं व सीउण्हं, खेमं धायं सिवं त्ति वा ।
कया णु होज्जा एयाणि, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥
तहेव मेहं व णहं व माणवं,
न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।
संमुच्छिए उन्नए या पओए,
वएज्ज वा वुट्ठ बलाहय त्ति ॥५२॥
अंतलिक्ख त्ति णं बूया, गुज्झाणुचरिय त्ति य ।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतं ति आलवे ॥५३॥
तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा,
ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
से कोह-लोह-भय-हास-माणओ,
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥
सुवक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी,
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
मियं अदुट्ठं अणुवीए भासए,
सयाण मज्जे लहइ पसंसणं ॥५५॥
भासाए दोसे य गुणे य जाणिया,
तीसे य दुट्ठे परिवज्जए सया ।
छसु संजए सामणिए सया जए,
वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥
परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए,
चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
स निद्धुणे धुन्नमलं पुरेकडं,
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥ त्ति बेमि ॥

अह आयारपणिहिनामं अट्ठमज्झयणं

आयारपणिहिं लद्धुं, जहा कायव्व भिक्खुणा ।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
पुढवि-दग-अगणि-मारुअ, तणरुक्ख-सबीयगा ।
तसा य पाणा जीव त्ति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥
तेसिं अच्छणजोएण, निच्चं होयव्वयं सिया ।
मणसा काय-वक्केण, एवं भवइ संजए ॥ ३ ॥
पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, नेव भिंदे न संलिहे ।
तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
सुद्धपुढवीए न निसीए, ससरक्खम्मि य आसणे ।
पमज्जित्तु निसीएज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ॥ ५ ॥

सीओदगं न सेवेज्जा, सिलावुट्ठं हिमाणि य ।
उसिणोदगं तत्तफासुयं, पडिगाहेज्ज संजए ॥ ६ ॥
उदउल्लं अप्पणो कायं नेव पुंछे न संलिहे ।
समुप्पेह तहाभूयं, नो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥

इंगालं अगणिं अच्चिं, अलायं वा सजोइयं ।
न उंजेज्जा न घट्टेज्जा, नो णं निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥

तालियंटेण पत्तेण, साहाए विहुणेण वा ।
न वीएज्ज अप्पणो कायं, बाहिरं वा वि पोग्गलं ॥ ९ ॥

तणरुक्खं न छिंदेज्जा, फलं मूलं व कस्सइ ।
आमगं विविहं बीयं, मणसा वि न पत्थए ॥ १० ॥

गहणेसु न चिट्ठेज्जा, बीएसु हरिएसु वा ।
उदगंमि तहा निच्चं, उत्तिंग-पणगेसु वा ॥११॥

तसे पाणे न हिंसेज्जा, वाया अदुव कम्मुणा ।
उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥

अट्ठ सुहुमाइं पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए ।
दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥
कयराइं अट्ठ सुहुमाइं ?, जाइं पुच्छेज्ज संजए ।
इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खेज्ज वियक्खणे ॥१४॥
सिणेहं[1] पुप्फसुहुमं[2] च, पाणु[3] त्तिंगं[4] तहेव य ।
पणगं[5] बीय[6] हरियं[7] च, अंडसुहुमं[8] च अट्ठमं ॥१५॥
एवमेयाणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए ।
अप्पमत्ते जए निच्चं, सव्विंदियसमाहिए ॥१६॥
धुवं च पडिलेहेज्जा, जोगसा पायकंबलं ।
सेज्जमुच्चारभूमिं च, संथारं अदुवासणं ॥१७॥
उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाणजल्लियं ।
फासुयं पडिलेहित्ता, परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥

पविसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
जयं चिट्ठ मियं भासे, न य रूवेसु मणं करे ॥१९॥

बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पेच्छइ ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥
सुयं वा जइ वा दिट्ठं, न लविज्जोवघाइयं ।
न य केण उवाएणं, गिहिजोगं समायरे ॥२१॥
निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दगं पावगं ति वा ।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निद्दिसे ॥२२॥

न य भोयणम्मि गिद्धो, चरे उंछं अयंपिरो ।
अफासुयं न भुंजेज्जा, कीयमुद्देसियाहडं ॥२३॥
सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, अणुमायं पि संजए ।
मुहाजीवी असंबद्धे, हवेज्जा जगनिस्सिए ॥२४॥
लूहवित्ती सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
आसुरत्तं न गच्छेज्जा, सोच्चा णं जिणसासणं ॥२५॥

कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए ।
दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहियासए ॥२६॥
खुहं पिवासं दुस्सेज्जं, सीउण्हं अरइं भयं ।
अहियासे अव्वहिओ, देह-दुक्खं महाफलं ॥२७॥

अत्थंगयंमि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए ।
आहारमाइयं सव्वं, मणसा वि न पत्थए ॥२८॥
अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे ।
हवेज्ज उयरे दंते, थोवं लद्धुं, न खिंसए ॥२९॥
न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुयलाभे न मजेज्जा, जच्चा तवस्सिबुद्धिए ॥३०॥
से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मियं पयं ।
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीयं तं न समायरे ॥३१॥
अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे ।
सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥
अमोहं वयणं कुज्जा, आयरियस्स महप्पणो ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥३३॥
अधुवं जीवियं नच्चा, सिद्धिमग्गं वियाणिया ।
विणियट्टेज्ज भोगेसु, आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥

बलं थामं च पेहाए, सद्धामारोग्गमप्पणो ।
खेत्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं न जुंजए ॥३५॥
जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥३६॥

कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं ।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो ॥३७॥
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥३८॥
उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे ।
मायं च उज्जुभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥३९॥

कोहो य माणो य अणिग्गहीया,
माया य लोभो य पवड्ढमाणा ।
चत्तारि एए कसिणा कसाया,
सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥४०॥

राइणिएसु विणयं पउंजे,
धुवसीलं सययं न हावइज्जा ।
'कुम्मोव्व' अल्लीणपलीणगुत्तो,
परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४१॥

निद्दं च न बहु मन्नेजा, सप्पहासं विवज्जए ।
मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया ॥४२॥
जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं ।
जुत्तो य समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥४३॥
इहलोग-पारत्त-हियं, जेणं गच्छइ सोग्गइं ।
बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा, पुच्छेज्जत्थविणिच्छयं ॥४४॥

हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए ।
अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥४५॥

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न य ऊरुं समासेज्जा, चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४६॥
अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स अंतरा ।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा, मायामोसं विवज्जए ॥४७॥
अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पेज्ज वा परो ।
सव्वसो तं न भासेज्ज, भासं अहियगामिणिं ॥४८॥
दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुण्णं वियं जियं ।
अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ॥४९॥
आयार-पन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं ।
वायविक्खलियं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥५०॥
नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं ।
गिहिणो तं न आइक्खे, भूयाहिगरणं पयं ॥५१॥

अन्नट्ठं पगडं लयणं, भएज्जा सयणासणं ।
उच्चार-भूमिसंपन्नं, इत्थी-पसुविवज्जियं ॥५२॥
विवित्ता य भवे सेज्जा, नारिणं न लवे कहं ।
गिहि-संथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ॥५३॥
जहा कुक्कुड-पोयस्स, निच्चं कुललओ भयं ।
एवं खु बंभयारिस्स, इत्थी-विग्गहओ भयं ॥५४॥
चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुअलंकियं ।
भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५५॥
हत्थ-पाय-पडिच्छिन्नं, कण्ण-नास-विकप्पियं ।
अवि वाससइं नारिं, बंभयारी विवज्जए ॥५६॥

विभूसा इत्थिसंसग्गो, पणीय-रस-भोयणं ।
नरस्स-त्तगवेसिस्स, 'विसं तालउडं जहा' ॥५७॥
अंग-पच्चंग-संठाणं, चारुल्लवियपेहियं ।
इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं ॥५८॥
विसएसु मणुन्नेसु, पेमं नाभिनिवेसए ।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय, परिणामं पोग्गलाण य ॥५९॥
पोग्गलाण परिणामं, तेसिं नच्चा जहा तहा ।
विणीय-तण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥६०॥
जाए सद्धाए निक्खंतो, परियायट्ठाणमुत्तमं ।
तमेव अणुपालेज्जा, गुणे आयरियसम्मए ॥६१॥

तवं चिमं संजमजोगयं च
सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।
'सूरे व सेणाए' समत्तमाउहे
अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६२॥
सज्झाय-सज्झाणरयस्स ताइणो
अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं
'समीरियं रुप्पमलं व जोइणा' ॥६३॥
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए
सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायई कम्मघणम्मि व अवगए,
कसिणब्भ-पुडावगमेव चंदिमे ॥६४॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह विणयसमाही नामं णवमज्झयणं

(पढमो उद्देसो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो
'फलं व कीयस्स वहाय होइ' ॥ १ ॥

जे यावि मंदित्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा
करंति आसायणं ते गुरूणं ॥ २ ॥

पगईए मंदा वि भवंति एगे,
डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया।
आयारमंता गुणसुट्ठियप्पा,
जे हीलिया 'सिहिरिव भास कुज्जा' ॥ ३ ॥

जे यावि 'नागं डहरं ति' नच्चा,
आसायए से अहियाय होइ।
एवायरियं पि हु हिलयंतो,
नियच्छइ जाइपहं खु मंदे ॥ ४ ॥

'आसिविसो वा वि परं सुरुट्ठो,'
किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि-आसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा,
आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी,
एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ॥ ६ ॥

सिया हु से पावय नो डहेज्जा,
आसिविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिया विसं हालहलं न मारे,
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥

जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे,
सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं,
एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ॥ ८ ॥

सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे,
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं,
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि-आसायण नत्थि मोक्खो।
तम्हा अणाबाह-सुहाभिकंखी,
गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥१०॥

जहाहियग्गी जलणं नमंसे,
नाणा-हुई-मंत-पयाभिसित्तं।
एवायरियं उवचिट्ठएज्जा,
अणंत-नाणोवगओवि संतो ॥११॥

जस्संतिए धम्मपयाइं सिक्खे,
तस्संतिए वेणइयं पउंजे।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ,
कायग्गिरा भो मणसा य निच्चं ॥१२॥
लज्जा—दया—संजम—बंभचेरं,
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति,
ते हं गुरू सययं पूययामि ॥१३॥
'जहा निसंते तवणच्चिमाली',
पभासइ केवल-भारहं तु।
एवायरिओ सुय—सील—बुद्धिए,
विरायई 'सुर-मज्झे व इंदो' ॥१४॥
जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो,
नक्खत्त-तारागण-परिवुडप्पा।
खे सोहइ विमले अब्भमुक्के,
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥१५॥
महागरा आयरिया महेसी,
समाहिजोगे सुय-सील-बुद्धिए।
संपाविउकामे अणुत्तराइं,
आराहए तोसए धम्मकामी ॥१६॥
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं,
सुस्सूसए आयरियऽप्पमत्तो।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे,
सो पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥
त्ति बेमि ॥

णवमज्झयणे—

(बीओ उद्देसो)

'मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स,
खंधाउ पच्छा समुवेंति साहा।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता,
तओ से पुप्फं च फलं रसो य' ॥ १ ॥
एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो से मोक्खो।
जेण कित्ति सुयं सिग्घं, निस्सेसं चाभिगच्छइ ॥ २ ॥
जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे।
वुज्झइ से अविणीयप्पा, 'कट्ठं सोयगयं जहा' ॥ ३ ॥
विणयं पि जो उवाएण, चोइओ कुप्पइ नरो।
दिव्वं सो सिरिमेज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥
तहेव अविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता, आभियोगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥
तहेव सुविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
तहेव अविणीयप्पा, लोगंसि नरनारिओ।
दीसंति दुहमेहंता, छाया ते विगलिंदिया ॥ ७ ॥
दंड-सत्थ-परिजुण्णा, असब्भ-वयणेहिं य।
कलुणा विवन्नच्छंदा, खुप्पिवासाइपरिगया ॥ ८ ॥
तहेव सुविणीयप्पा, लोगंसि नरनारिओ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
तहेव अविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति दुहमेहंता, आभियोगमुवट्ठिया ॥१०॥

तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥११॥

जे आयरिय-उवज्झायाणं, सुस्सूसा वयणंकरा ।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति,'जलसित्ता इव पायवा' ॥१२॥

अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा नेउणियाणि य ।
गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा ॥१३॥

जेण बंधं वहं घोरं, परियावं च दारुणं ।
सिक्खमाणा नियच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिया ॥१४॥

ते वि तं गुरुं पूयंति, तस्स सिप्पस्स कारणा ।
सक्कारंति णमंसंति, तुट्ठा निद्देस-वत्तिणो ॥१५॥

किं पुण जे सुयग्गाही, अणंतहियकामए ।
आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६॥

नीयं सेज्जं गइं ठाणं, नीयं च आसणाणि य ।
नीयं च पाए वंदेज्जा, नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥१७॥

संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणामवि ।
खमेह अवराहं मे, वएज्ज न पुणो त्ति य ॥१८॥

'दुग्गओ वा पओएणं, चोइओ वहइ रहं ।'
एवं दुबुद्धि किच्चाणं, वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ ॥१९॥

आलवंते लवंते वा, न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
मोत्तूणं आसणं धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥२०॥

कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
तेहिं तेहिं उवाएहिं, तं तं संपडिवायए ॥२१॥

विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणीयस्स य ।
जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छइ ॥२२॥

जे यावि चंडे मइ-इड्ढि-गारवे,
पिसुणे नरे साहसहीण-पेसणे ।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए,
असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥२३॥
णिद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं,
सुयत्थधम्मा विणयंमि कोविया ।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं,
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥२४॥
॥ त्ति बेमि ॥

णवमज्झयणे–

(तइओ उद्देसो)

आयरियग्गिमिवाहियग्गी,
सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा ।
आलोइयं इंगियमेव नच्चा,
जो छंदमाराहयई स पुज्जो ॥ १ ॥
आयारमट्ठा विणयं पउंजे,
सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो,
गुरुं तं नासाययई स पुज्जो ॥ २ ॥
राइणिएसु विणयं पउंजे,
डहरा वि य जे परियाय जिट्ठा ।
नीयत्तणे वट्टइ सच्चवाई,
ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥

अन्नायउंछं चरई विसुद्धं,
जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं ।
अलद्धुयं नो परिदेवएज्जा,
लद्धुं न विकत्थई स पुज्जो ॥ ४ ॥

संथार–सेज्जाऽऽसण–भत्त-पाणे,
अप्पिच्छया अइलाभे वि संते ।
जो एवमप्पाणभित्तोसएज्जा,
संतोस-पाहन्न-रए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउं आसाइ कंटया,
अओमया उच्छहया नरेणं ।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए,
वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा उ हवंति कंटया,
अओमया ते वि तओ सुउद्धरा ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि,
वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥

समावयंता वयणाभिघाया,
कण्णं गया दुम्मणियं जणंति ।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे,
जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परंमुहस्स,
पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च,
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

अलोलुए अक्कुहए अमाई
अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
नो भावए नो वि य भावियप्पा,
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥
गुणेहि साहू, अगुणेहिऽसाहू,
गिण्हाहि साहू गुण मुंचऽसाहू ।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं,
जो राग-दोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥
तहेव डहरं व महल्लगं वा,
इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा,
थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥
जे माणिया सययं माणयंति,
'जत्तेण कन्नं व निवेसयंति' ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी,
जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥
तेसिं गुरूणं गुणसागराणं
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
चरे मुणी पंच-रए तिगुत्तो,
चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥१४॥
गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी,
जिणवयनिउणे अभिगम-कुसले ।
धुणिय रय-मलं पुरेकडं,
भासुरमउलं गइं गए ॥१५॥
॥ त्ति बेमि॥

णवमज्झयणे –

(चउत्थो उद्देसओ)

सुयं मे आउसं !

तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता—
कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ?
इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता—

तंजहा—

१ विणयसमाही २ सुयसमाही ३ तवसमाही ४ आयारसमाही

विणए सुए तवे य, आयारे निच्च पंडिया ।
अभिरामयंति अप्पाणं, जे भवंति जिइंदिया ॥ १ ॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ—

तं जहा—

१ अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ २ सम्मं संपडिवज्जइ ३ वेयमाराहयइ
४ न य भवइ अत्तसंपग्गहिए । चउत्थं पयं भवइ—
भवइ य एत्थ सिलोगो—
पेहेइ हियाणुसासणं, सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठए ।
न य माणमएण मज्जइ, विणयसमाही आययट्ठिए । ॥ २ ॥

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ—

तंजहा—

१ सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।

२ एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।

३ अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
४ ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ।
चउत्थं पयं भवइ । भवइ य एत्थ सिलोगो—

नाणमेगग्गचित्तो य, ठिओ य ठावइ परं ।
सुयाणि य अहिज्झित्ता, रओ सुयसमाहिए ॥ ३ ॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ ।
तं जहा—
१ नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ।
२ नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ।
३ नो कित्ति-वन्न-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ।
४ नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा । चउत्थं पयं भवइ—
भवइ य एत्थ सिलोगो ।

विविहगुणतवोरए य निच्चं, भवइ निरासए निज्जरट्ठिए ।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए ॥ ४ ॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ ।
तंजहा—
१ नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा ।
२ नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा ।
३ नो कित्ति-वन्न-सद्द-सिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा ।
४ नन्नत्थ आरहंतेहिं हेउहिं आयारमहिट्ठेज्जा । चउत्थं पयं भवइ—
भवइ य एत्थ सिलोगो—

जिणवयण-रए अतिंतणे,
पडिपुण्णाययमाययट्ठिए ।
आयार—समाहि—संवुडे,
भवइ य दंते भावसंधए ॥ ५ ॥

अभिगम चउरो समाहिओ,
सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।
विउल-हियं सुहावहं पुणो,
कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाइ-मरणाउ मुच्चइ,
इत्थत्थं च चएइ सव्वसो ।
सिद्धे वा भवइ सासए,
देवो वा अप्परए महिड्ढिए ॥ ७ ॥
त्ति बेमि ॥

अह सभिक्खू नामं दसमज्झयणं

निक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे,
णिच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे,
वंतं नो पडियायइ जे स भिक्खू ॥ १ ॥

पुढविं न खणे न खणावए,
सीओदगं न पिए न पियावए ।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं,
तं न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥ २ ॥

अनिलेण न वीए न वीयावए,
हरियाणि न छिंदे न छिंदावए ।
बीयाणि सया विवज्जयंतो,
सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥ ३ ॥

वहणं तस-थावराण होइ,
पुढवी-तण-कट्ठ-निस्सियाणं ।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे,
नो वि पए न पयावए जे स भिक्खू ॥ ४ ॥

रोइय— नायपुत्त-वयणे,
अप्पसमे मन्नेज्ज छप्पि काए ।
पंच य फासे महव्वयाइं,
पंचासव-संवरए जे स भिक्खू ॥ ५ ॥

चत्तारि वमे सया कसाए,
धुवजोगी य हवेज्ज बुद्धवयणे ।
अहणे निज्जायरूवरयए,
गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥ ६ ॥

सम्मदिट्ठी सया अमूढे,
अत्थि हु नाणे तव-संजमे य ।
तवसा धुणइ पुराणपावगं,
मण-वय-कायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥ ७ ॥

तहेव असणं पाणगं वा,
विविहं खाइम-साइमं लभित्ता ।
होही अट्ठो सुए परे वा,
तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥ ८ ॥

तहेव असणं पाणगं वा,
विविह-खाइम-साइमं लभित्ता ।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे,
भोच्चा सज्झायरए य जे स भिक्खू ॥ ९ ॥

न य वुग्गहियं कहं कहिज्जा,
न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
संजम-धुव-जोग-जुत्ते,
उवसंते अविहेडए जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु गामकंटए,
अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य ।
भय-भेरव-सद्द-सप्पहासे,
समसुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे,
नो भीयए भय-भेरवाइं दिस्स ।
विविहगुण-तवोरए य निच्चं,
न सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू ॥१२॥

असइं वोसट्ठ-चत्त-देहे,
अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा ।
पुढविसमे मुणी हवेज्जा,
अनियाणे अकोउहल्ले य जे स भिक्खू ॥१३॥

अभिभूय काएण परीसहाइं,
समुद्धरे जाइ-पहाउ अप्पयं ।
विइत्तु जाइ-मरणं महब्भयं,
तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥

हत्थसंजए पायसंजए,
वायसंजए संजइंदिए ।
अज्झप्परए सुसमाहियप्पा,
सुत्तत्थं च वियाणइ जे स भिक्खू ॥१५॥

उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे,
अन्नायउञ्छं पुलनिप्पुलाए ।
कय-विक्कय-सन्निहिओ विरए,
सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू ॥१६॥
अलोल-भिक्खू न रसेसु गिद्धे,
उंछं चरे जीविय नाभिकंखे ।
इड्ढिं च सक्कारण-पूयणं च,
चयइ ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू ॥१७॥
न परं वएज्जासि अयं कुसीले,
जेणऽन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा ।
जाणिय पत्तेयं पुण्ण-पावं,
अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥१८॥
न जाइमत्ते न य रूवमत्ते,
न लाभमत्ते न सुएण मत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जयंतो,
धम्मज्झाणरए य जे स भिक्खू ॥१९॥
पवेयए अज्ज-पयं महामुणी,
धम्मे ठिओ ठावयइ परं पि ।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं,
न यावि हासं कुहए जे स भिक्खू ॥२०॥
तं देहवासं असुइं असासयं,
सया चए निच्चहिय-ट्ठियप्पा ।
छिंदित्तु जाइ-मरणस्स बंधणं,
उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥२१॥
त्ति बेमि ॥

रइवक्का णामा पढमा चूलिया

इह खलु भो !

पव्वइएणं उप्पन्नदुक्खेणं संजमे अरइसमावन्नचित्तेणं ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव—

हयरस्सि-गयंकुस-पोयपडागा-भूयाइं—

इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहियव्वाइं भवंति ।

तं जहा—

हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी ॥ १ ॥

लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा ॥ २ ॥

भुज्जो असाय-बहुला मणुस्सा ॥ ३ ॥

इमं च मे दुक्खं न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ ॥ ४ ॥

ओमजणपुरक्कारे ॥ ५ ॥

वंतस्स य पडिआयणं ॥ ६ ॥

अहरगइ-वासोवसंपया ॥ ७ ॥

दुल्लहे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं ॥८॥

आयंके से वहाय होइ ॥ ९ ॥

संकप्पे से वहाय होइ ॥१०॥

सोवक्केसे गिहिवासे निरुवक्केसे परियाए ॥११॥

बंधे गिहिवासे मोक्खे परियाए ॥१२॥

सावज्जे गिहिवासे अणवज्जे परियाए ॥१३॥

बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥१४॥

पत्तेयं पुण्णपावं ॥१५॥

अणिच्चे खलु भो !

मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले ॥१६॥

बहुं च खलु भो ! पावं कम्मं पगडं ॥१७॥

पावाणं च खलु भो !

कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं—
वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता।
अठारसमं पयं भवइ ॥१८॥ भवइ य एत्थ सिलोगो—

जया य चयइ धम्मं, अणज्जो भोगकारणा।
से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नावबुज्झइ ॥ १ ॥
जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं।
सव्व-धम्म-परिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥
जया य वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो।
देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥
जया य पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो।
राया व रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥
जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो।
सेट्ठिव्व कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥
जया य थेरओ होइ, समइक्कंत-जोव्वणो।
मच्छोव्व गलं गिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥
जया य कुकुडंबस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ।
हत्थी व बंधणे बद्धो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥
पुत्त-दार-परिकिण्णो, मोहसंताण-संतओ।
पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
अज्ज याहं गणी होंतो, भावियप्पा बहुस्सुओ।
जइऽहं रमंतो परियाए, सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥

देवलोगसमाणो उ, परियाओ महेसिणं ।
रयाणं अरयाणं च, महानरय-सारिसो ॥१०॥

अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं,
रयाण परियाए तहारयाणं ।
निरयोवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं,
रमेज्ज तम्हा परियाए पंडिए ॥११॥

धम्माउ भट्ठं सिरिओववेयं,
जन्नग्गि विज्झायमिवप्पतेयं ।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला,
दाढुड्ढियं घोरविसं व नागं ॥१२॥

इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती,
दुन्नामधेज्जं च पिहुज्जणम्मि ।
चुयस्स धम्माओ अ म्मसेविणो,
संभिन्न-वित्तस्स य हेट्ठओ गई ॥१३॥

भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा,
तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं ।
गइं च गच्छे अणहिज्झियं दुहं,
बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो,
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवमं झिज्झइ सागरोवमं,
किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ? ॥१५॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ,
असासया भोगपिवास जंतुणो ।
न चे सरीरेण इमेणऽवस्सइ,
अवस्सइ जीविय-पज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ,
चएज्ज देहं न उ धम्मसासणं।
तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया,
उवेंतवाया व सुदंसणं गिरिं ॥१७॥

इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो,
आयं उवायं विविहं वियाणिया।
काएण वाया अदु माणसेणं,
तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि ॥१८॥
॥ त्ति बेमि ॥

विवित्त-चरिआ णामा बीया चूलिया

चूलियं तु पवक्खामि, सुयं केवलिभासियं।
जं सुणित्तु सपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥
अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि, पडिसोय-लद्धलक्खेणं।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउ कामेणं ॥ २ ॥
अणुसोयसुहो लोगो, पडिसोओ आसवो सुविहियाणं।
अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥
तम्हा आयारपरक्कमेणं, संवर-समाहि-बहुलेणं।
चरिया गुणा य नियमा य, होंति साहूण दट्ठव्वा ॥ ४ ॥

अणिएय-वासो समुयाणचरिया,
अन्नायउंछं पइरिक्कया य।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य,
विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥

आइण्ण-ओमाणविवज्जणा य,
ओसन्न—दिट्ठाहड—भत्तपाणे ।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू,
तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ॥ ६ ॥

अमज्जमंसासि अमच्छरीया,
अभिक्खणं निव्विगइं गया य ।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी,
सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥

न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं,
सेज्जं निसेज्जं तह भत्तपाणं ।
गामे कुले वा नगरे व देसे,
ममत्तभावं न कहिंचि कुज्जा ॥ ८ ॥

गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा,
अभिवायणं वंदण-पूयणं वा ।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसेज्जा,
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥

न या लभेज्जा निउणं सहायं,
गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो,
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥

संवच्छरं वावि परं पमाणं,
बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा ।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू,
सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥

जो पुव्वरत्तावरत्तकाले,
संपेहइ अप्पगमप्पएणं ।
किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं,
किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥१२॥
किं मे परो पासइ किं च अप्पा,
किं वाहं खलियं न विवज्जयामि ।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो,
अणागयं नो पडिवंध कुज्जा ॥१३॥
जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं,
काएण वाया अदु माणसेणं ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा,
आइएणओ खिप्पमिव क्खलीणं ॥१४॥
जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स
धिइमओ सपुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी,
सो जीवइ संजमजीविएण ॥१५॥
अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो,
सव्विदिएहिं सुसमाहिएहिं ।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ,
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥
॥ त्ति बेमि ॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(२)

उत्तरज्झयणसुत्तं

[कालियं]

उत्तरज्झयण-महत्तं

जे किर भव-सिद्धीया, परित्त-संसारिआय भविआय ।
ते किर पढंति धीरा, छत्तीसं उत्तरज्झयणे ॥

जे हुंति अभव-सिद्धीया, गंथिअ-सत्ता अणंत-संसारा ।
ते संकिलिट्ठ-कम्मा, अभविय उत्तरज्झाए ॥

—'जोग-विहीए वहिया, एए जो लहइ सुत्तमत्थं वा ।
भासेइ भविय-जणो, सो पावेइ निज्जरा बहुआ ॥

जस्सारद्धा एए, कहवि समत्तंति विग्घरहियस्स ।
सो लक्खिज्जइ भव्वो, पुव्वरिसी एवं भासंति ॥'

तम्हा जिण-पण्णत्ते, अणंत-गम-पज्जवेहि संजुत्ते ।
अज्झाए जहाजोगं, गुरुपसाया अहिज्झिज्जा ॥

—श्री भद्रबाहु निर्युक्ति—५५७, ५५८, (दीपिका १-२) ५५९ ।

नामकरणं—

कमउत्तरेण पगयं, आयारस्सेव उवरिमाइं तु ।
तम्हा उ उत्तरा खलु, अज्झयणा हुंति णायव्वा ॥

उद्धरणं—

अंगप्पभवा जिण,—भासिया य पत्तेयबुद्धसंवाया ।
बंधे मुक्खे य कया, छत्तीसं उत्तरज्झयणा ॥

विसयनिद्देसो--

पढमे विणओ बीए, परीसहा दुल्लहंगया तइए ।
अहिगारो य चउत्थे, होइ पमायप्पमाएत्ति ॥
मरणविभत्ती पुण पंचमम्मि, विज्जाचरणं च छट्ठ अज्झयणे ।
रसगेही-परिच्चाओ, सत्तमे अट्ठम्मि अलाभे ॥
निक्कंपया य नवमे, दसमे अणुसासणोवमा भणिया ।
इक्कारसमे पूया, तवरिद्धी चेव बारसमे ॥
तेरसमे य नियाणं, अनियाणं चेव होइ चउदसमे ।
भिक्खुगुणा पन्नरसे, सोलसमे बंभगुत्तीओ ॥
पावाण-वज्जणा खलु, सत्तरसे भोग्गिडि्ढविजहणऽट्ठारे ।
एगुणि अप्परिकम्मे, अणाहया चेव वीसइमे ॥
चरिया य विचित्ता इक्कवीसि, बावीसिमे थिरं चरणं ।
तेवीसइमे धम्मो, चउवीसइमे य समिइओ ॥
बंभगुणा पन्नवीसे, सामायारी य होइ छव्वीसे ।
सत्तावीसे असढया, अट्ठावीसे य मुक्खगई ॥
एगुणतीसे आवस्सगप्पमाओ, तवो अ होइ तीसइमे ।
चरणं च इक्कतीसे, बत्तीसि पमायठाणाइं ॥
तेत्तीसइमे कम्मं, चउतीसइमे य हुंति लेसाओ ।
भिक्खुगुणा पणतीसे, जीवाजीवा य छत्तीसे ॥

श्री भद्रबाहु निर्युक्ति—३, ४, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५ २६

विषय-संबंध-निर्देशः—

प्रथमेऽध्ययने विनयस्य वर्णनम् । 'विनयो हि परीषह-महासैन्य-समर-समाकुलितमनोभिरपि कदाऽपि नोल्लङ्घनीयः' इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—
द्वितीयं परीषहाध्ययनम् ।

द्वितीयेऽध्ययने परीषह-सहन-वर्णनम् । परीषह-सहनं च मानुषत्वादि-चतुरंग-दुर्लभत्वं विज्ञायैव भवतीति सम्बन्धेनाऽऽयातं तृतीयं **चतुरंगीयमध्ययनम्** ।

तृतीयेऽध्ययने मानुषत्वादि चतुरंगदुर्लभत्वस्य वर्णनम् । 'दुर्लभानि मानुषत्वादि चतुरंगानि प्राप्य धीधनैःप्रमादो हेयोऽप्रमादश्चोपादेयः' इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—
चतुर्थं प्रमादाप्रमादनामकमध्ययनम् ।

चतुर्थेऽध्ययने प्रमादाप्रमादहेयोपादेयवर्णनम् । प्रमादःसर्वदा सर्वथा हेयः, अप्रमादश्च मरणकालेऽपि विधेयः, स च मरणविभागपरिज्ञानत एव भवति, ततो हि बालमरणादि हेयं हीयते पंडितमरणादि चोपादेयमुपादीयते, तथा च तत्त्वतोऽप्रमत्तता जायते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—**पंचममकाममरणीयमध्ययनम्** ।

पंचमेऽध्ययने बालमरणपरित्यागस्य पंडितमरणस्वीकृतेश्च वर्णनम् ।
पंडितमरणं च विरतानामेव । न चैते विद्याचरणविकला इति तत् स्वरूपमनेनोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—**षष्ठं क्षुल्लकनिर्ग्रन्थीयमध्ययनम्** ।

षष्ठेऽध्ययने निर्ग्रन्थत्वस्य वर्णनम् ।
निर्ग्रन्थत्वं च रसगृद्धिपरिहारादेव जायते—स च विपक्षेऽपायदर्शनात् तच्च दृष्टान्तोपन्यासद्वारेणैव परिस्फुटं भवतीति रसगृद्धिदोषदर्शकोरभ्रादिदृष्टान्तप्रतिपादकं **सप्तममुरभ्रीयमध्ययनम्** ।

सप्तमेऽध्ययने रसगृद्धेरपायबहुलत्वमभिधाय तत्त्यागस्य वर्णनम् ।
स च निर्लोभस्यैव भवतीति इह निर्लोभत्वमुच्यते, इत्यनेन सम्बन्धेनायात—
अष्टमं कापिलीयमध्ययनम् ।

अष्टमेऽध्ययने निर्लोभत्वस्य वर्णनम् । निर्लोभिनश्च, इहैव देवेन्द्रादिपूजोपजायत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—**नमिप्रव्रज्येति नवममध्ययनम्** ।

नवमेऽध्ययने धर्मचरणं प्रति निष्कम्पत्वस्य वर्णनम् । तच्चानुशासनादेव प्रायो भवति, न च तदुपमां विना स्पष्टमिति प्रथमतः उपमाद्वारेणानुशासनाभिधायकं—**द्रुमपत्रकाभिधानं दशममध्ययनम्** ।

दशमेऽध्ययने, अप्रमादार्थमनुशासनस्य वर्णनम्, तच्च विवेकिनैव भावयितुं शक्यं विवेकश्च बहुश्रुत-पूजात उपजायत इति बहुश्रुत-पूजोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातम**ेकादशमध्ययनम्** ।

एकादशेऽध्ययने बहुश्रुत-पूजाया वर्णनम् । बहुश्रुतेनापि तपसि यत्नो विधेय इति ख्यापनार्थं तपःसमृद्धिरुपवर्ण्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—
हरिकेशीयं द्वादशमध्ययनम् ।

द्वादशेऽध्ययने तपसः समृद्धेर्वर्णनम् ।
तपःसमृद्धि प्राप्तावपि निदानं परिहर्तव्यमिति दर्शयितुं यथा तन्महापायहेतुस्तथा चित्तसंभूतोदाहरणेन निदर्श्यत इत्यनेन सम्बंधेनायातं चित्तसंभूतीयं
त्रयोदशमध्ययनम् ।

त्रयोदशेऽध्ययने निदानदोषस्य वर्णनम् । प्रसङ्गतो निर्निदानता-गुणस्यापि, अत्र तु मुख्यतः स एवोच्यते इत्यनेन सम्बन्धेनायात **चतुर्दशमिषुकारीयमध्ययनम्** ।

चतुर्दशेऽध्ययने निर्निदानतागुणवर्णना, सा च मुख्यतो भिक्षोरेव, भिक्षुश्च गुणात इति तद्गुणा अनेनोच्यन्ते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं
पंचदशं सभिक्षुकमध्ययनम् ।

पंचदशेऽध्ययने भिक्षुगुणानां वर्णनम् ।
भिक्षुगुणाश्च तत्त्वतो ब्रह्मचर्यव्यवस्थितस्यैव भवंति ब्रह्मचर्यं च ब्रह्मगुप्तिपरिज्ञानत् इति ब्रह्मचर्यसमाधय इहाभिधीयन्ते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं
षोडशं ब्रह्मचर्यसमाधिनामकमध्ययनम् ।

षोडशेऽध्ययने ब्रह्मचर्यगुप्तीनां वर्णनम् ।

ब्रह्मचर्यगुप्तयश्च पापस्थानवर्जनादेवासेवितुं शक्यन्ते इति पापश्रमणस्वरूपाभिधान-तस्तदेवात्र काक्कोच्यत इत्यनेन सम्बंधेनायातं **सप्तदशं पापश्रमणीयमध्ययनम् ।**

सप्तदशेऽध्ययने पापवर्जनस्य वर्णनम् ।

तच्च संयतस्यैव, स च भोगर्द्धित्यागत एवेति स एव संयतेरुदाहरणात इहोच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायात **अष्टादशं संयतीयाख्यमध्ययनम् ।**

अष्टादशेऽध्ययने भोगर्द्धित्यागवर्णनम् ।

भोगर्द्धित्यागाच्च श्रामण्यमुपजायते तच्चाप्रतिकर्मतया प्रशस्यतरं भवतीत्यप्रतिकर्म-तोच्यंते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातमेकोनविशं **मृगापुत्रीयमध्ययनम् ।**

एकोनविंशेऽध्ययने निष्प्रतिकर्मताया वर्णनम् ।

निष्प्रतिकर्मता च अनाथत्वपरिभावनेनैव पालयितुं शक्येति महानिर्ग्रन्थहितम-भिधातुमनाथतैवानेकधाऽनेनोच्यत इत्यनेन सम्बंधेनायातं

विंशतितमं-महानिर्ग्रन्थीयमध्ययनम् ।

विंशतितमेऽध्ययनेऽनाथत्व-वर्णनम् ।

अनाथत्वं च-आलोचनाद्विविक्तचर्ययैव चरितव्यमित्यभिप्रायेण सैवोच्यत इत्यनेनाभिसम्बंधेनायातमेकविंशं **समुद्रपालीयमध्ययनम् ।**

एकविंशेऽध्ययने विविक्तचर्यावर्णनम् ।

विविक्तचर्या च चरणसहितेन धृतिमता चरण एव शक्यते कर्तुमतो रथनेमिव-च्चरणं तत्र च कथंचिदुत्पन्नविश्रोतसिकेनापि धृतिश्चाधेया इत्यनेन सम्बंधेनायातं **द्वाविंशं रथनेमीयमध्ययनम् ।**

द्वाविंशेऽध्ययने कथंचिदुत्पन्नविश्रोतसिकेनापि रथनेमिवद् धृतिश्चरणे विधेयेतिवर्णनम्

इह तु परेषामपि चित्तविप्लुतिमुपलभ्य केशिगौतमवत्तदपनयनाय यतितव्यमित्य-भिप्रायेण यथा शिष्यसंशयोत्पत्तौ केशिपृष्टेन गौतमेन धर्मस्तदुपयोगि च लिंगादि वर्णितं तथा अनेनाभिधीयत इत्यमुना सम्बन्धेनायातं—

त्रयोविंशं केशिगौतमीयमध्ययनम् ।

त्रयोविंशेऽध्ययने परेषामपि चित्तविप्लुतिमुपलभ्य तदपनयनाय केशिगौतमवद्य-तितव्यमितिवर्णनम्। इह तु तदपनयनं सम्यग् वाग्योगत एव; स च प्रवचन-मातृस्वरूपपरिज्ञानत इति तत्स्वरूपमुच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—

चतुर्विंशतितममध्ययनम्।

चतुर्विंशेऽध्ययने प्रवचनमातृणां वर्णनम्। प्रवचनमातरश्च ब्रह्मगुणस्थितस्यैव तत्त्वतो भवन्तीति जयघोषचरितवर्णनाद्वारेण ब्रह्मगुणा उच्यन्त इत्यनेनाभिसम्बन्धेनायातं

पञ्चविंशतितमं यज्ञीयाख्यमध्ययनम्।

पंचविंशतितमेऽध्ययने ब्रह्मगुणानां वर्णनम्। ब्रह्मगुणवांश्च यतिरेव तेन चावश्यं समाचारी विधेयेति, साऽस्मिन्नभिधीयते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—

षड्विंशतितमं समाचारीतिनामकमध्ययनम्।

षड्विंशतितमेऽध्ययने समाचारीवर्णनम्।

समाचारी च अशठतयैव पालयितुं शक्या, तद्विपक्षभूतशठता-अज्ञान एव च तद्विवेकेनासौ ज्ञायत इत्याशयेन दृष्टान्ततः शठतास्वरूपनिरूपणाद्वारेणाशठतै-वानेनाभिधीयत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं **सप्तविंशं खलुङ्कीयमध्ययनम्।**

सप्तविंशेऽध्ययने अशठतयैव समाचारी परिपालयितुं शक्यत—इति वर्णनम्।

समाचारी व्यवस्थितस्य न्यायप्राप्तैव मोक्षमार्गगतिप्राप्तिरिति तदभिधायक—

अष्टाविंशतितमम् मोक्षमार्गगत्याख्यमध्ययनम्।

अष्टविंशतितमेऽध्ययने ज्ञानादीनां मुक्तिमार्गत्वेन वर्णनम्।

ज्ञानादीनि च संवेगादिमूलान्यकर्मताऽवसानानि च तथा भवन्तीति तानीहोच्यंते यद्वा मोक्षमार्गगतेर्वर्णनम्।

इह पुनरप्रमाद एव तत् प्रधानोपायो ज्ञानादीनामपि तत् पूर्वकत्वादिति, स एव वर्ण्यते।

अथवा मुक्तिमार्गगतेर्वर्णनम्।

सा च वीतरागपूर्विकेति यथातद् भवति तथाऽनेनाभिधीयत इत्यनेन सम्बंधेना-यातमेकोनत्रिंशं **सम्यक्त्वपराक्रममध्ययनम्।**

एकोनत्रिंशेऽध्ययने—अप्रमादवर्णनम् ।
अप्रमादवता तपोविधेयमिति तत्स्वरूपमुच्यते इत्यनेन सम्बंधेनायात
त्रिंशं तपोमार्गगत्यध्ययनम् ।

त्रिंशेऽध्ययने तपसो वर्णनम् ।
तच्चरणवत एव सम्यग् भवतीति चरणमुच्यत इत्यनेन सम्बंधेनायात—
मेकत्रिंशत्तमं चरणाख्यमध्ययनम् ।

एकत्रिंशत्तमेऽध्ययने चरणस्य वर्णनम् ।
चरणं च प्रमादस्थानपरिहारत एवासेवितुं शक्यं, तत्-परिहारश्चतत्परिज्ञानपूर्वक-मित्यनेन सम्बंधेनायात **द्वात्रिंशं प्रमादस्थाननामकमध्ययनम् ।**

द्वात्रिंशेऽध्ययने प्रमादस्थानानां वर्णनम् ।
प्रमादस्थानश्च 'मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाबंधहेतवः' (तत्त्वा० अ० ८-सू० १) इति वचनात् कर्म बध्यते, तस्य च का प्रकृतयः, कियती वा स्थितिः ? इत्यादि सन्देहापनोदाय **त्रयस्त्रिंशत्तमं कर्मप्रकृतिरित्यध्ययनम् ।**

त्रयस्त्रिंशत्तमेऽध्ययने कमप्रकृतीनां वर्णनम् ।
कर्मस्थितिश्च लेश्यावशत इत्यतस्तदभिधानार्थं **चतुस्त्रिंशं लेश्याख्यमध्ययनम् ।**
चतुस्त्रिशत्तमेऽध्ययने लेश्यावर्णनम् ।
लेश्याभिधानेचायमाशयः—अशुभानुभावलेश्याःपरित्यज्याः शुभानुभावा एव लेश्या अधिष्ठातव्याः । एतच्च भिक्षुगुणव्यवस्थितेन सम्यग्विधातुं शक्यं, तद् व्यवस्थानं च तत् परिज्ञानत इति तदर्थमिदमारभ्यते, एतत्सम्बन्धागतं—
पञ्चत्रिंशत्तममनगारमार्गगतिरित्यध्ययनम् ।

पंचत्रिंशत्तमेऽध्ययने हिंसापरिवर्जनादिभिक्षुगुणानां वर्णनम् ।
भिक्षुगुणाश्च जीवाजीवस्वरूपपरिज्ञानत एवासेवितुं शक्यन्त इति तज्ज्ञापनार्थं **षट्त्रिंशत्तमं जीवाजीवविभक्तिरित्यध्ययनम् ।**

—श्री शान्तिसूरिकृतटीकाया आधारेण—सम्पादकः

❀ णमोऽत्थु णं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ❀

उत्तरज्झयण-सुत्तं

अह विणयसुयं नामं पढमज्झयणं

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
आणानिद्देसकरे, गुरूणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने, से 'विणीए' त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥
आणाऽनिद्देसकरे, गुरूणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे 'अविणीए' त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥
जहा सुणी[1] पूइकण्णी, निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जइ ॥ ४ ॥
कणकुण्डगं चइत्ताणं, विट्ठं भुंजइ सूयरे[2] ।
एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्सीले[3] रमइ मिए ॥ ५ ॥
सुणिया भावं साणस्स[1], सूयरस्स[2] नरस्स[3] य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं, इच्छंतो हियमप्पणो ॥ ६ ॥
तम्हा विणयमेसिज्जा, सीलं पडिलभे जओ ।
बुद्धपुत्ते नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥
निस्संते सियाऽमुहरी, बुद्धाणं अंतिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए ॥ ८ ॥

अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खंतिं सेविज्ज पंडिए ।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं, हासं कीडं च वज्जए ॥ ९ ॥
मा य चंडालियं कासी, बहुयं मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगगो ॥१०॥
आहच्च चंडालियं कट्टु,न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
कडं कडे त्ति भासेज्जा, अकडं नो कडे त्ति य ॥११॥
मा 'गलियस्सेव कसं,' वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
'कसं व दट्ठुमाइण्णे' पावगं परिवज्जए ॥१२॥
अणासवा थूलवया कुसीला,
मिउंपि चंडं पकरंति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया,
पसायए ते हु दुरासयंपि ॥१३॥
नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुवेज्जा, धारेज्जा पियमप्पियं ॥१४॥
अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य ॥१५॥
वरं मे अप्पा दंतो, संजमेण तवेण य ।
माहं परेहि दम्मंतो, बंधणेहिं-वहेहि य ॥१६॥
पडिणीयं च बुद्धाणं, वाया अदुव कम्मुणा ।
आवि-वा जइ वा रहस्से, नव कुज्जा कयाइ वि ॥१७॥
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे नो पडिस्सुणे ॥१८॥
नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिंडं च संजए ।
पाए पसारिए वावि, न चिट्ठे गुरूणंतिए ॥१९॥
आयरिएहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि ।
पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरुं सया ॥२०॥

आलवंते लवंते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि ।
चइऊणमासणं धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥
आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कयाइवि ।
आगम्मुक्कुडुओ संतो, पुच्छेज्जा पंजलीउडो ॥२२॥
एवं विणयजुत्तस्स, सुत्तं अत्थं च तदुभयं ।
पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुयं ॥२३॥
मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणिं वए ।
भासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥२४॥
न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं ।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्संतरेण वा ॥२५॥
समरेसु अगारेसु, संधीसु य महापहे ।
एगो एगित्थीए सद्धिं, नेव चिट्ठे न संलवे ॥२६॥
जं मे बुद्धाऽणुसासंति, सीएण फरुसेण वा ।
मम लाहो त्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ॥२७॥
अणुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं ।
हियं तं मण्णइ पण्णो, वेसं होइ असाहुणो ॥२८॥
हियं विगयभया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासणं ।
वेसं तं होइ मूढाणं, खंतिसोहिकरं पयं ॥२९॥
आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चेऽकुकुए थिरे ।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥३०॥
कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥३१॥
परिवाडीए न चिट्ठेज्जा, भिक्खू, दत्तेसणं चरे ।
पडिरूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ॥३२॥
नाइदूरमणासन्ने, नऽन्नेसिं चक्खुफासओ ।
एगो चिट्ठेज भत्तट्ठा, लंघित्ता तं नऽइक्कमे ॥३३॥

नाइउच्चेव नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ ।
फासुयं परकडं पिंडं, पडिगाहेज्ज संजए ॥३४॥
अप्पपाणेऽप्पबीयम्मि; पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
समयं संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं ॥३५॥
सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥३६॥
रमए पंडिए सासं, 'हयं भद्दं व वाहए' ।
बालं सम्मइ सासंतो, 'गलियस्सं व वाहए' ॥३७॥
खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे ।
कल्लाणमणुसासंतो, पावदिट्ठित्ति मन्नई ॥३८॥
पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नई ।
पावदिट्ठि उ अप्पाणं, सासं दासि त्ति मन्नइ ॥३९॥
न कोवए आयरियं, अप्पाणंपि न कोवए ।
बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्त-गवेसए ॥४०॥
आयरियं कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए ।
विज्झवेज्ज पंजलीउडो, वएज्ज न पुणो त्ति य ॥४१॥
धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहायरियं सया ।
तमायरंतो ववहारं, गरहं नाभिगच्छइ ॥४२॥
मणोगयं वक्कगयं, जाणित्तायरियस्स उ ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥४३॥
वित्ते अचोइए निच्चं, खिप्पं हवइ सुचोइए ।
जहोवइट्ठं सुकयं, किच्चाइं कुव्वई सया ॥४४॥
नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जाइए ।
हवई किच्चाणं सरणं 'भूयाणं जगई जहा' ॥४५॥
पुज्जा जस्स पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुआ ।
पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ॥४६॥

स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए,
मणोरुई चिट्ठई कम्मसंपया ।
तवो-समायारि-समाहिसंवुडे,
महज्जुई पंच वयाइं पालिया ॥४७॥
स देव-गंधव्व-मणुस्सपूइए,
चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं ।
सिद्धे वा हवइ सासए,
देवे वा अप्परए महिड्ढीए ॥४८॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह परिसह नामं दुइअमज्झयणं

सुयं मे आउसं !
तेणं भगवया एवमक्खायं—
इह खलु बावीसं परिसहा—
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया ।
जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय—
भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ।
कयरे खलु ते बावीसं परीसहा—
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया—
जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय—
भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ?
इमे खलु ते बावीसं परीसहा—
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया—
जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय—
भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा

तं जहा—

दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिणपरीसहे ४ दंसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६ अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९ निसीहियापरीसहे १० सेज्जापरीसहे ११ अक्कोसपरिसहे १२ वहपरीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तणफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८ सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पन्नापरीसहे २० अन्नाणपरीसहे २१ दंसणपरीसहे २२।

परीसहाणं पविभत्ती, कासवेणं पवेइया।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥

(१) दिगिंछापरिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामवं।
न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए ॥ २ ॥
कालीपव्वंग-संकासे, किसे धमणिसंतए।
मायन्ने असण-पाणस्स, अदीण-मणसो चरे ॥ ३ ॥

(२) तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुंच्छी लज्जसंजए।
सीओदगं न सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे ॥ ४ ॥
छिन्नावाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए।
परिसुक्कमुहाऽदीणे, तं तितिक्खे परिसहं ॥ ५ ॥

(३) चरंतं विरयं लूहं, सीयं फुसइ एगया।
नाइवेलं मुणी गच्छे, सोच्चाणं जिणसासणं ॥ ६ ॥
न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जइ।
अहं तु अग्गिं सेवामि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ ७ ॥

(४) उसिणं परियावेणं, परिदाहेण तज्जिए ।
घिंसु वा परियावेणं, सायं नो परिदेवए ॥ ८ ॥
उण्हाहितत्तो मेहावी, सिणाणं नो वि पत्थए ।
गायं नो परिसिंचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पयं ॥ ९ ॥

(५) पुट्ठो य दंसमसएहिं, समरे व महामुणी ।
नागो संगामसीसे वा, सूरो अभिहणे परं ॥१०॥
न संतसे न वारेज्जा, मणं पि न पओसए ।
उवेहे न हणे पाणे, भुंजंते मंससोणियं ॥११॥

(६) परिजुण्णेहि वत्थेहिं, होक्खामि त्ति अचेलए ।
अदुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥१२॥
एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया ।
एयं धम्मं हियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥१३॥

(७) गामाणुगामं रीयंतं, अणगारं अकिंचणं ।
अरई अणुप्पवेसेज्जा, तं तितिक्खे परीसहं ॥१४॥
अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आयरक्खिए ।
धम्मारामे निरारम्भे, उवसंते मुणी चरे ॥१५॥

(८) संगो एस मणूसाणं, जाओ लोगम्मि इत्थिओ ।
जस्स एया परिन्नाया, सुकडं तस्स सामण्णं ॥१६॥
एवमादाय मेहावी, पंक-भूया उ इत्थिओ ।
नो ताहिं विणिहन्नेज्जा, चरेज्जत्तगवेसए ॥१७॥

(९) एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे ।
गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥१८॥
असमाणो चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिग्गहं ।
असंसत्तो गिहत्थेहिं, अणिएओ परिव्वए ॥१९॥

(१०) सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए परं ॥२०॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभिधारए।
संकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अन्नमासणं ॥२१॥

(११) उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामवं।
नाइवेलं विहन्निज्जा, पावदिट्ठी विहन्नई ॥२२॥
पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं, कल्लाणमदुव पावयं।
किमेगराइं करिस्सइ, एवं तत्थऽहियासए ॥२३॥

(१२) अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं, न तेसिं पडिसंजले।
सरिसो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू न संजले ॥२४॥
सोच्चाणं फरुसा भासा, दारुणा गामकंटगा।
तुसिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥२५॥

(१३) हओ न संजले भिक्खू, मणंपि न पओसए।
तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं विचिंतए ॥२६॥
समणं संजयं दंतं, हणिज्जा कोइ कत्थई।
नत्थि जीवस्स नासुत्ति, एवं पेहेज्ज संजए ॥२७॥

(१४) दुक्करं खलु भो निच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वं से जाइयं होइ, नत्थि किंचि अजाइयं ॥२८॥
गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए।
सेओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥२९॥

(१५) परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए।
लद्धे पिंडे अलद्धे वा, नाणुतप्पेज्ज पंडिए ॥३०॥
अज्जेवाहं न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया।
जो एवं पडिसंचिक्खे, अलाभो तं न तज्जए ॥३१॥

(१६) नच्चा उप्पइयं दुक्खं, वेयणाए दुहट्टिए ।
अदीणो थावए पन्नं, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥३२॥
तेइच्छं नाभिनंदेज्जा, संचिक्खत्तगवेसए ।
एवं खु तस्स सामण्णं, जं न कुज्जा न कारवे ॥३३॥

(१७) अचेलगस्स लूहस्स, संजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥३४॥
आयवस्स निवाएण, अउला हवइ वेयणा ।
एवं नच्चा न सेवंति, तंतुजं तणतज्जिया ॥३५॥

(१८) किलिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥३६॥
वेएज्ज निज्जरापेही, आरियं धम्मणुत्तरं ।
जाव सरीरभेउत्ति, जल्लं काएण धारए ॥३७॥

(१९) अभिवायणमब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा निमंतणं ।
जे ताइं पडिसेवंति, न तेसिं पीहए मुणी ॥३८॥
अणुक्कसाई अप्पिच्छे, अन्नाएसी अलोलुए ।
रसेसु नाणुगिज्झेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पन्नवं ॥३९॥

(२०) से नूणं मए पुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥४०॥
अह पच्छा उइज्जंति, कम्माऽणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं, नच्चा कम्मविवागयं ॥४१॥

(२१) निरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जो सक्खं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावगं ॥४२॥
तवोवहाणमादाय, पडिमं पडिवज्जओ ।
एवं पि विहरओ मे, छउमं न नियट्टइ ॥४३॥

(२२) नत्थि नूणं परे-लोए, इड्ढी वावि तवस्सिणो ।
अदुवा वंचिओमित्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥४४॥
अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवा वि भविस्सइ ।
मुसं ते एवमाहंसु, इइ भिक्खू न चिंतए ॥४५॥

एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥४६॥
त्ति बेमि ॥

अह चाउरंगिज्जं नामतइयज्झयणं

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जंतुणो ।
माणुसत्तं[1] सुई[2] सद्धा[3], संजमम्मि य वीरियं[4] ॥ १ ॥

समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभिया पया ॥ २ ॥

एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया ।
एगया आसुरं कायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ ॥ ३ ॥

एगया खत्तिओ होइ, तओ चंडाल-बुक्कसो ।
तओ कीड-पयंगो य, तओ कुंथु-पिवीलिया ॥ ४ ॥

एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्मकिव्विसा ।
न निव्विज्जंति संसारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥ ५ ॥

कम्मसंगेहिं संमूढा, दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो ॥ ६ ॥

कम्माणं तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं ॥ ७ ॥

माणुस्सं विग्गहं लद्धुं, सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंतिमहिंसयं ॥ ८ ॥
आहच्च सवणं लद्धुं, सद्धा परमदुल्लहा ।
सोच्चा नेआउयं मग्गं, बहवे परिभस्सइ ॥ ९ ॥
सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं ।
बहवे रोयमाणावि, नो य णं पडिवज्जए ॥१०॥
माणुसत्तंमि आयाओ, जो धम्मं सोच्चा सद्दहे ।
तवस्सी वीरियं लद्धुं, संवुडे निद्धुणे रयं ॥११॥
सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ ।
निव्वाणं परमं जाइ, 'घयसित्तिव्व पावए' ॥१२॥
विगिंच कम्मुणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए ।
सरीरं पाढवं हिच्चा, उड्ढं पक्कमए दिसं ॥१३॥
विसालसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा ।
'महासुक्का व दिप्पंता', मन्नंता अपुणच्चयं ॥१४॥
अप्पिया देवकामाणं, कामरूवविउव्विणो ।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति, पुव्वावाससया बहू ॥१५॥
तत्थ ठिच्चा जहाठाणं, जक्खा आउक्खये चुया ।
उवेंति माणुसं जोणिं, से दसंगे ऽभिजायए ॥१६॥
(१) खेत्तं-वत्थुं[1] हिरण्णं[2] च, पसवो[3] दास-पोरुसं[4] ।
'चत्तारि कामखंधाणि' तत्थ से उववज्जइ ॥१७॥
मित्तवं[2] नाइवं[3] होइ, उच्चागोए[4] य वण्णवं[5] ।
अप्पायंके[6] महापन्ने[7], अभिजाए[8] जसो[9] बले[10] ॥१८॥
भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउयं ।
पुव्वं विसुद्धसद्धम्मे, केवलं बोहिं बुज्झिया ॥१९॥
चउरंगं दुल्लहं नच्चा, संजमं पडिवज्जिया ।
तवसा धुयकम्मंसे, सिद्धे हवइ सासए ॥२०॥ त्ति बेमि ॥

अह असंखयं नामचउत्थमज्झयणं

असंखयं जीविय मा पमायए,
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं वियाणाही जणे पमत्ते,
किं नु विहिंसा अजया गहिंति ॥ १ ॥
जे पावकम्मेहिं धणं मणुसा,
समाययंती अमइं गहाय ।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे,
वेराणुबद्धा नरयं उविंति ॥ २ ॥
'तेणे जहा' संधिमुहे गहीए,
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च इहं च लोए,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ॥ ३ ॥
संसारमावन्न परस्स अट्ठा,
साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले,
न बंधवा बंधवयं उविंति ॥ ४ ॥
वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते,
इमंमि लोए अदुवा परत्था ।
'दीवप्पणट्ठेव' अणंतमोहे,
नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ५ ॥
सुत्तेसु यावि पडिबुद्धजीवी,
न वीससे पंडिय आसुपण्णे ।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं,
'भारंडपक्खीव' चरेऽपमत्ते ॥ ६ ॥

चरे पयाइं परिसंकमाणो,
जं किंचि पासं इह मन्नमाणो।
लाभंतरे जीविय वूहइत्ता,
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥ ७ ॥

छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं,
'आसे जहा सिक्खिय-वम्मधारी।'
पुव्वाइं वासाइं चरेऽप्पमत्तो,
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मुक्खं ॥ ८ ॥

स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा,
एसोवमा सासयवाइयाणं।
विसीयई सिढिले आउयम्मि,
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं,
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी,
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो ॥१०॥

मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंतं,
अणेगरूवा समणं चरंतं।
फासा फुसंति असमंजसं च,
न तेसिं भिक्खू मणसा पउस्से ॥११॥

मंदा य फासा बहुलोहणिज्जा,
तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा।
रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं,
मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ॥१२॥

जे ऽसंखया तुच्छपरप्पवाई,
ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो,
कंखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥ १३ ॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह अकाममरणिज्जं नामं पंचमज्झयणं

अण्णवंसि महोहंसि, एगे तिण्णे दुरुत्तरे ।
तत्थ एगे महापन्ने, इमं पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥
संतिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणंतिया ।
अकाममरणं[1] चेव, सकाममरणं[2] तहा ॥ २ ॥
बालाणं अकामं तु, मरणं असइं भवे ।
पंडियाणं सकामं तु, उक्कोसेण सइं भवे ॥ ३ ॥
तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं ।
कामगिद्धे जहा बाले, भिसं कूराइं कुव्वई ॥ ४ ॥
जे गिद्धे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छई ।
न मे दिट्ठे परे लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥ ५ ॥
हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया ।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥
जणेण सद्धिं होक्खामि, इइ बाले पगब्भई ।
कामभोगाणुराएणं, केसं संपडिवज्जई ॥ ७ ॥
तओ से दंडं समारभई, तसेसु थावरेसु य ।
अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगामं विहिंसई ॥ ८ ॥

हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं, सेयमेयं ति मन्नई ॥ ९ ॥
कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
दुहओ मलं संचिणइ, 'सिसुणागुव्व' मट्टियं ॥१०॥
तओ पुट्ठो आयंकेणं, गिलाणो परितप्पई ।
पभीओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥११॥
सुया मे नरए ठाणा, असीलाणं च जा गई ।
बालाणं कुरकम्माणं, पगाढा जत्थ वेयणा ॥१२॥
तत्थोववाइयं ठाणं, जहा मेयमणुस्सुयं ।
अहाकम्मेहिं गच्छंतो, सो पच्छा परितप्पइ ॥१३॥
'जहा सागडिओ' जाणं, समं हिच्चा महापहं ।
विसमं मग्गमोइण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥१४॥
एवं धम्मं विउक्कम्मं, अहम्मं पडिवज्जिया ।
बाले मच्चुमुहं पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई ॥१५॥
तओ से मरणंतम्मि, बाले संतसई भया ।
अकाममरणं मरइ, धुत्ते व कलिणा जिए ॥१६॥

एयं अकाममरणं, बालाणं तु पवेइयं ।
इत्तो सकाममरणं, पंडियाणं सुणेह मे ॥१७॥

मरणं पि सपुण्णाणं, जहा मेयमणुस्सुयं ।
विप्पसण्णमणाघायं, संजयाण वुसीमओ ॥१८॥
न इमं सव्वेसु भिक्खूसु, न इमं सव्वेसुऽगारिसु ।
नाणासीला अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो ॥१९॥
संति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था संजमुत्तरा ।
गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा ॥२०॥

चीराजिणं नगिणिणं, जडी संघाडि मुंडिणं।
एयाणि वि न तायंति, दुस्सीलं परियागयं ॥२१॥
पिंडोलएव्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चइ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुव्वए कम्मइ दिवं ॥२२॥
अगारिसामाइयंगाणि, सड्ढी काएण फासए।
पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ॥२३॥
एवं सिक्खासमावन्ने, गिहीवासे वि सुव्वए।
मुच्चइ छविपव्वाओ, गच्छे जक्खसलोगयं ॥२४॥
अह जे संवुडे भिक्खू, दोण्हं अन्नयरे सिया।
सव्वदुक्खपहीणे वा, देवे वावि महिड्ढीए ॥२५॥
उत्तराइं विमोहाइं, जुईमंताणुपुव्वसो।
समाइण्णाइं जक्खेहिं, आवासाइं जसंसिणो ॥२६॥
दीहाउया इड्ढिमंता, समिद्धा कामरूविणो।
अहुणोववन्नसंकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥२७॥
ताणि ठाणाणि गच्छंति, सिक्खित्ता संजमं तवं।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, जे संति परिनिव्वुडा ॥२८॥
तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं, संजयाण वुसीमओ।
न संतसंति मरणंते, सीलवंता बहुस्सुया ॥२९॥
तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खंतिए।
विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ॥३०॥
तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमंतिए।
विणएज्ज लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए ॥३१॥
अह कालम्मि संपत्ते, आघायाय समुस्सयं।
सकाममरणं मरइ, तिण्हमन्नयरं मुणी ॥३२॥
त्ति बेमि ॥

अह खुड्डागनियंठिज्जं नामं छट्ठमज्झयणं

जावंतऽविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा ।
लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारंमि अणंतए ॥ १ ॥
समिक्ख पंडिए तम्हा, पास-जाइ-पहे बहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मित्तिं भूएसु कप्पए ॥ २ ॥
माया पिया एहूसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नालं ते मम ताणाए, लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥
एयमट्ठं सपेहाए, पासे समियदंसणे ।
छिंद गिद्धिं सिणेहं च, न कंखे पुव्वसंथवं ॥ ४ ॥
गवासं मणि-कुंडलं, पसवो दास-पोरुसं ।
सव्वमेयं चइत्ताणं, कामरूवी भविस्ससि ॥ ५ ॥
(थावरं जंगमं चेव, धणं धन्नं उवक्खरं ।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं, नालं दुक्खाउ मोयणे ॥)
अज्झत्थं सव्वओ सव्वं, दिस्स पाणे पियायए ।
न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥ ६ ॥
आयाणं नरयं दिस्स, नायएज्ज तणामवि ।
दोगुंछी अप्पणो पाए, दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥ ७ ॥
इहमेगे उ मन्नंति, अपच्चक्खाय पावगं ।
आयरियं विदित्ता णं, सव्वदुक्खा विमुच्चए ॥ ८ ॥
भणंता अकरेंता य, बंध-मोक्खपइण्णिणो ।
वायावीरियमेत्तेण, समासासेंति अप्पयं ॥ ९ ॥
न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासणं ।
विसन्ना पावकम्मेहिं, बाला पंडियमाणिणो ॥ १० ॥

जे केइ सरीरे सत्ता, वरणे रूवे य सव्वसो ।
मणसा काय-वक्केणं, सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥११॥
आवन्ना दीहमद्धाणं, संसारंमि अणंतए ।
तम्हा सव्वदिसं पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए ॥१२॥
बहिया उड्ढमादाय, नावकंखे कयाइ वि ।
पुव्व-कम्म-क्खयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे ॥१३॥
विगिंच कम्मुणो हेउं, कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स, कडं लद्धूण भक्खए ॥१४॥
सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, लेवमायाए संजए ।
'पक्खी-पत्तं समादाय' निरवेक्खो परिव्वए ॥१५॥
एसणासमिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिंडवायं गवेसए ॥१६॥
एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी,
अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे-
अरहा नायपुत्ते भगवं,
वेसालिए वियाहिए ॥१७॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह एलइज्जं नामं सत्तमज्झयणं

*(१) जहाएसं समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलयं ।
ओयणं जवसं देज्जा, पोसेज्जावि सयंगणे ॥ १ ॥
तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोदरे ।
पीणिए विउले देहे, आएसं परिकंखए ॥ २ ॥

---

*ओरब्भे अ कागिणी, अंबए अ ववहारे सागरे चेव ।
पंचेए दिट्ठंता, उरब्भिज्जंमि अज्झयणे ॥

जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से ऽदुही।
अह पत्तम्मि आएसे, सीसं छेत्तूण भुञ्जइ ॥ ३ ॥

जहा से खलु उरब्भे, आएसाए समीहिए।
एवं बाले अहम्मिट्ठे, ईहइ नरयाउयं ॥ ४ ॥
हिंसे बाले मुसावाई, अद्धाणंमि विलोवए।
अन्नदत्तहरे तेणे, माई कं नु हरे सढे ॥ ५ ॥
इत्थी–विसयगिद्धे य, महारंभपरिग्गहे।
भुंजमाणे सुरं मंसं, परिवूढे परंदमे ॥ ६ ॥
अयकक्करभोई य, तुंदिल्ले चियलोहिए।
आउयं नरए कंखे, 'जहाएसं व एलए' ॥ ७ ॥
आसणं सयणं जाणं, वित्तं कामे य भुंजिया।
दुस्साहडं धणं हिच्चा, बहु संचिणिया रयं ॥ ८ ॥
तओ कम्मगुरू जंतू, पच्चुप्पन्नपरायणे।
'अएव्व' आगयाएसे, मरणंतम्मि सोयइ ॥ ९ ॥
तओ आउपरिक्खीणे, चुयदेहा विहिंसगा।
आसुरियं दिसं बाला, गच्छंति अवसा तमं ॥१०॥

(२) जहा कागिणिए हेउं, सहस्सं हारए नरो।

(३) अपत्थं अंबगं भोच्चा, राया रज्जं तु हारए ॥११॥

एवं मणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए।
सहस्सगुणिया भुज्जो, आउं कामा य दिव्विया ॥१२॥
अणेगवासानउया, जा सा पन्नवओ ठिई।
जाणि जीयंति दुम्मेहा, ऊणे वाससयाउए ॥१३॥

(४) जहा य तिन्नि वाणिया, मूलं घेत्तूण निग्गया।
एगोऽत्थ लहए लाभं, एगो मूलेण आगओ ॥१४॥

एगो मूलं पि हारित्ता[3], आगओ तत्थ वाणिओ।
ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ॥१५॥

माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे।
मूलच्छेएण जीवाणं नरग-तिरिक्खत्तणं धुवं ॥१६॥

दुहओ गई बालस्स, आवईवहमूलिया।
देवत्तं माणुसत्तं च, जं जिए लोलयासढे ॥१७॥

तओ जिए सइं होइ, दुविहं दुग्गइं गए।
दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए सुचिरादवि ॥१८॥

एवं जियं सपेहाए, तुलिया बालं च पंडियं।
मूलियं ते पवेसंति, माणुसं जोणिमेंति जे ॥१९॥

वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुव्वया।
उवेंति माणुसं जोणिं, कम्मसच्चा हु पाणिणो ॥२०॥

जे सिं तु विउला सिक्खा, मूलियं ते अइच्छिया।
सीलवंता सविसेसा, अदीणा जंति देवयं ॥२१॥

एवमदीणवं भिक्खू, अगारिं च वियाणिया।
कहण्णु जिच्चमेलिक्खं, जिच्चमाणे न संविदे ॥२२॥

(५) जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण समं मिणे।
एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए ॥२३॥

कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए।
कस्स हेउं पुराकाउं, जोगक्खेमं न संविदे ॥२४॥

इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झइ।
सोच्चा नेयाउयं मग्गं, जं भुज्जो परिभस्सइ ॥२५॥

इह कामणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई।
पूइदेहनिरोहेणं, भवे देवित्ति मे सुयं ॥२६॥

इड्ढी जुई जसो वण्णो, आउं सुहमणुत्तरं ।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जइ ॥२७॥

बालस्स पस्स बालत्तं, अहम्मं पडिवज्जिया ।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे, नरएसूववज्जइ ॥२८॥

धीरस्स पस्स धीरत्तं, सव्वधम्माणुवत्तिणो ।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जइ ॥२९॥

तुलियाण बालभावं, अबालं चेव पंडिए ।
चइऊण बालभावं, अबालं सेवए मुणी ॥३०॥
त्ति बेमि ॥

अह काविलियं नामं अट्ठमज्झयणं

अधुवे असासयम्मि, संसारंमि दुक्खपउराए ।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं ? जेणाहं दुग्गइं न गच्छेज्जा ॥ १ ॥
विजहित्तु पुव्वसंजोयं, न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।
असिणेह-सिणेहकरेहिं, दोस-पओसेहि मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥
तो नाण-दंसण-समग्गो, हियनिस्सेसाए सव्वजीवाणं ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, भासइ मुणिवरो विगयमोहो ॥ ३ ॥
सव्वं गंथं कलहं च, विप्पजहे तहाविहं भिक्खू ।
सव्वेसु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पइ ताई ॥ ४ ॥
भोगामिस-दोस-विसन्ने, हिय-निस्सेयस-बुद्धि-वोच्चत्थे ।
बाले य मंदिए मूढे, बज्झइ 'मच्छिया व खेलम्मि' ॥ ५ ॥
दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं ।
अह संति सुव्वया साहू, जे तरंति अतरं 'वणिया वा' ॥ ६ ॥

समणा मु एगे वयमाणा, पाणवहं मिया अयाणंता।
मंदा निरयं गच्छंति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥

न हु पाणवहं अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं।
एवमायरिएहिं अक्खायं,जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥ ८ ॥

पाणे य नाइवाएज्जा, से समीइ त्ति वुच्चइ ताई।
तओ से पावयं कम्मं, निज्जाइ 'उदगं व थलाओ' ॥ ९ ॥

जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव ॥१०॥

सुद्धेसणाओ नच्चाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥११॥

पंताणि चेव सेवेज्जा, सीयपिंडं पुराण-कुम्मासं।
अदु बुक्कसं पुलागं वा, जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ॥१२॥

जे लक्खणं च सुविणं च, अंगविज्जं च जे पउंजंति।
न हु ते समणा वुच्चंति, एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥१३॥

इह जीवियं अणियमेत्ता, पब्भट्ठा समाहिजोएहिं।
ते काम-भोग-रस-गिद्धा, उववज्जंति आसुरे काए ॥१४॥

तत्तो वि य उव्वट्टित्ता, संसारं बहु अणुपरियडंति।
बहु-कम्म-लेव-लित्ताणं, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥१५॥

कसिणंपि जो इमं लोयं, पडिपुण्णं दलेज्ज एगस्स।
तेणावि से न संतुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ॥१६॥

जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढइ।
दोमासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं ॥१७॥

नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा,गंडवच्छासु ऽणेगचित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता, खेल्लंति जहा व दासेहिं ॥१८॥

नारीसु नो पगिज्झेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥१९॥
इअ एस धम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।
तरिहिंति जे उ काहिंति, तेहिं आराहिया दुवे लोगा ॥२०॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह नमि-पव्वज्जा नामं नवमज्झयणं

चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसंमि लोगंमि ।
उवसंत-मोहणिज्जो, सरइ पोराणियं जाइं ॥ १ ॥
जाइं सरित्तु भयवं, सयं-संबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवित्तु रज्जे, अभिणिक्खमइ नमी राया ॥ २ ॥
सो देवलोगसरिसे अंतेउर-वरगओ वरे भोए ।
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ॥ ३ ॥
मिहिलं सपुर-जणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खंतो, एगंतमहिट्ठिओ भयवं ॥ ४ ॥
कोलाहलग-भूयं, आसी मिहिलाए पव्वयंतंमि ।
तइया रायरिसिंमि, नमिंमि अभिणिक्खमंतंमि ॥ ५ ॥

अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पवज्जाट्ठाणमुत्तमं ।
सक्को माहणरूवेण, इमं वयणमब्बवी ॥ ६ ॥

(१) किंनु भो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वंति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥ ८ ॥

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्त-पुप्फ-फलोवेए, बहूणं बहुगुणे सया ॥ ६ ॥
वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो ! खगा ॥१०॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥११॥

(२) एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं ।
भयवं अंतेउरं तेणं, कीस णं नावपेक्खह ॥१२॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥१३॥

सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचणं ।
मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचणं ॥१४॥
चत्त पुत्त-कलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जइ किंचि, अप्पियं पि न विज्जइ ॥१५॥
बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंतमणुपस्सओ ॥१६॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥१७॥

(३) पागारं कारइत्ताणं, गोपुरट्टालगाणि य ।
उस्सूलग-सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥१८॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥१६॥

सद्धं नगरं किच्चा, तव-संवरमग्गलं ।
खंतिं निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥२०॥

धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेणं पलिमंथए ॥२१॥
तव–नाराय–जुत्तेणं, भित्तूणं कम्म–कंचुयं ।
मुणी विगय–संगामो, भवाओ परिमुच्चइ ॥२२॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥२३॥

(४) पासाए कारइत्ताणं, वड्ढमाणगिहाणि य ।
बालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥२४॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥२५॥

संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं ।
जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्विज्ज सासयं ॥२६॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥२७॥

(५) आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥२८॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥२९॥

असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पउंजए ।
अकारिणोऽत्थ बज्झंति, मुच्चए कारओ जणो ॥३०॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥३१॥

(६) जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नानमंति नराहिवा !
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥३३॥

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥३४॥
अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
अप्पणा चेव अप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥
पंचिंदियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वमप्पे जिए जियं ॥३६॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥३७॥

(७) जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण-माहणे ।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३८॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥३९॥

जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए ।
तस्स वि संजमो सेओ, अदिंतस्स वि किंचणं ॥४०॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥४१॥

(८) घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसह-रओ, भवाहि मणुयाहिवा ! ॥४२॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥४३॥

मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए ।
न सो सुअक्खाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥४४॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥४५॥

(९) हिरण्णं सुवण्णं मणि-मुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥४६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥४७॥

सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे,
सिया हु केलास-समा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि,
इच्छा हु आगास-समा अणंतिया ॥४८॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥४९॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥५०॥

(१०) अच्छेरयमब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा ।
असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहन्नसि ॥५१॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥५२॥

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसी-विसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा, अकामा जंति दुग्गइं ॥५३॥
अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।
माया गइ पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं ॥५४॥

अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउव्विऊण इंदत्तं ।
वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥

अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ।
अहो ते निरक्किया माया, अहो लोहो वसीकओ ॥५६॥
अहो ते अज्जवं साहु! अहो ते साहु! मद्दवं।
अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥
इहं सि उत्तमो भंते, पेच्चा होहिसि उत्तमो।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥५८॥

एवं अभित्थुणंतो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए।
पयाहिणं करेंतो, पुणो पुणो वंदए सक्को ॥५९॥
तो वंदिऊण पाए, चक्क-ंकुस-लक्खणे मुणिवरस्स।
आगासेणुप्पइओ, ललिय-चवल-कुंडल-तिरीडी ॥६०॥
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥६२॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह दुमपत्तय नामं दसमज्झयणं

'दुमपत्तए पंडुरए जहा,'
निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं,
समयं गोयम! मा पमायए ॥ १ ॥
'कुसग्गे जह ओसबिंदुए'
थोवं चिट्ठइ लंबमाणए।
एवं मणुयाण जीवियं,
समयं गोयम! मा पमायए ॥ २ ॥

इइ इत्तरियम्मि आउए,
जीवियए बहुपच्चवायए ।
विहुणाहि रयं पुरे कडं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३ ॥
दुल्लहे खलु माणुसे भवे,
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।
गाढा य विवाग कम्मुणो,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ४ ॥
पुढविक्कायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ५ ॥
आउक्कायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ६ ॥
तेउकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ७ ॥
वाउक्कायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ८ ॥
वणस्सइकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालमणंतदुरंतयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ९ ॥
बेइंदियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१०॥
तेइंदियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥११॥
चउरिंदियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१२॥
पंचिंदियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
सत्त-ट्ठ-भव-गहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१३॥

देवे नेरइए य अइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
इक्के-क्क-भवगहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१४॥
एवं भवसंसारे, संसरई सुहासुहेहि कम्मेहिं ।
जीवो पमायबहुलो, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१५॥

लद्धूण वि माणुसत्तणं,
आरिअत्तं पुणरवि दुल्लहं ।
बहवे दसुया मिलक्खुया,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१६॥

लद्धूण वि आरियत्तणं,
अहीण-पंचेंदियया हु दुल्लहा ।
विगलिंदियया हु दीसई,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१७॥

अहीण-पंचेंदियत्तं पि से लहे,
उत्तम-धम्म-सुई हु दुल्लहा ।
कुतित्थि-निसेवए जणे,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१८॥

लद्धूण वि उत्तमं सुइं,
सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
मिच्छत्त-निसेवए जणे,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१९॥

धम्मं पि हु सद्दहंतया,
दुल्लहया काएण फासया ।
इह-काम-गुणेहि मुच्छिया,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२०॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से सोयबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२१॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से चक्खुबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२२॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से घाणबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२३॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से जिब्भबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२४॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से फासबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२५॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से सव्वबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२६॥

अरई गंडं विसूइया,
आयंका विविहा फुसंति ते।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२७॥

वोच्छिंद सिणेहमप्पणो,
'कुमुयं सारइयं व पाणियं।'
से सव्वसिणेहवज्जिए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२८॥

चिच्चाण धणं च भारियं,
पव्वइओ हि सि अणगारियं।
मा वंतं पुणो वि आविए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२९॥

अवउज्झिय मित्त-बंधवं,
विउलं चेव धणोहसंचयं ।
मा तं बिइयं गवेसए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३०॥

न हु जिणे अज्ज दिस्सई,
बहुमए दिस्सइ मग्ग-देसिए ।
संपइ नेयाउए पहे,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३१॥

'अवसोहिय कंटगापहं,'
ओइण्णो सि पहं महालयं ।
गच्छसि मग्गं विसोहिया,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३२॥

'अबले जह भार-वाहए,'
मा मग्गे विसमेऽवगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुतावए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३३॥

'तिण्णो हु सि अण्णवं महं,'
किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पारं गमित्तए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३४॥

अकलेवरसेणिं उस्सिया,
सिद्धिं गोयम ! लोयं गच्छसि ।
खेमं च सिवं अणुत्तरं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३५॥

बुद्धे परिनिव्वुडे चरे,
गामगए नगरे व संजए ।
संतिमग्गं च वूहए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३६॥
बुद्धस्स निसम्म भासियं,
सुकहियमट्ठपओवसोहियं ।
रागं दोसं च छिंदिया,
सिद्धिगइं गए गोयमे ॥३७॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह बहुस्सुयपुया-णामं एगारसमज्झयणं

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवइ 'अविणीय' अबहुस्सुए ॥ २ ॥
अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भइ ।
थम्भा[1] कोहा[2] पमाएणं,[3] रोगेणा[4]लस्सएण[5] य ॥ ३ ॥

अह अट्ठहिं ठाणेहिं,'सिक्खासीलि' त्ति वुच्चइ ।
अहस्सिरे[1] सया दंते[2], न य मम्ममुदाहरे[3] ॥ ४ ॥
नासीले[4] न विसीले[5], न सिया अइलोलुए[6] ।
अकोहणे[7] सच्चरए[8], 'सिक्खासीलि' त्ति वुच्चइ ॥ ५ ॥

अह चोद्दसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ संजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाणं च न गच्छई ॥ ६ ॥

अभिक्खणं कोही हवइ[1], पबंधं च पकुव्वई[2] ।
मेत्तिज्जमाणो वमई[3], सुयं लद्धूण मज्जई[4] ॥ ७ ॥
अवि पावपरिक्खेवी[5], अविमित्तेसु कुप्पइ[6] ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावयं[7] ॥ ८ ॥
पइण्णवाई[8] दुहिले[9], थद्धे[10] लुद्धे[11] अणिग्गहे[12] ।
असंविभागी[13] अवियत्ते[14], 'अविणीए' त्ति वुच्चइ ॥ ९ ॥

अह पन्नरसहिं ठाणेहिं, 'सुविणीए' त्ति वुच्चइ ।
नीयावित्ती[1] अचवले[2], अमाई[3] अकुऊहले[4] ॥१०॥
अप्पं च अहिक्खिवइ[5], पबंधं च न कुव्वइ[6] ।
मेत्तिज्जमाणो भयइ[7], सुयं लद्धुं न मज्जइ[8] ॥११॥
न य पावपरिक्खेवी[9], न य मित्तेसु कुप्पइ[10] ।
अप्पियस्सा वि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासइ[11] ॥१२॥
कलह-डमरवज्जिए[12] बुद्धे अभिजाइए[13] ।
हिरिमं[14] पडिसंलीणे[15], 'सुविणीए' त्ति वुच्चइ ॥१३॥
वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं ।
पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धुमरिहइ ॥१४॥

(१) जहा संखंमि पयं, निहियं दुहओ वि विरायइ ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥१५॥
(२) जहा से कंबोयाणं, आइण्णे कंथए सिया ।
आसे जवेण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१६॥
(३) जहाइण्णसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे ।
उभओ नंदिघोसेणं, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१७॥
(४) जहा करेणुपरिकिण्णे, कुंजरे सट्ठिहायणे ।
बलवंते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१८॥

(५) जहा से तिक्खसिंगे, जायखंधे विरायइ।
वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१९॥
(६) जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए।
सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२०॥
(७) जहा से वासुदेवे, संख–चक्क–गयाधरे।
अप्पडिहय–बले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२१॥
(८) जहा से चाउरंते, चक्कवट्टी-महिड्ढिए।
चोद्दस–रयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२२॥
(९) जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२३॥
(१०) जहा से तिमिरविद्धंसे, उच्चिट्ठंते दिवायरे।
जलंते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२४॥
(११) जहा से उडुवई चंदे, नक्खत्त-परिवारिए।
पडिपुण्णे पुण्णमासिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२५॥
(१२) जहा से सामाइयाणं, कोट्ठागारे सुरक्खिए।
नाणा–धन्न–पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२६॥
(१३) जहा सा दुमाण पवरा, जंबू नाम सुदंसणा।
अणाढियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२७॥
(१४) जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा।
सीया नीलवंतपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२८॥
(१५ जहा से नगाण पवरे, सुमहं मंदरे गिरी।
नाणोसहि–पज्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२९॥
(१६) जहा से सयंभुरमणे, उदही अक्खओदए।
नाणा–रयण–पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥३०॥

समुद्द-गंभीरसमा दुरासया,
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया ।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो,
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥३१॥

तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए ।
जेणप्पाणं परं चेव, सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥३२॥
त्ति बेमि ॥

अह हरिएसिज्जं नामं दुवालसमज्झयणं

सोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी ।
"हरिएसबलो" नाम, आसी भिक्खू जिइंदिओ ॥ १ ॥

इरि-एसण-भासाए, उच्चारसमिईसु य ।
जओ आयाण-निक्खेवे, संजओ सु-समाहिओ ॥ २ ॥

मणगुत्ती- वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ ।
भिक्खट्ठा बंभइज्जम्मि, जन्नवाडमुवट्ठिओ ॥ ३ ॥

तं पासिऊणमेज्जंतं, तवेण परिसोसियं ।
पंतोवहि-उवगरणं, उवहसंति अणारिया ॥ ४ ॥

जाइमय-पडिथद्धा; हिंसगा अजिइंदिया ।
अबंभचारिणो बाला, इमं वयणमब्बवी ॥ ५ ॥

माहणा :—

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे ?
काले विकराले फोक्कनासे ।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए,
संकरदूसं परिहरिय कंठे ॥ ६ ॥

कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे ?
काए व आसा इहमागओसि ?
ओम-चेलया पंसु-पीसायभूया,
गच्छ, क्खलाहि किमिहं ठिओ सि ॥ ७ ॥

जक्खे तहिं तिंदुय-रुक्खवासी,
अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं,
इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥ ८ ॥

यक्षः—

समणो अहं संजओ बंभयारी,
विरओ धण-पयण-परिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले,
अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥ ९ ॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य,
अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायण-जीविणु त्ति,
सेसावसेसं लहउ तवस्सी ॥१०॥

ब्राह्मणाः—

उवक्खडं भोयण माहणाणं,
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं,
दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥११॥

यक्षः—

"थलेसु बीयाइ ववंति कासगा,"
तहेव निन्नेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं,
आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ॥१२॥

ब्राह्मण :—

खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए,
जहिं पकिण्णा विरुहंति पुण्णा ।
जे माहणा जाइ–विज्जोववेया,
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥१३॥

यक्ष :—

कोहो य माणो य वहो य जेसिं,
मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।
ते माहणा जाइ–विज्जा–विहीणा,
ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥१४॥

तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं,
अट्ठं न जाणाह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइं मुणिणो चरंति,
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥१५॥

ब्राह्मण :—

अज्झावयाणं पडिकूलभासी,
पभाससे किं नु सगासि अम्हं ?
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं,
न य णं दाहामु तुमं नियंठा ॥१६॥

यक्ष :—

समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स,
गुत्तीहि गुत्तस्स जिइंदियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं,
किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ॥१७॥

सोमदेव :— के इत्थ खत्ता उवजोइया वा,
अज्झावया वा सह खंडिएहिं ।
एयं खु दंडेण फलएण हंता,
कंठंमि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥१८॥

अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता,
उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दंडेहि वित्तेहि कसेहि चेव,
समागया तं इसि तालयंति ॥१९॥

भद्रा —

रन्नो तहिं 'कोसलियस्स' धूया,
'भद्द त्ति' नामेण अणिदियंगी ।
तं पासिया संजय-हम्ममाणं,
कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥२०॥

देवाभिओगेण निओइएणं,
दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया ।
नरिंद-देविंद-भिवंदिएणं,
जेणम्हि वंता इसिणा स एसो ॥२१॥

एसो हु सो उग्गतवो महप्पा,
जिइंदिओ संजओ बंभयारी ।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं,
पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥२२॥

महाजसो एस महाणुभागो,
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं,
मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥२३॥

एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा,
पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए,
जक्खा कुमारे विणिवारयंति ॥२४॥

ते घोररुवा ठिय अंतलिक्खे,
असुरा तहिं तं जणं तालयंति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमंते,
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥२५॥
गिरिं नहेहिं खणह, अयं दंतेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह, जे भिक्खुं अवमन्नह ॥२
आसीविसो उग्गतवो महेसी,
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
'अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा,'
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥
सीसेण एयं सरणं उवेह,
समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा,
लोगंपि एसो कुविओ डहेज्जा ॥२८॥
अवहेडिय-पिट्ठि-सउत्तमंगे,
पसारिया बाहु अकम्मचेट्ठे ।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमंते,
उड्ढंमुहे निग्गय-जीह-नेत्ते ॥२९॥
ते पासिया खंडियकट्ठभूए,
विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसिं पसाएइ सभारियाओ,
हीलं च निंदं च खमाह भंते ! ॥३०॥
सोमदेवः— बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं,
जं हीलिया तस्स खमाह भंते !
महप्पसाया इसिणो हवंति,
न हु मुणी कोवपरा हवंति ॥३१॥

मुनि :—

पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च,
मणप्पओसो न मे अत्थि कोइ ।
जक्खा हु वेयावडियं करेंति,
तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥

सोमदेव :—

अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा,
तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो,
समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥

अच्चेमु ते महाभाग !, न ते किंचन अच्चिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूरं, नाणा–वंजण–संजुयं ॥३४॥

इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं,
तं भुंजसु अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
बाढं-ति-पडिच्छइ भत्तपाणं,
मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥

तहियं गंधोदय-पुप्फवासं,
दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं,
आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥३६॥

ब्राह्मण :—

सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो,
न दीसइ जाइविसेस कोई ।
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं,
जस्सेरिस्सा इड्ढि महाणुभागा ॥३७॥

मुनिः—

किं माहणा ! जोइसमारभंता,
उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा ?
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं,
न तं सुदिट्ठं कुसला वयंति ॥३८॥

कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं,
सायं च पायं उदगं फुसंता ।
पाणाइ भूयाइ विहेडयंता,
भुज्जो वि मंदा ! पगरेह पावं ॥३९॥

सोमदेवादयः—

कहं चरे भिक्खू ? वयं जयामो,
पावाइ कम्माइ पणुल्लयामो ।
अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया,
कहं सुजट्ठं कुसला वयंति ॥४०॥

मुनिः—

छज्जीवकाए असमारभंता,
मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं,
एवं परिन्नाय चरंति दंता ॥४१॥

सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं,
इह जीवियं अणवकंखमाणा ।
वोसट्ठकाया सुइचत्तदेहा,
महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ॥४२॥

सोमदेवादयः—

के ते जोई के व ते जोइठाणे ?
का ते सुया किं च ते कारिसंगं ?
एहा य ते कयरा संति भिक्खु ?
कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥४३॥

मुनि :—

तवो जोई जीवो जोइठाणं,
जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मेहा संजमजोगसंती,
होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥४४॥

सोमदेवादयः—

के ते हरए के य ते संतितित्थे ?
कहिं सिणाओ व रयं जहासि ?
आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया,
इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥४५॥

मुनिः—

धम्मे हरए बंभे संतितित्थे,
अणाविले अत्तपसन्नलेसे।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो,
सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥४६॥
एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं,
महासिणाणं इसिणं पसत्थं।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा,
महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ता ॥४७॥
त्ति बेमि ॥

अह चित्तसंभूइज्जं नामं तेरहमज्झयणं

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु 'हत्थिणपुरम्मि'।
'चुलणीए बंभदत्तो,' उववन्नो 'पउमगुम्माओ' ॥ १ ॥
'कंपिल्ले' संभूओ, 'चित्तो' पुण जाओ 'पुरिमतालम्मि'।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥ २ ॥

कंपिलम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसंभूया।
सुह-दुक्ख-फलविवागं, कहेंति ते एक्कमेक्कस्स ॥ ३ ॥

चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बंभदत्तो महायसो।
भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी ॥ ४ ॥

आसीमु भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा।
अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्न-हिएसिणो ॥ ५ ॥

दासा "दसण्णे" आसी, मिया "कालिंजरे नगे"।
हंसा 'मयंगतीराए', सोवागा 'कासिभूमिए' ॥ ६ ॥

देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया।
इमा णो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥

चित्तमुनिः—

कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय ! विचिंतिया।
तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥ ८ ॥

ब्रह्मदत्तः—

सच्च—सोय—प्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा।
ते अज्ज परिभुंजामो, किं नु चित्तेवि से तहा ? ॥ ९ ॥

चित्तमुनिः—

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं,
आया ममं पुण्णफलोववेए ॥१०॥

जाणाहि संभूय ! महाणुभागं,
महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं।
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं !
इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥११॥

महत्थरूवा वयणऽप्पभूया,
गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया,
इहऽज्जयंते समणो म्हि जाओ ॥१२॥

ब्रह्मदत्तः—

उच्चोयए महु कक्के य बंभे,
पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं,
पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥१३॥

नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं,
नारीजणाहिं परिवारयंतो ।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥१४॥

चित्तमुनिः—

तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं,
नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही,
चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥१५॥

सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडंबियं ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥

बालाभिरामेसु दुहावहेसु,
न तं सुहं कामगुणेसु रायं !
विरत्तकामाण तवोधणाणं,
जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥१७॥

नरिंद ! जाई अहमा नराणं,
सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेसा,
वसीय सोवागनिवेसणेसु ॥१८॥

तीसे अ जाईइ उ पावियाए,
वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा,
इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ॥१९॥

सो दाणिसिं राय ! महाणुभागो,
महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइं असासयाइं,
आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥२०॥

इह जीविए राय ! असासयम्मि,
धणियं तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो ।
से सोयइ मच्चुमुहोवणीए,
धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥२१॥

'जहेह सीहो व मियं गहाय',
मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया,
कालम्मि तम्मंसहरा भवंति ॥२२॥

न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ,
न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं,
कत्तारमेवं अणुजाइ कम्मं ॥२३॥

चिच्चा दुप्पयं च चउप्पयं च,
खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ,
परं भवं सुंदरपावगं वा ॥२४॥

तं एक्कगं तुच्छसरीरगं से,
चिईगयं दहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्तावि य नायओ य,
दायारमन्नं अणुसंकमंति ॥२५॥

उवणिज्जई जीवियमप्पमायं,
वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं !
पंचालराया ! वयणं सुणाहि,
मा कासि कम्माइ महालयाइं ॥२६॥

ब्रह्मदत्त :—

अहं पि जाणामि जहेह साहू,
जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवंति,
जे दुज्जया अज्ज ! अम्हारिसेहिं ॥२७॥

हत्थिणपुरम्मि चित्ता ! दट्ठूणं नरवइं महिड्ढियं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं, नियाणमसुहं कडं ॥२८॥

तस्स मे अप्पडिकंतस्स, इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ॥२९॥

"नागो जहा" पंकजलावसन्नो,
दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा,
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥३०॥

चित्तमुनि :—

अच्चेइ कालो तूरंति राइओ,
न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसं चयंति,
दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥३१॥

जई सि भोगे चइउं असत्तो,
अज्जाइ कम्माइ करेहि रायं !
धम्मे ठिओ सव्व-पयाणुकंपी,
तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥३२॥

न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी,
गिद्धो सि आरंभ—परिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो,
गच्छामि रायं ! आमंतिओसि ॥३३॥

पंचालराया वि य बंभदत्तो,
साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे,
अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥३४॥

चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो,
उदग्गचरित्ततवो महेसी ।
अणुत्तरं संजमं पालइत्ता,
अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥३५॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह उसुयारिज्जं नामं चउद्दसमज्झयणं

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि,
केइ चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे 'उसुयारनामे,'
खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥ १ ॥
सकम्मसेसेण पुराकएणं,
कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्ण–संसारभया जहाय,
जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना ॥२॥
पुमत्तमागम्म कुमार दो वि,
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहे "सुयारो",
रायत्थ देवी "कमलावई" य ॥ ३ ॥
जाई–जरा–मच्चु–भयाभिभूया,
बहिं विहाराभिनिविट्ठ-चित्ता ।
संसार–चक्कस्स विमोक्खणट्ठा,
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥
पियपुत्तगा दुन्नि वि माहणस्स,
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं,
तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥
कुमारौ— ते कामभोगेसु असज्जमाणा,
माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा,
तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥

असासयं दट्ठु इमं विहारं,
बहुअंतरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो,
आमंतयामो चरिस्सामु मोणं ॥ ७ ॥

भृगुः—

अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं,
तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयंति,
जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥
अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे,
पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ! ।
भोच्चा ण भोए सह इत्थियाहिं,
आरण्णगा होह मुणी पसत्था ॥ ९ ॥

कुमारौ—

सो य ग्गि णा आयगुणिंधणेण,
मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
संतत्तभावं परितप्पमाणं,
लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥१०॥
पुरोहियं तं कमसोऽणुणंतं,
निमंतयंतं च सुए धणेणं ।
जहक्कमं कामगुणेहि चेव,
कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥११॥

वेया अहिया न भवंति ताणं,
भुत्ता दिया निंति तमं तमेणं ।
जाया य पुत्ता न हवंति ताणं,
को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥१२॥

खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा,
पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा ।
संसार-मोक्खस्स विपक्खभूया,
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥१३॥
परिव्वयंते अणियत्तकामे,
अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे,
पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥१४॥
इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि,
इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं,
हरा हरंति त्ति कहं पमाओ ॥१५॥

भृगुः—

धणं पभूयं सह इत्थियाहिं,
सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो,
तं सव्वसाहीणमिहेव तुब्भं ॥१६॥

कुमारौ—

धणेण किं धम्मधुराहिगारे,
सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
समणा भविस्साम्रु गुणोहधारी,
बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥१७॥

भृगुः—

'जहा य अग्गी अरणी असंतो,
'खीरे घयं तेल्लमहातिलेसु ।'
एमेव जाया सरीरंसि सत्ता,
संमुच्छइ नासइ नावचिट्ठे ॥१८॥

कुमारौ—

न इंदियग्गेज्झ अमुत्तभावा,
अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्झत्थहेउं नियस्स बंधो,
संसारहेउं च वयंति बंधं ॥१९॥
जहा वयं धम्ममजाणमाणा,
पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुज्झमाणा परिरक्खयंता,
तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥२०॥
अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए ।
अमोहाहिं पडंतीहिं, गिहंसि न रइं लभे ॥२१॥

भृगुः—

केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ?
का वा अमोहा वुत्ता ? जाया चिंतावरो हुमि ॥२२॥

कुमारौ—

मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय विजाणह ॥२३॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ ॥२४॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ॥२५॥

भृगुः—

एगओ संवसित्ताणं, दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
पच्छा जाया ! गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥

कुमारौ—

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ॥२७॥

अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो,
जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।
अणागयं नेव य अत्थि किंची,
सद्धाखमं णो विणइत्तु रागं ॥२८॥

भार्यां प्रति भृगुः—

पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो,
वासिट्ठि ! भिक्खायरियाइ कालो ।
"साहाहि रुक्खो लहए समाहिं,
छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं" ॥२९॥
"पंखाविहूणोव जहेव पक्खी",
"भिच्चव्विहूणोव्व रणे नरिंदो ।"
"विवन्नसारो वणिओव्व पोए,"
पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥३०॥

भृगुं प्रति जसाः—

सुसंभिया कामगुणे इमे ते,
संपिंडिया अग्गरसप्पभूया ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं,
पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥३१॥

भार्यां प्रति भृगुः—

भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ,
न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं,
संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥३२॥

भृगुं प्रति जसाः—

मा हू तुमं सोयरियाण संभरे,
"जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।"
भुंजाहि भोगाहि मए समाणं,
दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥३३॥

भार्या प्रतिभृगुः—

'जहा य भोई तणुयं भुयंगो,
निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।'
एमेए जाया पयहंति भोए,
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥३४॥
'छिंदित्तु जालं अबलं व रोहिया,
मच्छा जहा कामगुणे पहाए ।'
धोरे य सीला तवसा उदारा,
धीरा हु भिक्खायरियं चरंति ॥३५॥

जसाया स्वगतम्—

'नहेव कुंचा समइक्कमंता,
तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।'
पलिंति पुत्ता य पई य मज्झं,
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥३६॥

कमलावती—

पुरोहियं तं ससुयं सदारं,
सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुंबसारं विउलुत्तमं च,
रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥

वंतासी पुरिसो रायं ! न सो होई पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं, धणं आयाउमिच्छसि ॥३८॥
सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तव ॥३९॥

मरिहिसि रायं ! जया तया वा,
मणोरमे कामगुणे पहाय ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं,
न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥४०॥

"नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा,"
संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा,
परिग्गहारंभनियत्तदोसा ॥४१॥

दवग्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जंतुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयंति, रागद्दोसवसं गया" ॥४२॥

एवमेव वयं मूढा, काम–भोगेसु मुच्छिया ।
डज्झमाणं न बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जगं ॥४३॥

भोगे भोच्चा वमित्ता य, लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छंति, 'दिया कामकमा इव' ॥४४॥

इमे य बद्धा फंदंति, मम हत्थऽज्जमागया ।
वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥

'सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं ।'
आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ॥४६॥

'गिद्धोवमा' उ नच्चाणं, कामे संसारवड्ढणे ।
'उरगो सुवण्णपासेव्व,' संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥

'नागोव्व' बंधणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वए ।
एयं पत्थं महारायं, उस्सुयारि त्ति मे सुयं ॥४८॥

चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए ।
निव्विसया निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥४९॥

सम्मं धम्मं वियाणित्ता, चिच्चा कामगुणे वरे ।
तवं पगिज्झहक्खायं, घोरं घोरपरक्कमा ॥५०॥

एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा ।
जम्म-मच्चु-भउव्विग्गा, दुक्खस्संतगवेसिणो ॥५१॥

सासणे विगयमोहाणं, पुव्विं भावणभाविया ।
अचिरेणेव कालेणं, दुक्खसंतमुवागया ॥५२॥

राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ ।
माहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिनिव्वुडा ॥५३॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह सभिक्खू नामं पंचदसमज्झयणं

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं,
सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं जहिज्ज अकामकामे,
अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥ १ ॥

राओवरयं चरेज्ज लाढे,
विरए वेयवियायरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी,
जे कम्हि-वि न मुच्छिए स भिक्खू ॥ २ ॥

अक्कोस-वहं विइत्तु धीरे,
मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ३ ॥

पंतं सयणासणं भइत्ता,
सीउण्हं विविहं च दंस-मसगं ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ४ ॥

नो सक्कियमिच्छई न पूयं,
नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं ?
से संजए सुव्वए तवस्सी,
सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥ ५ ॥

जेण पुण जहाइ जीवियं,
मोहं वा कसिणं नियच्छइ ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी,
न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥ ६ ॥

छिन्नं सरं भोमं अंतलिक्खं,
सुमिणं-लक्खण-दंड-वत्थुविज्जं ।
अंगवियारं सरस्स विजयं,
जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥ ७ ॥

मंतं मूलं विविहं वेज्जचिंतं,
वमण-विरेयण-धूम-णेत्त-सिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च,
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ८ ॥

खत्तियगण–उग्ग–रायपुत्ता,
माहण-भोई य विविहा य सिप्पिणो ।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं,
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ९ ॥

गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा,
अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइय-फलट्ठा,
जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥१०॥

सयणासण पाण-भोयणं,
विविहं खाइम साइमं परेसिं ।
अदए पडिसेहिए नियंठे,
जे तत्थ न पउस्सइ स भिक्खू ॥११॥

जं किंचि आहार-पाणगं,
विविहं खाइम-साइमं परेसिं लद्धुं ।
जो तं तिविहेण नाणुकंपे,
मण-वय-काय-सुसंवुडे स भिक्खू ॥१२॥

आयामगं चेव जवोदणं च,
सीयं सोवीर-जवोदगं च ।
नो हीलए पिंडं नीरसं तु,
पंतकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥१३॥

सद्दा विविहा भवंति लोए,
दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा,
भीमा भयभेरवा उराला,
जो सोच्चा न विहिज्जइ स भिक्खू ॥१४॥

वायं विविहं समिच्च लोए,
सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी,
उवसंते अविहेडए स भिक्खू ॥१५॥

असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते,
जिइंदिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहु-अप्प-भक्खी,
चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥१६॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह बंभचेरसमाहिठाणा णामं सोलसमज्झयणं

सुयं मे आउसं !
तेणं भगवया एवमक्खायं—
इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ।
जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले,
गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्त बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ।
जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले,समाहिबहुले,
गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्त बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ।
से भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले,
गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्त बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

तं जहा—
विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे ।
नो इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे—
आयरियाह—
निग्गंथस्स खलु इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं—
सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा, समुप्पज्जिज्जा—
भेदं वा लभेज्जा,उम्मायं वा पाउणिज्जा,दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नताओ वा धम्माओ भंसेज्जा ।
तम्हा नो इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे।१।

नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गंथे।

तं कहमिति चे—

आयरियाह—

निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—

दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा—

केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा—

तम्हा खलु नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥ २ ॥

नो इत्थीणं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गंथे।

तं कहमिति चे—

आयरियाह—

निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—

दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा—

केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा—

तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा॥ ३।

नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं,

आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गंथे।

तं कहमिति चे —

आयरियाह—

निग्गंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं,

आलोएमाणस्स, निज्झायमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा,
तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं,
आलोएज्जा निज्झाएज्जा ॥ ४ ॥

नो इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा,
थणियसद्दं वा, कंदियसद्दं वा विलवियसद्दं वा—
सुणित्ता हवइ से निग्गंथे।
तं कहमिति चे—
आयरियाह—
निग्गंथस्स खलु इत्थीणं—
कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा,
थणियसद्दं वा, कंदियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा,
सुणेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा, समुप्पज्जिज्जा
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा,
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा
तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं—
कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा,
थणियसद्दं वा, कंदियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा,
सुणेमाणे विहरेज्जा ॥ ५ ॥

नो इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे—
आयरियाह—
निग्गंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा—
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा—
तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ॥६॥

नो पणीयं आहारं आहरित्ता हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे—
आयरियाह—
निग्गंथस्स खलु पणीयं आहारं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा
तम्हा खलु नो निग्गंथे पणीयं आहारं आहरेज्जा ॥ ७ ॥

नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे—
आयरियाह—
निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं—
आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा
तम्हा खलु नो निग्गंथे अइमायाए पाणभोयणं आहारेज्जा ॥ ८ ॥

नो विभूसाणुवाई हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे—
आयरियाह—
निग्गंथस्स खलु विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे—
इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ—
तओ णं इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा
तम्हा खलु नो निग्गंथे विभूसाणुवाई हवेज्जा ॥ ९ ॥

नो सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवाई हवई से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे—
आयरियाह—
निग्गंथस्स खलु सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवाईस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा
तम्हा खलु नो निग्गंथे सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवाई हवेज्जा ।
दसमे बंभचेरसमाहिठाणे हवइ ॥१०॥
भवंति इत्थ सिलोगा ।
तं जहा—

जं विवित्तमणाइण्णं, रहियं इत्थिजणेण य ।
बंभचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए ॥ १ ॥

मणपल्हायजणणी, कामरागविवड्ढणी ।
बंभचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥

समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं ।
बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥

अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लवियपेहियं ।
बंभचेररओ थीणं, चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥ ४ ॥

कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणिय-कंदियं ।
बंभचेररओ थीणं, सोयगिज्झं विवज्जए ॥ ५ ॥

हासं किड्डं रइं दप्पं, सहसावित्तासियाणि य ।
बंभचेररओ थीणं, नाणुचिंते कयाइ वि ॥ ६ ॥

पणीयं भत्तपाणं तु, खिप्पं मयविवड्ढणं ।
बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥

धम्मलद्धं मियं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं ।
नाइमत्तं तु भुंजेज्जा, बंभचेररओ सया ॥ ८ ॥

विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीर-परिमंडणं ।
बंभचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥

सद्दे रूवे य गंधे य, रसे फासे तहेव य ।
पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥१०॥

आलओ[1] थीजणाइण्णो[2], थीकहा य मणोरमा[3] ।
संथवो चेव नारीणं[4], तासिं इंदियदरिसणं[5] ॥११॥
कूइयं रुइयं गीयं, हसियंभुत्ताऽऽसियाणि[6] य ।
पणीयं भत्तपाणं च, अइमायं पाणभोयणं[8] ॥१२॥

गत्तभूसणमिट्ठं[9] च, कामभोगा य दुज्जया[10] ।
नरस्सत्तगवेसिस्स, "विसं तालउडं जहा" ॥१३॥
दुज्जए कामभोगे य, निच्चसो परिवज्जए ।
संकट्ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥१४॥
धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही ।
धम्मारामरए दंते, बंभचेर-समाहिए ॥१५॥
देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति तं ॥१६॥
एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झंति चाणेण, सिज्झिस्संति तहावरे ॥१७॥
त्ति बेमि ॥

अह पावसमणिज्जं नाम सत्तदसमज्झयणं

जे केइ उ पव्वइए नियंठे,
धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं,
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥
सेज्जा दढा पाउरणं मि अत्थि,
उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसु त्ति,
किं नाम काहामि सुएण भंते ! ॥ २ ॥
जे केई उ पव्वइए, निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पिच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥
आयरिय-उवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिंसई बाले, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ४ ॥

आयरिय-उवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ५ ॥
सम्मद्दमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ६ ॥
संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकंबलं ।
अपमज्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ७ ॥
दव-दवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं ।
उल्लंघणे य चंडे य, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ८ ॥
पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकंबलं ।
पडिलेहा-अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ९ ॥
पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया ।
गुरुं परिभावए निच्चं, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१० ॥
बहुमाई पमुहरी, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अचियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥११॥
विवादं च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा ।
वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१२॥
अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयइ ।
आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१३॥
ससरक्खपाए सुवइ, सेज्जं न पडिलेहइ ।
संथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१४॥
दुद्धदही-विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं ।
अरए य तवोकम्मे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१५॥
अत्थंतम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं ।
चोइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१६॥

आयरियपरिच्चाई, परपासंडसेवए।
गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१७॥
सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसि वावरे।
निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१८॥
सन्नाइपिंडे जेमेइ, नेच्छई सामुदाणियं।
गिहिनिसेज्जं च वाहेइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१९॥

एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे,
रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे।
अयंसि लोए विसमेवगरहिए,
न से इहं नेव परत्थ लोए ॥२०॥

जे वज्जए एए सया उ दोसे,
से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे।
अयंसि लोए 'अमयं व पूइए'
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥२१॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह संजइज्जं नामं अठारसममज्झयणं

'कंपिल्ले नयरे' राया, उदिण्णबलवाहणे।
नामेणं 'संजए' नाम, मिगव्वं उवणिग्गए ॥ १ ॥
हयाणीए गयाणीए, रहाणीए[3] तहेव य।
पायत्ताणीए[4] महया, सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥
मिए छुहित्ता हयगओ, कंपिल्लुज्जाणकेसरे।
भीए संते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥ ३ ॥

अह 'केसरम्मि' उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥ ४ ॥
अप्फोवमंडवंमि, झायइ खवियासवे ।
तस्सागए मिए पासं, वहेइ से नराहिवे ॥ ५ ॥
अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासइ ॥ ६ ॥
अह राया तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहओ ।
मए उ मंदपुण्णेणं, रसगिद्धेण घंतुणा ॥ ७ ॥
आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वंदए पाए, भगवं ! एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥
अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥ ९ ॥

संजयः—

संजओ अहमम्मीति, भगवं ! वाहराहि मे ।
कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥१०॥

गर्दभालिमुनिः—

अभओ पत्थिवा ! तुब्भं, अभयदाया भवाहि य ।
अणिच्चे जीवलोगंमि, किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥११॥
जया सव्वं परिच्चज्ज, गंतव्वमवसस्स ते ।
अणिच्चे जीवलोगंमि, किं रज्जंमि पसज्जसि ? ॥१२॥
जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचंचलं ।
जत्थ तं मुज्झसि रायं ! पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥१३॥
दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा ।
जीवंतमणुजीवंति, मयं नाणुवयंति य ॥१४॥
नीहरंति मयं पुत्ता, पियरं परमदुक्खिया ।
पियरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं ! तवं चरे ॥१५॥

तओ तेणज्जिए दव्वे, दारे य परिरक्खिए।
कीलंतिऽन्ने नरा रायं! हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥१६॥
तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं।
कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥१७॥

संजयः—

सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए।
महया संवेगनिव्वेयं, समावन्नो नराहिवो ॥१८॥
संजओ चइउं रज्जं, निक्खंतो जिणसासणे।
गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥१९॥
चिच्चा रट्ठं पव्वइए,

क्षत्रियमुनिः—

खत्तिए परिभासइ।
जहा ते दीसइ रूवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥२०॥

किं नामे किं गोत्ते कस्सट्ठाए व माहणे।
कहं पडियरसि बुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसि? ॥२१॥

संजयमुनिः—

संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो?
गद्दभाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥२२॥

क्षत्रियमुनिः क्रियावादादि मिथ्याभिमतानामनात्मनीनतां प्रदर्शयति

किरियं अकिरियं[2] विणयं[3], अन्नाणं[4] च महामुणी।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासइ ॥२३॥
इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए।
विज्जा-चरण-संपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥२४॥
पडंति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो।
दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥

मायावुइयमेयं तु, मुसा भासा निरत्थिया ।
संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥

सव्वेए विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ॥२७॥

क्षत्रियमुनिः स्वपूर्वभवं वर्णयति

अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे ।
जा सा पालि-महापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥२८॥

से चुए, 'बंभलोगाओ', माणुस्सं भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥

नाणारुइं च छंदं च, परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥३ ॥

पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥

जं च मे पुच्छसी काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसासणे ॥३२॥

किरियं च रोयइ धीरे, अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं ॥३३॥

क्षत्रियमुनिः प्रव्रजितान् चक्रवर्त्यादीन् वर्णयति

एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थ-धम्मोवसोहियं ।
"भरहो" वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइं पव्वए ॥३४॥

"सगरो" वि सागरंतं, भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाए परिनिव्वुडे ॥३५॥

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ, "मघवं" नाम महाजसो ॥३६॥

"सणंकुमारो" मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
"संति" संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥

इक्खागरायवसभो, 'कुंथू' नाम नरीसरो ।
विक्खायकित्ती भगवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३९॥

सागरंतं चइत्ताणं, भरहवासं नरेसरो ।
'अरो' य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥

चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बलवाहणं ।
चइत्ता उत्तमे भोए, 'महापउमे' तवं चरे ॥४१॥

एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माण–निसूरणो ।
'हरिसेणो' मणुस्सिंदो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४२॥

अन्निओ रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाई दमं चरे ।
'जयनामो' जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४३॥

'दसण्णरज्जं' मुदियं चइत्ताणं मुणी चरे ।
'दसण्णभद्दो' निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥

'नमी' नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं 'वइदेही', सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥

'करकंडू' कलिंगेसु, पंचालेसु य 'दुम्मुहो' ।
नमी राया विदेहेसु गंधारेसु य 'नग्गई' ॥४६॥

एए नरिंदवसभा, निक्खंता जिणसासणे ।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥४७॥

'सोवीररायवसभो', चइत्ताण मुणी चरे ।
'उदायणो' पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४८॥

तहेव 'कासिराया' वि, सेओ सच्चपरक्कमे ।
कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥४६॥
तहेव 'विजओ राया', अणट्ठाकित्ति पव्वए ।
रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥५०॥
तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
'महब्बलो' रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥५१॥
कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे ?
एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥
अच्चंतनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई ।
अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ॥५३॥
कहिं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे ।
सव्वसंग-विनिमुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥५४॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह मियापुत्तीयं नामं एगूणवीसइमं अज्झयणं

'सुग्गीवे' नयरे रंमे, काणणुज्जाणसोहिए ।
राया 'बलभद्दित्ति', 'मिया' तस्सग्गमहिसी ॥ १ ॥
तेसिं पुत्ते 'बलसिरी', 'मियापुत्ते' त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥
नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं ।
देवो दोगुंदगो चेव, निच्चं मुइय—माणसो ॥ ३ ॥
मणि-रयण-कोट्टिमतले, पासायालोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स, चउक्क—तिय—च्चच्चरे ॥ ४ ॥

अह तत्थ अइच्छंतं, पासइ समण–संजयं ।
तव–नियम–संजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥
तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ६ ॥
साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहं गयस्स संतस्स, जाइसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥
देवलोगचुओ संतो, माणुसं भवमागओ ।
सन्नि-नाण-समुप्पन्ने, जाइं सरइ पुराणियं ॥
जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरइ पोराणियं जाइं, सामण्णं च पुरा कयं ॥ ८ ॥

मृगापुत्रः—

विसएहि अरज्जंतो, रज्जंतो संजमंमि य ।
अम्मा-पियरमुवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥ ९ ॥

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि,
नरएसु दुक्खं च तिरिक्ख-जोणिसु ।
निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ,
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥१०॥

अम्मताय ! मए भोगा, भुत्ता "विसफलोवमा ।
पच्छा कडुयविवागा, अणुबंध दुहावहा ॥११॥
इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥१२॥
असासए सरीरंमि, रइं नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, "फेणबुब्बुयसन्निभे" ॥१३॥
माणुसत्ते असारंमि, वाहीरोगाण आलए ।
जरा–मरणघत्थंमि, खणंपि न रमामहं ॥१४॥

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो ॥१५॥

खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बंधवा ।
चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे ॥१६॥

"जहा किंपागफलाणं," परिणामो न सुंदरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥१७॥

"अद्धाणं जो महंतं तु, अप्पाहेओ पवज्जइ ।
गच्छंतो सो 'दुही होइ,' छुहा-तण्हाए पीड़िओ ॥१८॥
एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो 'दुही होइ', वाहीरोगेहिं पीड़िओ ॥१९॥

"अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जइ ।"
गच्छंतो सो 'सुही होइ', छुहातण्हाविवज्जिओ ॥२०॥
एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो 'सुही होइ', अप्पकम्मे अवेयणे ॥२१॥

'जहा गेहे पलित्तम्मि', तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभंडाणि नीणेइ, असारं अवउज्झइ ॥२२॥

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥२३॥

पितरौ—

तं बिंतम्मापियरो, सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं ।
गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं भिक्खुणा ॥२४॥

(१) समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करं ॥२५॥

(२) निच्चकालऽप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं ।
भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेणं दुक्करं ॥२६॥

(३) दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं ।
अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्करं ॥२७॥
(४) विरई अबंभचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा ।
उग्गं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं ॥२८॥
(५) धण-धन्न-पेसवग्गेसु, परिग्गह-विवज्जणं ।
सव्वारंभ-परिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥२९॥
(६) चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा ।
सन्निही-संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥३०॥
छुहा तण्हा ए सीउण्हं, दंस-मसअवेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥३१॥
तालणा तज्जणा चेव, वह-बंधपरीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥३२॥
'कावोया' जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो ।
दुक्खं बंभव्वयं घोरं, धारेउं य महप्पणो ॥३३॥
सुहोइओ तुमं पुत्ता, ! सुउमालो सुमज्जिओ ।
न हुसि पभू तुमं पुत्ता, सामण्णमणुपालियं ॥३४॥
जावज्जीवमविस्सामो, गुणाणं तु महब्भरो ।
'गुरुओ लोहभारुव्व', जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥३५॥
'आगासे गंगसोउव्व', पडिसोउव्व दुत्तरो ।
बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥३६॥
"वालुया कवले" चेव, निरस्साए उ संजमे ।
'असिधारागमणं' चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३७॥
'अहीवेगंतदिट्ठीए', चरित्ते पुत्त ! दुक्करे ।
'जवा लोहमया चेव', चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३८॥
'जहा अग्गिसिहा दित्ता', पाउं होइ सुदुक्करा ।
तहा दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ॥३९॥

'जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।'
तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ॥४०॥
'जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मंदरो गिरी ।'
तहा निहुयनीसंकं, दुक्करं समणत्तणं ॥४१॥
'जहा भुयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो ।
तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसागरो ॥४२॥
भुंज माणुस्सए भोए, पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४३॥

मृगापुत्रः—

सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचिवि दुक्करं ॥४४॥
सारीर-माणसा चेव, वेयणाओ अनंतसो ।
मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि य ॥४५॥
जरामरणकंतारे, चाउरंते भयागरे ।
मया सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४६॥

नरक वर्णनम्—

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणंतगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा उण्हा, असाया वेइया मए ॥४७॥
जहा इहं इमं सीयं, एत्तोऽणंतगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा सीया, असाया वेइया मए ॥४८॥
कंदंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणंतसो ॥४९॥
महादवग्गिसंकासे, मरुंमि वइरवालुए ।
कलंबवालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणंतसो ॥५०॥
रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो ।
करवत्त-करकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥५१॥

अइतिक्खकंटगाइण्णे, तुंगे सिंबलिपायवे ।
खेवियं पासबद्धेणं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥५२॥
महाजंतेसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं ।
पीलिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ॥५३॥
कूवंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरंतो अणेगसो ॥५४॥
असीहि अयसिवण्णाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य ।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, ओइण्णो पावकम्मुणा ॥५५॥
अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, 'रोज्झो' वा जह पाडिओ ॥५६॥
हुयासणे जलंतम्मि, चियासु 'महिसो' विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविओ ॥५७॥
बला संडासतुंडेहिं, लोहतुंडेहिं पक्खिहिं ।
विलुत्तो विलवंतोऽहं, ढंकगिद्धेहिंऽणंतसो ॥५८॥
तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेयरणिं नइं ।
जलं पाहिं ति चिंतंतो, खुरधाराहिं विवाइओ ॥५९॥
उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं ।
असिपत्तेहिं पडंतेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥६०॥
मुग्गरेहिं मुसंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहि य ।
गया-संभग्ग-गत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणंतसो ॥६१॥
खुरेहि तिक्खधाराहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ॥६२॥
पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ बद्धरुद्धो य, बहुसो चेव विवाइओ ॥६३॥
गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं ।
उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणंतसो ॥६४॥

विदंसएहि जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव ।
गहिओ लग्गो य बद्धो य, मारिओ य अणंतसो ॥६५॥

कुहाड–फरसु–माईहिं, वड्ढईहिं दुमो विव ।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणंतसो ॥६६॥

चवेड--मुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं, अयं पिव ।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणंतसो ॥६७॥

तत्ताइं तंबलोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य ।
पाइओ कलकलंताइं, आरसंतो सुभेरवं ॥६८॥

तुहं पियाइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि य ।
खाविओ मि स-मंसाइं, अग्गिवण्णाइऽणेगसो ॥६९॥

तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य ।
पाइओ मि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥७०॥

निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य ।
परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेइया मए ॥७१॥

तिव्वचंडप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा ।
महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेइया मए ॥७२॥

जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेयणा ।
एत्तो अणंतगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥७३॥

सव्वभवेसु असाया, वेयणा वेइया मए ।
निमेसंतरमित्तं पि, जं साता नत्थि वेयणा ॥७४॥

पितरौ—

तं बिंतऽम्मापियरो, छंदेणं पुत्त ! पव्वया ।
नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥७५॥

मृगापुत्रः—

सो बेइ अम्मापियरो ! एवमेयं जहा फुडं ।
पडिकम्मं को कुणइ, अरण्णे मियपक्खिणं ॥७६॥

एगब्भूओ अरण्णे वा, जहा उ चरइ मिगो ।
एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥७७॥
जहा मिगस्स आयंको, महारण्णंमि जायइ ।
अच्छंतं रुक्खमूलंमि, को णं ताहे चिगिच्छई ॥७८॥
को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छइ सुहं ?
को से भत्तं च पाणं वा, आहरित्तु पणामए ? ॥७९॥
जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं ।
भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ॥८०॥
खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य ।
मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छइ मिगचारियं ॥८१॥
एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए ।
मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिसं ॥८२॥

जहा मिए एग अणेगचारी,
अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे,
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥८३॥

मृगापुत्रस्यदीक्षाग्रहणम्—

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता ! जहासुहं ।
अम्मापिऊहिऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तओ ॥८४॥
मियचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अंब ! ऽणुन्नाओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥८५॥
एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिंदइ ताहे, 'महानागो व्व कंचुयं ॥८६
इड्ढी वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ ।
'रेणुयं व पडे लग्गं,' निधुणित्ताण निग्गओ ॥८७॥

पंचमहव्वयजुत्तो, पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिंतरबाहिरए, तवोकम्मंमि उज्जुओ ॥८८॥
निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो ।
समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥८६॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा ।
समो निंदा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥६०॥
गारवेसु कसाएसु, दंड-सल्ल-भएसु य ।
नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबंधणो ॥६१॥
अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ ।
वासीचंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥६२॥
अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे ।
अज्झप्प-ज्झाणजोगेहिं, पसत्थ-दमसासणे ॥६३॥
एवं नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य ।
भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥८४॥
बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥६५॥
एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणिअट्टंति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥६६॥
महप्पभावस्स महाजसस्स,
मियाइपुत्तस्स निसम्म भासियं ।
तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं,
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥६७॥
वियाणिया दुक्ख-विवड्ढणं धणं,
ममत्तबंधं च महाभयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं,
धारेह निव्वाण-गुणावहं महं ॥६८॥ त्ति बेमि ॥

अह महानियंठिज्ज–नामं वीसइमं अज्झयणं

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
अत्थ-धम्म-गइं तच्चं अणुसिट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥

पभूयरयणो राया, 'सेणिओ' मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ, 'मंडिकुच्छिसि चेइए ॥ २ ॥
नाणा–दुम-लयाइण्णं, नाणा-पक्खि-निसेवियं ।
नाणाकुसुम-संछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं ॥ ३ ॥
तत्थ सो पासइ साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥ ४ ॥
तस्स रूवं तु पासित्ता, राइओ तम्मि संजए ।
अच्चंतपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥
अहो वण्णो अहो रूवं, अहो अज्जस्स सोमया ।
अहो खंती अहो मुत्ती, अहो भोगे असंगया ॥ ६ ॥
तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छइ ॥ ७ ॥

श्रेणिकः—

तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया ।
उवट्ठिओ सि सामण्णे, एयमट्ठं सुणेमि ता ॥ ८ ॥

अनाथी मुनिः—

अणाहोमि महाराय !, नाहो मज्झ न विज्जइ ।
अणुकंपयं सुहिं वावि, कंचि नाभिसमेमहं ॥ ९ ॥

श्रेणिकः—

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जइ ॥१०॥

होमि नाहो भयंताणं, भोगे भुंजाहि संजया !
मित्त–नाइ–परिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥

अनाथी मुनिः—

अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया ! मगहाहिवा !
अप्पणा अणाहो संतो, कहं नाहो भविस्ससि ! ॥१२॥

श्रेणिकः—

एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभंतो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं, साहुणा विम्हयन्निओ ॥१३॥
अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोए, आणा इस्सरियं च मे ॥१४॥
एरिसे संपयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ, मा हु भंते ! मुसं वए ॥१५॥

अनाथी मुनिः—

न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा !
जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहिवा ! ॥१६॥
सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥१७॥
"कोसंबी" नाम नयरी, पुराणपुरभेयणी ।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूय-धण-संचओ ॥१८॥
पढमे वए महाराय !, अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥१९॥
सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीर–विवरंतरे ।
'पविसिज्ज अरी कुद्धो', एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥
तियं मे अंतरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडइ ।
'इंदासणिसमा' घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥
उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जा-मंत-तिगिच्छया ।
अबीया सत्थकुसला, मंतमूलविसारया ॥२२॥

ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥
पिया मे सव्वसारंपि, दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥
माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्टिया ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥
भायरा मे महाराय ! सगा जेट्ठ—कणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥
भइणीओ मे महाराय ! सगा जेट्ठ—कणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥
भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया ।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचइ ॥२८॥
अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गंध—मल्लविलेवणं ।
मए नायमणायं वा, सा बाला नोवभुंजइ ॥२९॥
खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि न फिट्टइ ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥
तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमाहु पुणो पुणो ।
वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए ॥३१॥
सइं च जइ मुच्चिज्जा, वेयणा विउला इओ ।
खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइए अणगारियं ॥३२॥
एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा !
परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥
तओ कल्ले पभायंमि, आपुच्छित्ताण बंधवे ।
खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइओऽणगारियं ॥३४॥

तो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य ।
सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाण थावराण य ॥३५॥
अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥३६॥
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ॥३७॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा!
तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
नियंठधम्मं लहियाण वि जहा,
सीयंति एगे बहुकायरा नरा ॥३८॥
जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं,
सम्मं च नो फासयई पमाया ।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे,
न मूलओ छिन्नइ बंधणं से ॥३९॥
आउत्तया जस्स न अत्थि काइ,
इरियाए भासाए तहेसणाए ।
आयाण-निक्खेव-दुगंछणाए,
न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥४०॥
चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता,
अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे ।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता,
न पारए होइ हु संपराए ॥४१॥
'पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे,'
'अयंतिए कूड-कहावणे वा ।'
'राढामणी वेरुलियप्पगासे,'
अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥४२॥

कुसीललिंगं इह धारइत्ता,
इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणे,
विणिघायमागच्छइ से चिरंपि ॥४३॥

'विसं तु पीयं जह कालकूडं,'
'हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।'
एसो वि धम्मो विसओववन्नो,
हणाइ 'वेयाल इवाविवन्नो' ॥४४॥

जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे,
निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी,
न गच्छइ सरणं तम्मि काले ॥४५॥

तमंतमेणेव उ से असीले,
सया दुही विप्परियासुवेइ ।
संधावई नरगतिरिक्खजोणिं,
मोणं विराहित्तु असाहुरूवे ॥४६॥

उद्देसियं कीयगडं नियागं,
न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
'अग्गी विवा सव्वभक्खी' भवित्ता,
इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पावं ॥४७॥

न तं अरी कंठछेत्ता करेइ,
जं से करे अप्पणिया दुरप्पा ।
से नाहिइ मच्चुमुहं तु पत्ते,
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥४८॥

निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स,
जे उत्तमट्ठे विवज्जासमेइ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए,
दुहिओ वि से झिज्झइ तत्थ लोए ॥४९॥
एमेवऽहाछंदकुसीलरूवे,
मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा,
निरट्ठसोया परितावमेइ ॥५०॥
सोच्चाण मेहावी! सुभासियं इमं,
अणुसासणं नाणगुणोववेयं।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं,
महानियंठाण वए पहेण ॥५१॥
चरित्तमायारगुणन्निए तओ,
अणुत्तरं संजम पालियाणं।
निरासवे संखविणाण कम्मं,
उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥५२॥
एवुग्गदंते वि महातवोधणे,
महामुणी महापइन्ने महायसे।
महानियंठिज्जमिणं महासुयं,
से काहए महया वित्थरेणं ॥५३॥
श्रेणिकः—तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली।
अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥५४॥
तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं,
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी।
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य,
जं भे ठिया मग्गि जिणुत्तमाणं ॥५५॥

तं सि नाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण संजया ।
खामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिउं ॥५६॥
पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घो उ जो कओ ।
निमंतिया य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ॥५७॥

एवं थुणित्ताण स रायसीहो,
अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
सओरोहो सपरियणो सबंधवो,
धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥५८॥

ऊससियरोमकूवो, काऊण य पयाहिणं ।
अभिवंदिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो ॥५९॥
इयरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदंडविरओ य ।
"विहग इव" विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥६०॥
त्ति बेमि ॥

अह समुद्दपालीय नामं एगवीसइमं अज्झयणं

चंपाए 'पालिए' नाम, सावए आसि वाणिए ।
'महावीरस्स' भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥ १ ॥
निग्गंथे पावयणे, सावए से वि कोविए ।
पोएण ववहरंते, "पिहुंडं" नगरमागए ॥ २ ॥
पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूयरं ।
तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥
अह पालियस्स घरिणि, समुद्दम्मि पसवइ ।
अह बालए तहिं जाए, 'समुद्दपालि त्ति नामए' ॥ ४ ॥

खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं।
संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥ ५ ॥

बावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइकोविए।
जुव्वणेण य संपन्ने, सुरूवे पियदंसणे ॥ ६ ॥

तस्स रुववइं भज्जं, पिया आणेइ रुविणिं।
पासाए कीलए रम्मे, 'देवो दोगुंदओ जहा' ॥ ७ ॥

अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ।
वज्झमंडणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥

तं पासिऊण संविग्गो, समुद्दपालो इणमब्ववी।
अहोऽसुहाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ॥ ९ ॥

संबुद्धो सो तहिं भयवं, परमसंवेगमागओ।
आपुच्छऽम्मापियरो, पव्वए अणगारियं ॥१०॥

जहित्तु संगं च महाकिलेसं,
महंतमोहं कसिणं भयावहं।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा,
वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥

अहिंस-सच्चं च अतेणगं च,
तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च।
पडिवज्जिया पंचमहव्वयाणि,
चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥१२॥

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी,
खंतिक्खमे संजयबंभयारी।
सावज्जजोगं परिवज्जयंतो,
चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइंदिए ॥१३॥

कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे,
बलाबलं जाणिय अप्पणो य ।
सीहो व सद्देण न संतसेज्जा,
वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥१४॥

उवेहमाणो उ परिव्वइज्जा,
पियमप्पियं सव्व तितिक्खइज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयइज्जा,
न यावि पूयं गरहं च संजए ॥१५॥

अणेगछंदा इह माणवेहिं,
जे भावओ से पगरेइ भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइंति भीमा,
दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥१६॥

परीसहा दुव्विसहा अणेगे,
सीयंति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू,
'संगामसीसे इव नागराया' ॥१७॥

सीओसिणा दंस-मसा य फासा,
आयंका विविहा फुसंति देहं ।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासहेज्जा,
रयाइं खवेज्ज पुराकयाइं ॥१८॥

पहाय रागं च तहेव दोसं,
मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
'मेरुव्व' वाएण अकंपमाणो,
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१६॥

अणुन्नए नावणए महेसी,
न यावि पूयं गरहं च संजए।
से उज्जुभावं पडिवज्ज संजए,
निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥२०॥
अरइ-रइसहे पहीणसंथवे,
विरए आयहिए पहाणवं।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई,
छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥२१॥
विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई,
निरोवलेवाइ असंथडाइं।
इसीहिं चिण्णाइं महायसेहिं,
काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥२२॥
सन्नाणनाणोवगए महेसी,
अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं।
अणुत्तरे नाणधरे जसंसी,
ओभासई सूरिए वंऽतलिक्खे ॥२३॥
दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं,
निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के।
तरित्ता "समुद्दं व" महाभवोहं,
समुद्दपाले अपुणागमं गए ॥२४॥
त्ति बेमि ॥

अह रहनेमिज्ज-नामं बावीसइमं अज्झयणं

'सोरियपुरम्मि नयरे', आसि राया महिड्ढिए।
'वसुदेव त्ति' नामेणं, रायलक्खणसंजुए ॥ १ ॥
तस्स भज्जा दुवे आसी, 'रोहिणी-देवई' तहा।
तासिं दोण्हं दुवे पुत्ता, इट्ठा 'राम-केसवा' ॥ २ ॥
सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए।
'समुद्दविजय नामं', रायलक्खणसंजुए ॥ ३ ॥
तस्स भज्जा 'सिवा' नाम, तीसे पुत्तो महायसो।
भगवं 'अरिट्ठनेमि त्ति' लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥
सोऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खण-स्सर-संजुओ।
अट्ठसहस्स-लक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥
वज्जरिसह-संघयणो, समचउरंसो झसोदरो।
तस्स 'रायमईकन्नं,' भज्जं जायइ केसवो ॥ ६ ॥
अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी।
सव्व-लक्खण-संपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पभा ॥ ७ ॥
अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं।
इहागच्छउकुमारो, जा से कन्नं ददामिऽहं ॥ ८ ॥
सव्वोसहीहिं एहविओ, कय-कोउय-मंगलो।
दिव्वजुयल-परिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥
मत्तं च गंधहत्थिं च, वासुदेवस्स जेट्ठगं।
आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणि जहा ॥१०॥
अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिओ।
दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥११॥
चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं।
तुरियाण सन्निनाएणं, दिव्वेणं गगणं फुसे ॥१२॥

एयारिसीए इड्ढीए, जुइए उत्तमाइ य ।
नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥१३॥
अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहिं पंजरेहिं च, संनिरूद्धे सुदुक्खिए ॥१४॥
जीवियंतं तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
पासित्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी ॥१५॥

भ० अरिष्टनेमिः—

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो ।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छिया ! ॥१६॥

सारथिः—

अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो ।
तुज्झं विवाहकज्जम्मि, भोयावेउं बहुं जणं ॥१७॥

भ० अरिष्टनेमिः—

सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणि-विणासणं ।
चिंतेइ से महापन्नो, साणुक्कोसे जिए हिओ ॥१८॥
जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिया ।
न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई ॥१९॥
सो कुंडलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो ।
आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामइ ॥२०॥
मणपरिणामो य कओ, देवा य जहोइयं समोइण्णा ।
सव्विड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ॥२१॥
देव-मणुस्सपरिवुडो, सीविया-रयणं तओ समारूढो ।
निक्खमिय 'बारगाओ, रेवययम्मि' ठिओ भगवं ॥२२॥
उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ ।
साहस्सीयपरिवुडो, अह निक्खमइ उ चित्ताहिं ॥२३॥
अह से सुगंधगंधीए, तुरियं मउअकुंचिए ।
सयमेव लुंचई केसे, पंचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥२४॥

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं।
इच्छियमणोरहं तुरियं, पावसु तं दमीसरा! ॥२५॥
नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य।
खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ॥२६॥

एवं ते राम-केसवा, दसारा य बहू जणा।
अरिट्ठणेमिं वंदित्ता, अइगया बारगापुरिं ॥२७॥
सोऊण रायकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ।
नीहासा य निराणंदा, सोगेण उ समुच्छिया ॥२८॥

राईमई विचिंतेइ, धिरत्थु मम जीवियं।
जाऽहं तेण परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ॥२९॥

अह सा भमरसन्निभे, कुच्च--फणग--साहिए।
सयमेव लुंचइ केसे, धिइमंती ववस्सिया ॥३०॥
वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं।
संसारसागरं घोरं, तर कन्ने! लहुं लहुं ॥३१॥
सा पव्वइया संती, पव्वावेसी तहिं बहुं।
सयणं परियणं चेव, सीलवंता बहुस्सुया ॥३२॥

गिरिं रेवययं जंती, वासेणुल्ला उ अंतरा।
वासंते अंधयारंमि, अंतो लयणस्स सा ठिया ॥३३॥
चीवराइं विसारंती, जहा जायत्ति पासिया।
रहनेमि भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥३४॥
भीया य सा तहिं दट्ठुं, एगंते संजयं तयं।
बाहाहिं काउं संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई ॥३५॥

रथनेमिः—

अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ।
भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्कमुदाहरे ॥ ३

'रहनेमी' अहं भद्दे !, सुरूवे ! चारुभासिणी !।
ममं भयाहि सुयणु, न ते पीला भविस्सइ ॥३७॥

एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं।
भुत्तभोगा पुणो पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥३८॥

राजीमती—

दट्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुजोय-पराजियं।
रायमई असंभंता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥३९॥
अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमव्वए ।
जाई कुलं च सीलं च ! रक्खमाणी तयं वए ॥४०॥
जइऽसि रूवेण वेसमणो, ललिएण नल-कूबरो ।
तहा वि ते न इच्छामि, जइऽसि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥
पक्खंदे जलिअं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥४२॥
अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥४३॥
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ।
वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४४॥
गोवालो भंडवालो वा, जहा तद्दव्वणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥४५॥
कोहं माणं निगिण्हित्ता, मायं लोभं च सव्वसो।
इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसंहरे ॥

रथनेमिः—

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥४६॥

मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिए ।
सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ॥४७॥

उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दुण्णि वि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४८॥
एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥४९॥
त्ति बेमि ॥

अह केसिगोयमिज्ज–नामं तेवीसइमं अज्झयणं

जिणे पासित्ति नामेणं, अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥ १ ॥
तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे ।
केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारए ॥ २ ॥
ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघ–समाउले ।
गामाणुगामं रीयंते, सावत्थिं पुरमागए ॥ ३ ॥
तिंदुयं नाम उज्जाणं, तंमि नगरमंडले ।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥

अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणि त्ति, सव्वलोगंमि विस्सुए ॥ ५ ॥
तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे ।
भगवं गोयमे नामं, विज्जाचरणपारए ॥ ६ ॥
बारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघ-समाउले ।
गामाणुगामं रीयंते, सो वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥

"कोट्ठगं" नाम उज्जाणं, तम्मि नगरमंडले ।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ८ ॥

केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥ ९ ॥
उभओ सीससंघाणं, संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिंता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइणं ॥१०॥

केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो ।
आयारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥११॥

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥१२॥
अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो ।
एग कज्ज-पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ॥१३॥

अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्कियं ।
समागमे कयमई, उभओ केसि—गोयमा ॥१४॥
गोयमे पडिरूवन्नू, सीससंघ-समाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खंतो, "तिंदुयं" वणमागओ ॥१५॥

केसी कुमारसमणे, गोयमं दिस्समागयं ।
पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जइ ॥१६॥
पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं, कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥१७॥
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहंति, चंद-सूरसमप्पभा ॥१८॥

समागया बहु तत्थ, पासंडा कोउगा सिया ।
गिहत्थाणं अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥१९॥

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं, आसी तत्थ समागमो ॥२०॥

पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥२१॥
पुच्छ भंते ! जहिच्छं ते, केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसि अणुन्नाए, गोयमं इणमब्बवी ॥२२॥

(१) चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ! ॥२३॥
एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ?
धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥२४॥

तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ना समिक्खए धम्मं, तत्तं तत्तविणिच्छियं ॥२५॥
पुरिमा उज्जुजडा उ, वंकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥२६॥
पुरिमाणं दुव्विसुज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसुज्झो सुपालओ ॥२७॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥२८॥

(२) अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ! ॥२९॥
एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ।
लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥३०॥
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।
विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥३१॥

पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं ।
जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपओयणं ॥३२॥
अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसब्भूयसाहणा ।
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए ॥३३॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥३४॥

(३) अणेगाणं सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा !
ते य ते अभिगच्छंति, कहं ते निज्जिया तुमे ? ॥३५॥
एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं ॥३६॥
सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥३७॥

एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य ।
ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी ॥३८॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥३९॥

(४) दीसंति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसि मुणी ? ॥४०॥
ते पासे सव्वसो छित्ता, निहंतूण उवायओ ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अहं मुणी ! ॥४१॥
पासा य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४२॥

रागद्दोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा ।
ते छिंदित्तु जहानायं, विहरामि जहक्कमं ॥४३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥४४॥

(५) अंतोहियय-संभूया, लया चिट्ठइ गोयमा ।
फलेइ विसभक्खीणं, सा उ उद्धरिया कहं ? ॥४५॥
तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं ।
विहरामि जहानायं, मुक्कोमि विसभक्खणं ॥४६॥
लया य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४७॥

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।
तमुच्छित्ता जहानायं, विहरामि जहासुहं ॥४८॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥४९॥

(६) संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा !
जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्झाविया तुमे ? ॥५०॥
महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
सिंचामि सययं तेउं, सित्ता नो व डहंति मे ॥५१॥
अग्गी य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५२॥

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुय-सील-तवो जलं ।
सुयधाराभिहया संता, भिन्ना हु न डहंति मे ॥५३॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥५४॥

(७) अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई ।
जंसि गोयम ! आरूढो, कहं तेण न हीरसि ? ॥५५॥

पधावंतं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं ।
न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जइ ॥५६॥
आसे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५७॥

मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ ।
तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कंथगं ॥५८॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥५९॥

(८) कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासंति जंतुणो ।
अद्धाणे कह वट्टंतो, तं न नाससि गोयमा ? ॥६०॥
जे य मग्गेण गच्छंति, जे य उम्मग्गपट्ठिया ।
ते सव्वे वेइया मज्झं, तो न नस्सामहं मुणी ! ॥६१॥
मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६२॥

कुप्पवयणपासंडी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिया ।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥६४॥

(९) महाउदगवेगेण, बुज्झमाणाण पाणिणं ।
सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसि मुणी ? ॥६५॥
अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ ।
महाउदगवेगस्स, गई तत्थ न विज्जइ ॥६६॥
दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६७॥

जरा-मरणवेगेणं, बुज्झमाणाण पाणिणं।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥६८॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥६९॥

(१०) अण्णवंसि महोहंसी, नावा विपरिधावइ।
जंसि गोयम ! आरूढो, कहं पारं गमिस्ससि ? ॥७०॥
जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी। ॥७१॥
नावा य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७२॥

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो ॥७३॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥७४॥

(११) अंधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू।
को करिस्सइ उज्जोयं ? सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७५॥
उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयपभंकरो।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयंमि पाणिणं ॥७६॥
भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७७॥

उग्गओ खीणसंसारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयंमि पाणिणं ॥७८॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥७९॥

(१२) सारीरमाणसे दुक्खे, वज्झमाणाण पाणिणं ।
खेमं सिवमणाबाहं, ठाणं किं मन्नसे मुणी ? ॥८०॥
अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥८१॥
ठाणे य इइ के वुत्ते, ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥८२॥

निव्वाणं ति अबाहं ति, सिद्धी लोगग्गमेव य ।
खेमं सिवं अणाबाहं, जं चरंति महेसिणो ॥८३॥
तं ठाणं सासयं वासं, लोयग्गंमि दुरारुहं ।
जं संपत्ता न सोयंति, भवोहंतकरा मुणी ! ॥८४॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
न मो ते संसयातीत ! सव्वसुत्तमहोदही ॥८५॥
एवं तु संसए छिन्ने ! केसी घोरपरक्कमे ।
अभिवंदित्ता सिरसा, गोयमं तु महायसं ॥८६॥
पंचमहव्वयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमंमि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥८७॥
केसीगोयमओ निच्चं, तंमि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥
तोसिया परिसा सव्वा, संमग्गं समुवट्ठिया ।
संथुया ते पसीयंतु, भयवं केसिगोयमे ॥८९॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह समिईओ नामं चउवीसइमं अज्झयणं

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेव य समिईओ, तओ गुत्ती उ आहिया ॥ १ ॥
इरिया[1] भासे[2] सणा[3] दाणे[4], उच्चारे[5] समिई इय ।
मणगुत्ती[6] वयगुत्ती[7], कायगुत्ती[8] य अट्ठमा ॥ २ ॥
एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया ।
दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ॥ ३ ॥

(१) आलंबणेण[1] कालेण[2], मग्गेण[3] जयणाइ[4] य ।
चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरियं रिए ॥ ४ ॥
तत्थ आलंबणं नाणं[1], दंसणं[2] चरणं[3] तहा ।
काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥ ५ ॥
दव्वओ[1] खेत्तओ[2] चेव, कालओ[3] भावओ[4] तहा ।
जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥ ६ ॥
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खित्तओ ।
कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥ ७ ॥
इंदियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिए ॥ ८ ॥

(२) कोहे[1] माणे[2] य मायाए[3], लोभे[4] य उवउत्तया ।
हासे[5] भए[6] मोहरिए[7], विकहासु[8] तहेव य ॥ ९ ॥
एयाइं अट्ठठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ॥ १० ॥

(३) गवेसणाए[1] गहणे[2] य, परिभोगेसणा[3] य जा ।
आहारो[1] वहि[2] सेज्जाए[3], एए तिन्नि विसोहए ॥ ११ ॥

उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयम्मि चउक्कं, विसोहेज्ज जयं जई ॥१२॥

(४) ओहोवहो[1] वग्गहियं[2], भंडगं दुविहं मुणी ।
गिण्हंतो निक्खिवंतो य, पउंजेज्ज इमं विहिं ॥१३॥
चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा, दुहओऽवि समिए सया ॥१४॥

(५) उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण-जल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ॥१५॥
अणावायमसंलोए[1], अणावाए चेव होइ संलोए[2] ।
आवायमसंलोए[3], आवाए चेव संलोए[4] ॥१६॥
अणावायमसंलोए, परस्सऽणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे वावि, अचिरकालकयम्मि य ॥१७॥
वित्थिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने बिलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ॥१८॥
एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया ।
इत्तो य तओ गुत्तीओ, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१९॥

(६) सच्चा[1] तहेव मोसा[2] य, सच्चामोसा[3] तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा[4] य, मणगुत्ती चउव्विहा ॥२०॥
संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२१॥

(७) सच्चा[1] तहेव मोसा[2] य, सच्चामोसा[3] तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा[4] य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥
संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२३॥

(८) ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लंघण-पल्लंघणे, इंदियाण य जुंजणे ॥२४॥
संरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२५॥

एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥२६॥
एसा पवयणमाया, जे सम्मं आयरे मुणी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए ॥२७॥
त्ति बेमि ॥

अह जन्नइज्ज–नामं पंचवीसइमं अज्झयणं

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्नंमि, "जयघोसि त्ति" नामओ ॥ १ ॥
इंदियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयंते, पत्तो वाणारसिं पुरिं ॥ २ ॥
'वाणारसीए' बहिया, उज्जाणंमि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥
अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे ।
"विजयघोसि त्ति" नामेण, जन्नं जयइ वेयवी ॥ ४ ॥
अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नंमि, भिक्खस्सट्ठा उवट्ठिए ॥ ५ ॥
यष्टा विजयघोसः—
समुवट्ठियं तहिं संतं, जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू ! जायाहि अन्नओ ॥६॥

जे य वेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया ।
जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥७॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू ! सव्वकामियं ॥ ८ ॥
सो तत्थ एवं पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तमट्ठगवेसओ ॥ ९ ॥
नन्नट्ठं पाणहेउं वा, नवि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमब्बवी ॥१०॥

जयघोषमुनिः—

नवि जाणासि वेयमुहं[1], नवि जन्नाण जं मुहं[2] ।
नक्खत्ताण मुहं[3] जं च, जं च धम्माण वा मुहं[4] ॥११॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव[5] य ।
न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥१२॥

यष्टा विजयघोषः—

तस्सक्खेवपमुक्खं तु, अचयंतो तहिं दिओ ।
सपरिसो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणिं ॥१३॥
वेयाणं च मुहं बूहि[1], बूहि जन्नाण जं मुहं[2] ।
नक्खत्ताण मुहं बूहि[3], बूहि धम्माण वा मुहं[4] ॥१४॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव[5] य ।
एयं मे संसयं सव्वं, साहू ! कहय पुच्छिओ ॥१५॥

जयघोषमुनिः—

अग्गिहुत्तमुहा वेया[1], जन्नट्ठी वेयसा मुहं[2] ।
नक्खत्ताण मुहं चंदो, धम्माणं कासवो मुहं ॥१६॥
जहा चंदं गहाईया, चिट्ठंति पंजलीउडा ।
वंदमाणा नमंसंता, उत्तमं मणहारिणो ॥१७॥

अजाणगा जन्नवाई, विज्जामाहणसंपया ।
गूढा सज्झायतवसा, "भासच्छन्ना इवग्गिणो" ॥१८॥

जो लोए बंभणो वुत्तो, अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥१९॥

जो न सज्जइ आगंतुं, पव्वयंतो न सोयइ ।
रमइ अज्जवयणंमि, तं वयं बूम माहणं ॥२०॥

जायरूवं जहामट्ठं, निद्धंतमलपावगं ।
राग-दोस-भयाईयं, तं वयं बूम माहणं ॥२१॥

तवस्सियं किसं दंतं, अवचिय-मंससोणियं ।
सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ॥२२॥

तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण य थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेणं, तं वयं बूम माहणं ॥२३॥

कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयइ जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥२४॥

चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं ।
न गिण्हइ अदत्तं जो, तं वयं बूम माहणं ॥२५॥

दिव्व-माणुस्स-तेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥२६॥

जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तो कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥२७॥

अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२८॥

जहित्ता पुव्वसंजोगं, नाइसंगे य बंधवे ।
जो न सज्जइ भोगेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२९॥

पसुबंधा सव्ववेया, जट्ठं च पावकम्मुणा ।
न तं तायंति दुस्सीलं, कम्माणि बलवंति हि ॥३०॥
न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो ।
न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥
समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो ।
नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३२॥
कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥३३॥
एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ ।
सव्वकम्मविणिम्मुक्कं, तं वयं बूम माहणं ॥३४॥
एवं गुणसमाउत्ता, जे भवंति दिउत्तमा ।
ते समत्था उ उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ॥३५॥

यष्टा विजयघोषः—

एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे ।
समुदाय तओ तं तु, जयघोसं महामुणिं ॥३६॥
तुट्ठे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली ।
माहणत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥३७॥
तुब्भे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
जोइसंगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥३८॥
तुब्भे समत्था उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
तमणुग्गहं करेहऽम्हं, भिक्खेणं भिक्खुउत्तमा ! ॥३९॥

जयघोषमुनिः—

न कज्जं मज्झ भिक्खेणं, खिप्पं निक्खमसु दिया !
मा भमिहिसि भयावट्टे, घोरे संसारसागरे ॥४०॥
उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पइ ।
भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥

"उल्लो सुक्को य दो छूढा, गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गइ ॥४२॥
एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गंति, जहा से सुक्कगोलए ॥४३॥
एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अंतिए ।
अणगारस्स निक्खंतो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥४४॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
जयघोस-विजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४५॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह सामायारी नामं छव्वीसइमं अज्झयणं

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
जं चरित्ताण निग्गंथा, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥
पढमा आवस्सिया नामं, बिइया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥
पंचमी छंदणा नामं, इच्छाकारो य छट्ठिओ ।
सत्तमा मिच्छाकारो य, तहक्कारो य अट्ठमा ॥ ३ ॥
अब्भुट्ठाणं च नवमा, दसमा उवसंपया ।
एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥

समाचारीस्वरूपम्—

गमणे आवस्सियं[1] कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं[2] ।
आपुच्छणं[3] सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणं[4] ॥ ५ ॥
छंदणा[5] दव्वजाएणं, इच्छाकारो[6] य सारणे ।
मिच्छाकारो[7] य निंदाए, तहक्कारो[8] पडिस्सुए ॥ ६ ॥

अब्भुट्ठाणं[9] गुरूपूया, अच्छणे[10] उवसंपदा ।
एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥ ७ ॥

श्रामण्ये स्थितानां संक्षिप्ता दिनचर्या—

पुव्विल्लंमि चउब्भाए, आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भंडयं पडिलेहित्ता, वंदित्ताय तओ गुरुं ॥ ८ ॥

पुच्छिज्जा पंजलीउडो, किं कायव्वं मए इह ।
इच्छं निओइउं भंते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥ ६ ॥

वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्वं अगिलायओ ।
सज्झाए वा निउत्तेण, सव्वदुक्खविमुक्खणे ॥१०॥

दिवसस्स चउरो भागे, कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥

पढमे पोरिसिं सज्झायं, बीये झाणं झियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं ॥१२॥

पौरुषी-प्रमाणम्—

आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥१३॥

अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं च दुअंगुलं ।
वड्ढए हायए वावि, मासेणं चउरंगुलं ॥१४॥

क्षयतिथीनां मासाः—

आसाढ[1] बहुलपक्खे, भद्दवए[2] कत्तिए[3] य पोसे[4] य ।
फग्गुण[5] वइसाहेसु[6] य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥१५॥

पादोनपौरुषी-प्रमाणम्—

जेट्ठामूले आसाढ-सावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
अट्ठहिं बिइय-तियंमि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥१६॥

श्रामण्ये स्थितानां संक्षिप्ता रात्रिचर्या—

रत्तिं पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥१७॥

पढमे पोरिसिं सज्झायं, बीये झाणं झियायई।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥१८॥

रात्रौ स्वाध्यायसमयनिरीक्षणम्—

जं नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए।
संपत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओसकालंमि ॥१९॥
तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउब्भागसावसेसंमि।
वेरत्तियंपि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥२०॥

श्रामण्ये स्थितानां विशदा दिनचर्या—

पुव्विल्लंमि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भंडयं।
गुरुं वंदित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणिं ॥२१॥
पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं।
अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥२२॥

प्रतिलेखनाविधिः—

मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं।
गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥२३॥
उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे[1]।
तो बिइय पप्फोडे[2], तइयं च पुणो पमज्जिज्जा ॥२४॥
अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबंधिममोसलिं चेव।
छप्पुरिमा नव खोडा, पाणी-पाणिविसोहणं ॥२५॥

प्रतिलेखना-दूषणानि—

आरभडा[1] सम्मद्दा[2], वज्जेयव्वा य मोसली[3] तइया।
पप्फोडणा[4] चउत्थी, विक्खित्ता[5] वेइया[6] छट्ठी ॥२६॥
पसिढिल-पलंब-लोला, एगा मोसा अणेगरूवधुणा।
कुणइ पमाणपमायं, संकिय गणणोवगं कुज्जा ॥२७॥
अणूणा[1] इरित्त[2] पडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य।
पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥२८॥

प्रतिलेखना समये नैतत्करणीयम्—

पडिलेहणं कुणंतो,
मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा ।
देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।
पडिलेहणापमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ॥३०॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।
पडिलेहणाआउत्तो, छण्हं संरक्खओ होइ ॥३१॥
तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए ।
छण्हं अन्नयरागंमि, कारणंमि समुट्ठिए ॥३२॥
वेयण[1] वेयावच्चे[2], इरियट्ठाए[3] य संजमट्ठाए[4] ।
तह पाणवत्तियाए[5], छट्ठं पुण धम्मचिंताए[6] ॥३३॥
निग्गंथो धिइमंतो,
निग्गंथी वि न करेज्ज छहिं चेव ।
ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ॥३४॥
आयंके उवसग्गे[2], तितिक्खया बंभचेरगुत्तीसु[3] ।
पाणिदया[4] तवहेउं[5], सरीरवुच्छेयणट्ठाए[6] ॥३५॥
अवसेसं भंडगं गिज्झा, चक्खुसा पडिलेहए ।
परमद्धजोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ॥३६॥
चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताण भायणं ।
सज्झायं तओ कुज्जा, सव्वभावविभावणं ॥३७॥
पोरसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥३८॥

पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई ।

श्रामण्ये स्थितानां विशदा रात्रिचर्या—

काउसग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥३६॥

देवसियं च अइयारं, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणे य दंसणे चेव, चरित्तंमि तहेव य ॥४०॥

पारियकाउसग्गो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।
देवसियं तु अइयारं, आलोएज्ज जहक्कम्मं ॥४१॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।
काउसग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४२॥

पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।
थुइमंगलं च काऊण, कालं संपडिलेहए ॥४३॥

पढमे पोरसिं सज्झायं, बिये झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ॥४४॥

पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिए ।
सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहंतो असंजए ॥४५॥

पोरिसीए चउब्भाए, वंदिऊण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥४६॥

आगए कायवुसग्गे, सव्वदुक्खविमुक्खणे ।
काउसग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥४७॥

राइयं च अइयारं, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणंमि दंसणंमि य, चरित्तंमि तवंमि य ॥४८॥

पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।
राइयं तु अइयारं, अलोएज्ज जहक्कमं ॥४६॥

पडिकमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥५०॥

किं तवं पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचिंतए।
काउस्सग्गं तु पारित्ता, करिज्जा जिणसंथवं ॥५१॥
पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ता य तओ गुरुं।
तवं संपडिवज्जित्ता, कुज्जा सिद्धाण-संथवं ॥५२॥
एसा सामायारी, समासेण वियाहिया।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥५३॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह खलुंकिज्ज-नामं सत्तवीसइमं अज्झयणं

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए।
आइण्णे गणिभावंमि, समाहिं पडिसंधए ॥ १ ॥
वहणे वहमाणस्स, कंतारं अइवत्तए।
जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तए ॥ २ ॥
खलुंके जो उ जोएइ, विहंमाणो किलिस्सइ।
असमाहिं य वेएइ, तोत्तओ से य भज्जइ ॥ ३ ॥
एगं डसइ पुच्छंमि, एगं विंधइ ऽभिक्खणं।
एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पहपट्ठिओ ॥ ४ ॥
एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निविज्जइ।
उक्कुद्दइ उप्फिडइ, सढे बालगवी वए ॥ ५ ॥
माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं।
मयलक्खेण चिट्ठइ, वेगेण य पहावइ ॥ ६ ॥
छिन्नाले छिंदइ सिल्लिं, दुद्दंतो भंजइ जुगं।
सेवि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जुहित्ता पलायइ ॥ ७ ॥

खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा।
जोइया धम्मजाणंमि, भज्जंति धिइदुब्बला ॥ ८ ॥
इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे ।
सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥ ९ ॥
भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए थद्धे ।
एगं अणुसासंमि, हेऊहिं कारणेहि य ॥१०॥
सो वि अंतरभासिल्लो, दोसमेव पकुव्वइ ।
आयरियाणं तु वयणं, पडिकूलेइऽभिक्खणं ॥११॥
न सा ममं वियाणाइ, न य सा मज्झ दाहिइ ।
निग्गया होहिइ मन्ने, साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥१२॥
पेसिया पलिउंचंति, ते परियंति समंतओ ।
रायविट्ठिं च मन्नंता, करेंति भिउडिं मुहे ॥१३॥
वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेहि पोसिया ।
'जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमंति दिसो दिसिं' ॥१४॥
अह सारही विचिंतेइ, खलुंकेहिं समागओ ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीयइ ॥१५॥
जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलिगद्दहा ।
गलिगद्दहे जहित्ताणं, दढं पगिण्हइ तवं ॥१६॥
मिउमद्दवसंपन्नो, गंभीरो सुसमाहिओ ।
विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥१७॥
त्ति बेमि ॥

अह मोक्खमग्गगई नामं अट्ठवीसइमं अज्झयणं

मोक्खमग्गगइं तच्चं, सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणं ॥ १ ॥
नाणं[1] च दंसणं[2] चेव, चरित्तं[3] च तवो[4] तहा ।
एस मग्गुत्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ २ ॥
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं ॥ ३ ॥

ज्ञानस्वरूपम्—

तत्थ पंचविहं नाणं, सुयं[1] आभिनिबोहियं[2] ।
ओहिनाणं तु तइयं, मणनाणं[4] च केवलं[5] ॥ ४ ॥
एयं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाण य सव्वेसिं, नाणं नाणीहि देसियं ॥ ५ ॥

द्रव्य-गुण-पर्याय लक्षणानि—

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे ॥ ६ ॥

षड्द्रव्याणि—

धम्मो अहम्मो[2] आगासं[3], कालो[4] पुग्गल[5] जंतवो[6] ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ ७ ॥
धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अणंताणि य दव्वाणि, कालो पुग्गलजंतवो ॥ ८ ॥

षड्द्रव्यलक्षणानि—

गइलक्खणो उ धम्मो[1], अहम्मो ठाणलक्खणो[2] ।
भायणं सव्वदव्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं[3] ॥ ९ ॥
वत्तणालक्खणो कालो[4], जीवो उवओगलक्खणो[5] ।
नाणेणं दंसणेणं चेव, सुहेण य दुहेण य ॥१०॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ॥११॥
सद्दंधयार-उज्जोओ, पहा छायाऽऽतव त्ति वा।
वण्ण-रस-गंध-फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥१२॥
एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाणमेव य।
संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खणं ॥१३॥

दर्शन-स्वरूपम्—

जीवा[1] जीवा[2] य बंधो[3] य, पुण्णं[4] पावा[5] सवो[6] तहा।
संवरो[7] निज्जरा[8] मोक्खो[9], संतेए तहिया नव ॥१४॥

सम्यक्त्व-लक्षणम्—

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं।
भावेणं सद्दहंतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ॥१५॥

दशविधा-रुचयः—

निस्सग्गु वएसरुई[2], आणारुई[3] सुत्त[4] बीयरुइमेव[5]।
अभिगम[6] वित्थाररुई[7], किरिया[8] संखेव[9] धम्मरुई[10] ॥१६॥
(१) भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्णपावं च।
सहसम्मुइयासव, संवरो य रोएइ उ निस्सग्गो ॥१७॥
जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव।
एमेव नन्नह त्ति य, स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥१८॥
(२) एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहइ।
छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥१९॥
(३) रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होइ।
आणाए रोयंतो, सो खलु आणारुई नामं ॥२०॥
(४) जो सुत्तमहिज्जंतो, सुएण ओगाहइ उ सम्मत्तं।
अंगेण बाहिरेण वा, सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥२१॥
(५) एगेण अणेगाइं, पयाइं जो पसरइ उ सम्मत्तं।
उदए व्व तेल्लबिंदू, सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥२२॥

(६) सो होइ अभिगमरुई, सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं।
एक्कारस अंगाइं, पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ॥२३॥
(७) दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा।
सव्वाहि नयविहीहिं य, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥२४॥
(८) दंसणनाणचरित्ते, तवविणए सव्वसमिइगुत्तीसु।
जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥२५॥
(९) अणभिग्गहियकुदिट्ठी, संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो।
अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥२६॥
(१०) जो अत्थिकायधम्मं, सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च।
सद्दहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥२७॥
परमत्थ-संथवो[१] वा, सुदिट्ठ-परमत्थसेवणा[२] वा वि।
वावन्न-कुदंसणवज्जणा[३], य सम्मत्तसद्दहणा ॥२८॥
नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं, दंसणे उ भइयव्वं।
सम्मत्तचरित्ताइ जुगवं, पुव्वं व सम्मत्तं ॥२९॥

अष्टप्रभावनाः—

नादंसणिस्स नाणं,
नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो,
नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥३०॥

निस्संकिय[१]-निक्कंखिय[२], निव्वितिगिच्छं[३] अमूढदिट्ठी[४] य।
उववूह[५]-थिरीकरणे[६], वच्छल्ल[७]-पभावणे[८] अट्ठ ॥३१॥

चारित्रस्वरूपम्—

सामाइयत्थ[१] पढमं, छेओवट्ठावणं[२] भवे बिइयं।
परिहारविसुद्धीयं[३], सुहुमं तह संपरायं[४] च ॥३२॥
अकसायमहक्खायं[५], छउमत्थस्स जिणस्स वा।
एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥

तपःस्वरूपम्—तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भंतरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भंतरो तवो ॥३४॥
नाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ ॥३५॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ॥३६॥
त्ति बेमि ॥

अह सम्मत्तपरक्कम नामं एगूणतीसइमं अज्झयणं

सुयं मे आउसं !
तेणं भगवया एवमक्खायं—
इह खलु समत्त-परक्कमे नाम अज्झयणे—
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए—
जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता—
तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता—
बहवे जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति—
परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति।
तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ।
तं जहा—
संवेगे १ निव्वेए २ धम्मकहा ३ गुरु-साहम्मियसुस्सूसणया ४
आलोयणया ५ निंदणया ६ गरिहणया ७
सामाइए ८ चउव्वीसत्थे ९ वंदणए १०
पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुईमंगले १४
कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७
सज्झाए १८ वायणया १९ पुच्छणया २० परियट्टणया २१
अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ ।

सुयस्स आराहणया २४ एगग्ग-मणसंनिवेसणया २५
संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २६
अप्पडिबद्धया ३० विवित्त-सयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२
संभोग-पच्चक्खाणे ३३ उवहि-पच्चक्खाणे ३४ आहार-पच्चक्खाणे ३५
कसाय-पच्चक्खाणे ३६ जोग-पच्चक्खाणे ३७ सरीर-पच्चक्खाणे ३८
सहाय-पच्चक्खाणे ३६ भत्त-पच्चक्खाणे ४० सब्भाव-पच्चक्खाणे ४१
पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपन्नया ४४ वीयरागया ४५
खंती ४६ मुत्ती ४७ मद्दवे ४८ अज्जवे ४६
भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२
मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५
मन-समाधारणया ५६ वय-समाधारणया ५७ काय-समाधारणया ५८
नाणसंपन्नया ५६ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१
सोइंदियनिग्गहे ६२ चक्खिंदियनिग्गहे ६३ घाणिंदियनिग्गहे ६४
जिब्भिंदियनिग्गहे ६५ फासिंदियनिग्गहे ६६
कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६६ लोभविजए ७०
पेज्ज-दोस-मिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसि-अकम्मया ७२ ॥

संवेगेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ ।
अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ ।
अणंताणुबंधि कोह-माण-माया-लोभे खवेइ ।
नवं च कम्मं न बंधइ ।
तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्त-विसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ ।
दंसण-विसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ ।
विसोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १ ॥

निव्वेएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएणं दिव्व-माणुस- तेरिच्छिएसु कामभोगेसु
निव्वेयं हव्व मागच्छइ ।
सव्व विसएसु विरज्जइ ।
सव्व विसएसु विरज्जमाणे आरंभ- परिच्चायं करेइ ।
आरंभ- परिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदइ ।
सिद्धिमग्गं पडिवन्ने य भवइ । ॥२॥

धम्मसद्धाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए णं साया-सोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ ।
आगार-धम्मं च णं चयइ ।
अणगारिएणं जीवे सारीर- माणसाणं दुक्खाणं —
छेयण—भेयण संजोगाइणं वोच्छेयं करेइ ।
अव्वाबाहं च णं सुहं निव्वत्तेइ । ॥३॥

गुरू-साहम्मिय-सुस्सूसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

गुरू-साहम्मिय-सुस्सूणयाए विणय-पडिवत्तिं जणयइ ।
विणय-पडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायणसीले—
नेरइय-तिरिक्खजोणिय-माणुस्स-देवदुग्गइओ निरुंभइ ।
वण्ण-संजलण-भत्ति-बहुमाणयाए माणुस्स-देवसुग्गइओ निबंधइ ।
सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ ।
पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ ।
अन्ने य बहवे जीवा विणइत्ता भवइ ॥ ४ ॥

आलोयणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए णं माया-नियाण-मिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं
अणंत-संसारबंधणाणं उद्धरणं करेइ । उज्जुभावं च जणयइ ।

उज्जुभाव-पडिवन्ने य णं जीवे अमाइ

इत्थीवेय-नपुंसग वेयं च न बंधइ ।

पुव्वबद्धं च णं निज्जरइ ॥५॥

निंदणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

निंदणयाए णं पच्छाणुतावं जणयई ।

पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करण-गुणसेढीं पडिवज्जइ ।

करण-गुणसेढी पडिवन्ने य णं अणगारे

मोहणिज्जं कम्मंउग्घायइ ॥ ६ ॥

गरहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ ।

अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो नियत्तेइ—

पसत्थे य पडिवज्जइ ।

पसत्थ-जोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणंत-घाइ-पज्जवे खवेइ॥७॥

सामाइए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइए णं सावज्ज-जोग-विरईं जणयइ ॥८॥

चउव्वीसत्थए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थए णं दंसण-विसोहिं जणयइ ॥९॥

वंदणएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ ।

उच्चागोयं कम्मं निबंधइ ।

सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तइ ।

दाहिणभावं च णं जणयइ ॥१०॥

पडिक्कमणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं वय-छिद्दाणि पिहेइ ।

पिहिय-वय-छिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबल-चरित्ते-
अट्ठसु पवयण-मायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिंदिए-
विहरइ ॥११॥

काउस्सग्गेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सग्गेणं तीय-पडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ।
विसुद्ध पायच्छित्ते य जीवे निव्वुय-हियए 'ओहरिय-भरुव्व
भारवहे' पसत्थ-झाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ ॥१२॥

पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरु'भइ।
पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ।
इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीय-तण्हे
सीइ भूए विहरइ ॥१३॥

थव-थुइ मंगलेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

थव-थुइ मंगलेणं नाण-दंसण-चरित्त-बोहिलाभं जणयइ।
नाण-दंसण-चरित्त-बोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अंतकिरियं
कप्पविमाणोववत्तियं आराहणं आराहेइ ॥१४॥

काल-पडिलेहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

काल-पडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥१५॥

पायच्छित्तकरणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ।
सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च
विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ ॥१६॥

खमावणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाए पल्हायणभावं जणयइ।

पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु
मेत्ति भावमुप्पाएइ ।
मेत्ती भावमुवगए य जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ॥१७॥

सज्झाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सज्झाएणं णाणावरणीज्जं कम्मं खवेइ ॥१८॥

वायणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वायणाए णं निज्जरं जणयइ ।
सुयस्स य अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टए ।
सुयस्स अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलंबइ
तित्थधम्मं अवलंबमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥१९॥

पडि-पुच्छणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

पडि-पुच्छणयाए णं सुत्त-त्थ-तदुभयाइं विसोहेइ ।
कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिदइ ॥२०॥

परियट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

परियट्टणयाए वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥२१॥

अणुप्पेहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

अणुप्पेहाए णं आउय-वज्जाओ सत्त-कम्मपगडीओ—
धणिय-बंधणबद्धाओ सिढिल-बंधणबद्धाओ पकरेइ ।
दीहकालठिइयाओ हस्सकालठिइयाओ पकरेइ ।
तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ ।
बहुप्पएसग्गाओ अप्प-पएसग्गाओ पकरेइ ।
आउयं च णं कम्मं सिया बंधइ, सिया नो बंधइ ।
असाया-वेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ ।

अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसारकंतारं--
खिप्पामेव वीइवयइ ॥२२॥

धम्मकहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए णं कम्म-निज्जरं जणयइ।
धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ।
पवयण-पभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबंधइ ॥२३॥

सुयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाए णं अन्नाणं खवेइ
न य संकिलिस्सइ ॥२४॥

एगग्ग-मण-संनिवेसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

एगग्ग-मण-संनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ ॥२५॥

संजमए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

संजमए णं अणण्हयत्तं जणयइ ॥२६॥

तवेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाणं जणयइ ॥२७॥

वोदाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ।
अकिरियाइ भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ--
परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥२८॥

सुह-साएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सुह-साएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ।

अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगयसोगे—
चरित्त-मोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥२६॥

अप्पडिबद्धयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं जीवे निस्संगत्तं जणयइ।
निस्संगत्तेणं जीवे एगग्गचित्ते दिया य राओ य—
असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥३०॥

विवित्त-सयणासणयाए भंते ! जीवे किं जणयइ ?

विवित्त-सयणासणयाए जीवे चरित्तगुत्तिं जणयइ।
चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए
मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविह-कम्मगंठिं निज्जरेइ ॥३१॥

विनियट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

विनियट्टणयाए णं जीवे पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ।
पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए पावं नियत्तेइ।
तओ पच्छा चाउरंत-संसारकंतारं वीइ वयइ ॥३२॥

संभोग-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोग-पच्चक्खाणेणं जीवे आलंबणाइं खवेइ।
निरालंबणस्स य आययट्ठिया योगा भवंति।
सएणं लाभेणं संतुस्सइ,
परलाभं नो आसादेइ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ।
परलाभं अणस्साएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे
अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥३३॥

उवहि-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहि-पच्चक्खाणेणं जीवे अपलिमंथं जणयइ ।
निरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ ॥३४॥

आहार-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

आहार-पच्चक्खाणेणं जीवे जीवियासंसप्पओगं वोच्छिदइ ।
जीवियासंसप्पओगं वोच्छिदित्ता जीवे आहारमंतरेण न संकिलिस्सइ ॥३५॥

कसाए-पच्चक्खाणे णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

कसाए-पच्चक्खाणे णं जीवे वीयरागभावं जणयइ ।
वीयरागभाव पडिवन्ने य णं जीवे सम सुह दुक्खे भवइ ॥३६॥

जोग-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

जोग-पच्चक्खाणेणं जीवे अजोगत्तं जणयइ ।
अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं निज्जरेइ ॥३७॥

सरीर-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सरीर-पच्चक्खाणेणं जीवे सिद्धाइसय-गुण-कित्तणं निव्वत्तेइ।
सिद्धाइसय-गुण संपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ ॥३८॥

सहाय-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सहाय-पच्चक्खाणेणं जीवे एगीभावं जणयइ ।
एगीभावभूए य णं जीवे एगत्तं भावेमाणे—
अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्प-कलहे अप्प-कसाए अप्प-तुमंतुमे—
संजम-बहुले संवर-बहुले समाहिए यावि भवइ ॥३९॥

भत्त-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्त-पच्चक्खाणेणं जीवे अणेगाइं भवसयाइं निरुंभइ ॥४०॥

सब्भाव-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सब्भाव-पच्चक्खाणेणं जीवे अनियट्टिं जणयइ ।
अनियट्टिपडिवन्नेय अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ ।
तंजहा—वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं—
तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ
सव्व दुक्खाणमंतं करेइ ॥४१॥

पडिरूवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिरूवयाए णं जीवे लाघवं जणयइ ।
लघुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे—
विसुद्धसमत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाण भूय-जीव-सत्तेसु
विससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए
विउल तव-समइ-समन्नागए यावि भवइ ॥४२॥

वेयावच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वेयावच्चेणं जीवे तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबंधइ ॥४३॥

सव्वगुणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सव्वगुणसंपन्नयाए णं जीवे अपुणरावत्तिं जणयइ ।
अपुणरावत्तिं पत्तए य णं जीवे
सारीर-माणसाणं दुक्खाणं नो भागीभवइ ॥४४॥

वीयरागयाए णं-भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वीयरागयाए णं जीवे नेहाणुबंधणाणि तण्हाणुबंधणाणि य वोच्छिंदइ,
मणुन्नामणुन्नेसु सद्द-फरिस-रूव-रस-गंधेसु चेव विरज्जइ ॥४५॥

खंतीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

खंतीए णं जीवे परीसहे जिणइ ॥४६॥

मुत्तीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं जीवे अकिंचणं जणयइ ।
अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं पुरिसाणं अपत्थणिज्जो भवइ ॥४७॥

अज्जवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए णं जीवे काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं–
अविसंवायणं जणयइ ।
अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥

मद्दवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

मद्दवयाए णं जीवे अणुस्सियत्तं जणयइ ।
अणुस्सियत्तेणं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठमयट्ठाणाइं निट्ठावेइ ॥४६॥

भावसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेणं जीवे भावे विसोहिं जणयइ ।
भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहंत-पन्नत्तस्स-धम्मस्स–
आराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।
अरहंत-पन्नत्तस्स-धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता–
परलोग धम्मस्स आराहए भवइ ॥५०॥

करणसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चेणं जीवे करणसत्तिं जणयइ ।
करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ ॥५१॥

मणगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ ।
एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवई ॥५३॥

वयगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए णं जीवे निव्वियारत्तं जणयइ ।
निव्वियारेणं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि भवई ॥५४॥

कायगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए णं जीवे संवरं जणयइ ।
संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥५५॥

मण-समाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

मण-समाहारणयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ ।
एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ ।
नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ॥५७॥

वय-समाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वय-समाहारणयाए णं जीवे वय-साहारण-दंसणपज्जवे विसोहेइ ।
वय-साहारण-दंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहवोहियत्तं निव्वत्तेइ
दुल्लहवोहियत्तं निज्जरेइ ॥५७॥

काय-समाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

काय-समाहारणयाए णं जीवे चरित्तपज्जवे विसोहेइ ।
चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ ।

अहक्खायचरित्तं विसोहित्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ ।
तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ--
सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥५८॥

नाण-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

नाण-संपन्नयाए णं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ ।
नाण-संपन्ने जीवे चाउरंते संसारकंतारे न विणस्सइ ।

गाहा—जहा सुई ससुत्ता, पडिया न विणस्सइ ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ ॥ १ ॥

नाण-विणय-तव-चरित्तजोगे संपाउणइ ।
ससमय-परसमयविसारए य असंघायणिज्जे भवइ ॥५९॥

दंसण-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

दंसण-संपन्नयाए णं जीवे भवमिच्छत्तछेयणं करेइ,
परं न विज्झायइ—
परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाण-दंसणेणं—
अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥६०॥

चरित्त-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

चरित्त-संपन्नयाए णं जीवे सेलेसिभावं जणयइ ।
सेलेसिंपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ ।
तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ—
सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥६१॥

सोइंदिय- निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सोइंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु–
राग-दोसनिग्गहं जणयइ।
तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६२॥

चक्खिंदिय-निग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

चक्खिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु–
राग-दोसनिग्गहं जणयइ।
तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६३॥

घाणिंदिय-निग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

घाणिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु गंधेसु–
राग-दोस-निग्गहं जणयइ।
तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६४॥

जिब्भिंदिय-निग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

जिब्भिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु–
राग-दोसनिग्गहं जणयइ।
तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६५॥

फासिंदिय-निग्गहेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

फासिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु–
राग-दोसनिग्गहं जणयइ।
तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६६॥

कोह-विजएणं भंते! जीवे किं जणयइ?

कोह-विजएणं जीवे खंतिं जणयइ ।
कोह-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६७॥

माण-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

माण-विजएणं जीवे मद्दवं जणयइ ।
माण-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६८॥

माया-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

माया-विजएणं जीवे अज्जवं जणयइ ।
माया-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६९॥

लोभ-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

लोभ-विजएणं जीवे संतोसं जणयइ ।
लोभ-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥७०॥

पिज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

पिज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजएणं जीवे—
नाण-दंसण-चरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।
अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगंठि-विमोयणयाए—

तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए—

अट्ठावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।
पंचविहं णाणावरणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।
नवविहं दंसणावरणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।
पंचविहं अंतराइयं कम्मं उग्घाएइ ।
एए तिन्निवि कम्मंसे जुगवं खवेइ—

तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं–
निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं–
लोगालोगप्पभासगं केवलवरनाण-दंसणं समुप्पाडेइ—
जाव सजोगी भवइ, ताव इरियावहियं कम्मं निबंधइ—
सुहफरिसं दुसमयठिइयं—
तं पढम-समएबद्धं बिइय-समएवेइयं तइय-समए निजिण्णं—
तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निजिण्णं–
सेयाले य अकम्मं यावि भवइ ॥७१॥

अहाउयं पालयित्ता—
अंतोमुहुत्तद्धावसेसाए जोग-निरोहं करेमाणे
सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं झायमाणे
तप्पढमयाए—
मणजोगं निरुंभइ वयजोगं निरुंभइ कायजोगं निरुंभइ,
आण-पाणनिरोहं करेइ—
इसि पंच-हस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं अणगारे—
समुच्छिन्न किरियं अनियट्टि सुक्कज्झाणं झायमाणे—
वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च
एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥७१॥

तओ ओरालिय-तेयकम्माइं
सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता
उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगइ
उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता।
सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ
सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥७२॥

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे—
समणेणं भगवया महावीरेणं—
आघविए पन्नविए परूविए दंसिए निदंसिए उवदंसिए।
॥ त्ति बेमि ॥

अह तवमग्ग नामं तीसइमं अज्झयणं

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥
पणिवह[1] मुसावाया[2], अदत्त[3] मेहुण[4] परिग्गहा[5] विरओ।
राइभोयणविरओ[6], जीवो भवइ अणासवो ॥ २ ॥
पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिईंदिओ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥
एएसिं तु विवच्चासे, रागदोससमज्जियं।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ ४ ॥
'जहा महातलायस्स, संनिरुद्धे जलागमे।
उस्सिंचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे' ॥ ५ ॥
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे।
भव-कोडी-संचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥
सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भंतरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भंतरो तवो ॥ ७ ॥

अणसण[1] मूणोयरिया[2], भिक्खायरिया[3] य रसपरिच्चाओ[4]।
कायकिलेसो[5] संलीणया[6], य बज्झो तवो होइ ॥ ८ ॥

(१) इत्तरिय[1] मरणकाला[2] य, अणसणा दुविहा भवे।
इत्तरिया सावकंखा, निरवकंखा उ बिइज्जिया ॥ ९ ॥

जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो।
सेढितवो[1] पयरतवो[2], घणो[3] य तह होइ वग्गो[4] य ॥१०॥

तत्तो य वग्गवग्गो[5], पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो[6]।
मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥११॥

जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया।
सवियार[1]मवियारा[2], कायचिट्ठं पई भवे ॥१२॥

अहवा सपरिकम्मा[1], अपरिकम्मा[2] य आहिया।
नीहारि[1]मनीहारी[2], आहारच्छेओ दोसु वि ॥१३॥

(२) ओमोयरणं पंचहा, समासेण वियाहियं।
दव्वओ[1] खेत्त[2]कालेण[3], भावेणं[4] पज्जवेहि य ॥१४॥

जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे।
जहन्नेणेगसित्थाई, एवं दव्वेण ऊ भवे ॥१५॥

गामे नगरे तह, रायहाणि निगमे य आगरे पल्ली।
खेडे–कव्वड–दोणमुह, पट्टण-मडंब-संबाहे ॥१६॥

आसमपए विहारे, सन्निवेसे समाय-घोसे य।
थलि-सेणा-खंधारे, सत्थे संवट्ट-कोट्टे य ॥१७॥

वाडेसु य रत्थासु य, घरेसु वा एयमित्तियं खेत्तं।
कप्पइ उ एवमाई, एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥१८॥

पेडा[1] य अद्धपेडा[2], गोमुत्ति[3]-पयंगवीहिया[4] चेव।
संबुकावट्टा[5] ययगंतु, पच्चागया[6] छट्ठा ॥१९॥

दिवसस्स पोरुसीणं, चउण्हंपि उ जत्तिओ भवे कालो।
एवं चरमाणो खलु, कालोमाणं मुणेयव्वं ॥२०॥

अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसंतो।
चउभागूणाए वा, एवं कालेण ऊ भवे ॥२१॥

इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वा नलंकिओ वावि।
अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥२२॥
अन्नेणं विसेसेणं, वण्णेणं भावमणुमुयंते उ।
एवं चरमाणो खलु, भावोमोणं मुणेयव्वं ॥२३॥
दव्वे खेत्ते काले, भावंमि य आहिया उ जे भावा।
एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥२४॥

(३) अट्ठविहगोयरग्गं तु, तहा सत्तेव एसणा।
अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥२५॥

(४) खीर-दहि-सप्पिमाई, पणीयं पाणभोयणं।
परिवज्जणं रसाणं तु, भणियं रसविवज्जणं ॥२६॥

(५) ठाणा विरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा।
उग्गा जहा धरिज्जंति, कायकिलेसं तमाहियं ॥२७॥

(६) एगंतमणावाए, इत्थी-पसु-विवज्जिए।
सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासणं ॥२८॥
एसो बाहिरंगतवो, समासेण वियाहिओ।
अब्भिंतरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥२९॥
पायच्छित्तं[1] विणओ[2], वेयावच्चं[3] तहेव सज्झाओ[4]।
झाणं[5] च विउसग्गो[6], एसो अब्भिंतरो तवो ॥३०॥

(१) आलोयणारिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं।
जे भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं ॥३१॥

(२) अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं, तहेवासणदायणं।
गुरुभत्ति-भाव-सुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥३२॥

(३) आयरियमाईए, वेयावच्चंमि दसविहे।
आसेवणं जहाथामं, वेयावच्चं तमाहियं ॥३३॥

(४) वायणा[1] पुच्छणा[2] चेव, तहेव परियट्टणा[3] ।
अणुप्पेहा[4] धम्मकहा[5], सज्झाओ पंचहा भवे ॥३४॥

(५) अट्ट[1]रुद्दाणि[2] वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए ।
धम्म[3]सुक्काइं[4] झाणाइं, झाणं तं तु बुहा वए ॥३५॥

(६) सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे ।
कायस्स विउसग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥३६॥

एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिओ ॥३७॥
त्ति बेमि ॥

अह चरणविहि-नामं एगतीसइमं अज्झयणं

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥
एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं ॥ २ ॥
राग-दोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ३ ॥
दंडाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयइ निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ४ ॥
दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छ-माणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ५ ॥
विगहा-कसाय-सन्नाणं, झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ६ ॥

वएसु इंदियत्थेसु, समिईसु किरियासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ७ ॥
लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ८ ॥
पिंडोग्गहपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ९ ॥
मदेसु बंभगुत्तीसु, भिक्खुधम्मम्मि दसविहे।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१०॥
उवासगाणं पडिमासु, भिक्खूणं पडिमासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥११॥
किरियासु भूयगामेसु, परमाहंमिएसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१२॥
गाहासोलसएहिं, तहा असंजमंमि य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१३॥
बंभंमि नायज्झयणेसु, ठाणेसु य ऽसमाहिए।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१४॥
एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१५॥
तेवीसाइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छई मंडले ॥१६॥
पणवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१७॥
अणगारगुणेहिं च, पगप्पंमि तहेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१८॥

पावसुयपसंगेसु, मोहठाणेसु चेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१९॥
सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥२०॥
इइ एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया ।
खिप्पं सो सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिओ ॥२१॥
त्ति बेमि ॥

अह पमायट्ठाण-नामं बत्तीसइमं अज्झयणं

अच्चंतकालस्स समूलगस्स,
सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता,
सुणेह एगंतहियं हियत्थं ॥ १ ॥
नाणस्स सव्वस्स पगासणाए,
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं,
एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥ २ ॥
तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा,
विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झायएगंतनिसेवणा य,
सुत्तत्थसंचिंतणया धिई य ॥ ३ ॥
आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं,
सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं,
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥

न वा लभेज्जा निउणं सहायं,
गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एगो वि पावाइं विवज्जयंतो,
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

जहा य अंडप्पभवा बलागा,
अंडं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा,
मोहं च तण्हाययणं वयंति ॥ ६ ॥

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं,
कम्मं च मोहप्पभवं वयंति ।
कम्मं च जाइमरणस्स मूलं,
दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥ ७ ॥

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो,
मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो,
लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥

रागं च दोसं च तहेव मोहं,
उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा,
ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥

रसा पगामं न निसेवियव्वा,
पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्दवंति,
"दुमं जहा साउफलं व पक्खी" ॥१०॥

"जहा दवग्गी पउरिंधणे वणे,
समारुओ नोवसमं उवेइ ।"
एविंदियग्गी वि पगामभोइणो,
न बंभयारिस्स हियाय कस्सई ॥११॥

विवित्तसेज्जासण जंतियाणं,
ओमासणाणं दमिइंदियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं,
"पराइओ वाहिरिवोसहेहिं" ॥१२॥

"जहा विरालावसहस्स मूले,
न मूसगाणं वसही पसत्था ।"
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे,
न बंभयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥

न रूव--लावण्ण--विलास--हासं,
न जंपियं इंगिय-पेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता,
दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥१४॥

अदंसणं चेव अपत्थणं च,
अचिंतणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियज्झाणजुग्गं,
हियं सया बंभवए रयाणं ॥१५॥

कामं तु देवीहि विभूसियाहिं,
न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहा वि एगंतहियं ति नच्चा,
विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥१६॥

मोक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स,
संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए,
जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥१७॥

एए य संगे समइक्कमित्ता,
सुदुत्तरा चेव भवंति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता,
नई भवे अवि गंगासमाणा ॥१८॥

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं,
सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि,
तस्संतगं गच्छइ वीयरागो ॥१९॥

'जहा य किंपागफला मणोरमा,
रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।'
तं खुड्डए जीविए पच्चमाणा,
एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥

जे इंदियाणं विसया मणुन्ना,
न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा,
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥

(१) चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥२२॥

रूवस्स चक्खुं गहणं वयंति,
चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥२३॥

रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे से 'जह वा पयंगे',
आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥२४॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू,
न किंचि रूवं अवरज्झइ से ॥२५॥

एगंतरत्ते रुइरंसि रूवे,
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥२६॥

रूवाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥२७॥

रूवाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से,
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥२८॥

रूवे अतित्ते य परिग्गहंमि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥२९॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥३०॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो,
रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥३१॥

रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥३२॥

एमेव रूवंमि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥३३॥

रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥३४॥

(२) सोयस्स सद्दं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥३५॥

सद्दस्स सोयं गहणं वयंति,
सोयस्स सद्दं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥३६॥

सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं ।
"रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे,
सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं" ॥३७॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू,
न किंचि सद्दं अवरज्झई से ॥३८॥

एगंतरत्ते रुइरंसि सद्दे,
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥३९॥

सद्दाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥४०॥

सद्दाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥४१॥

सद्दे अतित्ते य परिग्गहंमि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥४२॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥४३॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो,
सद्दे अतित्ता दुहिओ अणिस्सो ॥४४॥

सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥४५॥

एमेव सद्दंमि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥४७॥

(३) घाणस्स गंधं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥४८॥

गंधस्स घाणं गहणं वयंति,
घाणस्स गंधं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥४९॥

गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं ।
"रागाउरे ओसहगंधगिद्धे,
सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते" ॥५०॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेस सएण जंतू,
न किंचि गंधं अवरज्झई से ॥५१॥

एगंतरत्ते रुइरंसि गंधे,
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥५२॥

गंधाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥५३॥

गंधाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥५४॥

गंधे अतित्ते य परिग्गहंमि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥५५॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
गंधे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्था वि दुक्खा न विमुच्चई से ॥५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो,
गंधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥

गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कुत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥५८॥

एमेव गंधंमि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥५९॥

गंधे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥६०॥

(४) जिब्भाए रसं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥६१॥

रसस्स जिब्भं गहणं वयंति,
जिब्भाए रसं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥६२॥

रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं ।
"रागाउरे वडिसविभिन्नकाए,
मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे" ॥६३॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू,
न किंचि रसं अवरज्झई से ॥६४॥

एगंतरत्ते रुइरंसि रसे,
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥

रसाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥६६॥

रसाणुवाएण परिग्गहंमि,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥६७॥

रसे अतित्ते य परिग्गहंमि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥६८॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
रसे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥६९॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो,
रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७०॥

रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥७१॥

एमेव रसम्मि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥७२॥

रसे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥७३॥

(५) कायस्स फासं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥७४॥

फासस्स कायं गहणं वयंति,
कायस्स फासं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥७५॥

फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं ।
'रागाउरे सीयजलावसन्ने,
गाहग्गहीए महीसे विवन्ने' ॥७६॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू,
न किंचि फासं अवरज्झई से ॥७७॥

एगंतरत्ते रुइरंसि फासे,
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥७८॥

फासाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥७९॥

फासाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥८०॥

फासे अतित्ते य परिग्गहंमि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥८१॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्था वि दुक्खा न विमुच्चई से ॥८२॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो,
फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥८३॥

फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥८४॥

एमेव फासंमि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥८५॥

फासे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥८६॥

(६) मणस्स भावं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥८७॥

भावस्स मणं गहणं वयंति,
मणस्स भावं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥८८॥

भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं।
"रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे,
करेणुमग्गावहिए गजे वा" ॥८९॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू,
न किंचि भावं अवरज्झई से ॥९०॥

एगंतरत्ते रुइरंसि भावे,
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥९१॥

भावाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥९२॥

भावाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से?
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥९३॥

भावे अतित्ते य परिग्गहंमि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥९४॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥९५॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो,
भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥९६॥

भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥९७॥

एमेव भावंमि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥९८॥

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥९९॥

एविंदियत्था य मणस्स अत्था,
दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं,
न वीयरागस्स करेंति किंचि ॥१००॥

न कामभोगा समयं उवेंति,
न यावि भोगा विगइं उवेंति।
जे तप्पओसी य परिग्गही य,
सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥१०१॥

कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोहं दुगुंछं अरइं रइं च।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं,
नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥१०२॥

आवज्जई एवमणेगरूवे,
एवंविहे कामगुणेसु सत्तो।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे,
कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥१०३॥

कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू,
पच्छाणुतावे न तवप्पभावं।
एवं वियारे अमियप्पयारे,
आवज्जइ इंदियचोरवस्से ॥१०४॥

तओ से जायंति पओयणाइं,
निमज्जिउं मोहमहण्णवंमि।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा,
तप्पच्चयं उज्जमए य रागी ॥१०५॥

विरज्जमाणस्स य इंदियत्था,
सद्दाइया तावइयप्पगारा।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा,
निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा ॥१०६॥

एवं ससंकप्प–विकप्पणासुं,
संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
अत्थे य संकप्पयओ तओ से,
पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥१०७॥

स वीयरागो कयसव्वकिच्चो,
खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसणमावरेइ,
जं चंतरायं पकरेइ कम्मं ॥१०८॥

सव्वं तओ जाणइ पासए य,
अमोहणे होइ निरंतराए ।
अणासवे झाण-समाहिजुत्ते,
आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥

सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को,
जं बाहई सययं जंतुमेयं ।
दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो,
तो होइ अच्चंतसुही कयत्थो ॥११०॥

अणाइकालप्पभवस्स एसो,
सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
वियाहियं जे समुविच्च सत्ता,
कमेण अच्चंतसुही भवंति ॥१११॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह कम्मपयडि—नामं तेत्तीसइमं अज्झयणं

अट्ठ-कम्माइं वोच्छामि, आणुपुव्विं जहक्कमं ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो, संसारे परिवट्टई ॥ १ ॥

मूलप्रकृतयः—

नाणस्सावरणिज्जं[1], दंसणावरणं[2] तहा ।
वेयणिज्जं[3] तहा मोहं[4], आउकम्मं[5] तहेव य ॥ २ ॥

नामकम्मं[6] च गोयं[7] च, अंतरायं[8] तहेव य ।
एवमेयाइं कम्माइं, अट्ठेव उ समासओ ॥ ३ ॥

उत्तरप्रकृतयः—

(१) नाणावरणं पंचविहं, सुयं[1] आभिणिबोहियं[2] ।
ओहिनाणं[3] च तइयं, मणनाणं[4] च केवलं[5] ॥ ४ ॥

(२) निद्दा[1] तहेव पयला[2], निद्दानिद्दा[3] पयलपयला[4] य ।
तत्तो य थीणगिद्धी[5] उ, पंचमा होइ नायव्वा ॥ ५ ॥
चक्खु[1]मचक्खू[2] ओहिस्स[3], दंसणे केवले[4] य आवरणे ।
एवं तु नवविगप्पं, नायव्वं दंसणावरणं ॥ ६ ॥

(३) वेयणीयंपि य दुविहं, साय[1]मसायं[2] च आहियं ।
सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥ ७ ॥

(४) मोहणिज्जंपि दुविहं, दंसणे[1] चरणे[2] तहा ।
दंसणे तिविहं वुत्तं, चरणे दुविहं भवे ॥ ८ ॥
सम्मत्तं[1] चेव मिच्छत्तं[2], सम्मामिच्छत्तमेव[3] य ।
एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ॥ ९ ॥
चरित्तमोहणं कम्मं, दुविहं तु वियाहियं ।
कसायमोहणिज्जं तु, नोकसायं तहेव य ॥१०॥

सोलसविहभेएणं, कम्मं तु कसायजं ।
सत्तविहं नवविहं वा, कम्मं च नोकसायजं ॥११॥

(५) नेरइय[1] तिरिक्खाउं,[2] मणुस्साउं[3] तहेव य ।
देवाउयं[4] चउत्थं तु, आउकम्मं चउव्विहं ॥१२॥

(६) नामकम्मं तु दुविहं, सुह[1] मसुहं[2] च आहियं ।
सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥१३॥

(७) गोयं कम्मं दुविहं, उच्चं[1] नीयं[2] च आहियं ।
उच्चं अट्ठविहं होइ, एवं नीयं पि आहियं ॥१४॥

(८) दाणे[1] लाभे[2] य भोगे[3] ए, उवभोगे[4] वीरिए[5] तहा ।
पंचविहमंतरायं, समासेण वियाहियं ॥१५॥
एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।
पएसग्गं खेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥१६॥
सव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्गमणंतगं ।
गंठियसत्ताईयं, अंतो सिद्धाण आहियं ॥१७॥
सव्वजीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥१८॥

कर्मणां जघन्योत्कृष्टा च स्थितिः—

उदहीसरिसनामाणं, तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥
आवरणिज्जाण दुण्हंपि, वेयणिज्जे तहेव य ।
अंतराए य कंमंमि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥
उदहीसरिसनामाणं, सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२१॥
तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२२॥

उदहीसरिसनामाणं, वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा, अट्ठमुहुत्ता जहन्निया ॥२३॥

कर्मणामनुभागप्रदेशौ—

सिद्धाणणंतभागो य, अणुभागा हवंति उ ।
सव्वेसु वि पएसग्गं, सव्वजीवेसु इच्छियं ॥२४॥

तम्हा एएसिं कम्माणं, अणुभागा वियाणिया ।
एएसिं संवरे चेव, खवणे य जए बुहो ॥२५॥
त्ति बेमि ॥

अह लेसज्झयण–नामं चोत्तीसइमं अज्झयणं

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्विं जहक्कमं ।
छण्हंपि कम्मलेसाणं, अणुभावे सुणेह मे ॥ १ ॥

नामाइं वण्ण-रस-गंध, फासपरिणामलक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥ २ ॥

लेश्यानां नामानि—

किण्हा[1] नीला[2] य काऊ[3] य, तेऊ[4] पम्हा[5] तहेव य ।
सुक्कलेसा[6] य छट्ठा य, नामाइं तु जहक्कमं ॥ ३ ॥

लेश्यानां वर्णाः—

(१) जीमूयनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा ।
खंजंजणनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥ ४ ॥

(२) नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥ ५ ॥

(३) अयसीपुप्फसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा ।
पारेवयगीवनिभा, काउलेसा उ वण्णओ ॥ ६ ॥

(४) हिंगुलयधाउसंकासा, तरुणाइच्चसन्निभा ।
सुयतुंडपईवनिभा, तेउलेसा उ वण्णओ ॥ ७ ॥

(५) हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा ।
सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥ ८ ॥

(६) संखंककुंदसंकासा, खीरपूरसमप्पभा ।
रयय—हारसंकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥ ९ ॥

२. लेश्याना रसाः—

(१) जह कडुयतुंबगरसो,
निंबरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो य किण्हाए नायव्वो ॥१०॥

(२) जह तिकडुयस्स य रसो,
तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥

(३) जह तरुणअंबगरसो,
तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो उ काऊए नायव्वो ॥१२॥

(४) जह परिणयंबगरसो,
पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो उ तेऊए नायव्वो ॥१३॥

(५) वरवारुणीए व रसो,
विविहाण व आसवाण जारिसओ।
महुमेरयस्स व रसो,
एत्तो पम्हाए परएणं ॥१४॥

(६) खज्जूर-मुद्दियरसो,
खीररसो खंड-सक्कररसो वा।
एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥

लेश्यानां गन्धाः—

जह गोमडस्स गंधो,
सुणगमडस्स व 'जहा अहिमडस्स'।
एत्तो वि अणंतगुणो,
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१६॥

जह सुरहिकुसुमगंधो, गंधवासाण पिस्समाणाणं।
एत्तो वि अणंतगुणो, पसत्थलेसाणं तिण्हं पि ॥१७॥

लेश्यानां स्पर्शाः—

जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए य सागपत्ताणं।
एत्तो वि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१८॥

जह बूरस्स व फासो,
नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं।
एत्तो वि अणंतगुणो,
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥१९॥

लेश्यानां परिणामाः—

तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा।
दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥

लेश्यानां लक्षणानि—

(१) पंचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य।
तिव्वारंभपरिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ॥२१॥
निद्धंधसपरिणामो, निस्संसो अजिइंदिओ।
एयजोगसमाउत्तो, किण्हलेसं तु परिणमे ॥२२॥
(२) इस्सा अमरिस अतवो, अविज्जमाया अहीरिया।
गिद्धी पओसे य सढे पमत्ते,
रसलोलुए साय गवेसए य ॥२३॥
आरंभाओ अविरओ, खुद्दो साहस्सिओ नरो।
एयजोगसमाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥
(३) वंके वंकसमायारे, नियडिल्ले अणुज्जुए।
पलिउंचगओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥२५॥
उप्फालगदुट्ठवाई य, तेणे आवि य मच्छरी।
एयजोगसमाउत्तो, काऊलेसं तु परिणमे ॥२६॥
(४) नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले।
विणीयविणए दंते, जोगवं उवहाणवं ॥२७॥
पियधम्मे दढधम्मेऽवज्जभीरू हिएसए।
एयजोगसमाउत्तो, तेउलेसं तु परिणमे ॥२८॥
(५) पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए।
पसंतचित्ते दंतप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥२९॥
तहा पयणुवाई य, उवसंते जिइंदिए।
एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥३०॥
(६) अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि झायए।
पसंतचित्ते दंतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तीसु ॥३१॥

सरागे वीयरागे वा, उवसंते जिइंदिए ।
एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेसं तु परिणमे ॥३२॥

लेश्यानां स्थानानि—

असंखिज्जाणोसप्पिणीण,उस्सप्पिणीण जे समया।
संखाईया लोगा, लेसाण हवंति ठाणाइं ॥३३॥

लेश्यानां स्थितिः—

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥३४॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना,
दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥३५॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना,
तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥३६॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना,
दोण्णुदही पलियमसंखभागब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥३७॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना,
दस होंति य सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥३९॥
एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ।
चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं उ वोच्छामि ॥४०॥
दस वाससहस्साइं, काउए ठिई जहन्निया होइ।
तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥४१॥

तिण्णुदही पलिओवम, मसंखभागो जहन्नेण नीलठिई ।
दस उदही पलिओवम, मसंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥

दसउदही पलिओवम, मसंखभागं जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥४३॥

एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥४४॥

अंतोमुहुत्तमद्धं, लेसाणं ठिई जहिं जहिं जाउ ।
तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं ॥४५॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ ।
नवहि वरिसेहि ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥४६॥

एसा तिरियनराणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाणं ॥४७॥

दस वाससहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो, उक्कोसो होइ किण्हाए ॥४८॥

जा किण्हाए ठिई खलु,
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं नीलाए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥४९॥

जा नीलाए ठिई खलु,
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं काऊए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥५०॥

तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइ–वाणमंतर–जोइस–वेमाणियाणं च ॥५१॥

पलिओवमं जहन्ना, उक्कोसा सागरा उ दुन्नहिया ।
पलियमसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ॥५२॥

दसवाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निया होइ।
दुन्नुदही पलिओवम,असंखभागं च उक्कोसा ॥५३॥

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं पम्हाए, दस उ मुहुत्ताहियाइ उक्कोसा ॥५४॥

जा पम्हाए ठिई खलु,उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं सुक्काए, तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥५५॥

तिसृभिरधर्मलेश्याभिर्दुर्गतिः—

किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ।
एयाहिं तिहिं वि जीवो, दुग्गइं उववज्जइ ॥५६॥

तिसृभिःधर्मलेश्याभिःसुगतिः—

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ।
एयाहिं तिहिं वि जीवो, सुग्गइं उववज्जइ ॥५७॥

लेसाहिं सव्वाहिं, पढमे समयंमि परिणयाहिं तु।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥५८॥

लेसाहिं सव्वाहिं, चरिमे समयंमि परिणयाहिं तु।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५९॥

अंतमुहुत्तंमि गए, अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव।
लेसाहि परिणयाहिं, जीवा गच्छंति परलोयं ॥६०॥

तम्हा एयासिं लेसाणं, अणुभावं वियाणिया।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता,पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणी ॥६१॥

त्ति बेमि ॥

अह अणगारिज्ज-नामं पंचतीसइमं अज्झयणं

सुणेह मे एगग्गमणा, मग्गं बुद्धेहि देसियं ।
जमायरंतो भिक्खू, दुक्खाणंतकरे भवे ॥ १ ॥
गिहवासं परिच्चज्ज, पवज्जासस्सिए मुणी ।
इमे संगे वियाणिज्ज, जेहिं सज्जंति माणवा ॥ २ ॥
तहेव हिंसं[1] अलियं[2], चोज्जं[3] अबंभसेवणं[4] ।
इच्छाकामं च लोभं[5] च, संजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥

मणोहरं चित्तघरं, मल्लधूवेण वासियं ।
सकवाडं पंडुरुल्लोयं, मणसावि न पत्थए ॥ ४ ॥
इंदियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसंमि उवस्सए ।
दुक्कराइं निवारेउं, कामरागविवड्ढणे ॥ ५ ॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व इक्कओ ।
पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयए ॥ ६ ॥
फासुयंमि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ संकप्पए वासं, भिक्खू परमसंजए ॥ ७ ॥
न सयं गिहाइं कुव्विज्जा, णेव अन्नेहिं कारए ।
गिहकम्मसमारंभे, भूयाणं दिस्सए वहो ॥ ८ ॥
तसाणं थावराणं च, सुहुमाणं बादराण य ।
तम्हा गिहसमारंभे, संजओ परिवज्जए ॥ ९ ॥

तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य ।
पाण-भूय-दयट्ठाए, न पए न पयावए ॥१०॥
जल-धन्न-निस्सिया जीवा, पुढवी-कट्ठ-निस्सिया ।
हम्मंति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥११॥

विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणि–विणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं न दीवए ॥१२॥

हिरण्णं जायरूवं च, मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू, विरए कयविक्कए ॥१३॥
किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ ।
कय-विक्कयंमि वट्टंतो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥१४॥
भिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खवित्तिणा ।
कय-विक्कओ महादोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥

समुयाणं उंछमेसिज्जा, जहासुत्तमणिंदियं ।
लाभालाभंमि संतुट्ठे, पिंडवायं चरे मुणी ॥१६॥
अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादंते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥१७॥

अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूयणं तहा ।
इड्ढी-सक्कार-सम्माणं, मणसा वि न पत्थए ॥१८॥
सुक्कज्झाणं झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥
निज्जूहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्ठिए ।
जहिऊण माणुसं बोंदिं, पहू दुक्खा विमुच्चई ॥२०॥
निम्ममे निरहंकारे, वीयरागो अणासवो ।
संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिणिव्वुए ॥२१॥
त्ति बेमि ॥



अह जीवाजीवविभत्ति–नामं छत्तीसइमं अज्झयणं

जीवाजीवविभत्तिं मे, सुणेहेगमणा इओ ।
जं जाणिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ संजमे ॥ १ ॥

लोकालोक-स्वरूपम्—

जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए ।
अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥ २ ॥

द्रव्यादिभिर्जीवाजीवयोः प्ररूपणा—

दव्वओ[1] खेत्तओ चेव, कालओ[3] भावओ[4] तहा ।
परूवणा तेसिं भवे, जीवाणमजीवाण य ॥ ३ ॥

अजीवभेदाः—

(१) रूविणो चेव रूवी य, अजीवा दुविहा भवे ।
अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा ॥ ४ ॥
धम्मत्थिकाए[1] तद्देसे[2], तप्पएसे[3] य आहिए ।
अहम्मे[4] तस्स देसे[5] य, तप्पएसे[6] य आहिए ॥ ५ ॥
आगासे[7] तस्स देसे[8] य, तप्पएसे[9] य आहिए ।
अद्धासमए[10] चेव, अरूवी दसहा भवे ॥ ६ ॥
(२) धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया ।
लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥ ७ ॥
(३) धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाइया ।
अपज्जवसिया चेव, सव्वद्धं तु वियाहिए ॥ ८ ॥
समएवि संतइं पप्प, एवमेव वियाहिया ।
आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ॥ ९ ॥
(१) खंधा[1] य खंधदेसा[2] य, तप्पएसा[3] तहेव य ।
परमाणुणो[4] य बोधव्वा, रूविणो य चउव्विहा ॥१०॥
(२) एगत्तेण पुहत्तेणं, खंधा य परमाणु य ।
लोएगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥११॥

सुहुमा सव्वलोगंमि लोगदेसे य बायरा ।
(३) इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२॥
संतइं पप्प तेऽणाई, अप्पज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥१३॥
असंखकालमुक्कोसं[3], एक्को समओ जहन्नयं ।
अजीवाण य रूवीण, ठिई एसा वियाहिया ॥१४॥
अणंतकालमुक्कोसं[4], एक्को समओ जहन्नयं ।
अजीवाण य रूवीण, अंतरेयं वियाहियं ॥१५॥
(४) वण्णओ[1] गंधओ[2] चेव, रसओ[3] फासओ[4] तहा ।
संठाणओ[5] य विन्नेओ, परिणामो तेसिं पंचहा ॥१६॥
(१) वण्णओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।
किण्हा[1] नीला[2] य लोहिया[3], हलिद्दा[4] सुक्किला[5] तहा ॥१७॥
(२) गंधओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया ।
सुब्भिगंधपरिणामा[1], दुब्भिगंधा[2] तहेव य ॥१८॥
(३) रसओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।
तित्त[1]-कडुय[2]-कसाया[3], अंबिला[4] महुरा[5] तहा ॥१९॥
(४) फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा[1] मउआ[2] चेव, गरुया[3] लहुआ[4] तहा ॥२०॥
सीया[5] उण्हा[6] य निद्धा[7] य, तहा लुक्खा[8] य आहिया ।
इय फासपरिणया एए, पुग्गला समुदाहिया ॥२१॥
(५) संठाणओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।
परिमंडला[1] य वट्टा[2] य, तंसा[3] चउरं[4] समायया[5] ॥२२॥
वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२३॥

वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२४॥
वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२५॥
वण्णओ पीयए जे उ, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२६॥
वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२७॥

गंधओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२८॥
गंधओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२९॥

रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३०॥
रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३१॥
रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३२॥
रसओ अंबिले जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३३॥
रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३४॥

फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३५॥

फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३६॥
फासओ गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३७॥
फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३८॥
फासए सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३९॥
फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥४०॥
फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥४१॥
फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥४२॥

परिमंडलसंठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४३॥
संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४४॥
संठाणओ भवे तंसे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४५॥
संठाणओ य चउरंसे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४६॥
जे आययसंठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४७॥

एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया ।

जीवभेदाः—

इत्तो जीवविभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥४८॥
संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया ।

सिद्धानां वर्णनम्—

(१) सिद्धा णेगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥४९॥
इत्थीपुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा ।
सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥५०॥
उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य ।
उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्दंमि जलंमि य ॥५१॥
दस य नपुंसएसु, वीसं इत्थियासु य ।
पुरिसेसु य अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झइ ॥५२॥
चत्तारि य गिहलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य ।
सलिंगेण अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झइ ॥५३॥
उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झंते जुगवं दुवे ।
चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अट्ठुत्तरं सयं ॥५४॥

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे,
तओ जले वीसमहे तहेव य ।
सयं च अट्ठुत्तरं तिरियलोए,
समएणेगेण सिज्झइ धुवं ॥५५॥

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?
कहिं बोंदिं, चइत्ताणं ? कत्थ गंतूण सिज्झई ? ॥५६॥

अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इहं बोंदिं चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिज्झइ ॥५७॥

सिद्धशिलायावर्णनम्—

(२) बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे।
ईसिपब्भारनामा उ, पुढवी छत्तसंठिया ॥५८॥
पणयालसयसहस्सा, जोयणाणं तु आयया।
तावइयं चेव वित्थिण्णा, तिगुणो साहिय परिरओ ॥५९॥
अट्ठजोयणबाहल्ला, सा मज्झंमि वियाहिया।
परिहायंती चरिमंते, मच्छिपत्ताउ तणुययरी ॥६०॥
अज्जुणसुवण्णगमई,
सा पुढवी निम्मला सहावेण।
उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य,
भणिया जिणवरेहिं ॥६१॥
संखंककुंदसंकासा, पंडुरा निम्मला सुहा।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयंतो उ वियाहिओ ॥६२॥

सिद्धानामवस्थिति-क्षेत्रम्—

जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६३॥
तत्थ सिद्धा महाभागा, लोयग्गंमि पइट्ठिया।
भवपवंचओ मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥६४॥

सिद्धानामवगाहना—

उस्सेहो जस्स जो होइ, भवंमि चरिमंमि उ।
तिभागहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥

(३) एगत्तेण साईया, अपज्जवसियावि य।
पुहत्तेण अणाइया, अपज्जवसियावि य ॥६६॥
(४) अरूविणो जीवघणा, नाणदंसणसन्निया।
अउलं सुहं संपत्ता, उवमा जस्स नत्थि उ ॥६७॥

लोगेगदेसे ते सव्वे, नाणदंसणसन्निया ।
संसारपारनित्थिण्णा, सिद्धिं वरगइं गया ॥६८॥

संसारिणां जीवानां वर्णनम्—

संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया ।
तसा[1] य थावरा[2] चेव, थावरा तिविहा तहिं ॥६९॥
(१) पुढवी[1] आउजीवा[2] य, तहेव य वणस्सई[3] ।
इच्चेए थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥७०॥
दुविहा उ पुढवीजीवा, सुहुमा[1] बायरा तहा[2] ।
पज्जत्त[1]मपज्जत्ता[2], एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा[1] खरा[2] य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥७२॥
किण्हा[1] नीला[2] य रुहिरा[3] य, हालिद्दा[4] सुक्किला[5] तहा ।
पंडु[6]-पणग[7]मट्टिया, खरा छत्तीसई विहा ॥७३॥

पुढवी[1] य सक्करा[2] वालुया[3] य,
उवले[4] सिला[5] य लोणू[6]से[7] ।
अय[8]-तंब[9] तउय[10]-सीसग[11],
रुप्प[12]-सुवण्णे[13] य वइरे[14] य ॥७४॥
हरियाले[15] हिंगुलए[16],
मणोसिला[17] सास[18]गंजण[19]-पवाले[20] ।
अब्भपडल[21]ब्भवालुय[22],
बायरकाए मणिविहाणे ॥७५॥

गोमेज्जए[23] य रुयगे[24], अंके[25] फलिहे य लोहियक्खे य[26] ।
मरगय-मसारगल्ले[27], भुयमोयग[28]-इंदनीले[29] य ॥७६॥
चंदण गेरुय हंसगब्भे[30], पुलए[31] सोगंधिए[32] य बोधव्वे ।
चंदप्पह[33]-वेरुलिए[34], जलकंते[35] सूरकंते[36] य ॥७७॥

एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥७८॥

सुहुमा य सव्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥७९॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि[1] य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि[2] य ॥८०॥

बावीससहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई पुढवीणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥८१॥

असंखकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥८२॥

अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, पुढविजीवाण अंतरं ॥८३॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥८४॥

(२) दुविहा आउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥८५॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए[1] य उस्से[2] य, हरतणू[3] महिया[4] हिमे ॥८६॥

एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ॥८७॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥८८॥

सत्तेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई आऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥८९॥

असंखकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई आऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥९०॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, आऊजीवाण अंतरं ॥९१॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥९२॥

(३)दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥९३॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा[1] य, पत्तेगा[2] य तहेव य ॥९४॥
पत्तेगसरीराओ, ऽणेगहा ते पकित्तिया ।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥९५॥
वलया पव्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तिणा ।
हरियकाया उ बोधव्वा, पत्तेगा इह आहिया ॥९६॥
साहारणसरीराओ, ऽणेगहा ते पकित्तिया ।
आलुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ॥९७॥
हिरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई केयकंदली ।
पलंडुलसणकंदे य, कंदली य कुहुव्वए ॥९८॥
लोहिणी हूयथी हूय, तुहगा य तहेव य ।
कण्हे य वज्जकंदे य, कंदे सूरणए तहा ॥९९॥
अस्सकण्णी य बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य ।
मुसुंढी य हलिद्दा य, णेगहा एवमायओ ॥१००॥
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ॥१०१॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१०२॥
दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
वणप्फईण आउं तु, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१०३॥
अणंतकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥१०४॥
असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, पणगजीवाण अंतरं ॥१०५॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥
इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥
तेऊ[1] वाऊ[2] य बोधव्वा, उराला य तसा[3] तहा ।
इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१०८॥

(१) दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०९॥
बायरा जे उ पज्जत्ता,ऽणेगहा ते वियाहिया ।
इंगाले मुम्मुरे अगणी, अच्चि जाला तहेव य ॥११०॥
उक्का विज्जू य बोधव्वा, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥
सुहुमा सव्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥११२॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि[1] य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि य ॥११३॥

तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई तेऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥११४॥

असंखकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥११५॥

अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, तेऊजीवाण अंतरं ॥११६॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥११७॥

(२) दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया ।
उक्कलिया[1] मंडलिया[2], घणगुंजा[3] सुद्धवाया[4] य ॥११९॥

संवट्टगवाये[5] य, णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥१२०॥

सुहुमा सव्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२१॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि[1] य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि[2] य ॥१२२॥

तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई वाऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१२३॥

असंखकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥१२४॥

अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, वाऊजीवाण अंतरं ॥१२५॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१२६॥

(३) उराला तसा जे उ, चउहा ते पकित्तिया ।
बेइंदिया[1] तेइंदिया[2], चउरो[3] पंचिंदिया[4] तहा ॥१२७॥

(१) बेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्त[1]मपज्जत्ता[2], तेसिं भेए सुणेह मे ॥१२८॥
किमिणो सोमंगला चेव, अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पिया, संखा संखणगा तहा ॥१२९॥
पल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य वराडगा ।
जलुगा जालगा चेव, चंदणा य तहेव य ॥१३०॥
इइ बेइंदिया एए, ऽणेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१३१॥
संतइं पप्प ऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥१३२॥
वासाइं बारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया ।
बेइंदिय आउठिई अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१३३॥
संखिज्जकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
बेइंदियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१३४॥
अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
बेइंदियजीवाणं, अंतरं च वियाहियं ॥१३५॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१३६॥

(२) तेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१३७॥

कुंथु-पिवीलि-उड्डंसा, उक्कलुद्देहिया तहा ।
तणहार-कट्ठहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥१३८॥

कप्पासट्ठिमिंजा य, तिंदुगा तउसमिंजगा ।
सदावरी य गुंमी य, बोधव्वा इंदगाइया ॥१३९॥

इंदगोवगमाईया, णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१४०॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥१४१॥

एगूणपण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
तेइंदियआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१४२॥

संखिज्जकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
तेइंदियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१४३॥

अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइंदियजीवाणं, अंतरं तु वियाहियं ॥१४४॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१४५॥

(३) चउरिंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१४६॥

अंधिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा ।
भमरे कीडपयंगे य, ढिंकुणे कंकणे तहा ॥१४७॥

कुक्कुडे सिंगिरीडी य, नंदावत्ते य विच्छुए ।
डोले भिंगीरीडी य, विरीली अच्छिवेहए ॥१४८॥

अच्छिले माहए अच्छि, विचित्ते चित्तपत्तए ।
उहिंजलिया जलकारी य, नीया तंतवयाइया ॥१४९॥

इइ चउरिंदिया एए, ऽणेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१५०॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य[1] ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य[2] ॥१५१॥
छच्चेव उ मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउरिंदियआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१५२॥
संखिज्जकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
चउरिंदियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१५३॥
अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
चउरिंदियजीवाणं, अंतरं च वियाहियं ॥१५४॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१५५॥

(४) पंचिंदिया उ जे जीवा, चउव्विहा ते वियाहिया ।
नेरइय[1] तिरिक्खा[2] य, मणुया[3] देवा[4] य आहिया ॥१५६॥

नरक वर्णनम्—

नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसु भवे ।
रयणाभ[1] सक्काराभा[2], वालुयाभा[3] य आहिया ॥१५७॥
पंकाभा[4] धूमाभा[5], तमा[6] तमतमा[7] तहा ।
इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥१५८॥
लोगस्स एगदेसंमि, ते सव्वे उ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१५९॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥१६०॥
सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥१६१॥

तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥१६२॥
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥१६३॥
दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा ॥१६४॥
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं, दस चेव सागरोवमा ॥१६५॥
बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥
तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥१६७॥
जा चेव य आउठिई, नेरइयाणं वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, नेरइयाणं तु अंतरं ॥१६९॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७०॥

पंचेन्द्रिय-तिरश्चां-वर्णनम्—

पंचिंदियतिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया ।
संमुच्छिमतिरिक्खाओ[1], गब्भवक्कंतिया[2] तहा ॥१७१॥
दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा[1] थलयरा[2] तहा ।
नहयरा य[3] बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१७२॥
मच्छा[1] य कच्छभा[2] य, गाहा[3] य मगरा[4] तहा ।
सुंसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलयराहिया ॥१७३॥

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१७४॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य[1] ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य[2] ॥१७५॥
एगा य पुव्वकोडि, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७६॥
पुव्वकोडिपुहत्तं तु[3], उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७७॥
अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, जलयराणं तु अंतरं ॥१७८॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७९॥

चउप्पया[1] य परिसप्पा[2], दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा उ, ते मे कित्तयओ सुण ॥१८०॥
एगखुरा[1] दुखुरा[2] चेव, गंडीपय[3]-सणप्फया[4] ।
हयमाइ-गोणमाइ,-गयमाइ-सीहमाइणो ॥१८१॥
भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई[1] अहिमाई[2] य, एक्केक्काणेगहा भवे ॥१८२॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१८३॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥१८४॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ[3], उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८५॥

पुव्वकोडिपुहुत्तं, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८६॥
कालमणंतमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, थलयराणं तु अंतरं ॥१८७॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१८८॥

चम्मे[1] उ लोमपक्खी[2] य, तइया समुग्गपक्खिया[3] ।
विययपक्खी[4] य बोधव्वा, पक्खिणो य चउव्विहा ॥१८९॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१९०॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य[1] ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य[2] ॥१९१॥
पलिओवमस्स भागो, असंखेज्ज इमो भवे ।
आउठिई खहयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९२॥
पुव्वकोडीपुहत्तेणं, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई खहयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९३॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंसि सए काए, खहयराणं तु अंतरं ॥१९४॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१९५॥

मनुजानां वर्णनम्—

मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा[1] य मणुया, गब्भवक्कंतिया[2] तहा ॥१९६॥
गब्भवक्कंतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।
कम्म[1] अकम्मभूमा[2] य, अंतरद्दीवया[3] तहा ॥१९७॥

पन्नरस तीसवीहा, भेया अट्ठवीसयं ।
संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ॥१९८॥
संमुच्छिमाण एमेव, भेओ होइ वियाहिओ ।
लोगस्स एगदेसंमि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥१९९॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥२००॥
पलिओवमाइं तिण्णि वि[3], उक्कोसेणं वियाहिया ।
आउठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०१॥
पुव्वकोडिपुहत्तेणं, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०२॥
अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, मणुयाणं तु अंतरं ॥२०३॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२०४॥

देवानां वर्णनम्—

देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
भोमिज्ज[1] वाणमंतर[2], जोइस[3] वेमाणिया[4] तहा ॥२०५॥
दसहा उ भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो ।
पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥
(१) असुरा[1] नाग[2] सुवण्णा[3], विज्जू[4] अग्गी[5] वियाहिया ।
दीवो[6] दहि[7] दिसा[8] वाया[9], थणिया[10] भवणवासिणो ॥२०७॥
(२) पिसाय[1] भूय[2] जक्खा[3] य, रक्खसा[4] किन्नरा[5] किंपुरिसा[6] ।
महोरगा[7] य गंधव्वा[8], अट्ठविहा वाणमंतरा ॥२०८॥
(३) चंदा[1] सूरा[2] य नक्खत्ता[3], गहा[4] तारागणा[5] तहा ।
दिसा विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥२०९॥
(४) वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा[1] य बोधव्वा, कप्पाईया[2] तहेव य ॥२१०॥

कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मी[1] साणगा[2] तहा ।
सणंकुमार[3] माहिंदा[4] बंभलोगा[5] य लंतगा[6] ॥२११॥
महासुक्का[7] सहस्सारा[8], आणया[9] पाणया[10] तहा ।
आरणा[11] अच्चुया[12] चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥
कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥२१३॥
हेट्ठिमाहेट्ठिमा[1] चेव, हेट्ठिमामज्झिमा[2] तहा ।
हेट्ठिमाउवरिमा[3] चेव, मज्झिमाहेट्ठिमा[4] तहा ॥२१४॥
मज्झिमामज्झिमा[5] चेव, मज्झिमाउवरिमा[6] तहा ।
उवरिमाहेट्ठिमा[7] चेव, उवरिमामज्झिमा[8] तहा ॥२१५॥
उवरिमाउवरिमा[9] चेव, इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयंता य, जयंता अपराजिया ॥२१६॥
सव्वत्थसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा ।
इय वेमाणिया एए, ऽणेगहा एवमायओ ॥२१७॥
लोगस्स एगदेसंमि, ते सव्वे वि वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥२१८॥
संतइं पप्प ऽणाईया, अपज्जवसियावि[1] य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि[2] य ॥२१९॥
साहियं सागरं एक्कं[3], उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२०॥
पलिओवम दो ऊणा, उक्कोसेण वियाहिया ।
असुरिंदवज्जेताण जहन्ना दससहस्सगा ॥२२१॥
पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
वंतराणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२२॥
पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥२२३॥

दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिया ।
सोहंमंमि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥२२४॥
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणंमि जहन्नेणं, साहियं पलिओवमं ॥२२५॥
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणंकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि उ सागरोवमा ॥२२६॥
साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
माहिंदंमि जहन्नेणं, साहिया दुन्नि सागरा ॥२२७॥
दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
बंभलोए जहन्नेणं, सत्तऊ सागरोवमा ॥२२८॥
चउद्दससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
लंतगंमि जहन्नेणं, दस उ सागरोवमा ॥२२९॥
सत्तरससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
महासुक्के जहन्नेणं, चोद्दस सागरोवमा ॥२३०॥
अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सहस्सारंमि जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥२३१॥
सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
आणयंमि जहन्नेणं, अट्ठारस सागरोवमा ॥२३२॥
वीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पाणयंमि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ॥२३३॥
सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
आरणंमि जहन्नेणं, वीसई सागरोवमा ॥२३४॥
बावीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अच्चुयंमि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥२३५॥
तेवीससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पढमंमि जहन्नेण, बावीसं सागरोवमा ॥२३६॥

चउवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
बीइयंमि जहन्नेणं, तेवीसं सागरोवमा ॥२३७॥
पणवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
तइयंमि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥२३८॥
छव्वीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थंमि जहन्नेणं, सागरा पणवीसई ॥२३९॥
सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पंचमंमि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसई ॥२४०॥
सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठंमि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥२४१॥
सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमंमि जहन्नेणं, सागरा अट्ठवीसई ॥२४२॥
तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमंमि जहन्नेणं, सागरा अउणतीसई ॥२४३॥
सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमंमि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥२४४॥
तेत्तीसा सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुंपि विजयाईसुं, जहन्नेणेक्कतीसई ॥२४५॥
अजहन्नमणुक्कोसं, तेत्तीसं सागरोवमा ।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४६॥
जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥२४७॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, देवाणं हुज्ज अंतरं ॥२४८॥
अणंतकालमुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहन्नगं ।
आणयाई कप्पाण, गेविज्जाणं तु अंतरं ॥२४९॥

संखिज्जसागरुक्कोसं, वासपुहुत्तं जहन्नगं ।
अणुत्तराण य देवाणं, अंतरं तु वियाहिया ॥२५०॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२५१॥
संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया ।
रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहावि य ॥२५२॥
इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य ।
सव्वनयाणमणुमए, रमेज्ज संजमे मुणी ॥२५३॥

संलेखना विधिः—

तओ बहूणी वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।
इमेण कमजोगेण, अप्पाणं संलिहे मुणी ॥२५४॥
बारसेव उ वासाइं संलेहुक्कोसिया भवे ।
संवच्छरं मज्झिमिया, छम्मासा य जहन्निया ॥२५५॥
पढमे वासचउक्कंमि, विगई-निज्जूहणं करे ।
बिइए वासचउक्कंमि, विवित्तं तु तवं चरे ॥२५६॥
एगंतरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे ।
तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥२५७॥
तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे ।
परिमियं चेव आयामं, तंमि संवच्छरे करे ॥२५८॥
कोडी सहियमायामं, कट्टु संवच्छरे मुणी ।
मासद्धमासिएणं तु, आहारेण तवं चरे ॥२५९॥

संयमस्य विराधनाया-आराधनायाश्चफलम्—

कंदप्पमाभिओगं च, किब्बिसियं मोहमासुरत्तं च ।
एयाउ दुग्गईओ, मरणंमि विराहिया होंति ॥२६०॥
मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा उ हिंसगा ।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं पुण 'दुल्लहा बोही' ॥२६१॥

सम्मद्दंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं 'सुलहा भवे बोही' ॥२६२॥
मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं पुण 'दुल्लहा बोही' ॥२६३॥
जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेंति भावेण ।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी ॥२६४॥
बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूणि ।
मरिहंति ते वराया, जिणवयणं जे न जाणंति ॥२६५॥
बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही ।
एएणं कारणेणं, अरिहा आलोयणं सोउं ॥२६६॥
कंदप्पकुक्कुयाइं, तह सीलसहावहासविगहाइं ।
विम्हावेंतोय परं, कंदप्पं भावणं कुणइ ॥२६७॥
मंताजोगं काउं, भूइकम्मं च जे पउंजंति ।
साय-रस-इड्ढिहेउं, आभिओगं भावणं कुणइ ॥२६८॥
नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
माई अवण्णवाई, किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥२६९॥
अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवी ।
एएहि कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणइ ॥२७०॥
सत्थगहणं विसभक्खणं च, जलणं च जलपवेसो य ।
अणायारभंडसेवी, जम्मणमरणाणि बंधंति ॥२७१॥
इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धियसंवुडे ॥२७२॥
त्ति बेमि ॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(३)

नंदी-सुत्तं

[उक्कालियं]

॥ कालवेलवज्जं पढिज्जति ॥

णामकरणं—

नंदंति जेण तव-संजमेसु, नेव य दरंति खिज्जंति ।
जायंति न दीणा वा, नंदी अ तत्तो समयसन्ना ॥ १ ॥

अ० रा० कोश—

उद्धरणं—

पंचमनाण-पुव्वाओ, तह अंगा उवंगाओ ।
आयरिय देवड्ढिणा, नंदी-सुत्तं सुयोजियं ॥ २ ॥

विसयणिद्देसो—

वीरत्थुई संघथुई य पुव्वं,
पच्छा य तित्थंगर—नामयाणि ।
नामाणि तत्तो गणहारयाणं,
तओ थवो णं जिणसासणस्स ॥ १ ॥

थेरावली चउद्दस, दिट्ठंताणि य सोऊणं ।
तिण्णि परिसयाणं च, भेया पच्छा उ वण्णिया ॥ २ ॥
पंचण्हं खलु नाणाणं, णाम—णिद्देसणं कयं ।
तओ पच्छा य पच्चक्खं, ओहिनाणं तु वण्णियं ॥ ३ ॥
तओ पच्चक्ख-नाणस्स, मणस्स केवलस्स य ।
संगोवंगं सुवण्णानं, वित्थरेण पकित्तियं ॥ ४ ॥
परोक्ख-मइनाणस्स, दिट्ठिभेएण कित्तणं ।
पच्छा चउण्ह बुद्धीणं, सोदाहरण—वण्णानं ॥ ५ ॥
परोक्ख—सुय—नाणस्स, भेया वुत्ता चउद्दसा ।
एकारसंगयस्सावि, तओ पच्छा उ वण्णना ॥ ६ ॥
तओ पच्छा उ संखित्तं, अणुओगो य चूलिया ।
दिट्ठिवाओ य सपुव्वो, वण्णिया य जहक्कमं ॥ ७ ॥
दुवालस्स य अंगस्स, आराहणाअ जं फलं ।
वण्णिऊण उ तं सव्वं, वुत्ता अंगाण निच्छया ॥ ८ ॥

णाण महिमा—

उक्कोसियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं—
सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ?
गोयमा !
अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति......जाव...सव्वदुक्खाणमंतं करेंति।
अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झंति...जाव...सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ।
अत्थेगइए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जंति ।

मज्झिमियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गणेहिं—
सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ?
गोयमा !
अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झंति...जाव...सव्वदुक्खाणमंतं करेंति।
तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ।

जहन्नियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं—
सिज्झंति...जाव...सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ?
गोयमा !
अत्थेगइए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ...जाव...सव्वदुक्खाणमंतं करेइ—
सत्तट्ठभवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ।

भग० श० ८ उ० १० सू० ३५५—

✽ णमोऽत्थु णं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ✽

नन्दी-सुत्तं

वीरस्तुतिः—

जयइ जग—जीव-जोणी, वियाणओ जगगुरू जगाणंदो।
जगणाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥ १ ॥
जयइ सुआणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥
भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स।
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स, भद्दं धूयरयस्स ॥ ३ ॥

संघस्तुतिः—

गुण-भवण-गहण, सुय-रयण-भरिय-दंसण-विसुद्ध-रत्थागा।
संघ-नगर ! भद्दंते, अखंड—चारित्त—पागारा ॥ ४ ॥
संजम—तव—तुंबारयस्स, नमो सम्मत्तपारियल्लस्स।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघ-चक्कस्स ॥ ५ ॥
भद्दं सीलपडागूसियस्स, तव-नियम-तुरय-जुत्तस्स।
संघ-रहस्स भगवओ, सज्झायसुनंदिघोसस्स ॥ ६ ॥
कम्मरय-जलोहविणिग्गयस्स, सुयरयण-दीहनालस्स।
पंचमहव्वय-थिरकण्णियस्स, गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥

सावग-जण-महुअरिपरिवुडस्स, जिण-सूर-तेयबुद्धस्स।
संघ-पउमस्स भद्दं, समण-गण-सहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥

तव-संजम मय-लंछण ! अकिरिय राहुमुह-दुद्धरिस ! निच्चं
जय संघचंद ! निम्मल,—सम्मत्तविसुद्ध जोण्हागा ! ॥ ९ ॥

परतित्थिय-गह-पह-नासगस्स, तवतेयदित्त लेसस्स ।
नाणुज्जोयस्स जए, भद्दं दमसंघ-सूरस्स ॥१०॥

भद्दं धिइवेला परिगयस्स, सज्झाय जोग मगरस्स ।
अक्खोहस्स भगवओ, संघसमुद्दस्स रुंदस्स ॥११॥

सम्मदंसण-वरवइर,—दढरूढगाढावगाढ-पेढस्स ।
धम्मवर-रयण-मंडिय—चामीयर—मेहलागस्स ॥१२॥

नियमूसिय कणय,सिलायलुज्जल जलंत-चित्त-कूडस्स ।
नंदणवण मणहर सुरभि, सीलगंधुद्धुमायस्स ॥१३॥

जीवदया-सुंदर-कंदरुद्दरिय-मुणिवर मइंदइन्नस्स ।
हेउ-सयधाउपगलंत, रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥१४॥

संवरवर जल पगलिय, उज्झरप्पविरायमाणहारस्स ।
सावग-जण पउर-रवंत, मोर नच्चंत कुहरस्स ॥१५॥

विणय-नय-पवर मुणिवर, फुरंत विज्जुज्जलंत सिहरस्स ।
विविहगुण कप्परुक्खग, फलभरकुसुमाउलवणस्स ॥१६॥

नाणवर-रयण-दिप्पंत, कंतवेरुलियविमलचूलस्स ।
वंदामि विणयपणओ, संघ-महामंदरगिरिस्स ॥१७॥

गुण-रयणुज्जलकडयं, सीलसुगंधि-तवमंडिउद्देसं ।
सुय-बारसंग-सिहरं, संघ-महामंदरं वंदे ॥१८॥

नगर[1] रह[2] चक्क[3] पउमे[4], चंदे[5] सूरे[6] समुद्द[7] मेरूंमि[8] ।
जो उवमिज्जइ सययं, तं संघ-गुणायरं वंदे ॥१९॥

तीर्थंकरनामानि—

उसभं[1] अजियं[2] संभव[3], मभिनंदण[4] सुमइ[5] सुप्पभ[6] सुपासं[7] ।
ससि[8] पुप्फदंत[9] सीयल[10], सिज्जंसं[11] वासुपुज्जं[12] च ॥२०॥
विमल[13] मणंतं[14] य धम्मं[15], संतिं[16] कुंथुं[17] अरं[18] च मल्लिं[19] च ।
मुनिसुव्वय[20]-नमि[21]-नेमिं[22], पासं[23] तह वद्धमाणं[24] च ॥२१॥

गणधरनामानि—

पढमित्थ इंदभूई[1], बीए पुण होइ अग्गिभूइ[2] त्ति ।
तइए य वाउभूई[3], तओ वियत्ते[4] सुहम्मे[5] य ॥२२॥
मंडिअ[6]-मोरियपुत्ते[7], अकंपिए[8] चेव अयलभाया[9] य ।
मेयज्जे[10] य पहासे[11], गणहरा हुंति वीरस्स ॥२३॥

जिनशासनस्तुतिः—

निव्वुइ-पह-सासणयं, जयइ सया सव्वभाव-देसणयं ।
कुसमय--मयनासणयं, जिणिंदवर वीरसासणयं ॥२४॥

स्थविरावली—

सुहम्मं[1] अग्गिवेसाणं, जंबूनामं[2] च कासवं ।
पभवं[3] कच्चायणं वंदे, वच्छं सिज्जंभवं[4] तहा ॥२५॥
जसभद्दं[5] तुंगियं वंदे, संभूयं[6] चेव माढरं ।
भद्दबाहुं[7] च पाइन्नं, थूलभद्दं[8] च गोयमं ॥२६॥
एलावच्चसगोत्तं, वंदामि महागिरिं[9] सुहत्थिं[10] च ।
तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स[11] सरिव्वयं वंदे ॥२७॥
हारियगुत्तं साइं[12] च, वंदिमो हारियं च सामज्जं[13] ।
वंदे कोसियगोत्तं, संडिल्लं[14] अज्जजीयधरं ॥२८॥
ति-समुद्द-खायकित्तिं, दीवसमुद्देसु गहिय-पेयालं ।
वंदे अज्जसमुद्दं[15], अक्खुभिय-समुद्द-गंभीरं ॥२९॥
भणगं करगं झरगं, पभावगं णाण-दंसणगुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं[16], सुयसागरपारगं धीरं ॥३०॥

*वंदामि अज्जधम्मं[17], तत्तो वंदे य भद्दगुत्तं[18] च।
तत्तो य अज्जवइरं[19], तव-नियम-गुणेहिं वइरसमं ॥३१॥
*वंदामि अज्जरक्खिय[20], खवणे रक्खिय-चारित्त सव्वस्से।
रयणकरंडगभूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥३२॥
नाणंमि दंसणंमि य, तव-विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं।
अज्जं नंदिल-खवणं[21], सिरसा वंदे पसन्नमणं ॥३३॥
वड्ढउ वायगवंशो, जसवंसो अज्जनागहत्थीणं[22]।
वागरण-करण-भंगिय, कम्मपयडीपहाणाणं ॥३४॥
जच्चंजणःधाउसमप्पहाणं, मुद्दिय-कुवलयनिहाणं।
वड्ढउ वायगवंसो, रेवइ—नक्खत्तनामाणं[23] ॥३५॥
"अयलपुरा" निक्खंते, कालियसुअ-आणुओगिए धीरे।
"बंभद्दीवग"-सीहे[24], वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥३६॥
जेसिं इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ढभरहंमि।
बहुनयरनिग्गयजसे, ते वंदे खंदिलायरिए[25] ॥३७॥
तत्तो हिमवंत-महंत—विक्कमे, धिइपरक्कममणंते।
सज्झायमणंतधरे, हिमवंते[26] वंदिमो सिरसा ॥३८॥
कालिय-सुय-अणुओगस्स-धारए, धारए य पुव्वाणं।
हिमवंतखमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए[27] ॥३९॥
मिउमद्दवसंपन्ने, आणुपुव्वि वायगत्तणं पत्ते।
ओहसुयसमायारे, नागज्जुणवायए वंदे ॥४०॥
गोविंदाणं[28] पि नमो, अणुओगे विउलधारणिंदाणं।
णिच्चं खंतिदयाणं, परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥४१॥

*गाथाद्वयं वृत्तौ नोक्तम्

तत्तो य भूयदिन्नं[29], निच्चं तव-संजमे अनिव्विण्णं ।
पंडियजणसम्माणं, वंदामो संजमविहिण्णुं ॥४२॥

वर-कणग-तविय-चंपग,-विमउल-वर-कमलगब्भसरिवन्ने ।
भवियजणहियय़दइए, दयागुणविसारए धीरे ॥४३॥

अड्ढभरहप्पहाणे, बहुविह-सज्झाय-सुमुणियपहाणे ।
अणुओगियवरवसभे, नाइलकुलवंसनंदिकरे ॥४४॥

भूयहियप्पगब्भे, वंदे ऽहं भूयदिन्नमायरिए ।
भवभयवुच्छेयकरे, सीसे नागज्जुणरिसीणं ॥४५॥

सुमुणिय निच्चानिच्चं, सुमुणिय सुत्तत्थधारयं वंदे ।
सब्भावुब्भावणया, तत्थं लोहिच्च[30] णामाणं ॥४६॥

अत्थमहत्थखाणिं, सुसमणवक्खाणकहण निव्वाणिं ।
पयईए महुरवाणिं, पयओ पणमामि *दूसगणिं[31] ॥४७॥

तव-नियम-सच्च-संजम,-विणयज्जव-खंति-मद्दवरयाणं ।
सीलगुणगद्दियाणं, अणुओगजुगप्पहाणाणं ॥४८॥

सुकुमालकोमलतले, तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।
पाए पावयणीणं, पडिच्छयसयएहिं पणिवइए ॥४९॥

जे अन्ने भगवंते, कालियसुय-आणुओगिए धीरे ।
ते पणमिऊण सिरसा, नाणस्स परूवणं वोच्छं ॥५०॥

मेरुतुङ्गस्थविरावली—

*सूरि बलिस्सह साई, सामज्जो संडिलो य जीयधरो ।
अज्जसमुद्दो मंगू, नंदिल्लो नागहत्थी य ॥
रेवई सिंहो खंदिल, हिमवं नागज्जुणा य गोविंदा ।
सिरिभूइदिन्न-लोहिच्च, दूसगणिणो य देवड्ढी ॥
*सुत्तत्थ-रयणभरिए, खम-दम-मद्दवगुणेहिं संपन्ने ।
देवड्ढिखमासमणे, कासवगुत्ते पणिवयामि ॥

श्रोतुश्चतुर्दशदृष्टान्तानि—

सेल-घण[1]-कुडग[2]-चालिणि[3],
परिपुण्णग[4]-हंस[5]-महिस[6]-मेसे[7] य ।
मसग[8]-जलूग[9]-विराली[10],
जाहग[11]-गो[12]-भेरि[13] आभीरी[14] ॥१॥

त्रिविधा परिषदा—

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा ।
जाणिया जहा—
खीरमिव जहा हंसा, जे घुट्टंति इह गुरुगुणसमिद्धा ।
दोसे अ विवज्जंती, तं जाणसु जाणियं परिसं ॥२॥
अजाणिया जहा—
जा होइ पगइ-महुरा, मियछावय-सीह-कुक्कुडयभूआ ।
रयणमिव असंठविआ, अजाणिया सा भवे परिसा ॥३॥
दुव्वियड्ढा जहा—
न य कत्थइ निम्माओ, न य पुच्छइ परिभवस्सदोसेणं ।
वत्थिव्व वायपुण्णो, फुट्टइ गामिल्लय विअड्ढो ॥४॥

पञ्चविधंज्ञानम्—

सुत्तं १ नाणं पंचविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ आभिनिबोहियनाणं,
२ सुयनाणं,
३ ओहिनाणं,
४ मणपज्जवनाणं,
५ केवलनाणं ।

सुत्तं २ तं समासओ दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ पच्चक्खं च, २ परोक्खं च ।

सुत्तं ३ से किं तं पच्चक्खं ?
पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ इंदिय-पच्चक्खं, २ नोइंदिय-पच्चक्खं ।

सुत्तं ४ से किं तं इंदिय-पच्चक्खं ?
इंदिय-पच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ सोइंदिय-पच्चक्खं,
२ चक्खिंदिय-पच्चक्खं,
३ घाणिंदिय-पच्चक्खं,
४ जिब्भिंदिय-पच्चक्खं,
५ फासिंदिय-पच्चक्खं,
से त्तं इंदिय-पच्चक्खं ।

सुत्तं ५ से किं तं नोइंदिय-पच्चक्खं ?
नो इंदिय-पच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ ओहिनाण-पच्चक्खं,
२ मणपज्जवनाण-पच्चक्खं,
३ केवलनाण-पच्चक्खं ।

अवधिज्ञानम्—

सुत्तं ६ से किं तं ओहिनाण-पच्चक्खं ?
ओहिनाण-पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ भव-पच्चइयं च, २ खाओवसमियं च।

सुत्तं ७ से किं तं भव-पच्चइयं ?
भव-पच्चइयं दुण्हं,
तं जहा—
१ देवाण य, २ नेरइयाण य।

सुत्तं ८ से किं तं खाओवसमियं ?
खाओवसमियं दुण्हं,
तं जहा—
१ मणुस्साण य,
२ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण य।
को हेऊ खाओवसामियं ?
खाओवसामियं-तयावरणिज्जाणं कम्माणं
उदिण्णाणं खएणं, अणुदिण्णाणं उवसमेणं
ओहिनाणं समुप्पज्जइ।

सुत्तं ९ अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स—
ओहि-नाणं समुप्पज्जइ,
तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ आणुगामियं, २ अणाणुगामियं,
३ वड्ढमाणयं, ४ हीयमाणयं,
५ पडिवाइयं, ६ अप्पडिवाइयं।

सुत्तं १० से किं तं आणुगामियं ओहिनाणं ?

आणुगामियं ओहिनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ अंतगयं च २ मज्झगयं च ।

से किं तं अंतगयं ?

अंतगयं तिविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ पुरओ अंतगयं,

२ मग्गओ अंतगयं,

३ पासओ अंतगयं ।

से किं तं पुरओ अंतगयं ?

(१) पुरओ अंतगयं—

से जहानामए केइ पुरिसे,

उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,

मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा,

पुरओ काउं पणुल्लेमाणे पणुल्लेमाणे गच्छेज्जा,

से त्तं पुरओ अंतगयं ।

से किं तं मग्गओ अंतगयं ?

(२) मग्गओ अंतगयं—

से जहानामए केइ पुरिसे,

उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,

मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा,

मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छेज्जा,

से त्तं मग्गओ अंतगयं ।

(३) से किं तं पासओ अंतगयं ?
पासओ अंतगयं—
से जहानामए केइ पुरिसे,
उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,
मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा,
पासओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छिज्जा,
से त्तं पासओ अंतगयं।
से त्तं अंतगयं।
से किं तं मज्झगयं ?
मज्झगयं—से जहानामए केइ पुरिसे,
उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,
मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा,
मत्थए काउं समुव्वहमाणे समुव्वहमाणे गच्छिज्जा,
से त्तं मज्झगयं।
अंतगयस्स य मज्झगयस्स य को पइविसेसो ?
पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ,
मग्गओ अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ,
पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चेव
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ,
मज्झगएणं ओहिनाणेणं सव्वओ समंता
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ,
से त्तं आणुगामियं ओहिनाणं ॥१०॥

सु. ११ से किं तं अणाणुगामियं ओहिनाणं ?

अणाणुगामियं ओहिनाणं—

से जहानामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं

तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं,

परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ,

अन्नत्थगए न जाणइ, न पासइ,

एवामेव अणाणुगामियं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जइ

तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा

संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा,

जोयणाइं जाणइ, पासइ,

अन्नत्थगए (न जाणइ) न पासइ।

से त्तं अणाणुगामियं ओहिनाणं।

सुत्तं १२ से किं तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ?

वड्ढमाणयं ओहिनाणं—पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु

वट्टमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स

विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण–चरित्तस्स

सव्वओ समंता ओही वड्ढइ।

गाहा— जावइआ तिसमया-हारगस्स, सुहुमस्स पणगजीवस्स।

ओगाहणा जहन्ना, ओहिखित्तं जहन्नं तु ॥ १ ॥

सव्व-बहु-अगणिजीवा, निरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु।

खित्तं सव्वदिसागं, परमोही खित्त निद्दिट्ठो ॥ २ ॥

अंगुलमावलियाणं, भागमसंखिज्ज दोसु संखिज्जा।

अंगुलमावलिअंतो, आवलिया अंगुलपुहुत्तं ॥ ३ ॥

हत्थंमि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउअंमि बोद्धव्वो।
जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पन्नवीसाओ ॥ ४ ॥
भरहंमि अद्धमासो, जंबुद्दिवंमि साहिओ मासो।
वासं च मणुयलोए, वासपुहुत्तं च रुयगंमि ॥ ५ ॥
संखिज्जंमि उ काले, दीवसमुद्दा वि हूंति संखिज्जा।
कालंमि असंखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥ ६ ॥
काले चउण्ह वुड्ढी, कालो भइअव्वु खित्तवुड्ढीए।
वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥ ७ ॥
सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं।
अंगुलसेढीमित्ते ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ॥ ८ ॥
से त्तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं।

सुत्तं १३ से किं तं हीयमाणयं ओहिनाणं ?
हीयमाणयं ओहिनाणं—अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं
वट्टमाणस्स वट्टमाण चरित्तस्स,
संकिलिस्समाणस्स, संकिलिस्समाण—चरित्तस्स
सव्वओ समंता ओही परिहायइ,
से त्तं हीयमाणयं ओहिनाणं।

सुत्तं १४ से किं तं पडिवाइ ओहिनाणं ?
पडिवाइ-ओहिनाणं जहन्नेणं अंगुलस्स
असंखिज्जइ भागं वा, संखिज्जइ भागं वा
वालग्गं वा, वालग्गपुहुत्तं वा,
लिक्खं वा, लिक्खपुहुत्तं वा,
जूयं वा, जूयपुहुत्तं वा,
जवं वा, जवपुहुत्तं वा,

अंगुलं वा, अंगुलपुहुत्तं वा,
पायं वा, पायपुहुत्तं वा,
विहत्थिं वा, विहत्थिपुहुत्तं वा,
रयणिं वा, रयणिपुहुत्तं वा,
कुच्छिं वा, कुच्छिपुहुत्तं वा,
धणुं वा, धणुपुहुत्तं वा,
गाउयं वा, गाउयपुहुत्तं वा,
जोयणं वा, जोयणपुहुत्तं वा,
जोयणसयं वा, जोयणसयपुहुत्तं वा,
जोयणसहस्सं वा, जोयणसहस्सपुहुत्तं वा,
जोयणलक्खं वा, जोयणलक्खपुहुत्तं वा,
जोयण–कोडिं वा, जोयण–कोडिपुहुत्तं वा,
जोयण–कोडाकोडिं वा, जोयण–कोडाकोडिपुहुत्तं वा,
जोयण–संखेज्जं वा, जोयण–संखेज्जपुहुत्तं वा,
जोयण–असंखेज्जं वा, जोयण–असंखेज्जपुहुत्तं वा,
उक्कोसेणं लोगं वा पासित्ताणं पडिवइज्जा,
से त्तं पडिवाइ ओहिनाणं।

सु. १५ से किं तं अपडिवाइ-ओहिनाणं ?

अपडिवाइ-ओहिनाणं—जेण अलोगस्स एगमवि-आगास-पएसं जाणइ, पासइ, तेण परं अपडिवाइ-ओहिनाणं।

से त्तं अपडिवाइ-ओहिनाणं।

१६ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—

दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।

तत्थ दव्वओ णं ओहिनाणी—

जहन्नेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ, पासइ,

उक्कोसेणं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ, पासइ ।

खित्तओ णं ओहिनाणी—

जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ,

उक्कोसेणं असंखिज्जाइं

अलोगे लोगप्पमाणमित्ताइं खंडाइं जाणइ, पासइ ।

कालओ णं ओहिनाणी—

जहन्नेणं आवलियाए असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ,

उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ

अईयमणागयं च कालं जाणइ, पासइ ।

भावओ णं ओहिनाणी—

जहन्नेणं अणंते भावे जाणइ, पासइ,

उक्कोसेण वि अणंते भावे जाणइ, पासइ,

सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ, पासइ ।

गाहा— ओही भवपच्चइओ, गुणपच्चइओ य वण्णिओ दुविहो ।
तस्स य बहू विगप्पा, दव्वे खित्ते अ काले य ॥९॥
नेरइय-देव-तित्थंकरा य, ओहिस्स ऽबाहिरा हुंति ।
पासंति सव्वओ खलु, सेसा देसेण पासंति ॥१०॥

से त्तं ओहिनाण-पच्चक्खं ।

सु. १७ से किं तं मणपज्जवनाणं ?

मणपज्जवनाणे णं भंते !

किं मणुस्साणं उप्पज्जइ, अमणुस्साणं ?

गोयमा ! मणुस्साणं, नो अमणुस्साणं ।

जइ मणुस्साणं,

किं सम्मुच्छिम–मणुस्साणं, गब्भवक्कंतिय–मणुस्साणं

गोयमा ! नो संमुच्छिम–मणुस्साणं,

गब्भवक्कंतिय–मणुस्साणं उप्पज्जइ ।

जइ गब्भवक्कंतिय मणुसाणं,

किं कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,

अकम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,

अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ?

गोयमा ! कम्मभूमिय ,, ,,

नो अकम्मभूमिय ,, ,,

नो अंतरदीवग ,, ,,

जइ कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,

किं संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,

असंखिज्ज ,, ,, ,, ,, ?

गोयमा ! संखिज्जवासाउय ,, ,, ,,

नो असंखिज्ज ,, ,, ,, ,,

जइ संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,

किं पज्जत्तग संखेज्जवासाउय ,, ,, ,,

अपज्जत्तग ,, ,, ,, ,, ?

गोयमा ! पज्जत्तग ,, ,, ,, ,,

नो अपज्जत्तग ,, ,, ,, ,,

जइ पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं

किं सम्मदिट्ठिपज्जत्तग ,, ,, ,, ,,

मिच्छदिट्ठि ,, ,, ,, ,, ,,

सम्मामिच्छदिट्ठि ,, ,, ,, ,, ,,

गोयमा !
सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,
नो मिच्छदिट्ठि ,, ,, ,, ,, ,,
नो सम्म-मिच्छदिट्ठि ,, ,, ,, ,,
जइ सम्मदिट्ठिपज्जत्तग ,, ,, ,, ,,
किं संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तग संखे० ,, ,,
असंजय ,, ,, ,, ,,
संजयासंजय ,, ,, ,, ,, ?
गोयमा ! संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तग संखे. ,, ,,
नो असंजय ,, ,, ,, ,,
नो संजयासंजय ,, ,, ,, ,, ।
जइ संजय-सम्मदिट्ठिपज्जत्तग ,, ,, ,,
किं पमत्तसंजय ,, ,, ,, ,,
अपमत्तसंजय ,, ,, ,, ,, ?
गोयमा ! अपमत्तसंजय ,, ,, ,, ,,
नो पमत्तसंजय ,, ,, ,, ,,
जइ अपमत्तसंजय ,, ,, ,, ,,
किं इड्ढिपत्त अपमत्त ,, ,, ,, ,,
अणिड्ढीपत्त ,, ,, ,, ,, ,,
गोयमा ! इड्ढीपत्त ,, ,, ,, ,, ,,
णो अणिड्ढीपत्त,, ,, ,, ,, ,,
मणपज्जवनाणं समुप्पज्जइ ।

सुत्तं १८ तं च दुविहं उप्पज्जइ,
तं जहा—
१ उज्जुमई य, २ विउलमई य ।

तं समासओ चउव्विहं पएणत्तं,
तं जहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।
तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते अणंतपएसिए खंधे जाणइ, पासइ,
तं चेव विउलमई अब्भहियतराए, विउलतराए—
विसुद्धतराए, वितिमिरतराए जाणइ, पासइ।
खित्तओ णं उज्जुमई य जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए—
उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डगपयरे,
उड्ढं-जाव-जोइसस्स उवरिमतले,
तिरियं-जाव-अंतोमणुस्सखित्ते
अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु
पन्नरससु कम्मभूमिसु, तिसाए अकम्मभूमिसु
छप्पन्नाए अंतरदीवगेसु
सन्निपंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ, पासइ,
तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं,
विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ, पासइ।
कालओ णं उज्जुमई—
जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं
अतीयमणागयं वा कालं जाणइ, पासइ,
तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं, विउलतरागं
विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ, पासइ।
भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ, पासइ,
सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ, पासइ,
तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं
विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ, पासइ।

गाहा— मणपज्जवनाणं पुण, जणमणपरिचिंतिअत्थपागडणं ।
माणुसखित्तनिबद्धं, गुणपच्चइअं चरित्तवओ ॥ १ ॥
से त्तं मणपज्जवनाणं ।

सु. १६ से किं तं केवलनाणं ?
केवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
(१) भवत्थकेवलनाणं च ।
(२) सिद्धकेवलनाणं च ।
से किं तं भवत्थकेवलनाणं ?
भवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
(१) सजोगिभवत्थकेवलनाणं च,
(२) अजोगिभवत्थकेवलनाणं च ।
से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ?
सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
(१) पढमसमय–सजोगि–भवत्थकेवलनाणं च
(२) अपढमसमय–सजोगि–भवत्थकेवलनाणं च
अहवा—
(१) चरमसमय–सजोगी–भवत्थकेवलनाणं च
(२) अचरमसमय–सजोगी–भवत्थकेवलनाणं च ।
से त्तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ।
से किं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं ?
अजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—

(१) पढमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च
(२) अपढमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च।
अहवा—
(१) चरमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च
(२) अचरमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च।
से त्तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं।
से त्तं भवत्थकेवलनाणं।

सुत्तं २० से किं तं सिद्धकेवलनाणं ?
सिद्धकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
(१) अणंतरसिद्धकेवलनाणं च
(२) परंपरसिद्धकेवलनाणं च।

सुत्तं २१ से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ?
अणंतरसिद्ध केवलनाणं पण्णरसविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ तित्थसिद्धा २ अतित्थसिद्धा
३ तित्थयरसिद्धा ४ अतित्थयरसिद्धा
५ सयं बुद्धसिद्धा ६ पत्तेयबुद्धसिद्धा
७ बुद्धबोहियसिद्धा
८ इत्थिलिंगसिद्धा ९ पुरिसलिंगसिद्धा
१० नपुंसकलिंगसिद्धा
११ सलिंगसिद्धा १२ अन्नलिंगसिद्धा
१३ गिहिलिंगसिद्धा
१४ एगसिद्धा १५ अणेगसिद्धा
से त्तं अणंतरसिद्ध-केवलनाणं ?

सुत्तं २२ से किं तं परंपरसिद्ध केवलनाणं ?
परंपरसिद्ध केवलनाणं अणेगविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा,
तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा जाव दससमयसिद्धा
संखिज्ज समयसिद्धा, असंखिज्ज समयसिद्धा,
अणंत समयसिद्धा,
से त्तं परंपरसिद्ध केवलनाणं।
से त्तं सिद्धकेवलनाणं।
तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—
दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।
तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ।
खित्तओ णं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ।
कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ।
भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ।

गाहा— अहसव्वदव्व परिणाम-भावविण्णत्ति कारणमणंतं।
सा स य म प्प डि वा ई, ए ग वि हं केवलनाणं ॥ १ ॥

सुत्तं २३ गाहा— केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुअं हवइ सेसं ॥२॥

से त्तं केवलनाणं।
से त्तं नोइंदियपच्चक्खं।
से त्तं पच्चक्खनाणं।

सुत्तं २४ से किं तं परुक्खनाणं ?

परुक्खनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

(१) आभिणिबोहियनाणपरुक्खं च

(२) सुयनाणपरुक्खं च ।

जत्थ आभिणिबोहियनाणं तत्थ सुयनाणं,

जत्थ सुयनाणं तत्थ आभिनिबोहियनाणं ।

दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं,

तहवि पुण इत्थ आयरिआ नाणत्तं पण्णविंति—

अभिणिबुज्झइ त्ति आभिणिबोहियनाणं,

सुणेइ त्ति सुयं,

मइपुव्वं जेण सुअं, न मई सुयपुव्विया ।

सुत्तं २५ अविसेसिया मई—मइनाणं च मइअण्णाणं च ।

विसेसिया—

सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाणं,

मिच्छादिट्ठिस्स मई मइ-अन्नाणं ।

अविसेसियं सुयं—सुयनाणं च सुयअन्नाणं च ।

विसेसिअं सुअं—

सम्मदिट्ठिस्स सुअं सुयनाणं,

मिच्छदिट्ठिस्स सुअं सुय-अन्नाणं ।

सुत्तं २६ से किं तं आभिणिबोहियनाणं ?

आभिणिबोहियनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ सुयनिस्सियं च, २ असुयनिस्सियं च ।

से किं तं असुयनिस्सियं ?

असुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—

गाहा—उप्पत्तिया[1] वेणइआ[2], कम्मया[3] परिणामिया[4] ।
बुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पंचमा नोवलब्भइ ॥ १ ॥

पुव्वमदिट्ठमस्सुय, मवेइयं तक्खणविसुद्धगहियत्था ।
अव्वाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥ १ ॥
भरहसिल[1] मिंढ[2] कुक्कुड[3] तिल[4] वालुय[5] हत्थि[6] अगड[7] वणसंडे[8] ।
पायस[9] अइआ[10] पत्ते[11], खाडहिला[12] पंचपियरो[13] य ॥ २ ॥
भरहसिल[1] पणिय[2] रुक्खे[3], खुड्डग[4] पड[5] सरड[6] काय[7] उच्चारे[8] ।
गय[9] घयण[10] गोल[11] खंभे[12], खुड्डग[13] मग्गि[14] त्थि[15] पइ[16] पुत्ते[17] ॥ ३ ॥
महुसित्थ[18] मुद्दि[19] अंके[20], नाणए[21] भिक्खु[22] चेडगनिहाणे[23] ।
सिक्खा[24] य अत्थसत्थे[25], इच्छा य महं[26] सयसहस्से[27] ॥ ४ ॥

भरनित्थरणसमत्था, तिव्वग्ग—सुत्तत्थ—गहिय—पेयाला ।
उभओ लोग फलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ १ ॥
निमित्ते[1] अत्थसत्थे[2] अ लेहे[3] गणिए[4] अ कूव[5] अस्से[6] य ।
गद्दभ[7] लक्खण[8] गंठी[9] अगए[10] रहिए[11] य गणिया[12] य ॥ २ ॥
सीआ साडी दीहं च तणं, अवसव्वयं च कुंचस्स[13] ।
निव्वोदए[14] य गोणे, घोडग-पडणं च रुक्खाओ[15] ॥ ३ ॥

उ व ओ ग-दि ट्ठ सा रा, कम्म—पसंग—परिघोलण—विसाला ।
साहुकार फलवई कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ १ ॥
हेरण्णिए[1] करिसए[2], कोलिअ[3] डोवे[4] य मुत्ति[5] घय[6] पवए[7] ।
तुन्नाए[8], वड्ढई[9] पूयइ[10] य घड[11] चित्तकारे[12] य ॥ २ ॥

अणुमाण–हेउ–दिट्ठंत–साहिया वय–विवाग–परिणामा ।
हियनिस्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥ १ ॥
अभए[1] सिट्ठि[2] कुमारे[3] देवी[4] उदिओदए हवइ राया[5] ।
साहू य नंदिसेणे[6] धणदत्ते[7] सावग[8] अमच्चे[9] ॥ २ ॥
खमए[10] अमच्चपुत्ते[11] चाणक्के[12] चेव थूलभद्दे[13] य ।
नासिक्कसुंदरिनंदे[14] वइरे[15] परिणामिआ बुद्धीए ॥ ३ ॥
चलणाहण[16] आमंडे[17] मणी[18] य सप्पे[19] य खग्गी[20] थूभिंदे[21] [22] ।
पारिणामिय–बुद्धीए एवमाई उदाहरणा ॥

से तं अस्सुयनिस्सियं ।
से किं तं सुयनिस्सियं ?
सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—
उग्गहे, ईहा, अवाओ, धारणा ।

सुत्तं २७ से किं तं उग्गहे ?
उग्गहे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य ।

सुत्तं २८ से किं तं वंजणुग्गहे ?
वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते
तं जहा—
(१) सोइंदिय वंजणुग्गहे (२) घाणिंदिय वंजणुग्गहे,
(३) जिब्भिंदिय वंजणुग्गहे (४) फासिंदिय वंजणुग्गहे ।
से त्तं वंजणुग्गहे ।

सुत्तं २९ से किं तं अत्थुग्गहे ?
अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ सोइंदिय-अत्थुग्गहे
२ चक्खिदिय-अत्थुग्गहे
३ घाणिंदिय-अत्थुग्गहे
४ जिब्भिदिय-अत्थुग्गहे
५ फासिंदिय-अत्थुग्गहे
६ नोइंदिय-अत्थुग्गहे ।

सुत्तं ३० तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति,
तं जहा—

१ ओगेण्हणया
२ उवधारणया
३ सवणया
४ अवलंबणया
५ मेहा ।
से त्तं उग्गहे ।

सुत्तं ३१ से किं तं ईहा ?
ईहा छव्विहा पण्णत्ता,
तं जहा—

(१) सोइंदिय-ईहा (२) चक्खिदिय-ईहा
(३) घाणिंदिय-ईहा (४) जिब्भिदिय-ईहा
(५) फासिंदिय-ईहा (६) नो इंदिय-ईहा ।

तीसे णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा, नाणावंजणा
पंच नामधिज्जा भवंति,
तं जहा—
१ आभोगणया २ मग्गणया
३ गवेसणया ४ चिंता ५ विमंसा ।
से त्तं ईहा ।

सुत्तं ३२ से किं तं अवाए ?
अवाए छव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
(१) सोइंदिय-अवाए (२) चक्खिंदिय-अवाए
(३) घाणिंदिय-अवाए (४) जिब्भिंदिय-अवाए
(५) फासिंदिय-अवाए (६) नो-इंदिय-अवाए,
तस्सणं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा
पंचनामधिज्जा भवंति,
तं जहा—
१ आउट्टणया २ पच्चाउट्टणया
३ अवाए ४ बुद्धी ५ विण्णाणे ।
से त्तं अवाए ।

सुत्तं ३३ से किं तं धारणा ?
धारणा छव्विहा पण्णत्ता;
तं जहा—
(१) सोइंदिय-धारणा (२) चक्खिंदिय-धारणा
(३) घाणिंदिय-धारणा (४) जिब्भिंदिय-धारणा
(५) फासिंदिय-धारणा (६) नो-इंदिय-धारणा ।
तीसेणं इमे एगट्ठिया, नाणाघोसा, नाणावंजणा
पंचनामधिज्जा भवंति,

तं जहा—
१ धरणा २ धारणा ३ ठवणा ४ पइट्ठा ५ कोट्ठे ।
से त्तं धारणा ।

सुत्तं ३४ उग्गहे इक्कसमइए,
अंतोमुहुत्तिया ईहा,
अंतोमुहुत्तिए अवाए,
धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

सुत्तं ३५ एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स
वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि
पडिबोहगदिट्ठंतेणं मल्लगदिट्ठंतेणं य ।
से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं ?
पडिबोहगदिट्ठंतेणं—से जहा नामए
केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहेज्जा
"अमुगा अमुगत्ति" ?
तत्थ चोयगे पन्नवगं एवं वयासी—
किं एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?
दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?
जाव— दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?
संखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?
असंखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?
एवं वयंतं चोयगं पण्णवए एवं वयासी—
"नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,
नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,

जाव--नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,
नो संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति।
से त्तं पडिवोहगदिट्ठंते णं।
से किं तं मल्लगदिट्ठंते णं?
मल्लगदिट्ठंते णं—से जहानामए
केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय
तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खेविज्जा से नट्ठे,
अण्णेवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे.
एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु
होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं रावेहिइ त्ति,
होही से उदगबिंदू, जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति,
होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं भरिहिति,
होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं पवाहेहिति।
एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं
अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ
ताहे 'हुं' ति करेइ, नो चेव णं जाणइ "के एस सद्दाइ"?
तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ "अमुगे एस सद्दाइ"।
तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं।
से जहानामए केइ पुरिसे
अव्वत्तं सद्दं सुणिज्जा, तेणं सद्दो त्ति उग्गहिए
नो चेव णं जाणइ, 'के वेस सद्दाइ?'
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एससद्दे।'
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ।

तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।
से जहानामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, तेणं रूवे त्ति उग्गहिए,
नो चेव णं जाणइ 'के वेस रूव त्ति'?
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस रूवे'।
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।
से जहानामए केइ पुरिसे
अवत्तं गंधं अग्घाइज्जा, तेणं गंधं त्ति उग्गहिए
नो चेव णं जाणइ 'के वेस गंधे त्ति'?
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ "अमुगे एस गंधे"।
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।
से जहानामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं रसं आसाइज्जा, तेणं रसो त्ति उग्गहिए,
नो चेव णं जाणइ "के वेस रसो त्ति"?
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ "अमुगे एस रसे"।
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं।
से जहानामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा, तेणं फासेत्ति उग्गहिए

नो चेव णं जाणइ "के वेस फासो त्ति ?"
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ "अमुगे एस फासे ।"
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

से जहानामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा, तेणं सुमिणो त्ति उग्गहिए,
नो चेव णं जाणइ 'के वेस सुमिणो त्ति ?'
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस सुमिणे ।'
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।

तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।
से त्तं मल्लगदिट्ठंते णं ।

सुत्तं ३६ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ दव्वओ, २ खित्तओ, ३ कालओ, ४ भावओ ।
तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं
सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ ।
खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं
खेत्तं जाणइ, न पासइ ।
कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं
कालं जाणइ, न पासइ ।
भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं
सव्वे भावे जाणइ, न पासइ ।

गाहा— उग्गह ईहाऽवाओ य, धारणा एव हुंति चत्तारि ।
आभिणिबोहियनाणस्स, भेयवत्थू समासेणं ॥ १ ॥
अत्थाणं उग्गहणंमि, उग्गहो तह वियालणे ईहा ।
ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं विंति ॥ २ ॥
उग्गह इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु ।
कालमसंखं संखं च, धारणा होइ नायव्वा ॥ ३ ॥
पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु ।
गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥ ४ ॥
भासासमसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ ।
वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ५ ॥
ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना, सव्वं आभिणिबोहियं ॥ ६ ॥
से त्तं आभिणिबोहियनाण—परोक्खं ।
से त्तं मइनाणं ।

श्रुतज्ञानम्—

सुत्तं ३७ से किं तं सुयनाणपरोक्खं ?
सुयनाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ अक्खरसुयं, २ अणक्खरसुयं,
३ सण्णिसुयं, ४ असण्णिसुयं,
५ सम्मसुयं, ६ मिच्छासुयं,
७ साइयं, ८ अणाइयं,
९ सपज्जवसियं, १० अपज्जवसियं,
११ गमियं, १२ अगमियं,
१३ अंगपविट्ठं, १४ अणंगपविट्ठं ।

से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं।

से त्तं सण्णिसुयं; से त्तं असण्णिसुयं।

सुत्तं ४० (५) से किं तं सम्मसुयं ?

सम्मसुयं—जं इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं
उप्पण्णनाणदंसणधरेहिं,
तेलुक्कनिरिक्खमहियपूइएहिं
तीय-पडुप्पण्ण-मणागय जाणएहिं
सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं
पणीयं दुवालसंगं गणिपडिगं,

तं जहा—

१ आयारो २ सूयगडो ३ ठाणं
४ समवाओ ५ विवाहपण्णत्ती ६ नायाधम्मकहाओ
७ उवसगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ
१० पण्हावागरणं ११ विवागसुयं १२ दिट्ठिवाओ।

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं—
चोद्दस पुव्विस्स सम्मसुयं,
अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुयं,
तेण परं भिण्णेसु भयणा।
से त्तं सम्मसुयं।

सुत्तं ४१ (६) से किं तं मिच्छासुयं ?

मिच्छासुयं—जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं—
सच्छंदबुद्धि-मइविगप्पियं,

तं जहा—

भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्खं,
कोडिल्लयं, सगडभद्दियाओ, खोडमुहं
कप्पासियं, नागसुहुमं, कणगसत्तरी,
वइसेसियं, बुद्धवयणं, तेरासियं,
काविलियं, लोगाययं, सट्ठितंतं,
माढरं, पुराणं, वागरणं,
भागवयं, पायंजलि, पुस्सदेवयं,
लेहं, गणियं, सउणरुयं, नाडयाइं,
अहवा बावत्तरि कलाओ,
चत्तारि य वेया संगोवंगा,

एयाइं मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छासुयं ।

एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुयं ।

अहवा मिच्छदिट्ठिस्स वि एयाइं चेव सम्मसुयं ।

कम्हा ?

सम्मत्तहेउत्तणओ
जम्हा ते मिच्छदिट्ठिआ
तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा
केइ सपक्खदिट्ठीओ चयंति ।
से त्तं मिच्छासुयं ।

सुत्तं ४२ (७–८) से किं तं साइयं सपज्जवसियं ?
(९–१०) अणाइयं अपज्जवसियं च ?
इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं
वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइयं सपज्जवसियं,
अव्वुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसियं ।
तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—

दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ

तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च—
साइयं सपज्जवसियं,

बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं।

खेत्तओ णं पंचभरहाइं, पंचएरवयाइं पडुच्च—
साइयं सपज्जवसियं,
पंचमहाविदेहाइं पडुच्च—
अणाइयं अपज्जवसियं।

कालओ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च—
साइयं सपज्जवसियं,

नो उस्सप्पिणिं नो ओसप्पिणिं च पडुच्च—
अणाइयं अपज्जवसियं।

भावओ णं जे जया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति

तया ते भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसियं,

खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं।

अहवा भवसिद्धियस्स सुयं साइयं सपज्जवसियं च,
अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अपज्जवसियं च।

सव्वागासपएसग्गं सव्वागासपएसेहिं
अणंतगुणियं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ,
सव्वजीवाणं पि य णं—
अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडिओ चिट्ठइ।
जइ पुण सो वि आवरिज्जा—
तेण जीवो अजीवत्तं पाविज्जा—

'सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइपभा चंदसूराणं'
से त्तं साइयं सपज्जवसियं।
से त्तं अणाइयं अपज्जवसियं।

सुत्तं ४३ (११) से किं तं गमियं?
गमियं दिट्ठिवाओ।
(१२) से किं तं अगमियं?
अगमियं कालियं सुयं।
से त्तं गमियं, से त्तं अगमियं।
अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
(१३-१४) १ अंगपविट्ठं २ अंगबाहिरं च।
से किं तं अंगबाहिरं?
अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ आवस्सयं च २ आवस्सयवइरित्तं च।
(१) से किं तं आवस्सयं?
आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ सामाइयं २ चउवीसत्थओ ३ वंदणयं
४ पडिक्कमणं ५ काउस्सग्गो ६ पच्चक्खाणं।
से त्तं आवस्सयं।
(२) से किं तं आवस्सयवइरित्तं?
आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—

१ कालियं च २ उक्कालियं च
से किं तं उक्कालियं ?
उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
दसवेआलियं[1], कप्पियाकप्पियं[2],
चुल्लकप्पसुयं[3] महाकप्पसुयं[4]
उववाइयं[5] रायपसेणियं[6] जीवाभिगमो[7],
पण्णवणा[8], महापण्णवणा[9], पमायप्पमायं[10],
नंदी[11], अणुओगदाराइं[12], देविंदत्थओ[13],
तंदुलवेयालियं[14], चंदाविज्जयं[15], सूरपण्णत्ती[16],
पोरिसिमंडलं[17], मंडलपवेसो[18], विज्जाचरणविणिच्छओ[19],
गणिविज्जा[20], झाणविभत्ती[21], मरणविभत्ती[22],
आयविसोही[23], वीयरागसुयं[24], संलेहणासुयं[25],
विहारकप्पो[26], चरणविही[27], आउरपच्चक्खाणं[28],
महापच्चक्खाणं[29], एवमाइ ।
से त्तं उक्कालियं ।

से किं तं कालियं ?
कालियं अणेगविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
उत्तरज्झयणाइं[1], दसाओ[2], कप्पो[3], ववहारो[4],
निसीहं[5], महानिसीहं[6], इसिभासियाइं[7],
जंबूदीवपन्नत्ती[8], दीवसागरपन्नत्ती[9], चंदपन्नत्ती[10],
खुड्डियाविमाणविभत्ती[11], महल्लियाविमाणविभत्ती[12],
अंगचूलिया[13] वग्गचूलिया[14], विवाहचूलिया[15],
अरुणोववाए[16], वरुणोववाए[17], गरुलोववाए[18],

धरणोववाए[19], वेसमणोववाए[20],
वेलंधरोववाए[21], देविंदोववाए[22],
उट्ठाणसुयं[23], समुट्ठाणसुयं[24],
नागपरियावणियाओ[25], निरयावलियाओ[26],
कप्पियाओ[27], कप्पवडंसियाओ[28],
पुप्फियाओ[29], पुप्फचूलियाओ[30], वण्हीदसाओ[31],

आसीविस-भावणाणं[1], दिट्ठिविस-भावणाणं[2],
सुमिण-भावणाणं[3], महासुमिण-भावणाणं[4]
तेयग्गी निसग्गाणं[5]

एवमाइयाइं चउरासीइ पइन्नगसहस्साइं—
भगवओ अरहओ उसहसाम्मिस्स आइतित्थयरस्स ।
तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं—मज्झिमगाणं जिणवराणं ।
चोद्दसपन्नइगसहस्साइं भगवओ वद्धमाणसामिस्स,

अहवा जस्स जत्तिया सीसा
उप्पत्तिआए, वेणइयाइ, कम्मयाए, पारिणामियाए
चउव्विहाए बुद्धीए उववेया,
तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं ।
पत्तेअबुद्धा वि तत्तिया चेव ।
से त्तं कालियं । से त्तं आवस्सयवइरित्तं ।
से त्तं अणंगपविट्ठं ।

सुत्तं ४४ से किं तं अंगपविट्ठं ?
अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं
तं जहा—

१ आयारो   २ सूयगडो   ३ ठाणं
४ समवाओ   ५ विवाहपन्नत्ती   ६ णायाधम्मकहाओ
७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ
१० पण्हावागरणाइं ११ विवागसुयं १२ दिट्ठवाओ ।

सुत्तं ४५ से किं तं आयारे ?
आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं
आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा–
भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया–
वित्तिओ आघविज्जंति ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्तं,
तं जहा—
१ नाणायारे २ दंसणायारे ३ चरित्तायारे
४ तवायारे ५ वीरियायारे ।
आयारे णं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ पडिवत्तीओ,
से अंगट्ठयाए पढमे अंगे,
दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा,
पंचासीई उद्देसणकाला, पंचासीई समुद्देसणकाला,
अट्ठारसपयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंतगमा, अणंतापज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,

सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से त्तं आयारे।

सुत्तं ४६ से किं तं सूयगडे ?
सूयगडे णं लोए सूइज्जइ,
अलोए सूइज्जइ,
लोयालोए सूइज्जइ,
जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति
ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमय-परसमए सूइज्जइ
सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स,
चउरासीइए अकिरियावाईणं
सत्तट्ठीए अण्णाणि—अवाईणं—
बत्तीसाए वेणइज—वाइणं—
तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं
वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ।
सूयगडेणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा,
संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ-निजुत्तीओ.
(संखिज्जाओ संगहणीओ) संखिज्जाओ पडिवत्तीओ।

से णं अंगट्ठयाए बिईए अंगे,
दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा,
तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला,
छत्तीसं पयसहस्साणि पयग्गेणं,

संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं सूयगडे ।

सुत्तं ४७ से किं तं ठाणे ?
ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति,
अजीवा ठाविज्जंति,
जीवाजीवा ठाविज्जंति,
ससमए ठाविज्जइ,
परसमए ठाविज्जइ,
ससमय-परसमए ठाविज्जइ,
लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ ।

ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा,
कुंडाइं, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ आघविज्जंति ।
ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए
दसट्ठाणग विवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ ।
ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा,
संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा; संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे,
एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा,

एगवीसं उद्देसणकाला, एगवीसं समुद्देसणकाला,
बावत्तरि पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंतापज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं ठाणे ।

सुत्तं ४८ से किं तं समवाए ?
समवाए णं जीवा समासिज्जंति,
अजीवा समासिज्जंति,
जीवाजीवा समासिज्जंति,
ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ,
ससमय-परसमए समासिज्जइ,
लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ,
लोयालोए समासिज्जइ ।
समावाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं
ठाणसय-विवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ ।
दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ ।
समवायस्सणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा,
संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे,
एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले,
एगे चोयाले सयसहस्से पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से त्तं समवाए।

सुत्तं ४६ से किं तं विवाहे ?
विवाहेणं जीवा विआहिज्जंति,
अजीवा विआहिज्जंति,
जीवाजीवा विआहिज्जंति,
ससमए विआहिज्जइ,
परसमए विआहिज्जइ,
ससमय-परसमए विआहिज्जइ,
लोए विआहिज्जइ, अलोए विआहिज्जइ,
लोयालोए विआहिज्जइ,
विवाहस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा,
संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ।

से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए,
दस उद्देसगसहस्साइं, दससमुद्देसगसहस्साइं,
छत्तीसं वागरण-सहस्साइं,
दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंतापज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से त्तं विवाहे।

सुत्तं ५० से किं तं नायाधम्मकहाओ ?
नायाधम्मकहासु णं
नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो,
धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं,
सुकुलपच्चाइयाओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ
य आघविज्जंति।
दस धम्मकहाणं वग्गा,
तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं,

एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं,
एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइय-
उवक्खाइयासयाइं,
एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ-
हवंति त्ति समक्खायं।
णायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा,
संखिज्जा वेढा, संखिज्जासिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ।
से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा
एगूणवीसं अज्झयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला,
एगूणवीसं समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से तं णायाधम्मकहाओ।

सुत्तं ५१ से किं तं उवासगदसाओ ?
उवासगदसासु णं समणोवासयाणं-
नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,

भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तओवहाणाइं,
सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववास-सपडिवज्जणया
पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, देवलोगममणाइं
सुकुलपच्चाइआओ, पुणबोहिलाभा,
अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।
उवासगदसाणं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ,
से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, पणवीसं अज्झयणा,
दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंतापज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं उवासगदसाओ ।

सुत्तं ५२ से किं तं अंतगडदसाओ ?
अंतगडदसासु णं अंतगडाणं—

नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ.
संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे,
एगे सुयक्खंधा, अट्ठवग्गा,
अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,

सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं अंतगडदसाओ ।

सुत्तं ५३ से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ?
अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं-

नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं वणसंडाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इह लोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमाओ,
उवसग्गा, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
अणुत्तरोववाइयत्ते उववत्ती, सुकुलपच्चायाइओ,
पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति।

अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा; संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ।

से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, तिन्निवग्गा,
तिन्नि उद्देसणकाला, तिन्नि समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंतापज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।

से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ।

सुत्तं ५४ से किं तं पण्हावागरणाइं ?
पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं,
अट्ठुत्तरं अपसिणसयं
अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं,
तं जहा—
अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं
अन्ने वि विचित्ता विज्जाइसया,
नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति।
पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ।
से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा,
पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से त्तं पण्हावागरणाइं।

सुत्तं ५५ से किं तं विवागसुयं ?
विवागसुए णं सुकडदुकडाणं कम्माणं—
फलविवागे आघविज्जइ।

तत्थ णं दस दुह-विवागा, दस सुह-विवागा ।
से किं तं दुह-विवागा ?
दुह-विवागेसु णं दुहविवागाणं–
नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं
रायाणो अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
निरयगमणाइं, संसारभव-पवंचा, दुहपरंपराओ,
दुक्कुलपच्चायाइओ, दुल्लहबोहियत्तं आघविज्जइ ।
से त्तं दुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ?
सुहविवागेसु णं सुह-विवागाणं
नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो,
धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
देवलोगगमणाइं, सुहपरंपराओ, सुकुलपच्चायाईओ,
पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।
विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे,
दो सुयक्खंधा वीसं अज्झयणा,
वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला,

संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं विवागसुयं ।

सुत्तं ५६ से किं तं दिट्ठिवाए ?
दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ परिकम्मे २ सुत्ताइं ३ पुव्वगए ४ अणुओगे-
५ चूलिया ।
से किं तं परिकम्मे ?
परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सिद्धसेणिया-परिकम्मे
२ मणुस्ससेणिया-परिकम्मे
३ पुट्ठसेणिया-परिकम्मे
४ ओगाढसेणिया-परिकम्मे
५ उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे
६ विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे
७ चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे ।

से किं तं सिद्धसेणिया परिकम्मे ?
सिद्धसेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ माउगापयाइं २ एगट्ठियपयाइं
३ अट्ठपयाइं ४ पाढो आगासपयाइं
५ केउभूयं ६ रासिबद्धं
७ एगगुणं ८ दुगुणं
९ तिगुणं १० केउभूयं
११ पडिग्गहो १२ संसार पडिग्गहो
१३ नंदावत्तं १४ सिद्धावत्तं।
से त्तं सिद्ध-सेणिया-परिकम्मे। (१)

से किं तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे ?
मणुस्स-सेणिया-परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ माउगापयाइं २ एगट्ठियपयाइं
३ अट्ठपयाइं ४ पाढो आगासपयाइं
५ केउभूयं ६ रासिबद्धं
७ एगगुणं ८ दुगुणं
९ तिगुणं १० केउभूयं
११ पडिग्गहो १२ संसार पडिग्गहो
१३ नंदावत्तं १४ मणुस्सावत्तं।
से त्तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे। (२)

से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ?
पुट्ठसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ पाढो अगासपयाइं २ केउभूयं
३ रासिबद्धं ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो
९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ पुट्ठावत्तं।

से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे। (३)

से किं तं ओगाढसेणिया परिकम्मे?
ओगाढसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते
तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं, २ केउभूयं,
३ रासिबद्धं, ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो
९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ ओगाढावत्तं।

से त्तं ओगाढसेणिया-परिकम्मे?

से किं तं उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे?
उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं
३ रासिबद्धं ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ उवसंपज्जणावत्तं ।
से त्तं उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे । (५)
से किं तं विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे ?
विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं
३ रासिबद्धं, ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो
९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ विप्पजहणावत्तं ।
से त्तं विप्पजहणसेणिया परिकम्मे । (६)
से किं तं चुयाचुयसेणिया परिकम्मे ?
चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं
३ रासिबद्धं ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो
९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ चुयाचुयवत्तं ।
से त्तं चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे ।(७)
छ-चउक्क नइयाइं, सत्त तेरासियाइं,
से त्तं परिकम्मे ।

से किं तं सुत्ताइं ?

सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं,

तं जहा—

१ उज्जुसुयं २ परिणयापरिणयं ३ बहुभागयं

४ विजयचरियं ५ अणंतरं ६ परंपरं

७ आसाणं ८ संजूहं ९ संभिण्णं

१० आहव्वायं ११ सोवत्थियावत्तं १२ नंदावत्तं

१३ बहुलं १४ पुट्ठापुट्ठं १५ वियावत्तं

१६ एवंभूयं १७ दुयावत्तं १८ वत्तमाणपयं

१९ समभिरूढं २० सव्वओभद्दं २१ पस्सासं

२२ दुप्पडिग्गहं ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिन्न-छेयनइयाणि

ससमयसुत्तपरिवाडीए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनइयाणि—

आजीवियसुत्तपरिवाडिए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि

तेरासियसुत्तपरिवाडीए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि

ससमयसुत्तपरिवाडीए ।

एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीइ सुत्ताइं भवंति त्ति मक्खायं ।

से त्तं सुत्ताइं ।

से किं तं पुव्वगए ?

पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ उप्पायपुव्वं २ अग्गाणीयं

३ वीरियं ४ अत्थिनत्थि-प्पवायं
५ नाण-प्पवायं ६ सच्च-प्पवायं
७ आय-प्पवायं ८ कम्म-प्पवायं
९ पच्चक्खाण-प्पवायं १० विज्जाणु-प्पवायं
११ अवंझं १२ पाणाऊ
१३ किरियाविसालं १४ लोकबिंदुसारं ।

१ उप्पायपुव्वस्स णं दसवत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता,
२ अग्गाणीयपुव्वस्स णं चोद्दसवत्थू दुवालसचूलियावत्थू पण्णत्ता,
३ वीरियपुव्वस्स णं अट्ठवत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता,
४ अत्थि-नत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू, दसचूलियावत्थू पण्णत्ता,
५ नाणप्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता,
६ सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता,
७ आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलसं वत्थू पण्णत्ता,
८ कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता,
९ पच्चक्खाणपुव्वस्स णं वीसं वत्थू पण्णत्ता,
१० विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स णं पन्नरस वत्थू पण्णत्ता,
११ अवंझपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता,
१२ पाणाऊपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता,
१३ किरियाविसालपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता,
१४ लोकबिंदुसारपुव्वस्स णं पणवीसं पण्णत्ता,

गाहा—

दस[1]-चोद्दस[2]-अट्ठ[3]-अट्ठारसेव[4]-बारस[5]-दुवे[6] य वत्थूणि ।
सोलस[7]-तीसा[8]-वीसा[9]-पन्नरस[10] अणुप्पवायंमि ॥१॥
बारस-इक्कारसमे,[11] बारसमे[12] तेरसेव वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे[13], चोद्दसमे[14] पणवीसाओ ॥२॥

चत्तारि-दुवालस-अट्ठ चेव, दस चेव चुल्लवत्थूणि ।
आइल्लाण-चउण्हं, सेसाणं चूलिया नत्थि ॥३॥
से त्तं पुव्वगए ।

से किं तं अणुओगे ?
अणुओगे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ मूलपढमाणुओगे, २ गंडियाणुओगे य ।
से किं तं मूलपढमाणुओगे ?
मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं—
पुव्वभवा, देवलोगगमणाइं, आउं, चवणाइं,
जम्मणाणि, अभिसेया, रायवरसिरीओ,
पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा,
केवलनाणुप्पयाओ, तित्थ पवत्तणाणि य,
सीसा, गणा, गणहरा, अज्जा, पवत्तिणीओ,
संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं,
जिण-मणपज्जव-ओहिनाणी,
सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई,
अणुत्तरगई य, उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो,
जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ,
जच्चिरं च कालं,
पाओवगया—जेहिं जत्तियाइं भत्ताइं
अणसणाए छेइत्ता अंतगडे,
मुणिवरुत्तमे तिमिरओघविप्पमुक्के,
मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते,
एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया ।
से त्तं मूलपढमाणुओगे ।

से किं तं गंडियाणुओगे ?

गंडियाणुओगे कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ,
चक्कवट्टिगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ,
गणधरगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ,
तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ,
उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडियाओ,
चित्तंतरगंडियाओ,
अमर-नर-तिरिय-निरय गइ-गमण-विविह-
परियट्टणाणुओगेसु एवमाइयाओ गंडियाओ
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति ।
से त्तं गंडियाणुओगे ।
से त्तं अणुओगे ।

से किं तं चूलियाओ ?

चूलियाओ—आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिआ,
सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं ।
से त्तं चूलियाओ ।

दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, चोद्दसपुव्वाइं,
संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू,
संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा,
संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,

संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-काड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से त्तं दिट्ठिवाए।

सुत्तं ५७ इच्चेइयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे
अणंता भावा, अणंता अभावा,
अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ,
अणंता कारणा, अणंता अकारणा,
अणंता जीवा, अणंता अजीवा,
अणंता भवसिद्धिआ, अणंता अभवसिद्धिआ,
अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता।

गाहा—भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव।
जीवाजीवाभविय,-मभविया सिद्धा असिद्धा य॥ १॥

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता
चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टिंसु,

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
पडुप्पण्णकाले परित्ताजीवा आणाए विराहित्ता
चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टंति,

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
अणागए काले अणंताजीवा आणाए विराहित्ता
चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टिस्संति,

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
तीए काले अणंताजीवा आणाए आराहित्ता
चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइंसु,
इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
पडुप्पण्णकाले परित्ताजीवा आणाए आराहित्ता
चाउरंतं संसारकंताइं वीईवयंति,
इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
अणागएकाले अणंत्ता जीवा आणाए आराहित्ता
चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइस्संति ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
न कयाइ नासी,
न कयाइ न भवइ,
न कयाइ न भविस्सइ,
भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे ।

से जहानामए पंच अत्थिकाया-
न कयाइ नासी,
न कयाइ नत्थि,
न कयाइ न भविस्सइ,
भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे,
एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं
न कयाइ नासी,
न कयाइ नत्थि,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुविंच, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे।
से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।
तत्थ दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते
सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ,
खित्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते
सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ,
कालओ णं सुयनाणी उवउत्ते
सव्वं कालं जाणइ पासइ,
भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते
सव्वं भावं जाणइ पासइ,

गाहा— अक्खर सन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च।
गमियं अंगपविट्ठं, सत्त वि एए सपडिवक्खा ॥ १ ॥
आगमसत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
बिंति सुयनाणलंभं, तं पुव्वविसारया धीरा ॥ २ ॥
सुस्सुसइ पडिपुच्छइ, सुणेइ गिण्हइ य ईहए यावि।
तत्तो अपोहए वा, धारेइ करेइ वा सम्मं ॥ ३ ॥
मूअं हुंकारं वा, बाढक्कारं पडिपुच्छ वीमंसा।
तत्तो पसंगपरायणं, च परिणिट्ठ सत्तमए ॥ ४ ॥
सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ५ ॥

से त्तं अंगपविट्ठं। से त्तं सुयनाणं।
से त्तं परोक्खनाणं। से त्तं नाणं।

॥ से त्तं नंदी ॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(४)

अणुओगदार-सुत्तं

[उक्कालियं]

॥ कालवेलवज्जं पढिज्जति ॥

नामकरणं–

अणुओगद्दाराइं, महापुरस्सेव तस्स चत्तारि ।
अणुओगित्ति तदत्थो, दाराइं तस्स उ मुहाइं ॥ १ ॥
अकयद्दारमनगरं, कयेगदारं पि दुक्खसंचारं ।
चउमूलद्दारं पुण, सप्पडिदारं सुहाहिगमं ॥ २ ॥
सामाइय-पुरमेवं, अकयद्दारं तहेगदारं वा ।
दुरहिगमं चउदारं, सप्पडिदारं सुहाहिगमं ॥ ३ ॥

अनु०—

उद्धरणं-

अंगेसु अण्णवो वुत्तो, दिट्ठिवायो सुदिट्ठिहि ।
तत्तोऽणुयोग-मुत्ताणं, णिम्मिया वरमालिया ॥ १ ॥

विसयणिद्देसो–

पुव्वं भेया उ नाणस्स, नाणोद्देसाइयं तओ ।
वुत्ता सरूव-भेया अ, सुत्तस्साऽऽवस्सगयस्स य ॥ १ ॥

सुयस्स खलु खंधस्स, तओ कया परूवणा ।
उवक्कमस्स तत्तो णं, आणुपुव्वी–विवेयणा ॥ २ ॥

एगादीण दसंताणं, तओ नाम-निरूवणे ।
नाणाविहाण भावाणं, वण्णनं तु जहक्कमं ॥ ३ ॥

पच्छा चउव्विहा वुत्ता, पमाणस्स परूवणा ।
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा ॥ ४ ॥

माणुम्माणभेयाणं, दव्वमाणे पकित्तणं ।
अंगुलस्स तहा पच्छा, तिण्णि भेया उ वण्णिया ॥ ५ ॥

सव्वेसिं किल जीवाणं, भणिओगाहणा तओ ।
पच्छा काले य जीवाणं, सव्वाणं वण्णिया ठिई ॥ ६ ॥

तत्तो दव्वस्स, पंचण्हं, सरीराणं तु कित्तणं ।
भावे पमाण–भेयाणं, पच्चक्खाईण वण्णनं ॥ ७ ॥

तत्तो दंसण-चारित्त,-नयाणं तु परूवणा ।
वुत्ता संखा, तओ भेया,-वत्तव्वआ अ वण्णिया ॥ ८ ॥

अत्थस्स-अहिगारस्स, समोयारस्स णं तओ ।
णिक्खेवाणुगमाणं तु, णिरूवणा णयस्स य ॥ ९ ॥

❀ णमोऽत्थु णं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ❀

अणुओगद्दार-सुत्तं

ज्ञानभेदाः—

सुत्तं १ नाणं पंचविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ आभिणिबोहियनाणं २ सुयनाणं
३ ओहिनाणं ४ मणपज्जवनाणं ५ केवलनाणं ।

सुत्तं २ तत्थ चत्तारि नाणाइं ठप्पाइं ठवणिज्जाइं,
णो उद्दिसिज्जंति[1],
णो समुद्दिसिज्जंति[2],
णो अणुण्णविज्जंति ।
सुयनाणस्स उद्देसो, समुद्देसो,
अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ ।

सुत्तं ३ प्र० जइ सुयणाणस्स उद्देसो, समुद्देसो,
अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ,
किं अंगपविट्ठस्स उद्देसो, समुद्देसो,
अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ ?

१ उद्दिसंति । २ समुद्दिसंति ।

किं अंगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो,
अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ ?
उ० अंगपविट्ठस्स वि उद्देसो ···*जाव··· पवत्तइ,
अणंगपविट्ठस्स वि उद्देसो ··*जाव·· पवत्तइ ।
इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च अणंगपविट्ठस्स[2] अणुओगो ।

सुत्तं ४ प्र० जइ [3]अणंगपविट्ठस्स अणुओगो,
किं कालिअस्स अणुओगे ?
उक्कालिअस्स अणुओगो ?
उ० कालियस्स वि अणुओगो,
उक्कालियस्स वि अणुओगो ।
इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च उक्कालियस्स अणुओगो ।

सुत्तं ५ प्र० जइ उक्कालिअस्स अणुओगो,
किं आवस्सगस्स अणुओगो ?
आवस्सग-वइरित्तस्स अणुओगो ?
उ० आवस्सगस्स वि अणुओगो
आवस्सगवइरित्तस्स वि अणुओगो
इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च आवस्सगस्स अणुओगो ।

सुत्तं ६ प्र० जइ आवस्सगस्स अणुओगो,
किं[1] णं अंगं ? अंगाइं ?
सुअखंधो ? सुअखंधा ?
अज्झयणं ? अज्झयणाइं ?
उद्देसो ? उद्देसा ?
उ० आवस्सयं[2] णं नो अंगं, नो अंगाइं
सुअखंधो, नो सुअखंधा,

---

१ अंगबाहिरस्स वि । २ अंगबाहिरस्स । ३ अंगबाहिरस्स ।
१ आवस्सयं किं । २ आवस्सयस्स । *दोनों जगह इसी सूत्र की पंक्ति १-२ के समान पाठ है ।

नो अज्झयणं, अज्झयणाइं,
नो उद्देसो, नो उद्देसा ।

सुत्तं ७ तम्हा आवस्सयं निक्खिविस्सामि,
सुअं निक्खिविस्सामि,
खंधं निक्खिविस्सामि,
अज्झयणं निक्खिविस्सामि,

गाहा— 'जत्थ य जं जाणेज्जा, निक्खेवं निक्खिवे निरवसेसं ।
जत्थ वि अ न जाणेज्जा, चउक्कगं निक्खिवे तत्थ ॥१॥

आवश्यक स्वरूपम्—

सुत्तं ८ प्र० से किं तं आवस्सयं ?
उ० आवस्सयं चउव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ नामावस्सयं, २ ठवणावस्सयं,
३ दव्वावस्सयं, ४ भावावस्सयं ।

सुत्तं ९ प्र० से किं तं नामावस्सयं ?
उ० नामावस्सयं—जस्स णं जीवस्स वा, अजीवस्स वा,
जीवाण वा, अजीवाण वा,
तदुभयस्स वा, तदुभयाण वा,
'आवस्सए' त्ति नामं कज्जइ,
से त्तं नामावस्सयं ।

सुत्तं १० प्र० से किं तं ठवणावस्सयं ?
उ० ठवणावस्सयं—जं णं कट्ठकम्मे वा, पोत्थकम्मे वा,
चित्तकम्मे वा, लेप्पकम्मे वा,
गंथिमे वा, वेढिमे वा,
पूरिमे वा, संघाइमे वा,

अक्खे वा, वराडए वा
एगो वा, अणेगो वा,
सब्भावठवणा वा, असब्भावठवणा वा
"आवस्सए" त्ति ठवणा ठविज्जइ,
से त्तं ठवणावस्सयं ।

सुत्तं ११ प्र० नाम-ठ्ठवणाणं को पइविसेसो ?
उ० णामं आवकहिअं,
ठवणा इत्तरिआ वा होज्जा, आवकहिआ वा ।

सुत्तं १२ प्र० से किं तं दव्वावस्सयं ?
उ० दव्वावस्सयं दुविहं पण्णत्ते,
तं जहा—
१ आगमओ अ, २ नो आगमओ अ ।

सुत्तं १३ प्र० से किं तं आगमओ दव्वावस्सयं ?
उ० दव्वावस्सयं–जस्स णं 'आवस्सए' त्ति
सिक्खितं, ठितं, जितं, मितं, परिजितं,
नामसमं, घोससमं,
अहीणक्खरं, अणच्चक्खरं, अव्वाइद्धक्खरं,
अक्खलिअं, अमिलिअं, अवच्चामेलियं,
पडिपुण्णं, पडिपुण्णघोसं,
कंठोट्ठविप्पमुक्कं, गुरुवायणोवगयं,
से णं तत्थ वायणाए, पुच्छणाए, परिअट्टणाए
धम्मकहाए, णो अणुप्पेहाए ।

कम्हा ?
'अणुवओगो दव्व' मिति कट्टु ।

नेगमस्स णं एगो अणुवउत्तो, आगमओ एगं दव्वावस्सयं,
दोण्णि अणुवउत्ता, आगमओ दोण्णि दव्वावस्सयाइं,
तिण्णि अणुवउत्ता, आगमओ तिण्णि दव्वावस्सयाइं,

एवं जावइआ अणुवउत्ता, आगमओ तावइआइं दव्वावस्सयाइं,
एवमेव ववहारस्स वि।

संगहस्स णं एगो वा अणेगो वा
अणुवउत्तो वा अणुवउत्ता वा
आगमओ दव्वावस्सयं दव्वावस्सयाणि वा
से एगे दव्वावसए।

उज्जुसुयस्स-एगो अणुवउत्तो
आगमओ एगं दव्वावस्सयं, पुहुत्तं नेच्छइ।
तिण्हं सद्दनयाणं जाणए अणुवउत्तं अवत्थु।

कम्हा ?
जइ जाणए, अणुवउत्तं न भवति,
जइ अणुवउत्तं जाणए न भवति,
तम्हा णत्थि आगमओ दव्वावस्सयं।
से त्तं आगमओ दव्वावस्सयं।

सुत्तं १५ प्र० से किं तं नो-आगमओ दव्वावस्सयं ?
उ० नो-आगमओ दव्वावस्सयं तिविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ जाणय-सरीर-दव्वावस्सयं,
२ भविअ-सरीर-दव्वावस्सयं,
३ जाणय सरीर-भविअ-सरीर वइरित्तं दव्वावस्सयं।

सुत्तं १६ प्र० से किं तं जाणयसरीरदव्वावस्सयं ?
उ० जाणयसरीरदव्वावस्सयं—
"आवस्सए" त्ति पयत्थाहिगारजाणयस्स
जं सरीरयं ववगय-चुय-चावित-चत्तदेहं, जीवविप्पजढं
सिज्जागयं वा, संथारगयं वा,
निसीहिआगयं वा, सिद्धसिलातलगयं वा
पासित्ता णं कोई भणेज्जा[1]—
'अहो !' णं इमेणं सरीरसमुस्सएणं
जिणदिट्ठेणं भावेणं "आवस्सए" त्ति पयं
आघवियं, पण्णविअं, परूविअं,
दंसिअं, निदंसिअं, उवदंसिअं।

प्र० जहा को दिट्ठंतो ?

उ० अयं महु-कुंभे आसी, अयं घय-कुंभे आसी।
से तं जाणय-सरीर-दव्वावसयं।

सुत्तं १७ प्र० से किं तं भविअ-सरीर-दव्वावस्सयं ?
उ० भविअ-सरीर-दव्वावस्सयं—
जे जीवे जोणिजम्मणनिक्खंते,
इमेणं चेव आत्तएणं सरीरसमुस्सएणं
जिणोवदिट्ठेणं भावेणं
'आवस्सए' त्ति पयं सेयकाले सिक्खिस्सइ न ताव सिक्खइ।

प्र० जहा को दिट्ठंतो ?

उ० अयं महु-कुंभे भविस्सइ, अयं घय-कुंभे भविस्सइ।
से त्तं भविअ-सरीर-दव्वावस्सयं

पा० १ वएज्जा।

सुत्तं १८ प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वावस्सयं ?

उ० जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ते दव्वावस्सए
तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ लोइयं, २ कुप्पावयणियं, ३ लोउत्तरिअं

सुत्तं १९ प्र० से किं तं लोइयं दव्वावस्सयं ?
उ० लोइयं दव्वावस्सयं—

जे इमे राईसर-तलवर-माडंबिअ-कोडुंबिअ-
इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-पभिइओ,
कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए सुविमलाए
फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलिअम्मि-अहापंडुरे पभाए,
रत्तासोगपगास-किंसुअ-सुअमुह-गुंजद्धरागसरिसे
कमलागर-नलिणि-संडबोहए उट्ठिअम्मि सूरे,
सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेअसा जलंते
मुहधोअण-दंतपक्खालण-तेल्ल-फणिह-सिद्धत्थ-
हरिआलिय-अद्दाग-धूव-पुप्फ-मल्ल-गंध-तंबोल-
वत्थाइआइं दव्वावस्सयाइं करेंति,

तओ पच्छा रायकुलं वा देवकुलं वा
आरामं वा, उज्जाणं वा
सभं वा पवं वा गच्छंति ।
से त्तं लोइयं दव्वावस्सयं ।

सुत्तं २० प्र० से किं तं कुप्पावयणियं दव्वावस्सयं ?
उ० कुप्पावयणिअं दव्वावस्सयं—जे इमे चरग-चीरिग-

चम्मखंडिअ-भिक्खोंड-पंडुरंग-गोअम-गोव्वतिअ-गिहिधम्म-धम्मचिंतग-अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढ-सावग-पभिइओ पासंडत्था कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए***जाव···तेअसा जलंते,

इंदस्स वा, खंदस्स वा,
रुद्दस्स वा, सिवस्स वा,
वेसमणस्स वा, देवस्स वा,
नागस्स वा, जक्खस्स वा,
भूअस्स वा, मुगुंदस्स वा,

अज्जए वा, दुग्गाए वा, कोट्टकिरियाए वा,
उवलेवण-संमज्जण-आवरिसण-धूव-पुप्फ-गंधमल्लाइआइं दव्वावस्सयाइं करेंति।
से त्तं कुप्पावयणियं दव्वावस्सयं।

सुत्तं २१ प्र० से किं तं लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं ?
उ० लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं—
जे इमे समणगुणमुक्कजोगी छक्कायनिरणुकंपा,
हया इव उद्दामा, गया इव निरंकुसा,
घट्ठा, मट्ठा, तुप्पोट्ठा, पंडुरपडपाउरणा,
जिणाणमणाणाए सच्छंदं विहरिऊण
उभओ कालं आवस्सयस्स उवट्ठंति,
से त्तं लोगुत्तरिअं दव्वावस्सयं।
से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वावस्सयं।
से त्तं नो-आगमओ दव्वावस्सयं।
से त्तं दव्वावस्सयं।

---

*सूत्र १९ से पूरा पाठ जानना।

सुत्तं २२ प्र० से किं तं भावावस्सयं ?

उ० भावावस्सयं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ आगमओ अ, २ नो आगमओ अ।

सुत्तं २३ प्र० से किं तं आगमओ भावावस्सयं ?

उ० आगमओ भावावस्सयं जाणए उवउत्ते।

से त्तं आगमओ भावावस्सयं।

सुत्तं २४ प्र० से किं तं नो आगमओ भावावस्सयं ?

उ० नो आगमओ भावावस्सयं तिविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ लोइयं २ कुप्पावयणियं ३ लोगुत्तरिअं

सुत्तं २५ प्र० से किं तं लोइयं भावावस्सयं ?

उ० लोइयं भावावस्सयं—पुव्वण्हे भारहं

अवरण्हे रामायणं,

से त्तं लोइयं भावावस्सयं।

सुत्तं २६ प्र० से किं तं कुप्पावयणियं भावावस्सयं ?

उ० कुप्पावयणियं भावावस्सयं—

जे इमे चरग-चीरिग *जाव पासंडत्था

इज्जंजलि-होम-जपोन्दुरुक्क—

-नमुक्कारमाइआइं भावावस्सयाइं करेंति।

से त्तं कुप्पावयणिअं भावावस्सयं।

*सूत्र २० से पूरा पाठ जानना।

सुत्तं २७ प्र० से किं तं लोगुत्तरिअं भावावस्सयं ?

उ० लोगुत्तरिअं भावावस्सयं–

जे णं इमे–समणे वा, समणी वा,

सावओ वा, साविआ वा,

तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेसे, तदज्झवसिए,

तत्तिव्वज्झवसाणे, तदट्ठोवउत्ते,*

तदप्पिअकरणे, तब्भावणाभाविए,

अणत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे

उभओ कालं आवस्सयं करेंति।

से त्तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं।

से त्तं नो-आगमतो भावावस्सयं।

से त्तं भावावस्सयं।

सुत्तं २८ तस्स णं इमे एगट्ठिआ

णाणाघोसा णाणावंजणा णामधेज्जा भवंति,

तं जहा—

गाहा— आवस्सयं[1] अवस्संकरणिज्जं[2], धुवनिग्गहो[3] विसोही[4] अ।

अज्झयणछक्कवग्गो[5], नाओ[6] आराहणा[7] मग्गो[8] ॥१॥

समणेणं सावएणाय, अवस्स कायव्वयं हवइ जम्हा।

अंतो अहोनिसस्स य, तम्हा 'आवस्सयं' नाम ॥ २ ॥

से त्तं आवस्सयं।

श्रुत-स्वरूपम्—

सुत्तं २९ प्र० से किं तं सुयं ?

उ० सुअं चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ नाम-सुअं २ ठवणा-सुअं ३ दव्व-सुअं ४ भाव-सुअं।

*उत्ते जिणवयण धम्माणुराग रत्तमणे।

सुत्तं ३० प्र० से किं तं नामसुअं ?

उ० नामसुअं–जस्स णं जीवस्स वा … ❊जाव ……

"सुए" त्ति नामं कज्जइ,

से त्तं नामसुअं।

सुत्तं ३१ प्र० से किं तं ठवणासुअं ?

उ० ठवणासुयं–

जं णं कट्ठकम्मे वा … ❊ जाव … ठवणा ठविज्जइ,

से त्तं ठवणासुअं।

प्र० नामठवणाणं को पइविसेसो ?

उ० नामं आवकहिअं

ठवणा इत्तरिआ वा होज्जा, आवकहिआ वा।

सुत्तं ३२ प्र० से किं तं दव्वसुअं ?

उ० दव्वसुअं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ आगमतो अ, २ नो आगमतो अ।

सुत्तं ३३ प्र० से किं तं आगमतो दव्वसुअं ?

उ० आगमतो दव्वसुअं–जस्स णं 'सुए' त्ति पयं

सिक्खियं ठियं जियं … ❊जाव … णो अणुप्पेहाए।

कम्हा ?

'अणुवओगो' दव्वमिति कट्टु।

नेगमस्स णं एगो अणुवउत्तो आगमओ एगं दव्वसुअं

… ❊जाव … तिण्हं सद्दनयाणं जाणए अणुवउत्ते अवत्थु

❊सूत्र ९ से पूरा पाठ जानना। ❊सूत्र १० से पूरा पाठ जानना।

❊सूत्र नं० १३ से पूरा पाठ जानना। ❊ सूत्र नं० १४ से पूरा पाठ जानना।

कम्हा ?

जइ जाणए अणुवउत्ते न भवइ।

जइ अणुवउत्ते जाणए न भवइ,

तम्हा णत्थि आगमओ दव्वसुअं।

से त्तं आगमओ दव्वसुअं।

सुत्तं ३४ प्र० से किं तं नो आगमओ दव्वसुअं ?

उ० नो आगमओ दव्वसुअं तिविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ जाणयसरीरदव्वसुअं २ भविअसरीरदव्वसुअं

३ जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वसुअं।

सुत्तं ३५ प्र० से किं तं जाणयसरीरदव्वसुअं ?

उ० जाणयसरीरदव्वसुअं—

"सुअ" त्ति पयत्थाहिगारजाणयस्स

जं सरीरयं ववगय-चुअ-चाविअ-चत्तदेहं

*जाव···पासित्ता णं कोई भणेज्जा—

अहो ! णं इमेणं सरीरसमुस्सएणं जिणदिट्ठेणं भावेणं

"सुअ" त्ति पयं आघवियं···*जाव···अयं घय-कुंभे आसी

से त्तं जाणयसरीरदव्वसुअं।

सुत्तं ३६ प्र० से किं तं भविअसरीरदव्वसुअं ?

उ० भविअसरीरदव्वसुअं—जे जीवे जोणि-जम्मण-निक्खंते

*जाव···जिणोवदिट्ठेणं भावेणं "सुअ" त्ति पयं

सेयकाले सिक्खिस्सइ···*जाव···अयं घयकुंभे भविस्सइ।

से त्तं भविअसरीरदव्वसुअं।

१*सूत्र नं० १६ से पूरा पाठ जानना। २*सूत्र नं० १७ के अनुसार पाठ जानना।

सुत्तं ३७ प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वसुअं ?
उ० जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वसुअं—
पत्तय-पोत्थयलिहिअं।
अहवा जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं
दव्वसुअं पंचविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ अंडयं २ बोंडयं ३ कीडयं ४ वालयं ५ वागयं।
प्र० से किं तं अंडयं ?
उ० अंडयं हंसगब्भादि।
प्र० से किं तं बोंडयं ?
उ० बोंडयं कप्पासमाइ।
प्र० से किं तं कीडयं ?
उ० कीडयं पंचविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ पट्टे २ मलए ३ अंसुए ४ चीणांसुए ५ किमिरागे।
प्र० से किं तं वालयं ?
उ० वालयं पंचविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ उण्णिए २ उट्टिए ३ मिअलोमिए ४ कोतवे ५ किट्टिसे।
प्र० से किं तं वागयं ?
उ० वागयं *सणमाइ।
से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वसुअं।
से त्तं नो आगमओ दव्वसुअं।
से त्तं दव्वसुअं।

* कहीं 'अलसिमाइ' (अतसी) सूत्रपाठ है।

सु०-३८ प्र० से किं तं भावसुअं ?
उ० भावसुअं दुविहं पएणत्तं,
तं जहा—
१ आगमओ य २ नो आगमओ य ।

सु०-३९ प्र० से किं तं आगमओ भावसुअं ?
उ० आगमओ भावसुअं जाणए उवउत्ते ।
से त्तं आगमओ भावसुअं ।

सु०-४० प्र० से किं तं नो आगमओ भावसुअं ?
उ० नो आगमओ भावसुअं दुविहं पएणत्तं,
तं जहा—
१ लोइअं २ लोगुत्तरिअं च ।

सु०-४१ प्र० से किं तं लोइअं नो आगमओ भावसुअं ?
उ० लोइयं नो आगमओ भावसुअं—
जं इमं अएणाणिएहिं मिच्छदिट्ठीहिं
सच्छंदबुद्धिमइविगप्पियं
तं जहा—
भारहं, रामायणं भीमासुरुक्कं,
कोडिल्लयं, घोडयमुहं सगडभद्दिआउ
कप्पासिअं, णागसुहुमं, कणगसत्तरी,
वेसियं, वइसेसियं, बुद्धसासणं,
काविलं, लोगायतं, सट्ठियंतं,
माढर-पुराण–वागरण–नाडगाइं,
अहवा वावत्तरिकलाओ, चत्तारि वेआ संगोवंगा ।
से त्तं लोइअं नो आगमओ भावसुअं ।

सु०-४२ प्र० से किं तं लोउत्तरिअं नो आगमओ भावसुअं ?

उ० लोउत्तरिअं नो आगमओ भावसुअं—

जं इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं,

उप्पण्ण-णाण-दंसणधरेहिं,

तीय-पच्चुपण्ण-मणागय-जाणएहिं,

सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं,

तिलुक्क-वहित-महितपूइएहिं

अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधरेहिं

पणीअं दुवालसंगं गणिपिडगं,

तं जहा—

१ आयारो २ सूयगडो ३ ठाणं

४ समवाओ ५ विवाहपण्णत्ती ६ णायाधम्मकहाओ,

७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ,

१० पण्हावागरणाइं ११ विवागसुअं १२ दिट्ठिवाओ य ।

से त्तं लोउत्तरियं नो आगमओ भावसुअं ।

से त्तं नो आगमओ भावसुअं ।

से त्तं भावसुअं ।

सु०-४३ तस्स णं इमे एगट्ठिआ, णाणाघोसा, णाणावंजणा नामधेज्जा भवंति,

तं जहा—

गाहा—सुअ-सुत्त-गंथ-सिद्धंत-सासणे आणवयण उवएसे ।

पन्नवण आगमे वि अ एगट्ठा पज्जवा सुत्ते ॥१॥

से त्तं सुअं ।

स्कंधस्वरूपम्—

सु०-४४ प्र० से किं तं खंधे ?

उ० खंधे चउव्विहे पएणत्ते,
तं जहा—
१ नामखंधे २ ठवणाखंधे ३ दव्वखंधे ४ भावखंधे।

सु०-४५ नामट्ठवणाओ *पुव्वभणिआणुक्कमेण भाणिअव्वाओ।

सु०-४६ प्र० से किं तं दव्वखंधे ?
उ० दव्वखंधे दुविहे पएणत्ते,
तं जहा—
१ आगमओ य २ नो आगमओ य।
प्र० से किं तं आगमओ दव्वखंधे ?
उ० आगमओ दव्व-खंधे—जस्स णं 'खंधे' त्ति पयं सिक्खियं··· *जाव··· सेत्तं भविअसरीर दव्वखंधे नवरं खंधाभिलावो
प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वखंधे ?
उ० जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वखंधे तिविहे पएणत्ते,
तं जहा—
१ सचित्तं २ अचित्तं ३ मीसए।

सु०-४७ प्र० से किं तं सचित्तं दव्वखंधे ?
उ० सचित्तं दव्व-खंधे अणेगविहे पएणत्ते,
तं जहा—
हय-खंधे गय-खंधे
किन्नर-खंधे किंपुरस-खंधे
महोरग-खंधे गंधव्व-खंधे
उसभखंधे।
से त्तं सचित्तं दव्वखंधे।

*सूत्र ६, १०, ११, के समान पाठ जानना
*सूत्र नं० १२ से १७ पर्यन्त के समान पाठ जानना।

सु०-४८ प्र० से किं तं अचित्ते दव्वखंधे ?

उ० अचित्ते दव्वखंधे अणेगविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

दुपसिए, तिपएसिए ···जाव··· दसपएसिए,

संखिज्ज पएसिए, असंखिज्ज पएसिए, अणंत पएसिए।

से त्तं अचित्ते दव्वखंधे।

सु०-४६ प्र० से किं तं मीसए दव्वखंधे ?

उ० मीसए दव्वखंधे अणेगविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

सेणाए अग्गिमे खंधे,

सेणाए मज्झिमे खंधे,

सेणाए पच्छिमे खंधे।

से त्तं मीसए दव्वखंधे।

सु०-५० अहवा जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते

दव्वखंधे तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ कसिणखंधे २ अकसिणखंधे ३ अणेगदव्विअखंधे।

सु० ५१ प्र० से किं तं कसिणखंधे ?

उ० कसिणखंधे—से चेव हयखंधे, गयखंधे

···*जाव··· उसभखंधे।

से त्तं कसिणखंधे।

सु० ५२ प्र० से किं तं अकसिणखंधे ?

उ० अकसिणखंधे—से चेव दुपएसियाइ खंधे

···*जाव··· अणंतपएसिए खंधे।

से त्तं अकसिणखंधे।

*सूत्र नं० ४७ से पूरा पाठ जानना। *सूत्र नं० ४८ से पूरा पाठ जानना।

सु०-५३ प्र० से किं तं अणेगदवियखंधे ?
उ० अणेगदवियखंधे—तस्स चेव देसे अवचिए
तस्स चेव देसे उवचिए।
से त्तं अणेगदविअखंधे।
से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वखंधे।
से त्तं नो आगमओ दव्वखंधे।
से त्तं दव्वखंधे।

सु०-५४ प्र० से किं तं भावखंधे ?
उ० भावखंधे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ आगमओ अ २ नो-आगमओ अ।

सु०-५५ प्र० से किं तं आगमओ भावखंधे ?
उ० आगमओ भावखंधे जाणए उवउत्ते।
से त्तं आगमओ भावखंधे।

सु०-५६ प्र० से किं तं नो आगमओ भावखंधे ?
उ० नो आगमओ भावखंधे—
एएसिं चेव सामाइयमाइयाणं छण्हं अज्झयणाणं
समुदय-समिइ-समागमेणं
आवस्सयसुअखंधे भावखंधे त्ति लब्भइ।
से त्तं नो आगमओ भावखंधे।
से त्तं भावखंधे।

सु०-५७ तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा
नामधेज्जा भवंति,
तं जहा—

गाहा—गण काए अ निकाए, खंधे वग्गे तहेव रासी अ।
पुंजे पिंडे निगरे, संघाए आउल समूहे ॥ १ ॥
से त्तं खंधे।

सु०-५८ आवस्सगस्स णं इमे अत्थाहियारा भवंति,
तं जहा—

गाहा—सावज्जजोग-विरई[1], उक्कित्तण[2] गुणवओ अ पडिवत्ती[3]।
खलिअस्स निंदणा[4], वणतिगिच्छ[5] गुणधारणा चेव[6] ॥१॥

सु०-५६ गाहा—आवस्सयस्स एसो, पिंडत्थो वण्णिओ समासेणं।
एत्तो एक्केक्कं, पुण अज्झयणं कित्तइस्सामि ॥१॥
तं जहा—

१ सामाइअं २ चउवीसत्थओ ३ वंदणयं
४ पडिक्कमणं ५ काउस्सग्गो ६ पच्चक्खाणं।
तत्थ पढमं अज्झयणं सामाइयं।
तस्स णं इमे चत्तारि अणुओगदारा भवंति,
तं जहा—
१ उवक्कमे २ निक्खेवे ३ अणुगमे ४ नए।

उपक्रमस्वरूपम्—

सु०-६० प्र० (१) से किं तं उवक्कमे ?
उ० उवक्कमे छव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ णामोवक्कमे २ ठवणोवक्कमे ३ दव्वोवक्कमे
४ खेत्तोवक्कमे ५ कालोवक्कमे ६ भावोवक्कमे।
णाम ठवणाओ गयाओ *।

*सूत्र नं० ६, १०, ११, के अनुसार पाठ जानना

प्र० से किं तं दव्वोवक्कमे ?

उ० दव्वोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ आगमओ य २ नो आगमओ य।

...*जाव... सेत्तं भविअसरीरदव्वोवक्कमे

प्र० से किं तं जाणगसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वोवक्कमे ?

उ० जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वोवक्कमे

तिविहे पण्णत्तं,

तं जहा—

१ सचित्तं २ अचित्तं ३ मीसए।

सु०-६१ प्र० से किं तं सच्चित्तं दव्वोवक्कमे ?

उ० सचित्तं दव्वोवक्कमे तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ दुपयाणं २ चउप्पयाणं ३ अपयाणं।

एक्किक्के पुण दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ परिक्कमे अ २ वत्थुविणासे अ।

सु०-६२ से किं तं दुपयाणं उवक्कमे ?

दुपयाणं—नडाणं, नट्टाणं, जल्लाणं, मल्लाणं,
मुट्ठिआणं, वेलंबगाणं, कहगाणं, पवगाणं,
लासगाणं, आइक्खगाणं, लंखाणं, मंखाणं,
तूणइल्लाणं, तुंबवीणियाणं, *कावोयाणं, मागहाणं।

से त्तं दुपयाणं उवक्कमे।

*सूत्र नं० १३ से १८ पर्यन्त के अनुसार पाठ जानना। *कावडिआणं।

सु०-६३ प्र० से किं तं चउप्पयाणं उवक्कमे ?

उ० चउप्पयाणं—आसाणं, हत्थीणं, इच्चाइ ।

से त्तं चउप्पयाणं उवक्कमे ।

सु०-६४ प्र० से किं तं अपयाणं उवक्कमे ?

उ० अपयाणं—अंबाणं अंबाडगाणं इच्चाइ ।

से त्तं अपओवक्कमे ।

से त्तं सचित्त-दव्वोवक्कमे ।

सु०-६५ प्र० से किं तं अचित्त-दव्वोवक्कमे ?

उ० अचित्त-दव्वोवक्कमे—

खंडाईणं, गुडाईणं, मच्छंडीणं ।

से त्तं अचित्त दव्वोवक्कमे ।

सु०-६६ प्र० से किं तं मीसए-दव्वोवक्कमे ?

उ० मीसए-दव्वोवक्कमे—

से चेव थासग-आयंसगाइ-मंडिए आसाइ ।

से त्तं मीसए दव्वोवक्कमे ।

से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्तं दव्वोवक्कमे ।

से त्तं नो आगमओ दव्वोवक्कमे ।

से त्तं दव्वोवक्कमे ।

सु०-६७ प्र० से किं तं खेत्तोवक्कमे ?

उ० खेत्तोवक्कमे—

जं णं हलकुलिआईहिं खेत्ताइं उवक्कमिज्जंति ।

से त्तं खेत्तोवक्कमे ।

सु०-६८ प्र० से किं तं कालोवक्कमे ?

उ० कालोवक्कमे—

जं णं नालिआईहिं कालस्सोवक्कमणं कीरइ।

से त्तं कालोवक्कमे।

सु० ६९ प्र० से किं तं भावोवक्कमे ?

उ० भावोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ आगमओ अ २ नो आगमओ अ।

तत्थ आगमओ जाणए उवउत्ते।

प्र० से किं तं नो आगमओ भावोवकमे ?

उ० नो आगमओ भावोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ पसत्थे अ २ अपसत्थे अ।

प्र० से किं तं अपसत्थे नो आगमओ भावोवक्कमे ?

अपसत्थे नो आगमओ भावोवक्कमे

डोडिणि-गणिआ-अमच्चाईणं।

से किं तं पसत्थे नो आगमओ भावोवकमे ?

पसत्थे गुरुमाईणं।

से त्तं नो-आगमओ भावोवकमे।

से त्तं भावोवक्कमे।

से त्तं उवक्कमे।

सु०-७० अहवा उवक्कमे छव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ आणुपुव्वी २ नामं ३ पमाणं ४ वत्तव्वया

५ अत्थाहिगारे ६ समोआरे।

सु०-७१　प्र० (१) से किं तं आणुपुव्वी ?
उ० आणुपुव्वी दसविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ नामाणुपुव्वी २ ठवणाणुपुव्वी
३ दव्वाणुपुव्वी ४ खेत्ताणुपुव्वी
५ कालाणुपुव्वी ६ उक्कित्तणाणुपुव्वी
७ गणणाणुपुव्वी ८ संठाणाणुपुव्वी
९ सामाआरी आणुपुव्वी १० भावाणुपुव्वी ।

सु०-७२　(१) नाम (२) ठवणाओ *गयाओ ।
प्र० (३) से किं तं दव्वाणुपुव्वी ?
उ० दव्वाणुपुव्वी दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ आगमओ अ २ नो-आगमओ अ ।
प्र० से किं तं आगमओ दव्वाणुपुव्वी ?
उ० आगमओ दव्वाणुपुव्वी—
जस्स णं 'आणुपुव्वि' त्ति पयं सिक्खियं,
ठियं, जियं, मियं, परिजियं *जाव नो अणुप्पेहाए ।
कम्हा ?
अणुवओगो दव्वमिति कट्टु ।
णेगमस्स णं एगो अणुवउत्तो आगमओ एगा दव्वाणुपुव्वी,
'''*जाव'''जाणए अणुवउत्ते अवत्थु—
कम्हा ?
जइ जाणए, अणुवउत्ते न भवइ ।

*सूत्र ९, १०, ११, के अनुसार पूरा पाठ जानना ।
*सूत्र नं० १३ से पूरा पाठ जानना । * सूत्र नं० १४ से पूरा पाठ जानना ।

जइ अणुवउत्ते जाणए न भवति,
तम्हा नत्थि आगमओ दव्वाणुपुव्वी।
से त्तं आगमओ दव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं नो-आगमओ दव्वाणुपुव्वी ?

उ० नो-आगमओ दव्वाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ जाणय-सरीर-दव्वाणुपुव्वी,
२ भविअ-सरीर-दव्वाणुपुव्वी,
३ जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता दव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-दव्वाणुपुव्वी ?

उ० 'आणुपुव्वि' पयत्थाहिगार जाणयस्स
जं सरीरयं ववगय-चुय-चाविय-चत्तदेहं—
सेसं जहा *दव्वावसए तहा भाणिअव्वं ···※जाव··
से त्तं जाणयसरीर दव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं भविअसरीर-दव्वाणुपुव्वी ?

उ० भविअ-सरीर-दव्वाणुपुव्वी—
जे जीवे जोणी-जम्मण-निक्खंते
सेसं जहा दव्वावस्सए ※जाव···
से त्तं भविअसरीर दव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता दव्वाणुपुव्वी ?

उ० जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता दव्वाणुपुव्वी
दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—

---

*सूत्र नं १६ की पंक्ति ४ से पंक्ति १३ तक का पाठ लेना।
※सूत्र नं १७ की पंक्ति ४ से ८ तक का पाठ लेना।

१ उवणिहिआ य २ अणोवणिहिआ य ।
तत्थ णं जा सा उवणिहिआ सा ठप्पा ।
तत्थ णं जा सा अणोवणिहिआ, सा दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ नेगम-ववहाराणं २ संगहस्स य ।

सु०-७३ प्र० (१) से किं तं नेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ-
दव्वाणुपुव्वी ?
उ० नेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी
पंचविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ अट्ठपयपरूवणया, २ भंगसमुक्कित्तणया
३ भंगोवदंसणया ४ समोआरे ५ अणुगमे ।

सु०-७४ प्र० (१) से किं तं नेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ?
उ० नेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया—
तिपएसिए ... जाव ... दसपएसिए आणुपुव्वी,
संखेज्जपएसिए आणुपुव्वी,
असंखिज्जपएसिए आणुपुव्वी,
अणंतपएसिए आणुपुव्वी,
परमाणुपोग्गले अणाणुपुव्वी,
दुपएसिए अवत्तव्वए,
तिपएसिआ आणुपुव्वीओ ... *जाव ...
अणंतपएसिआओ आणुपुव्वीओ,
परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वीओ

*इसी सूत्र की पंक्ति २ से पंक्ति ६ तक का पाठ जानना ।

दुपएसिआइं अवत्तव्वयाइं ।
से त्तं नेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणाया ।

सु०-७५ प्र० एआए णं नेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए किं पओअणं ?

उ० एआए णं नेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए भंगसमुक्कित्तणाया कज्जइ ।

सु०-७६ प्र० (२) से किं तं नेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणाया ?

उ० नेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणाया ।

१ अत्थि आणुपुव्वी,
२ अत्थि अणाणुपुव्वी,
३ अत्थि अवत्तव्वए,
(एक वचनान्तास्त्रयः)
४ अत्थि आणुपुव्वीओ,
५ अत्थि अणाणुपुव्वीओ,
६ अत्थि अवत्तव्वयाइं ।

(बहुवचनान्तास्त्रयः) एवमसंयोगतःषड्भंगाः भवन्ति-

७ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ, १
८ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वीओ अ, २
९ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वी अ, ३

संयोगपक्षे पदत्रयस्य त्रयोद्विकसंयोगाः—

१० अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अणाणुपुव्वीओ अ, ४
११ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ ५
१२ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ अवत्तव्वयाइं अ ६
१३ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वए अ ७
१४ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वयाइं अ ८

१५ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ ९

१६ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वयाइं अ १०

१७ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वए अ ११

१८ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीओ अ अवत्तव्वयाइं अ १२

एकवचनबहुवचनाभ्यां त्रिपु द्विकयोगेषु च द्वादशभङ्गाः—

१९ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ,
अणाणुपुव्वी अ, अवत्तव्वए अ, १

२० अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ,
अणाणुपुव्वी अ, अवत्तव्वयाइं अ, २

२१ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ,
अणाणुपुव्वीओ अ, अवत्तव्वए अ, ३

२२ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ,
अणाणुपुव्वीओ अ, अवत्तव्वयाइं अ, ४

२३ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ,
अणाणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ, ५

२४ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ,
अणाणुपुव्वी अ, अवत्तव्वयाइं अ, ६

२५ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ,
अणाणुपुव्वीओ अ, अव्वत्तव्वए अ, ७

२६ अहवा अत्थि आणुपुव्वीओ अ,
अणाणुपुव्वीओ अ, अवत्तव्वयाइं अ, ८

ति संजोगे एए अट्ठभंगा

एवं सव्वेऽवि छव्वीसं भंगा।

से त्तं नेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया।

सु०-७७ प्र० एआए णं नेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओअणं ?

उ० एआए णं नेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए भंगोवदंसणया कीरइ ।

सु०-७८ प्र० (३) से किं तं नेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया ?

उ० नेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया—

१ तिपएसिए आणुपुव्वी

२ परमाणुपोग्गले अणाणुपुव्वी

३ दुपएसिए अवत्तव्वए

४ अहवा तिपएसिया आणुपुव्वीओ

५ परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वीओ

६ दुपएसिआ अवत्तव्वयाइं ।

७-१० अहवा तिपएसिए अ परमाणुपुग्गले अ आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ, चउभंगो । ४

११-१४ अहवा तिपएसिए य, दुपएसिए अ आणुपुव्वी अ अवत्तव्वए य, चउभंगो । ८

१५-१८ अहवा परमाणुपोग्गले य, दुपएसिए य अणाणुपुव्वी य, अवत्तव्वए य, चउभंगो* । १२

१९ अहवा तिपएसिए अ परमाणुपोग्गले अ, दुपएसिए अ आणुपुव्वी अ,अणाणुपुव्वी अ,अवत्तव्वए अ । १

२० अहवा तिपएसिए अ,परमाणुपोग्गले अ,दुपएसिआ अ आणुपुव्वी अ, अणाणुपुव्वी अ, अवत्तव्वयाइं य । २

२१ अहवा तिपएसिए अ, परमाणुपुग्गला अ दुपएसिए य, आणुपुव्वी अ, अणाणुपुव्वीओ अ, अवत्तव्वए अ । ३

*प्रत्यन्तर में द्वादशभंग का उल्लेख मिलता है ।

२२ अहवा तिपएसिए अ, परमाणुपोग्गला य, दुपएसिआ य
आणुपुव्वी अ, अणाणुपुव्वीओ अ, अवत्तव्वयाइं य। ४
२३ अहवा तिपएसिआ अ, परमाणुपोग्गले अ, दुपएसिए य,
आणुपुव्वीओ अ, अणाणुपुव्वीओ य, अवत्तव्वए य। ५
२४ अहवा तिपएसिआ अ, परमाणुपोग्गले अ, दुपएसिआ य,
आणुपुव्वीओ अ, अणाणुपुव्वी अ, अवत्तव्वयाइं च। ६
२५ अहवा तिपएसिआ य, परमाणुपोग्गलाय दुपएसिए अ,
आणुपुव्वीओ अ, अणाणुपुव्वीओ अ, अवत्तव्वए अ। ७
२६ अहवा तिपएसिआ य, परमाणुपोग्गला अ, दुपएसिया अ
आणुपुव्वीओ अ, अणाणुपुव्वीओ य, अवत्तव्वयाइं य। ८
से त्तं नेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया।

सु०-७६ प्र० (४) से किं तं समोआरे ?
समोआरे (भणिज्जइ)।
नेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ?
किं आणुपुव्वी-दव्वेहिं समोअरंति ?
अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?
अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति ?
उ० नेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति,
नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति,
नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति।
प्र० नेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ?
किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?
अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?
अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति ?

उ० णो आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति,
अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति,
नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति।

प्र० णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वदव्वाइं कहिं समोअरंति ?
किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?
अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?
अवत्तव्वदव्वेहिं समोअरंति ?
उ० नो आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति,
नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति,
अवत्तव्वयदव्वेहिं समोणरंति।
से त्तं समोआरे।

सु०-८० (५) से किं तं अणुगमे ?
अणुगमे नव विहे पण्णत्ते
तं जहा—
गाहा— संतपयपरूवणया[1], दव्वपमाणं[2] च खित्त[3]फुसणा[4] य।
कालो[5] य अंतरं,[6] भाग[7] भावे[8] अप्पाबहूं[9] चेव ॥१॥

सु०-८१ प्र० (१) नेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि नत्थि ?
उ० णियमा अत्थि।
प्र० नेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि नत्थि ?
उ० णियमा अत्थि।
प्र० नेगम-ववहाराणं अवत्तव्वयदव्वाइं किं अत्थि नत्थि ?
उ० णियमा अत्थि।

सु०-८२ प्र० (२) नेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
किं संखिज्जाइं ? असंखिज्जाइं ? अणंताइं ?

उ० नो संखिज्जाइं, नो असंखिज्जाइं, अणंताइं ।
*एवं अणाणुपुव्वीदव्वाइं
अवत्तव्वगदव्वाइं य अणंताइं भाणिअव्वाइं ।

सु०-८३ प्र० (३) नेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स
किं संखिज्जइभागे होज्जा ?
असंखिज्जइभागे होज्जा ?
संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?
असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?
सव्वलोए होज्जा ?
उ० एगं दव्वं पडुच्च
संखिज्जइभागे वा होज्जा,
असंखिज्जइभागे वा होज्जा,
संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
असंखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
सव्वलोए वा होज्जा ।
णाणादव्वाइं पडुच्च
नियमा सव्वलोए होज्जा ।
प्र० नेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं
किं लोअस्स संखिज्जइभागे होज्जा ?
*...जाव...सव्वलोए वा होज्जा ?
उ० एगं दव्वं पडुच्च
नो संखिज्जइभागे होज्जा,
असंखिज्जइभागे होज्जा,

*इसी सूत्र की पंक्ति १ से पंक्ति ३ तक का पाठ जानना
*इसी सूत्र की पंक्ति २ से पंक्ति ६ तक के समान पाठ जानना

नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा
नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा
नो सव्वलोए होज्जा ।
णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा ।
एवं अवत्तव्वगदव्वाइं भाणिअव्वाइं ।

सु०-८४ प्र० (४) नेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स
किं संखेज्जइभागं फुसंति ?
असंखेज्जइभागं फुसंति ?
संखेज्जे भागे फुसंति ?
असंखेज्जे भागे फुसंति ?
सव्वलोगं फुसंति ?
उ० एगं दव्वं पडुच्च लोगस्स
संखेज्जइभागं वा फुसंति,
...*जाव...
सव्वलोगं वा फुसंति ।
णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोगं फुसंति
प्र० णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स
किं संखेज्जइभागं फुसंति ?
...*जाव...
सव्वलोगं फुसंति ?
उ० एगं दव्वं पडुच्च
नो संखिज्जइभागं फुसंति,
असंखिज्जइभागं फुसंति,

*सूत्र ८२ के समान पाठ जानना ।
*इसी सूत्र के पहले प्रश्न का पूरा पाठ है ।

नो संखिज्जे भागे फुसंति,
नो असंखिज्जे भागे फुसंति,
नो सव्वलोअं फुसंति ।
णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोअं फुसंति ।
एवं अवत्तव्वगदव्वाइं भाणिअव्वाइं ।

सु०-८५ प्र० (५) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
कालओ केवच्चिरं होइ ?
उ० एगं दव्वं पडुच्च
जहण्णेणं एगं समयं,
उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।
णाणादव्वाइं पडुच्च णियमा सव्वद्धा ।
अणाणुपुव्वीदव्वाइं अवत्तव्वमदव्वाइं च एवं चेव भाणिअव्वाइं ।

सु०-८६ प्र० (६) नेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अंतरं
कालओ केवच्चिरं होइ ?
उ० एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं,
उक्कोसेणं अणंतकालं ।
णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।
प्र० णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं अंतरं
कालओ केवच्चिरं होइ ?
उ० एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं,
उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।
णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।
प्र० णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाणं अंतरं
कालओ केवच्चिरं होइ ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं
उक्कोसेणं अणंतकालं ।
णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।

सु०-८७ प्र० (७) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
सेसदव्वाणं कइभागे होज्ञा ?
किं संखिज्जइभागे होज्ञा ?
असंखिज्जइभागे होज्जा ?
संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?
असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

उ० नो संखिज्जइभागे होज्ञा,
नो असंखिज्जइभागे होज्जा,
नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा,
नियमा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ।

प्र० णेगमववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं
सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ?
किं संखेज्जइभागे होज्जा ?
असंखिज्जइभागे होज्जा ?
संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?
असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

उ० नो संखेज्जइभागे होज्जा,
असंखेज्जइभागे होज्जा,
नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा,
नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा,
एवं अवत्तव्वगदव्वाणि वि भाणियव्वाणि ।

सु०-८८ प्र० (८) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
कयरंमि भावे होज्जा ?
किं उदइए भावे होज्जा ?
उवसमिए भावे होज्जा ?
खइए भावे होज्जा ?
खओवसमीए भावे होज्जा ?
पारिणामिए भावे होज्जा ?
सन्निवाइए भावे होज्जा ?
उ० णियमा साइपारिणामिए भावे होज्जा ।
अणाणुपुव्वीदव्वाणि अवत्तव्वगदव्वाणि अ
एवं चेव भाणिअव्वाणि ।

सु०-८९ प्र० (९) एएसिं भंते !
णेगम-ववहाराणं
आणुपुव्वीदव्वाणं
अणाणुपुव्वीदव्वाणं
अवत्तव्वगदव्वाणं य
दव्वट्ठयाए, पएसट्ठयाए, दव्वट्ठपएसट्ठयाए
कयरे कयरेहिंतो
अप्पा वा बहुया वा,
तुल्ला वा विसेसाहिया ?
उ० गोयमा ! सव्वत्थोवाइं णेगम ववहाराणं
अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए,
अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए विसेसाहिआइं,
आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं ।
पएसट्ठयाए णेगम-ववहाराणं सव्वत्थोवाइं ।

अणाणुपुव्वीदव्वाइं, पएसट्ठयाए,
अव्वत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहिआइं ।
आणुपुव्वीदव्वाइं पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं ।
दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं
णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए,
अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए अपसट्ठयाए–
विसेसाहिआइं ।
अवत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहिआइं ।
आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं ।
ताइं चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणाइं ।
से त्तं अणुगमे ।
से त्तं नेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी ।

सु०-९० प्र० (२) से किं तं संगहस्स अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी ?
उ० संगहस्स अणोवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी
पंचविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ अट्ठपयपरूवणाया २ भंगसमुक्कित्तणाया
३ भंगोवदंसणाया ४ समोआरे ५ अणुगमे ।

सु०-९१ प्र० (१) से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणाया ?
उ० संगहस्स अट्ठपयपरूवणाया–
तिपएसिए आणुपुव्वी, चउप्पएसिए आणुपुव्वी,
···जाव···दसपएसिए आणुपुव्वी,
संखेज्जपएसिए आणुपुव्वी,
असंखिज्जपएसिए आणुपुव्वी,
अणंतपएसिए आणुपुव्वी,
परमाणुपोग्गले अणाणुपुव्वी,

दुपएसिए अवत्तव्वए,
से त्तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया।

सु०-९२ प्र० एआए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए किं पओअणं ?
उ० एआए णं नेगम-ववहाराणं अट्ठपयवरूवणयाए
भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ।
प्र० (२) से किं तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ?
उ० संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया।
१ अत्थि आणुपुव्वी, २ अत्थि अणाणुपुव्वी,
३ अत्थि अवत्तव्वए,
४ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ, अणाणुपुव्वी अ,
५ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ, अवत्तव्वए अ,
६ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वी अ, अवत्तव्वए अ,
७ अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ,
अणाणुपुव्वी अ, अवत्तव्वए अ।
एवं सत्तभंगा
से त्तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया।
प्र० एआए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओअणं
उ० एआए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए
भंगोवदंसणया कीरइ।

सु०-९३ प्र० (३) से किं तं संगहस्स भंगोवदंसणया ?
उ० संगहस्स भंगोवदंसणया—
१ तिपएसिया आणुपुव्वी
२ परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वी
३ दुपएसिया अवत्तव्वए
४ अहवा तिपएसिया य परमाणुपुग्गला य
आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ,

५ अहवा तिपएसिया य, दुपएसिया य
आणुपुव्वी अ अवत्तव्वए अ,
६ अहवा परमाणुपोग्गला य, दुपएसिया य
अणाणुपुव्वी अ, अवत्तव्वए अ,
७ अहवा तिपएसिया य परमाणुपोग्गला य, दुपएसिया य
आणुपुव्वी य, अणाणुपुव्वी य, अवत्तव्वए य।
से त्तं संगहस्स भंगोवदंसणया।

सु०-९४ प्र० (४) से किं तं संगहस्स समोआरे ?
संगहस्स समोआरे (भणिज्जइ)।
संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ?
किं आणुपुव्वी-दव्वेहिं समोअरंति ?
अणाणुपुव्वी-दव्वेहिं समोअरंति ?
अवत्तव्वय-दव्वेहिं समोअरंति ?
उ० संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति,
नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति,
नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति।
*एव दोन्नि वि सट्ठाणे सट्ठाणे समोयरंति।
से त्तं समोयारे।

सु०-९५ (५) से किं तं अणुगमे ?
अणुगमे अट्ठ विहे पण्णत्ते ?
तं जहा—
गाहा— [1]संतपयपरूवणया, [2]दव्वपमाणं च [3]खित्त [4]फुसणा य।
[5]कालो य [6]अंतरं, [7]भाग [8]भावे अप्पाबहुं नत्थि ॥१॥

*रेखाङ्कित आणुपुव्वीदव्वाइं की जगह 'अणाणुपुव्वीदव्वाइं' और अवत्तव्वगदव्वाइं लगाकर उपर का प्रश्नोत्तर दो बार कहें।

प्र० (१) संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि नत्थि ?

उ० णियमा अत्थि।

*एवं दोन्नि वि।

प्र० (२) संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं

किं संखिज्जाइं ? असंखिज्जाइं ? अणंताइं ?

उ० नो संखिज्जाइं, नो असंखिज्जाइं, नो अणंताइं।

नियमा एगोरासी।

*एवं दोन्नि वि।

प्र० (३) संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स कइभागे होज्जा ?

किं संखिज्जइभागे होज्जा ?

असंखिज्जइभागे होज्जा ?

संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

सव्वलोए होज्जा ?

उ० नो संखिज्जइभागे होज्जा,

नो असंखिज्जइभागे होज्जा,

नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा

नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा

नियमा सव्वलोए होज्जा।

*एवं दोन्नि वि।

प्र० (४) संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स

किं संखेज्जइभागं फुसंति ?

२ * रेखाङ्कित आणुपुव्वीदव्वाइं की जगह 'अणाणुपुव्वीदव्वाइं' और 'अवत्तव्वगदव्वाइं' लगाकर उपर का प्रश्नोत्तर दो वार कहें।

असंखेज्जइभागं फुसंति ?
संखेज्जे भागे फुसंति ?
असंखेज्जे भागे फुसंति ?
सव्वलोगं फुसंति ?
उ० नो संखेज्जइभागं फुसंति,
···*जाव···णियमा सव्वलोगं फुसंति ।
*एव दोन्नि वि ।
प्र० (५) संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं
कालओ केवच्चिरं होंति ?
उ० सव्वद्धा ।
*एवं दोन्नि वि ।
प्र० (६) संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाणं
कालओ केवच्चिरं अंतरं होंति ?
उ० णत्थि अंतरं ।
*एवं दोन्नि वि ।
प्र० (७) संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं
सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ?
किं संखिज्जइभागे होज्जा ?
असंखिज्जइभागे होज्जा ?
संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?
असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?
उ० नो संखिज्जइभागे होज्जा,
नो असंखिज्जइभागे होज्जा,

*इसी सूत्र की पंक्ति १ से पंक्ति ३ तक का पाठ जानना ।
२ * रेखाङ्कित आणुपुव्वीदव्वाइं(णं) की जगह 'अणाणुपुव्वीदव्वाइं'(णं) और अवत्तव्वगदव्वाइं(णं) लगाकर उपर का प्रश्नोत्तर दो वार कहें ।

नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा,
नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा
नियमा तिभागे होज्जा ।

*एवं दोन्नि वि ।

प्र० (८) संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कयरम्मि भावे होज्जा ?

उ० नियमा साइपरिणामिए भावे होज्जा
*एवं दोन्नि वि ।
अप्पाबहूं नत्थि ।
से त्तं अणुगमे ।
से त्तं संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ।
से त्तं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ।

सु०-९६ प्र० से किं तं उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ?

उ० उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी अ ।

सु०-९७ प्र० (१) से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—१ धम्मत्थिकाए २ अधम्मत्थिकाए
३ आगासत्थिकाए ४ जीवत्थिकाए
५ पोग्गलत्थिकाए ६ अद्धासमए ।
से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० (२) से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

२ * रेखाङ्कित आणुपुव्वीदव्वाइं की जगह 'अणाणुपुव्वीदव्वाइं' और 'अवत्तव्वगदव्वाइं' लगाकर उपर का प्रश्नोत्तर दो वार कहें ।

उ० पच्छाणुपुव्वी—६ अद्धासमए ५ पोग्गलत्थिकाए
४ जीवत्थिकाए ३ आगासत्थिकाए
२ अधम्मत्थिकाए १ धम्मत्थिकाए

से त्तं पच्छाणुपुव्वी।

प्र० (३) से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एयाए चेव एगाइए एगुत्तरिआए
छ गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दूरूवूणो।
से त्तं अणाणुपुव्वी।

सु०-९८ अहवा उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—
१ परमाणुपोग्गले
२ दुपएसिए
३ तिपएसिए
...जाव...दसपएसिए
संखिज्जपएसिए
असंखिज्जपएसिए
अणंतपएसिए
से त्तं पुव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—

अणंतपएसिए ...*जाव परमाणुपोग्गले ।
से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।
प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?
उ० अणाणुपुव्वी–एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए
अणंत गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दूरूवूणो ।
से त्तं अणाणुपुव्वी ।
से त्तं उवणिहिआ दव्वाणुपुव्वी ।
*से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीर-वइरित्ता दव्वाणुपुव्वी ।
से त्तं नो आगमओ दव्वाणुपुव्वी ।
से त्तं दव्वाणुपुव्वी ।

....

सु०-९९ प्र० से किं तं खेत्ताणुपुव्वी ?
उ० खेत्ताणुपुव्वी दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
उवणिहिआ य अणोवणिहिआ य ।

सु०-१०० तत्थ णं जा सा उवणिहिआ सा ठप्पा ।
तत्थ णं जा सा अणोवणिहिआ सा दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ णेगम-ववहाराणं २ संगहस्स य ।

सु०-१०१ प्र० (१) से किं तं णेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ
खेत्ताणुपुव्वी ?
उ० णेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी
पंचविहा पण्णत्ता,
तं जहा—

* उपर के प्रश्नोत्तर में आए हुए पाठ को उल्टे क्रम से कहें ।
* प्रत्यन्तर में यह पाठ नहीं है ।

१ अट्ठपयपरूवणया, २ भंगसमुक्कित्तणया
३ भंगोवदंसणया ४ समोआरे ५ अणुगमे ।

प्र० (१) से किं तं णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ?

उ० णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया—
तिपएसोगाढे आणुपुव्वी,
...जाव... दसपएसोगाढे आणुपुव्वी,
संखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी,
असंखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी,
एगपएसोगाढे आणुपुव्वी,
दुपएसोगाढे अवत्तव्वए,
तिपएसोगाढा आणुपुव्वीओ,
...जाव... दसपएसोगाढा आणुपुव्वीओ,
असंखेज्जपएसोगाढा आणुपुव्वीओ,
एगपएसोगाढा आणुपुव्वीओ,
दुपएसोगाढा अवत्तव्वगाइं ।
से त्तं णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ।

प्र० एआए णं णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए
किं पओअणं ?

उ० एआए नेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए
णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ ।

प्र० (२) से किं तं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ?

उ० णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ।
अत्थि आणुपुव्वी,
अत्थि अणाणुपुव्वी,
अत्थि अवत्तव्वए,

*एवं दव्वाणुपुव्वीगमेणं खेत्ताणुपुव्वीए वि ते चेव
छव्वीसं भंगा भाणिअव्वा,
...जाव...से त्तं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणाया ।

प्र० एआए णं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए
किं पओअणं ?

उ० एआए णं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए
भंगोवदंसणया कीरइ ।

प्र० (३) से किं तं णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया ?

उ० संगहस्स भंगोवदंसणया—

१ तिपएसोगाढे आणुपुव्वी
२ एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी
३ दुपएसोगाढे अवत्तव्वए
४ तिपएसोगाढा आणुपुव्वीओ,
५ एगपएसोगाढा अणाणुपुव्वीओ,
६ दुपएसोगाढा अवत्तव्वगाइं,
७ अहवा तिपएसोगाढे अ, एगपएसोगाढे अ
आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ,

*एवं तहा चेव दव्वाणुपुव्वीगमेणं छव्वीसं भंगा भाणिअव्वा ।
...जाव...से त्तं णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया

प्र० (४) से किं तं समोआरे ?

समोआरे—
णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ?
किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?
अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?

*सूत्र ७६ के समान पाठ जानना ।
*सूत्र ७८ के समान पाठ जानना

अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति ?

उ० आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति
नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति,
नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति।
एवं दोन्नि वि सट्ठाणे सट्ठाणे समोयरंति।
से त्तं समोयारे।

प्र० (५) से किं तं अणुगमे ?

उ० अणुगमे नव विहे पण्णत्ते
तं जहा—

गाहा— संतपयपरूवणाया,[1] दव्वपमाणं[2] च खित्त[3] फुसणा[4] य।
कालो[5] य अंतरं,[6] भाग[7] भावे[8] अप्पाबहूं[9] चेव ॥१॥

प्र० (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
किं अत्थि नत्थि ?

उ० णियमा अत्थि।
*एवं दोन्नि वि।

प्र० (२) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
किं संखिज्जाइं ? असंखिज्जाइं ? अणंताइं ?

उ० नो संखिज्जाइं, नो असंखिज्जाइं, नो अणंताइं।
*एवं दोन्नि वि।

प्र० (३) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स
किं संखिज्जइभागे होज्जा ?
असंखिज्जइभागे होज्जा ?
...जाव...सव्वलोए होज्जा ?

---

२ * रेखाङ्कित आणुपुव्वीदव्वाइं की जगह 'अणाणुपुव्वीदव्वाइं' और 'अवत्तव्वगदव्वाइं' लगाकर उपर का प्रश्नोत्तर दो बार कहें।

उ० एगं दव्वं पडुच्च
संखिज्जइभागे वा होज्जा,
असंखेज्जइभागे वा होज्जा,
संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
असंखिज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
देसूणे वा लोए होज्जा।
णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा।
प्र० णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं पुच्छाए
उ० एगं दव्वं पडुच्च
नो संखिज्जइभागे होज्जा,
असंखिज्जइभागे होज्जा।
नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा
नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा
नो सव्वलोए होज्जा।
णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा।
एवं अवत्तव्वगदव्वाणि वि भाणिअव्वाणि।
प्र० (४) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स
किं संखिज्जइभागं फुसंति ?
असंखिज्जइभागं फुसंति ?
संखेज्जे भागे फुसंति ?
असंखेज्जे भागे फुसंति ?
सव्वलोगं फुसंति ?
उ० एगं दव्वं पडुच्च
संखिज्जइभागं वा फुसइ,
असंखिज्जइभागं वा फुसइ,
संखिज्जे भागे वा फुसइ,

असंखिज्जेभागे वा फुसइ,
देसूणं वा लोगं फुसइ ।
णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोअं फुसंति ।
अणाणुपुव्वीदव्वाइं अवत्तव्वयदव्वाइं च
*जहा खेत्तं नवरं फुसणा भाणियव्वा ।

प्र० (५) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
कालओ केवच्चिरं होइ ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च
जहण्णेणं एगं समयं,
उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।
णाणादव्वाइं पडुच्च णियमा सव्वद्धा ।
एवं दुण्णि वि ।

प्र० (६) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणमंतरं
कालओ केवच्चिरं होइ ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च
जहण्णेणं एगं समयं,
उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।
नाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।

प्र० (७) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा ?

उ० *तिण्णि वि जहा दव्वाणुपुवीए ।

प्र० (८) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
कयरम्मि भावे होज्जा ?

उ० नियमा साइपरिणामिए भावे होज्जा

* सूत्र ८४ के समान पाठ जानना ।
* सूत्र ८७ के समान पाठ जानना ।

एवं दोन्नि वि ।

प्र० (६) एएसिं णं भंते !

णेगम-ववहाराणं

आणुपुव्वीदव्वाणं

अणाणुपुव्वीदव्वाणं

अवत्तव्वगदव्वाणं य

दव्वट्ठयाए, पएसट्ठाए, दव्वट्ठपएसट्ठयाए

कयरे कयरेहिंतो

अप्पा वा, बहुया वा,

तुल्ला वा, विसेसाहिया ?

उ० गोयमा !

सव्वत्थोवाइं णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए ।

अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए विसेसाहिआइं ।

आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं ।

पएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं ।

णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं, अपएसट्ठयाए,

अवत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहिआइं ।

आणुपुव्वीदव्वाइं पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं ।

दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवाइं ।

णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्वट्ठयाए,

अणाणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए—

विसेसाहिआइं ।

अवत्तव्वगदव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहिआइं ।

आणुपुव्वीदव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं।
ताइं चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं।
से त्तं अणुगमे।
से त्तं नेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी।

सु०-१०२ प्र० (१) से किं तं संगहस्स अणोवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी ?
उ० संगहस्स अणोवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी
पंचविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ अट्ठपयपरूवणया, २ भंगसमुक्कित्तणया
३ भंगोवदंसणया ४ समोआरे ५ अणुगमे।

प्र० (१) से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?
उ० संगहस्स अट्ठपयपरूवणया—
तिपएसोगाढे आणुपुव्वी,
चउप्पएसोगाढे आणुपुव्वी,
...जाव... दसपएसोगाढे आणुपुव्वी,
संखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी,
असंखिज्जपएसोगाढे आणुपुव्वी,
एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी,
दुपएसोगाढे अवत्तव्वए,
से त्तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया।

प्र० एआए णं संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए किं पओअणं ?
उ० संगहस्स अट्ठपयपरूवणयाए
संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ।

प्र० (२) से किं तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ?

उ० संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया।

1 अत्थि आणुपुव्वी,

2 अत्थि अणाणुपुव्वी,

3 अत्थि अवत्तव्वए,

4 अहवा अत्थि आणुपुव्वी अ, अणाणुपुव्वी अ,

*एवं जहा दव्वाणुपुव्वीए संगहस्स तहा भाणिअव्वा,

...जाव...से त्तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया।

प्र० एआए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओअणं ?

उ० एआए णं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणयाए भंगोवदंसणया कज्जइ।

प्र० (3) से किं तं संगहस्स भंगोवदंसणया ?

उ० संगहस्स भंगोवदंसणया—

1 तिपएसोगाढे आणुपुव्वी

2 एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी

3 दुपएसोगाढे अवत्तव्वए

4 अहवा तिपएसोगाढे अ, एगपएसोगाढे अ आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ,

*एवं जहा दव्वाणुपुव्वीए संगहस्स तहा खेत्ताणुपुव्वीए वि भाणिअव्वं।

...जाव...से त्तं संगहस्स भंगोवदंसणया

प्र० (4) से किं तं समोआरे ?

समोआरे—

संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ?

*सूत्र ६२ के समान पाठ जानना।

*सूत्र नं० ६२ से पूरा पाठ जानना।

किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?
अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?
अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति ?
उ० तिरिण वि सट्ठाणे समोअरंति,
से त्तं समोआरे ।
प्र० (५) से किं तं अणुगमे ?
उ० अणुगमे अट्ठविहे पएणत्ते,
तं जहा—
गाहा— [1]संतपयपरूवणया [2]दव्वपमाणं [3]खित्त [4]फुसणा य ।
कालो य अंतरं भाग भावे अप्पाबहुं णत्थि ॥१॥
प्र० (१) संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं किं अत्थि ? णत्थि ?
उ० णियमा अत्थि ।
एवं दुण्णि वि ।
सेसगदाराइं जहा दव्वाणुपुव्वीए संगहस्स
तहा खेत्ताणुपुव्वीए वि भाणिअव्वाइं
जाव से त्तं अणुगमे ।
से त्तं संगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ।
से त्तं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ।
सु०-१०३ प्र० से किं तं उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ?
उ० उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी अ ।
से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?
पुव्वाणुपुव्वी—
१ अहोलोए २ तिरिअलोए ३ उड्ढलोए
से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—
३ उड्ढलोए २ तिरिअलोए १ अहोलोए
से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एयाए चेव एगाइए एगुत्तरिआए
ति-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो ।
से त्तं अणाणुपुव्वी ।
अहो-लोए खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—
१ रयणप्पभा २ सक्करप्पभा ३ वालुअप्पभा
४ पंकप्पभा ५ धूमप्पभा ६ तमप्पभा ७ तमतमप्पभा
से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—
तमतमप्पभा···जाव···रयणप्पभा ।
से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए
सत्त-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो ।
से त्तं अणाणुपुव्वी ।

तिरिअ-लोअ-खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वापुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—

गाहाओ— जंबूदीवे लवणे, धायइ कालोअ पुक्खरे वरुणे।
खीर-घय-खोअ-नंदी, अरूणवरे कुंडले रुअगे ॥१॥
*आभरण-वत्थ-गंधे, उप्पल-तिलए अ पुढवि निहि रयणे।
वासहर-दह-नईओ, विजया वक्खार कप्पिंदा ॥२॥
कुरु-मंदर आवासा, कूडा नक्खत्त-चंद-सूराय।
देवे नागे जक्खे, भूए अ सयंभूरमणे अ ॥३॥
से त्तं पुव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—
सयंभूरमणे अ ⋯ जाव ⋯ जंबूद्दीवे।
से त्तं पच्छाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एयाए चेव एगाइए एगुत्तरिआए असंखेज्ज-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो।
से त्तं अणाणुपुव्वी।

उड्ढ-लोअ खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी।

---

* *जंबुद्दीवाओ खलु निरंतरा सेसया असंखइमा।*
भुयग वर कुसवराविय कोंचवराभरणमाईय ॥
यह गाथा भी वाचनान्तर में पाई जाती है।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—

१ सोहम्मे	८ सहस्सारे
२ ईसाणे	९ आणए
३ सणंकुमारे	१० पाणए
४ माहिंदे	११ आरणे
५ बंभलोए	१२ अच्चुए
६ लंतए	१३ गेवेज्ज-विमाणे
७ महासुक्के	१४ अणुत्तरविमाणे

१५ ईसिपब्भारा

से त्तं पुव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—
ईसिपब्भारा···जाव···सोहम्मे।
से त्तं पच्छाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए पन्नरस-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो।
से त्तं अणाणुपुव्वी।
अहवा उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी अ।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—

एगपएसोगाढे
दुपएसोगाढे · जाव
दसपएसोगाढे · · · जाव · · ·
संखिज्जपएसोगाढे
असंखिज्जपएसोगाढे
से त्तं पुव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी–
असंखेज्जपएसोगाढे,
संखिज्जपएसोगाढे,
· · · जाव · · · एगपएसोगाढे
से त्तं पच्छाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी–एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए
असंखिज्ज-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो।
से त्तं अणाणुपुव्वी।
से त्तं उवणिहिआ खेत्ताणुपुव्वी।
से त्तं खेत्ताणुपुव्वी।

सु०-१०४ प्र० से किं तं कालाणुपुव्वी ?

उ० कालाणुपुव्वी दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
उवणिहिआ य अणोवणिहिआ य।

सु०-१०५ तत्थ णं जा सा उवणिहिआ सा ठप्पा।
तत्थ णं जा सा अणोवणिहिआ सा दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ णेगम-ववहाराणं २ संगहस्स य।

सु०-१०६ प्र० से किं तं णेगम-ववहाराणं अणोवणिहिआ
कालाणुपुव्वी ?

उ० णेगमववहाराणं अणोवणिहिआ कालाणुपुव्वी
पंचविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ अट्ठपयपरूवणया, २ भंगसमुक्कित्तणया
३ भंगोवदंसणया ४ समोआरे ५ अणुगमे।

सु०-१०७ प्र० (१) से किं तं णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया ?

उ० णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया—
तिसमयट्ठिइए आणुपुव्वी,
···जाव···दससमयट्ठिइए आणुपुव्वी,
संखिज्जसमयट्ठिइए आणुपुव्वी,
असंखिज्जसमयट्ठिइए आणुपुव्वी,
एगसमयट्ठिइए अणाणुपुव्वी,
दुपसमयट्ठिइए अवत्तव्वए,
तिसमयट्ठिइआओ आणुपुव्वीओ,
एगसमयट्ठिइआओ अणाणुपुव्वीओ,
दुसमयट्ठिइआइं अवत्तव्वगाइं,
से त्तं णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणया।

प्र० एआए णं णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए
किं पओअणं ?

उ० णेगम-ववहाराणं अट्ठपयपरूवणयाए
णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ।

सु०-१०८ प्र० (२) से किं तं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया ?

उ० णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया।

अत्थि आणुपुव्वी,
अत्थि अणाणुपुव्वी,
अत्थि अवत्तव्वए,
*एवं दव्वाणुपुव्वीगमेणं कालाणुपुव्वीए वि ते चेव छव्वीसं भंगा भाणिअव्वा,
...जाव... से त्तं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया।

प्र० एआए णं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए किं पओअणं ?

उ० एआए णं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया कज्जइ ।

सु०-१०६ प्र० (३) से किं तं णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया ?

उ० णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया—
तिसमयट्ठिइए आणुपुव्वी
एगसमयट्ठिइए अणाणुपुव्वी
दुसमयट्ठिइए अवत्तव्वए
तिसमयट्ठिइओ आणुपुव्वीओ,
एगसमयट्ठिइओ अणाणुपुव्वीओ,
दुसमयट्ठिइआइं अवत्तव्वगाइं,
अहवा तिसमयट्ठिइए अ, एगसमयट्ठिइए अ
आणुपुव्वी अ अणाणुपुव्वी अ,
*एवं तहा दव्वाणुपुव्वीगमेणं छव्वीसं भंगा भाणिअव्वा।
...जाव... से त्तं णेगम-ववहाराणं भंगोवदंसणया।

* सूत्र ७६ के समान पाठ जानना।
* सूत्र ७८ के समान पाठ जानना।

सु०-११० प्र० (४) से किं तं समोआरे ?

समोआरे-

णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं कहिं समोअरंति ?

किं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?

अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समोअरंति ?

अवत्तव्वयदव्वेहिं समोअरंति ?

उ० एवं तिण्णि वि सट्ठाणे समोअरंति इति भाणिअव्वं।

से त्तं समोआरे।

सु०-१११ प्र० (५) से किं तं अणुगमे ?

उ० अणुगमे नवविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

गाहा— संतपयपरूवणाया[१] दव्वपमाणं[२] च खित्त[३] फुसणा[४] य।
कालो[५] य अंतरं[६] भाग[७] भावे[८] अप्पाबहुं[९] चेव ॥१॥

प्र० (१) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं

किं अत्थि ? णत्थि ?

उ० णियमा तिण्णि वि अत्थि।

प्र० (२) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं

किं संखिज्जाइं ? असंखिज्जाइं ? अणंताइं ?

उ० नो संखिज्जाइं, नो असंखिज्जाइं, नो अणंताइं।

एवं दुण्णि वि।

प्र० (३) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं लोगस्स

किं संखिज्जइभागे होज्जा ?

असंखिज्जइभागे होज्जा ?

२ * रेखाङ्कित आणुपुव्वीदव्वाइं की जगह 'अणाणुपुव्वीदव्वाइं' और 'अवत्तव्वगदव्वाइं' लगाकर उपर का प्रश्न दो बार कहें।

संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
असंखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा
सव्वलोए वा होज्जा ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च
संखेज्जइभागे वा होज्जा,
असंखेज्जइभागे वा होज्जा,
संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
असंखिज्जेसु भागेसु वा होज्जा,
*देसूणे वा लोए होज्जा।
णाणादव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा।
(आएसंतरेण वा सव्वपुच्छासु होज्जा)
*एवं अणाणुपुव्वीदव्वाणि
अवत्तव्वगदव्वाणि वि जहा खेत्ताणुपुव्वीए।
एवं फुसणा कालाणुपुव्वीए वि तहा चेव भाणिअव्वा

प्र० (५) णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाइं
कालओ केवच्चिरं होंति ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च
जहण्णेणं तिण्णि समया,
उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं।
णाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा।
प्र० णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाइं कालओ
केवच्चिरं होंति ?

---

*पदेसूणे इत्यपि क्वचित्।
* *पृष्ठ ३८५ पंक्ति २० से पृष्ठ ३८७ पंक्ति ५ तक के समान पाठ जानना।*

उ० एगं दव्वं पडुच्च अजहण्णमणुक्कोसेणं एक्कं समयं,
णाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा ।

प्र० अवत्तव्वगदव्वाणं पुच्छा ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च अजहण्णमणुक्कोसेणं दो समया,
णाणादव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा ।

प्र० णेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणमंतरं
कालओ केवच्चिरं होंति ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च
जहण्णेणं एगं समयं,
उक्कोसेणं दो समया
नाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।

प्र० णेगम-ववहाराणं अणाणुपुव्वीदव्वाणं
अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं दो समयं,
उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।
णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।

प्र० णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाणं पुच्छा ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं
उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।
णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ।

*भाग-भाव-अप्पाबहुं चेव जहा खेत्ताणुपुव्वीए
तहा भाणिअव्वाइं
...जाव...से त्तं अणुगमे ।
से त्तं णेगम-ववहाराणं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ।

* पृष्ट ३८७ पंक्ति १६ से पृष्ट ३८८ पंक्ति २ तक के समान पाठ जानना ।

सु०-११२ प्र० से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ?
उ० संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी
पंचविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ अट्ठपयपरूवणया २ भंगसमुक्कित्तणया
४ भंगोवदंसणया ४ समोआरे ५ अणुगमे ।

सु०-११३ प्र० (१) से किं तं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ?
उ० संगहस्स अट्ठपयपरूवणया—
एआइं पंच वि दाराइं जहा खेत्ताणुपुव्वीए संगहस्स
कालाणुपुव्वीए तहा वि भाणिअव्वाणि ।
णवरं ठिइ अभिलाओ,
...जाव...से त्तं अणुगमे।
से त्तं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ।

सु०-११४ प्र० से किं तं उवणिहिआ कालाणुपुव्वी ?
*उवणिहिआ कालाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वापुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी ।
प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?
उ० पुव्वाणुपुव्वी—
१ समए २ आवलिआ
३ आणापाणू ४ थोवे
५ लवे ६ मुहुत्ते
७ अहोरत्ते ८ पक्खे

* सूत्र १०१ पृष्ट ३८६ पंक्ति १२ से पृष्ट ३६१ पंक्ति १६ तक के समान पाठ जानना ।
* वाचनान्तर में आगे आया हुआ * चिन्हित पाठ पहले है और यह बाद में है ।

९ मासे	१० उऊ
११ अयणे	१२ संवच्छरे
१३ जुगे	१४ वाससए
१५ वाससहस्से	१६ वाससयसहस्से
१७ पुव्वंगे	१८ पुव्वे
१९ तुडिअंगे	२० तुडिए
२१ अडडंगे	२२ अडडे
२३ अववंगे	२४ अववे
२५ हुहुअंगे	२६ हुहुए
२७ उप्पलंगे	२८ उप्पले
२९ पउमंगे	३० पउमे
३१ णलिणंगे	३२ णलिणे
३३ अत्थनिऊरंगे	३४ अत्थनिऊरे
३५ अउअंगे	३६ अउए
३७ नउअंगे	३८ नउए
३९ पउअंगे	४० पउए
४१ चूलिअंगे	४२ चूलिआ
४३ सीसपहेलिअंगे	४४ सीसपहेलिआ
४५ पलिओवमे	४६ सागरोवमे
४७ ओसप्पिणी	४८ उसप्पिणी
४९ पोग्गलपरिअट्टे	५० अतीतअद्धा
५१ अणागयद्धा	५२ सव्वद्धा

से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—
सव्वद्धा अणागयद्धा
··· जाव···समए ।
से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एयाए चेव एगाइए एगुत्तरिआए
अणंत-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो ।
से त्तं अणाणुपुव्वी ।

*अहवा उवणिहिआ कालाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—
एगसमयट्ठिइए
दुसमयट्ठिइए
तिसमयट्ठिइए
···जाव···दससमयट्ठिइए,
संखिज्जसमयट्ठिइए,
असंखिज्जसमयट्ठिइए,
से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—
असंखिज्जसमयट्ठिइए,

* वाचनान्तर में यह पाठ पहले है और पहले का चिन्हित * पाठ बाद में है ।

…जाव…एगसमयट्ठिइए
से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी–एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए असंखिज्ज-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो ।
से त्तं अणाणुपुव्वी ।
से त्तं उवणिहिआ कालाणुपुव्वी ।
से त्तं कालाणुपुव्वी ।

卐……………………………………卐

सु०-११५ प्र० (६) से किं तं उक्कित्तणाणुपुव्वी ?

उ० उक्कित्तणाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी अ ।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी–

१ उसभे २ अजिए
३ संभवे ४ अभिणंदणे
५ सुमती ६ पउमप्पहे
७ सुपासे ८ चंदप्पहे
९ सुविहि १० सीतले
११ सेज्जंसे १२ वासुपुज्जे
१३ विमले १४ अणंते
१५ धम्मे १६ संती
१७ कुंथू १८ अरे
१९ मल्ली २० मुणिसुव्वए

२१ णमी   २२ अरिट्ठणेमि
२३ पासे   २४ वद्धमाणे

से त्तं पुव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी?

उ० पच्छाणुपुव्वी—
वद्धमाणे ··· जाव ··· उसभे।
से त्तं पच्छाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी?

उ० अणाणुपुव्वी—एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए चउवीस-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो।
से त्तं अणाणुपुव्वी।
से त्तं उक्कित्तणाणुपुव्वी।

卐··卐

सु०-११६ प्र० (७) से किं तं गणणाणुपुव्वी?

उ० गणणाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी,
से किं तं पुव्वाणुपुव्वी?
पुव्वाणुपुव्वी—
एगो, दस, सयं
सहस्सं   दस-सहस्साइं
सयसहस्स, दस-सयसहस्साइं,
कोडी,   दस-कोडिओ,
कोडीसयं,   दस-कोडिसयाइं,
से त्तं पुव्वाणुपुव्वी।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—

दस-कोडिसयाइं ... जाव ... एगो ।

से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए दस-कोडिसय-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो ।

से त्तं अणाणुपुव्वी ।

से त्तं गणाणुपुव्वी ।

卐..卐

सु०-११७ प्र० (८) से किं तं संठाणाणुपुव्वी

उ० संठाणाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी, ३ अणाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

उ० पुव्वाणुपुव्वी—

१ समचउरंसे २ निग्गोहमंडले ३ सादी
४ खुज्जे　५ वामणे　६ हुंडे ।

से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० ६ हुंडे ... जाव ... समचउरंसे ।

से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिए
छ-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो।
से त्तं अणाणुपुव्वी।
से त्तं संठाणाणुपुव्वी।

सु०-११८ प्र० (६) से किं तं समायारी आणुपुव्वी ?
उ० समायारी-आणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी।
से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?
पुव्वाणुपुव्वी—

गाहा— इच्छा[1]-मिच्छा[2]-तहक्कारो[3], आवस्सिआ[4] य निसीहिआ[5]।
आपुच्छणा[6] य पडिपुच्छा[7] छंदणा य[8] य निमंतणा[9] ॥१॥
उवसंपया[10] य काले समायारी भवे दसविहा उ।

से त्तं पुव्वाणुपुव्वी।
प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी।
उ० पच्छाणुपुव्वी—उवसंपया,
...जाव...इच्छागारो।
से त्तं पच्छाणुपुव्वी।
प्र० से किं अणाणुपुव्वी ?
उ० अणाणुपुव्वी—एआए चेव एआइआए एगुत्तरिआए
दस-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो।
से त्तं अणाणुपुव्वी।
से त्तं सामायारी-आणुपुव्वी।

सु०-११६ प्र० (१०) से किं तं भावाणुपुव्वी ?

उ० भावाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ पुव्वाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी ३ अणाणुपुव्वी ।

से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?

पुव्वाणुपुव्वी—

१ उदइए　२ उवसमिए　३ खाइए

४ खओवसमिए ५ पारिणामिए ६ सन्निवाइए

से त्तं पुव्वाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुव्वी ?

उ० पच्छाणुपुव्वी—

६ सन्निवाइए···जाव···उदइए ।

से त्तं पच्छाणुपुव्वी ।

प्र० से किं तं अणाणुपुव्वी ?

उ० अणाणुपुव्वी—एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए छ-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो ।

से त्तं अणाणुपुव्वी ।

से त्तं भावाणुपुव्वी ।

से त्तं अणाणुपुव्वी ।

'आणुपुव्वी' त्ति पदं समत्तं ।

सु०-१२० प्र० से किं तं णामे ?

उ० णामे दसविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ एग-णामे २ दु-णामे
३ ति-णामे ४ चउ-णामे
५ पंच-णामे ६ छ-णामे
७ सत्त-णामे ८ अट्ठ-णामे
९ नव-णामे १० दस-णामे ।

सु०-१२१ प्र० से किं तं एग-णामे ?

उ० एगणामे—

गाहा— णामाणि जाणि काणि वि, दव्वाण गुणाण पज्जवाणं च ।
तेसिं आगम-निहसे, 'नामं' त्ति परूविआ सण्णा ॥
से त्तं एगणामे ।

सु०-१२२ प्र० से किं तं दुनामे ?

उ० दुनामे दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ एगक्खरिए अ २ अणेगक्खरिए अ ।

प्र० से किं तं एगक्खरिए ?

उ० एगक्खरिए अणेगविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

ही, श्री, धी, स्त्री ।

से त्तं एगक्खरिए ।

प्र० से किं तं अणेगक्खरिए ?

उ० अणेगक्खरिए—
कन्ना, वीणा, लता, माला ।
से त्तं अणेगक्खरिए ।

अहवा दुनामे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
जीवणामे अ, अजीवणामे अ ।

प्र० से किं तं जीव-णामे ?
उ० जीव-णामे अणेगविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
देवदत्तो, जण्णदत्तो, विण्हुदत्तो, सोमदत्तो ।
से त्तं जीव-णामे ।

प्र० से किं तं अजीव-णामे ?
उ० अजीव-णामे अणेगविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
घडो, पडो, कडो, रहो ।
से त्तं अजीव-णामे ।

अहवा दुनामे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ विसेसिए अ २ अविसेसिए अ ।
अविसेसिए— दव्वे ।
विसेसिए— जीवदव्वे, अजीवदव्वे अ ।
अविसेसिए— जीवदव्वे ।
विसेसिए— णेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे ।
अविसेसिए— णेरइए ।

विसेसिए— रयणप्पहाए, सक्करप्पहाए,
वालुअप्पहाए, पंकप्पहाए
धूमप्पहाए, तमाए, तमतमाए ।

अविसेसिए— रयणप्पहापुढवि-णेरइए ।
विसेसिए— पज्जत्तए अ, अपज्जत्तए अ ।
एवं...जाव...
अविसेसिए— तमतमापुढवि-नेरइए ।
विसेसिए— पज्जत्तए अ, अपज्जत्तए अ ।

अविसेसिए— तिरिक्खजोणिए ।
विसेसिए— एगिंदिए, बेइंदिए, तेइंदिए
चउरिंदिए, पंचिंदिए ।
अविसेसिए— एगिंदिए ।
विसेसिए— पुढविकाइए, आउकाइए,
तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए ।
अविसेसिए— पुढविकाइए ।
विसेसिए— सुहुम-पुढविकाइए अ
बादर-पुढविकाइए अ ।
अविसेसिए— सुहुम-पुढविकाइए ।
विसेसिए— पज्जत्तय-सुहुम-पुढविकाइए अ
अपज्जत्तय-सुहुम-पुढविकाइए अ ।
अविसेसिए— बादर-पुढविकाइए ।
विसेसिए— पज्जत्तय-बादर-पुढविकाइए अ,
अपज्जत्तय-बादर-पुढविकाइए अ ।
एवं आउकाइए, तेउकाइए
वाउकाइए, वणस्सइकाइए

अविसेसिअ-विसेसिय-
पज्जत्तय-अपज्जत्तयभेएहिं भाणिअव्वा।

अविसेसिए— बेइंदिए।
विसेसिए— पज्जत्तय-बेइंदिए अ,
अपज्जत्तय-बेइंदिए अ।

एवं तेइंदिअ-चउरिंदिआ वि भाणिअव्वा।

अविसेसिए— पंचिंदिअ-तिरिक्ख जोणिए।
विसेसिए— जलयर-पंचिंदिअ-तिरिक्ख जोणिए,
थलयर-पंचिंदिअ-तिरिक्ख जोणिए,
खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख जोणिए।

अविसेसिए— जलयर-पंचिंदिअ-तिरिक्ख जोणिए।
विसेसिए— संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिअ-तिरिक्ख जोणिए अ।
गब्भवक्कंतिअ-जलयर-पंचिंदिअ-तिरिक्ख जोणिए अ।
अविसेसिए— संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख जोणिए अ।
विसेसिए— पज्जत्तय संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख जोणिए अ।
अपज्जत्तय संमुच्छिम-जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख जोणिए अ।
अविसेसिए— गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख जोणिए अ।
विसेसिए—पज्जत्तय गब्भवक्कंत्तिअ-जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
अपज्जत्तय गब्भवक्कंत्तिअ-जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।

अविसेसिए— थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए।
विसेसिए— चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,
परिसप्प चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
अविसेसिए— चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए।

विसेसिए— सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ
गब्भवक्कंतिय-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
अविसेसिए— सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
विसेसिए— पज्जत्तय-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-
पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
अविसेसिए—गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए।
विसेसिए—पज्जत्तय-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयर-
पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,
अपज्जत्तय-गब्भवक्कंतिअ चउप्पय थलयर-
पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
अविसेसिए— परिसप्प-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए।
विसेसिए— उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,
भुजपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
एते वि सम्मुच्छिमा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य
गब्भवक्कंतिआ वि पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणिअव्वा।

अविसेसिए— खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख जोणिए।
विसेसिए— सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,
गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
अविसेसिए— सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,
विसेसिए— पज्जत्तय-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ,
अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
अविसेसिए— गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए।
विसेसिए—पज्जत्तय-गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।
अपज्जत्तय-गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ।

अविसेसिए- मणुस्से ।
विसेसिए- सम्मुच्छिम-मणुस्से अ,
गब्भवक्कंतिय-मणुस्से अ ।

अविसेसिए- सम्मुच्छिम-मणुस्से ।
विसेसिए- पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-मणुस्से अ ।
अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-मणुस्से अ ।

अविसेसिए- गब्भवक्कंतिय-मणुस्से ।
विसेसिए- कम्मभूमिओ य,
अकम्मभूमिओ य,
अंतरदीवओ य,
संखिज्जवासाउय,
असंखिज्जवासाउय,
पज्जत्तापज्जत्तओ ।

अविसेसिए- देवे ।
विसेसिए- भवणवासी, वाणमंतरे,
जोइसिए, वेमाणिए अ ।

अविसेसिए- भवणवासी ।
विसेसिए- १ असुरकुमारे २ नागकुमारे,
३ सुवण्णकुमारे ४ विज्जुकुमारे,
५ अग्गीकुमारे ६ दीवकुमारे,
७ उदहि-कुमारे ८ दिसाकुमारे
९ वाउकुमारे १० थणिअकुमारे ।

सव्वेसिं नी अविसेसिअ-विसेसिअ-पज्जत्तग-अपज्जत्तग
भेया भाणिअव्वा ।

अविसेसिए— वाणमंतरे
विसेसिए— पिसाए[1] भूए[2] जक्खे[3] रक्खसे[4],
किण्णरे[5] किंपुरिसे[6] महोरगे[7] गंधव्वे[8] ।

एएसिं वि अविसेसिअ-विसेसिअ-पज्जत्तग-अपज्जत्तग भेया भाणिअव्वा ।

अविसेसिए— जोइसिए ।
विसेसिए— चंदे[1] सूरे[2] गहगणे[3] नक्खत्ते[4] तारारूवे[5] ।

एतेसिं वि अविसेसिय-विसेसिय-पज्जत्तय-अपज्जत्तय
भेया भाणिअव्वा ।

अविसेसिए— वेमाणिए ।
विसेसिए— कप्पोवगे अ, कप्पातीतए अ ।
अविसेसिए— कप्पोवगे ।
विसेसिए— १ सोहम्मे २ ईसाणे
३ सणंकुमारे ४ माहिंदे
५ बंभलोए ५ लंतए
७ महासुक्के ८ सहस्सारे
९ आणए १० पाणए
११ आरणे १२ अच्चुए

एएसिं अविसेसिअ विसेसिअ-अपज्जत्तग-पज्जत्तग भेया भाणिअव्वा ।

अविसेसिए— कप्पातीतए ।
विसेसिए— गेवेज्जए अ ।
अणुत्तरोववाइए अ ।
अविसेसिए— गेवेज्जए ।
विसेसिए— १ हेट्ठिम गेवेज्जए,
२ मज्झिम गेवेज्जए,
३ उवरिम गेवेज्जए ।

अविसेसिए— हेट्ठिम गेवेज्जए।
विसेसिए— १ हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जए,
२ हेट्ठिम-मज्झिम-गेवेज्जए,
३ हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जए।
अविसेसिए— मज्झिम गेवेज्जए
विसेसिए— १ मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जए,
२ मज्झिम-मज्झिम-गेवेज्जए,
३ मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जए।
अविसेसिए— उवरिम गेवेज्जए।
विसेसिए— १ उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जए,
२ उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जए,
३ उवरिम-उवरिम-गेवेज्जए।

एएसिं सव्वेसिं अविसेसिय-विसेसिय-अपज्जत्तग-पज्जत्तग भेया भाणिअव्वा।

अविसेसिए— अणुत्तरोववाइए।
विसेसिए— विजयए[1] वेजयंतए[2],
जयंतए[3] अपराजिअए[4],
सव्वट्ठसिद्धए अ[5]।

एएसिं वि सव्वेसिं अविसेसिय-विसेसिय-अपज्जत्तग-पज्जत्तग भेया भाणिअव्वा।

अविसेसिए— अजीवदव्वे।
विसेसिए— धम्मत्थिकाए[1] अधम्मत्थिकाए[2]
आगासत्थिकाए[3] पोग्गलत्थिकाए[4]
अद्धासमए अ[5]।

अविसेसिए— पोग्गलत्थिकाए।
विसेसिए— परमाणुपोग्गले,
दुपएसिए,
तिपएसिए,
...जाव...अणंतपएसिए अ।
से त्तं दुनामे।

[०-१२३ प्र० से किं तं तिनामे ?
उ० ति-नामे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ दव्व-णामे
२ गुण-णामे
३ पज्जव-णामे अ।

प्र० से किं त दव्व-णामे ?
उ० दव्व-णामे छव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ धम्मत्थिकाए
२ अधम्मत्थिकाए
३ आगासत्थिकाए
४ जीवत्थिकाए
५ पुग्गलत्थिकाए
६ अद्धा-समए अ।
से त्तं दव्व-णामे।

प्र० से किं तं गुण-णामे ?
उ० गुण-णामे पंचविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ वण्ण-णामे २ गंध-णामे
३ रस-णामे ४ फास-णामे
५ संठाण-णामे ।

प्र० से किं तं वण्ण-णामे ?

उ० वण्ण-णामे पंचविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ काल-वण्ण-णामे
२ नील-वण्ण-णामे
३ लोहिअ-वण्ण-णामे
४ हालिद्द-वण्ण-णामे
५ सुक्किल्ल-वण्ण-णामे ।

से त्तं वण्ण-णामे ।

प्र० से किं तं गंध-णामे ?

उ० गंध-णामे दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ सुरभिगंधे-णामे अ,
२ दुरभि-गंध-णामे अ ।

से त्तं गंध-णामे ।

प्र० से किं तं रस-णामे ?

उ० रस-णामे पंचविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ तित्त रस-णामे २ कडुअ रस-णामे

३ कसाय रस-णामे ४ अंबिल रस-णामे
५ महुर रस-णामे अ ।
से त्तं रस-णामे ।

प्र० से किं तं फास-णामे ?
उ० फास-णामे अट्ठविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ कक्खड-फास-णामे
२ मउअ-फास-णामे
३ गरुअ-फास-णामे
४ लहुअ-फास-णामे
५ सीत-फास-णामे
६ उसिण-फास-णामे
७ णिद्ध-फास-णामे
८ लुक्ख-फास-णामे अ ।
से त्तं फास-णामे ।

प्र० से किं तं संठाण-णामे ?
उ० संठाण-णामे पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ परिमंडल-संठाण-णामे
२ वट्ट-संठाण-णामे
३ तस-संठाण-णामे
४ चउरंस-संठाण-णामे
५ आयत-संठाण-णामे ।
से त्तं संठाण-णामे ।
से त्तं गुणणामे ।

प्र० से किं तं पज्जव-णामे ?

उ० पज्जव-णामे अणेगविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

एगगुण कालए,

दुगुण कालए,

तिगुण कालए,

...जाव...दसगुण कालए

संखिज्जगुण कालए,

असंखिज्जगुण कालए

अणंतगुण कालए,

एवं नील-लोहिय-हालिद्द-सुक्किला वि भाणिअव्वा।

एगगुण-सुरभिगंधे,

दुगुण-सुरभिगंधे,

तिगुण-सुरभिगंधे

...जाव...अणंतगुण-सुरभिगंधे।

एवं दुरभिगंधो वि भाणिअव्वो।

एगगुण तित्ते,

...जाव...अणंतगुणतित्ते।

एवं कडुअ-कसाय-अंबिल-महुरा वि भाणिअव्वा।

एगगुणकक्खडे,

...जाव...अणंतगुणकक्खडे।

एवं मउअ-गरुअ-लहुअ-सीत-उसिण-णिद्ध

लुक्खा वि भाणिअव्वा।

से त्तं पज्जव-णामे।

गाहाओ– तं पुण णामं तिविहं, इत्थी पुरिसं णपुंसगं चेव ।
एएसिं तिण्हं पि, अंतम्मि अ परूवणं वोच्छं ॥ १ ॥
तत्थ पुरिसस्स अंता, आ-इ-उ-ओ हवंति चत्तारि ।
ते चेव इत्थिआओ, हवंति ओकार परिहीणा ॥२॥
अंतिअ-इंतिअ-उंतिअ, अंताउ णपुंसगस्स बोद्धव्वा ।
एतेसिं तिण्हं पि अ, वोच्छामि निदंसणे एत्तो ॥३॥
आगारंतो 'राया', ईगारंतो 'गिरी' अ 'सिहरी' अ ।
ऊगारंतो 'विण्हू', दुमो अ अंता उ पुरिसाणं ॥४॥
आगारंता 'माला', ईगारंता 'सिरी' अ 'लच्छी' अ ।
ऊगारंता 'जंबू', 'वहू' अ अंताउ इत्थीणं ॥६॥
अंकारंतं 'धन्नं', इंकारंतं नपुंसगं 'अत्थि' ।
उंकारं तो पीलुं, 'महुं' च अंता णपुंसाणं ॥६॥
से त्तं ति-णामे ।

सु०-१२४ प्र० से किं तं चउणामे ?
उ० चउणामे चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ आगमेणं २ लोवेणं
३ पयईए ४ विगारेणं ।

प्र० से किं तं आगमेणं ?
उ० आगमेणं–
पद्मानि, पयांसि, कुण्डानि ।
से त्तं आगमेणं ।

प्र० से किं तं लोवेणं ?

उ० लोवेणं— ते अत्र = तेऽत्र, पटो अत्र = पटोऽत्र,
घटो अत्र = घटोऽत्र ।
से त्तं लोवेणं ।
प्र० से किं तं पगईए ?
उ० पगईए—
अग्नी एतौ, पटू इमौ
शाले एते, माले इमे ।
से त्तं पगईए ।
प्र० से किं तं विगारेणं ?
उ० विगारेणं—
दण्डस्य+अग्रं = दंडाग्रं
सा+आगता = साऽऽगता
दधि+इदं = दधीदं
नदी+इह = नदीह
मधुर+उदकं = मधूदकं
वधू+ऊहः = वधूहः ।
से त्तं विगारेणं ।
से त्तं चउणामे ।

सु०-१२५ प्र० से किं तं पंचणामे ?
उ० पंचणामे पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ नामिकं
२ नैपातिकं
३ आख्यातिकं
४ औपसर्गिकं
५ मिश्रम् ।

'अश्व' इति नामिकं।
'खलु' इति नैपातिकं
'धावति' इति आख्यातिकं
'परि' इत्यौपसर्गिकं
'संयतः' इति मिश्रम्।
से त्तं पंचणामे।

सु०-१२६ प्र० से किं तं छण्णामे ?
उ० छण्णामे छव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ उदइए २ उवसमिए ३ खइए
४ खओवसमिए ५ पारिणामिए ६ सन्निवाइए।

प्र० से किं तं उदइए ?
उ० उदइए दुविहे पण्णत्त,
तं जहा—
१ उदइए अ २ उदय निप्फण्णे अ।

प्र० से किं तं उदइए ?
उ० उदइए– अट्ठण्हं कम्मपयडीणं उदएणं।
से त्तं उदइए।

प्र० से किं तं उदयनिप्फन्ने ?
उ० उदयनिप्फन्ने दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ जीवोदयनिप्फन्ने अ,
२ अजीवोदयनिप्फन्ने अ।

से किं तं जीवोदयनिप्फन्ने ?
जीवोदयनिप्फन्ने अणेगविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
णेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे,
पुढविकाइए ··· जाव ··· तसकाइए,
कोहकसाई ··· जाव ··· लोहकसाई
इत्थीवेदए, पुरिसवेयए, णपुंसगवेयए,
कण्हलेसे ··· जाव ··· सुक्कलेसे,
मिच्छादिट्ठी, सम्मदिट्ठी, सम्ममिच्छादिट्ठी,
अविरए, असण्णी, अण्णाणी,
आहारए, छउमत्थे, सजोगी
संसारत्थे, असिद्धे ।
से त्तं जीवोदयनिप्फन्ने ।

प्र० से किं तं अजीवोदयनिप्फन्ने ?
उ० अजीवोदयनिप्फन्ने अणेगविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
उरालियं वा सरीरं,
उरालिअ-सरीर-पओगपरिणामिअं वा दव्वं,
वेउव्वियं वा सरीरं,
वेउव्विय-सरीर-पओगपरिणामिअं वा दव्वं,
एवं आहारगं सरीरं तेअगं सरीरं कम्मग-सरीरं च भाणिअव्वं
पओग परिणामिए वण्णे, गंधे, रसे, फासे ।
से त्तं अजीवोदयनिप्फण्णे ।
से त्तं उदयनिप्फण्णे ।
से त्तं उदइए ।

प्र० से किं तं उवसमिए ?
उ० उवसमिए दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ उवसमे अ,
२ उवसमनिप्फण्णे अ।

प्र० से किं तं उवसमे ?
उ० उवसमे– मोहणिज्जस्स-कम्मस्स-उवसमेणं।
से त्तं उवसमे।

प्र० से किं तं उवसमनिप्फण्णे ?
उ० उवसमनिप्फण्णे अणेगविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
उवसंतकोहे ''जाव''उवसंतलोभे
उवसंत-पेज्जे, उवसंत-दोसे
उवसंत-दंसणमोहणिज्जे, उवसंतचरित्तमोहणिज्जे
उवसामिआ-सम्मत्तलद्धी, उवसामिआ-चरित्तलद्धी,
उवसंतकसाय-छउमत्थवीयरागे।
से त्तं उवसमनिप्फण्णे।
से त्तं उवसमिए।

प्र० से किं तं खइए ?
उ० खइए दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ खइए अ २ खयनिप्फण्णे अ।
से किं तं खइए ?

खइए—अट्ठण्हं कम्मपयडीणं खइए णं ।
से त्तं खइए ।

प्र० से किं तं खयनिप्फण्णे ?
उ० खयनिप्फण्णे अणेगविहे पण्णत्ते,
जहा—
उप्पण्ण-णाणदंसणधरे, अरहा, जिणे, केवली,
खीण-आभिणिबोहिय-णाणावरणे,
खीण-सुअ-णाणावरणे,
खीण-ओहि-णाणावरणे,
खीण-मणपज्जव-णाणावरणे,
खीण-केवल-णाणावरणे,
अणावरणे, निरावरणे, खीणावरणे
णाणावरणिज्ज-कम्मविप्पमुक्के,

केवलदंसी, सव्वदंसी,
खीणनिद्दे, खीणनिद्दानिद्दे,
खीणपयले, खीणपयलापयले,
खीणथीणगिद्धि,
खीणचक्खुदंसणावरणे,
खीण-अचक्खुदंसणावरणे,
खीण-ओहिदंसणावरणे,
खीण-केवलदंसणावरणे,
अणावरणे निरावरणे खीणावरणे
दरिसणावरणिज्ज-कम्मविप्पमुक्के,

खीण-साया-वेअणिज्जे
खीण-असाया-वेअणिज्जे
अवेअणे निव्वेअणे खीणवेअए
सुभासुभ-वेअणिज्ज-कम्मविप्पमुक्के,

खीणकोहे ... जाव ... खीणलोहे
खीणपेज्जे, खीणदोसे
खीणदंसणमोहणिज्जे, खीणचरित्तमोहणिज्जे
अमोहे, निम्मोहे, खीणमोहे
मोहणिज्ज-कम्म-विप्पमुक्के,

खीण-णेरइअ-आउए
खीण-तिरिक्ख-जोणि-आउए
खीण-मणुस्साउए
खीण-देवाउए
अणाउए निराउए खीणाउए
आउ-कम्म-विप्पमुक्के

गइ-जाइ-सरीरंगोवंग-बंधण-
संघायण-संघयण-संठाण-
अणेग-बोंदि-विंद-संघाय-विप्पमुक्के,
खीण-सुभ-नामे
खीण-असुभ-णामे
अणामे निण्णामे खीण-णामे
सुभासुभणाम-कम्म-विप्पमुक्के

खीण-उच्चागोए
खीण-णीआगोए

अगोए निग्गोए खीण-गोए
उच्च-णीय-गोत्तकम्म-विप्पमुक्के,

खीण-दाणंतराए
खीण-लाभंतराए
खीण-भोगंतराए
खीण-उवभोगंतराए
खीण-वीरियंतराए
अणंतराए णिरंतराए खीणंतराए
अंतराय-कम्म-विप्पमुक्के,
सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुए
अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।
से त्तं खयनिप्फण्णे ।
से त्तं खइए ।

प्र० से किं तं खओवसमिए ?
उ० खओवसमिए दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ खओवसमे अ
२ खओवसमनिप्फण्णे अ ।

प्र० से किं तं खओवसमे ?
उ० खओवसमे– चउण्हं घाइकम्माणं खओवसमेणं,
तं जहा—
१ णाणावरणिज्जस्स २ दंसणावरणिज्जस्स
३ मोहणिज्जस्स ४ अंतरायस्स खओवसमेणं ।
से त्तं खओवसमे ।

प्र० से किं तं खओवसमनिप्फण्णे ?

उ० खओवसमनिप्फण्णे अणेगविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

खओवसमिआ आभिणिबोहिअ-णाणलद्धी

...जाव...खओवसमिआ मणपज्जव-णाणलद्धी

खओवसमिआ मइ-अण्णाणलद्धी

खओवसमिआ सुअ-अण्णाणलद्धी

खओवसमिआ विभंग-णाणलद्धी

खओवसमिआ चक्खुदंसणलद्धी

खओवसमिआ अचक्खुदंसणलद्धी

खओवसमिआ ओहिदंसणलद्धी

एवं........सम्मदंसणलद्धी

मिच्छादंसणलद्धी

सम्मसिच्छादंसणलद्धी

खओवसमिआ सामाइअ-चरित्तलद्धी

एवं........छेदोवट्ठावणलद्धी

परिहारविसुद्धिअ-लद्धी

सुहुमसंपराय-चरित्तलद्धी

एवं........चरित्ताचरित्तलद्धी

खओवसमिआ दाणलद्धी

एवं........लाभलद्धी

भोगलद्धी

उवभोगलद्धी

खओवसमिआ वीरिआ-लद्धी

एवं········पंडिअ-वीरिअलद्धी
बाल-वीरिअलद्धी
बाल-पंडिअ-वीरिअलद्धी
खओवसमिआ सोइंदियलद्धी
···जाव··· फासिंदिअलद्धी
खओवसमिए आयारंगधरे
एवं········सुअगडंगधरे
ठाणंगधरे
समवायंगधरे
विवाहपण्णत्तिधरे
णायाधम्मकहाधरे
उवासगदसांगधरे
अंतगडदसांगधरे
अणुत्तरोववाइअदसांगधरे
पण्हावागरणधरे
विवागसुअधरे,
खओवसमिए दिट्ठिवायधरे
खओवसमिए णवपुव्वी···
जाव··· चउद्दसपुव्वी,
खओवसमिए गणी।
खओवसमिए वायए।
से त्तं खओवसमनिप्फण्णे।
से त्तं खओवसमिए।

प्र० से किं तं पारिणामिए ?
उ० पारिणामिए दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ साइपारिणामिए अ

२ अणाइपारिणामिए अ ।

प्र० से किं तं साइपारिणामिए ?

उ० साइपारिणामिए अणेगविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

गाहा— जुण्णसुरा जुण्णगुलो, जुण्णघयं जुण्णतंदुला चेव ।
अब्भाय अब्भरुक्खा, सण्णा गंधव्वणगरा य ॥१॥

उक्कावाया, दिसादाहा
गज्जियं विज्जू णिग्घाया
जूवया जक्खादित्ता
धूमिआ महिआ रयुग्घाया
चंदोवरागा सूरोवरागा
चंदपरिवेसा सूरपरिवेसा
पडिचंदा पडिसूरा
इंदधणू उदगमच्छा
कविहसिया अमोहा
वासा वासधरा
गामा णगरा घरा
पव्वता पायला भवणा
निरया— १ रयणप्पहा २ सक्करप्पहा
३ वालुअप्पहा ४ पंकप्पहा
५ धूमप्पहा ६ तमप्पहा
७ तमतमप्पहा ।

सोहम्मे ... जाव ... अच्चुए
गेवेज्जे, अणुत्तरे, ईसिप्पभारा,
परमाणुपोग्गले दुपएसिए
... जाव ... अणंतपएसिए ।
से त्तं साइपारिणामिए

प्र० से किं तं अणाइपारिणामिए ?
उ० अणाइपारिणामिए–
१ धम्मत्थिकाए २ अधम्मत्थिकाए
३ आगासत्थिकाए ४ जीवत्थिकाए
५ पुग्गलत्थिकाए ६ अद्धासमए
लोए, अलोए
भवसिद्धिआ अभवसिद्धिआ ।
से त्तं अणाइपारिणामिए ।
से त्तं पारिणामिए

प्र० से किं तं सण्णिवाइए ?
उ० सण्णिवाइए– एएसिं चेव
उदइअ-उवसमिअ-
खइअ-खओवसमिय-
पारिणामिआणं भावाणं ।
दुगसंजोएणं तिगसंजोएणं चउक्कसंजोएणं पंचगसंजोएणं
जे निप्फज्जंति, सव्वे ते सन्निवाइए नामे ।
तत्थ णं दस दुअ-संयोगा,
दस तिअ-संयोगा,
पंच चउक्क-संयोगा
एगे पंचक-संजोगे ।

तत्थ णं जे ते दस दुग-संयोगा ते णं इमे–
(१) अत्थि णामे उदइय-उवसमनिप्फण्णे
(२) अत्थि णामे उदइय-खाइगनिप्फण्णे
(३) अत्थि णामे उदइय-खओवसम निप्फण्णे
(४) अत्थि णामे उदइय-पारिणामिअ निप्फण्णे
(५) अत्थि णामे उवसमिय-खय निप्फण्णे
(६) अत्थि णामे उवसमिय-खओवसम निप्फण्णे
(७) अत्थि णामे उवसमिय-पारिणामिय निप्फण्णे
(८) अत्थि णामे खइय-खओवसम निप्फण्णे
(९) अत्थि णामे खइय-पारिणामिअ निप्फण्णे
(१०) अत्थि णामे खओवसमिय-पारिणामिअ निप्फण्णे ।

प्र० कयरे से नामे उदइअ-उवसमनिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से, उवसंता कसाया,
एस णं से णामे उदइय-उवसम निप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खयनिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से, खइअं सम्मत्तं,
एस णं से नामे उदइअ-खयनिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खओवसमनिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से, खओवसमिआइं इंदिआइं,
एस णं से णामे उदइय-खओवसमनिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से, पारिणामिए जीवे,
एस णं से णामे उदइअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-खयनिष्फण्णे ?
उ० उवसंता कसाया, खइअं सम्मत्तं,
एस णं से णामे उवसमिय-खयनिष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उवसमिय-खओवसमनिष्फण्णे ?
उ० उवसंता कसाया, खओवसमिआइं इंदिआइं,
एस णं से णामे उवसमिअ-खओवसमनिष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-पारिणामिअनिष्फण्णे ?
उ० उवसंता कसाया, पारिणामिए जीवे,
एस णं से णामे उवसमिअ-पारिणामिअनिष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे खइअ-खओवसमनिष्फण्णे ?
उ० खइअं सम्मत्तं, खओवसमिआइं इंदिआइं
एस णं से णामे खइअ-खओवसम-निष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे खइय-पारिणामिअनिष्फण्णे ?
उ० खइअं सम्मत्तं, पारिणामिए जीवे,
एस णं से णामे खइअ-पारिणामिअनिष्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे खओवसमिअ-परिणामिअनिष्फणे ?
उ० खओवसमिआइं इंदिआइं, पारिणामिए जीवे,
एस णं से णामे खओवसमिय-परिणामिअणिप्फण्णे

तत्थ णं जे ते दस तिग-संजोगा ते णं इमे—
(१) अत्थि णामे उदइअ-उवसमिय-खय-निष्फणे
(२) अत्थि णामे उदइअ-उवसमिअ-खओवसम निष्फ
(३) अत्थि णामे उदइअ-उवसमिअ-परिणामिअ निष्फ

(४) अत्थि णामे उदइअ-खइअ-खओवसमनिप्फण्णे
(५) अत्थि णामे उदइअ-खइअ-परिणामिअनिप्फण्णे
(६) अत्थि णामे उदइअ-खओवसमिअ-परिणामिअनिप्फणे
(७) अत्थि णामे उवसमिअ-खइअ-खओवसमनिप्फण्णे
(८) अत्थि णामे उवसमिअ-खइय-पारिणामिअनिप्फण्णे
(९) अत्थि णामे उवसमिअ-खओवसमिअ-
पारिणामिअनिप्फण्णे ।
(१०) अत्थि णामे खइअ-खओवसमिअ-
पारिणामिअनिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-उवसमिय-खयनिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से,
उवसंता कसाया,
खइअं सम्मत्तं,
एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअखयनिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइय-उवसमिय-खओवसमियनिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से,
उवसंता कसाया,
खओवसमिआइं इंदिआइं
एस णं से णामे उदइय-उवसमिअ-खओवसमनिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइय-उवसमिअ-पारिणामियनिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से
उवसंता कसाया
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खइअ-खओवसमनिप्फण्णे ?
उ० ऊदए त्ति मणुस्से
खइअं सम्मत्तं
खओवसमिआइं इंदिआइं
एस णं से णामे उदइअ-खइअ-खओवसम निप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खइअ-पारिणामिअ निप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से
खइअं सम्मत्तं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उदइअ-खइअ-पारिणामिअ निप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उदइअ-खओवसमिय-
पारिणामिअ निप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से
खओवसमिआइं इंदियाइं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उदइअ-खओवसमिअ-
पारिणामिअ निप्फण्णे

प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-खइअ-खइअ-
खओवसम निप्फण्णे ?
उ० उवसंता कसाया
खइअं सम्मत्तं
खओवसमिआइं इंदिआइं
एस णं से णामे उवसमिअ -खइअ-खओवसम-निप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-खइअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ?
उ० उवसंता कसाया
खइअं सम्मत्तं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उवसमिअ-खइअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे उवसमिअ-खओवसमिअ-
पारिणामिअनिप्फण्णे ?
उ० उवसंता कसाया
खओवसमिआइं इंदिआइं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उवसमिअ-खओवसमिअ-
पारिणामिअनिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे खइअ-खओवसमिय-पारिणामिअनिप्फण्णे ।
उ० खइअं सम्मत्तं
खओवसमिआइं इंदिआइं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे खइअ-खओवसमिअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ।

तत्थ णं जे ते पंच चउक्कसंजोगा ते णं इमे—
(१) अत्थि णामे—
उदइअ-उवसमिअ-खइअ-खओवसमनिप्फण्णे ।
(२) अत्थि णामे—
उदइअ-उवसमिअ-खइअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ।
(३) अत्थि णामे—
उदइअ-उवसमिअ-खओवसमिअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ।

(४) अत्थि णामे–
उदइअ-खइअ-खओवसमिअ-पारिणामिअनिप्फण्णे।
(५) अत्थि णामे–
उवसमिअ-खइअ-खओवसमिअ-पारिणामिअनिप्फण्णे।

प्र० कयरे से णामे–
उदइअ-उवसमिअ-खइअ-खओवसम निप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से
उवसंता कसाया
खइअं सम्मत्तं
खओवसमिआइं इंदिआइं
एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-खइअ-
खओवसमनिप्फण्णे।

प्र० कयरे से णामे–
उदइअ-उवसमिअ-खइअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से
उवसंता कसाया
खइअं सम्मत्तं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-खइअ-
पारिणामिअनिप्फण्णे।

प्र० कयरे से णामे–
उदइए-उवसमिअ-खओवसमिअ-पारिणामिअनिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से
उवसंता कसाया

खओवसमिआइं इंदिआइं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-खओवसमिअ
पारिणामिए जीवे

प्र० कयरे से णामे—
उदइअ-खइअ-खओवसमिय-पारिणामियणिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से
खइअं सम्मत्तं
खओवसमिआइं इंदिआइं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उदइअ-खइअ-खओवसमिअ-
पारिणामिअणिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से नामे—
उवसमिअ-खइअ-खओवसमिअ-पारिणामिअणिप्फण्णे ?
उ० उवसंता कसाया
खइअं सम्मत्तं
खओवसमिआइं इंदिआइं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उवसमिअ-खइअ-खओवसमिअ-
पारिणामिअणिप्फण्णे ।

तत्थ णं जे से एक्के पंचगसंजोए से णं इमे—
(१) अत्थि णामे—
उदइअ-उवसमिअ-खइअ-खओवसमिअ-
पारिणामिअणिप्फण्णे ।

प्र० कयरे से णामे–
उदइअ-उवसमिअ-खइअ-खओवसमिअ-
पारिणामिअणिप्फण्णे ?
उ० उदइए त्ति मणुस्से
उवसंता कसाया
खइयं सम्मत्तं
खओवसमिआइं इंदिआइं
पारिणामिए जीवे
एस णं से णामे उदइअ-उवसमिअ-खइय-खओवसमिअ-
पारिणामिअ णिप्फण्णे।
से त्तं सन्निवाइए।
से त्तं छण्णामे।

卐..卐

सु०-१२७ प्र० से किं तं सत्तणामे ?
उ० सत्तनामे
सत्तसरा पण्णत्ता,
तं जहा—

गाहा– सज्जे रिसहे गंधारे, मज्झिमे पंचमे सरे।
*धेवए चेव नेसाए, सरा सत्त विआहिया ॥१॥
एएसिं णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता,
तं जहा—

गाहाओ– सज्जं च अग्गजीहाए, उरेण रिसहं सरं।
कंठुग्गएण गंधारं, मज्झजीहाए मज्झिमं ॥२॥

* रेवए।

नासाए पंचमं बूआ, दंतोट्ठेण अ धेवतं ।
भमुहक्खेवेण णेसायं, सरट्ठाणा वि आहिआ ॥ २ ॥
सत्तसरा जीवणिस्सिआ पण्णत्ता,
तं जहा—

गाहा— सज्जं रवइ मऊरो, कुक्कुडो रिसभं सरं ।
हंसो रवइ गंधारं, मज्झिमं च गवेलगा ॥ १ ॥
अह कुसुम-संभवे काले, कोइला पंचमं सरं ।
छट्ठं च सारसा कुंचा, नेसायं सत्तमं गओ ॥ २ ॥
सत्तसरा अजीवणिस्सिआ पण्णत्ता,
तं जहा—
सज्जं रवइ मुअंगो, गोमुही रिसहं सरं ।
संखो रवइ गंधारं, मज्झिमं पुण झल्लरी ॥ १ ॥
चउच्चरण पइट्ठाणा, गोहिआ पंचमं सरं ।
आडंबरो रेवइयं, महाभेरी अ सत्तमं ॥ २ ॥
एएसिं णं सत्तण्हं सराणं सत्त सर-लक्खणा पण्णत्ता,
तं जहा—

गाहाओ— सज्जेणं लहई वित्तिं, कयं च न विणस्सइ ।
गावो पुत्ता य मित्ता य, नारीणं होइ वल्लहो ॥१॥
रिसहेण उ *एसज्जं, सेणावच्चं धणाणि य ।
वत्थगंधमलंकारं, इत्थिओ सयणाणि य ॥२॥
गंधारे गीतजुत्तिण्णा, वज्जवित्ती कलाहिआ ।
हवंति कइणो धण्णा, जे अण्णे सत्थपारगा ॥ ३ ॥
मज्झिम-सरमंता उ, हवंति सुहजीविणो ।
खायई पियई देई, मज्झिम-सरमस्सिओ ॥ ४ ॥

*पसेज्जं ।

पंचमसरमंता उ, हवंति पुहविपई ।
सूरा संगहकत्तारो, अणेगगणनायगा ॥ ५ ॥
रेवय-सरमंता उ, हवंति दुहजीविणो ।
*साउणिया वाउरिया, सोयरिआ य मुट्ठिआ ॥ ६ ॥
णिसायसरमंता उ, होंति कलहकारगा ।
जंघाचरा लेहवाहा, हिण्डगा भारवाहगा ॥ ७ ॥

एएसि णं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता,
तं जहा—

१ सज्जगामे २ मज्झिमगामे ३ गंधारगामे
सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ,
तं जहा—

गाहा— मग्गी[1] कोरविआ[2] हरिया[3], रयणी[4] अ सारकंता[5] य ।
छट्ठी अ सारसी[6] नाम, सुद्धसज्जा[7] य सत्तमा ॥ १ ॥
मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ,
तं जहा—

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा ।
समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा ॥ १ ॥
गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ,
तं जहा—

नंदी अ खुड्डिआ, पूरिमा य चउत्थी अ सुद्धगंधारा ।
उत्तरगंधारा वि अ, सा पंचमिआ हवइ मुच्छा ॥१॥
सुट्ठुत्तरमायामा, सा छट्ठी सव्वओ य णायव्वा ।
अह उत्तरायया कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा ॥२॥

*कुचेलाय कुवित्तीय, चोरा चंडालमुट्ठिआ । पाठान्तरं

प्र० सत्तसरा कओ हवंति ? गीयस्स का हवइ जोणी ?
कइसमया ओसासा ? कइ वा गीयस्स आगारा ? ॥३॥

उ० सत्तसरा नाभीओ, हवंति गीयं च रुइयजोणी ।
पायसमा उसासा, तिण्णि य गीयस्स आगारा ॥४॥
आइ-मउ आरभंता, समुव्वहंता य मज्झयारम्मि ।
अवसाणे उज्झंता, तिन्नि वि गीयस्स आगारा ॥५॥
छद्दोसे अट्ठगुणे, तिण्णि अ वित्ताइं दो य भणिईओ ।
जो नाही सो गाहिइ, सुसिक्खिओ रंगमज्झम्मि ॥६॥
भीयं[1] दुअं[2] उप्पिच्छं[3], उत्तालं[4] च कमसो मुणेअव्वं ।
कागस्सर[5] मणुणासं[6] छद्दोसा होंति गेअस्स ॥७॥
पुण्णं[1] रत्तं[2] च अलंकिअं[3], च वत्तं[4] च तहेवमविघुट्ठं[5] ।
महुरं[6] समं[7] सुललिअं[8] अट्ठगुणा होंति गेअस्स ॥८॥
उर[1] कंठ[2] सिर[3] विसुद्धं च गिज्जंते मउअ[4] रिभिय[5] पदबद्धं[6] ।
समतालपडुक्खेवं[7], सत्तस्सरसीभरं गीयं ॥९॥
अक्खरसमं[1] पदसमं[2], तालसमं[3] लयसमं[4] च गेहसमं[5] ।
नीससि-ओससिअसमं[6], संचारसमं[7] सरा सत्त ॥१०॥
निद्दोसं[1] सारमंतं[2] च, हेउजुत्त[3] मलंकियं[4] ।
उवणीयं[5] सोवयारं[6] च, मिअं[7] महुरमेव[8] य ॥११॥
समं[1] अद्धसमं[2] चेव, सव्वत्थ विसमं[3] च जं ।
तिण्णि वित्त पयाराइं, चउत्थं नोवलब्भइ ॥१२॥
सक्कया पायया चेव, भणिईओ होंति दोण्णि वा ।
सरमंडलम्मि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिआ ॥१३॥
प्र० केसी गायइ महुरं, केसी गायइ खरं च रुक्खं च ।
केसी गायइ चउरं, केसी अ विलंबिअं दुतं केसी ॥१४॥

*विसरं पुण केरिसी ?

उ० गोरी गायति महुरं, सामा गायइ खरं च रुक्खं च।
काली गायइ चउरं, काणाय विलंबियं दुतं अंधा ॥१४॥
*विस्सरं पुण पिंगला।
सत्तसरा तओ गामा, मुच्छणा इक्कवीसइ।
ताणा एगूणपण्णासं, सम्मत्तं सरमंडलं ॥१६॥
से त्तं सत्तणामे।

सु०-१२८ प्र० से किं तं अट्ठनामे ?

उ० अट्ठनामे—
अट्ठविहा वयण-विभत्ती पण्णत्ता,
तं जहा—
निद्देसे पढमा होइ, बित्तिआ उवएसणे।
तइया करणम्मि कया, चउत्थी संपयावणे ॥ १ ॥
पंचमी अ अवायाणे, छट्ठी सस्सामिवायणे।
सत्तमी सण्णिहाणत्थे, अट्ठमा ऽऽमंतणी भवे ॥ २ ॥
तत्थ पढमा विभत्ती, निद्देसे 'सो इमो अहं व' त्ति।
बिइआ पुण उवएसे 'भण कुणसु इमं व तं व' त्ति ॥३॥
तइआ करणम्मि कया 'भणिअं च कयं च तेण व मए' वा।
'हंदि णमो साहाए' हवइ चउत्थी पयाणम्मि ॥ ४ ॥
'अवणय गिण्ह य एत्तो, इउ' त्ति वा पंचमी अवायाणे।
छट्ठी तस्स इमस्स वा, गयस्स वा सामिसंबंधे ॥ ५ ॥
हवइ पुण सत्तमी, तं इमम्मि आहारकालभावे अ।
आमंतणी भवे, अट्ठमी उ जह 'हे जुवाण' त्ति ॥ ६ ॥
से त्तं अट्ठणामे।

* गाथाऽधिकमिदं पदं। * इदमपि गाथाऽधिकं पदं।

सु०-१२९ प्र० से किं तं नव-णामे ?

उ० नव-णामे—

णव-कव्व-रसा पण्णत्ता,

तं जहा—

गाहाओ— वीरो[1] सिंगारो[2], अब्भुओ[3] अ रोद्दो[4] अ होइ बोद्धव्वो।
वेलणओ[5] बीभच्छो[6], हासो[7] कलुणो[8] पसंतो[9] अ ॥१॥

वीरो रसो जहा—

(१) तत्थ परिच्चायम्मि अ *तव चरणे सत्तुजण विणासे अ।
अणणुसय धिति, परकमलिंगो वीरो रसो होइ ॥१॥
सो नाम महावीरो, जो रज्जं पयहिऊण पव्वइओ।
काम-कोह-महासत्तु, पक्ख निग्घायणं कुणइ ॥ २ ॥

सिंगारो रसो जहा—

(२) सिंगारो नाम रसो, रति-संजोगाभिलाससंजणणो।
मंडण-विलास-विब्बोअ,-हास-लीला-रमण लिंगो ॥१॥
महुर विलास-सललिअं, हियउम्मादणकरं जुवाणाणं।
सामा सद्दुद्दामं, दाएति मेहला दामं ॥ २ ॥

अब्भुओ रसो जहाः—

(३) विम्हयकरो अपुव्वो, अनुभूअपुव्वो य जो रसो होइ।
हरिस-विसाउप्पत्ति-लक्खणो अब्भुओ नाम ॥ १ ॥
अब्भुअतरमिह एत्तो, अन्नं किं अत्थि जीवलोगम्मि ?
जं जिणवयणे अत्था, तिकालजुत्ता मुणिज्जंति ॥२॥

रोद्दो रसो जहाः—

(४) भय-जणण-रूव-सद्दंधयार, चिंताकहा समुप्पण्णो।
संमोह-संभम-विसाय,-सरणलिंगो रसो रोद्दो ॥१॥

---

* दाए तव।

भिउडि-विडंविअ-मुहो, संदट्ठोट्ठ इअ रुहिरमाकिण्णो ।
हणसि पसुं असुर-णिभो, भीमरसिअ अइरोद्द ! रोद्दोसि ॥२॥

वेलणओ रसो जहाः—

(५) विणओवयार-गुज्झगुरु,-दारमेरावइक्कमुप्पण्णो ।
वेलणओ नाम रसो, लज्जा संका-करण-लिंगो ॥१॥
किं लोइअकरणीओ, लज्जणीअतरं ति लज्जयामु त्ति ।
वारिज्जम्मि गुरुयणो, परिवंदइ जं वहुप्पोत्तं ॥२॥

वीभच्छो रसो जहाः—

(६) असुइ-कुणिस-दुद्दंसण,-संजोगब्भासगंधनिप्फण्णो ।
निव्वेअऽविहिंसालक्खणो, रसो होइ वीभच्छो ॥१॥
असुइ-मलभरिय-निज्झर,सभाव-दुग्गंधि-सव्वकालं पि ।
धण्णा उ सरीरकलिं, वहुमलकलुसं विमुंचंति ॥२॥

हासो रसो जहाः—

(७) रूव-वय-वेस-भासा, विवरीअविलंवणासमुप्पण्णो ।
हासो मणप्पहासो, पगासलिंगो रसो होइ ॥१॥
पासुत्त-मसिमंडिअ, पडिवुद्धं देवरं पलोअंति ।
ही जह थणभरकंपण, पणमिअमज्झा हसइ सामा ॥२॥

करुणो रसो जहाः—

(८) पिअ-विप्पओग वंध, वह वाहि-विणिवायसंभमुप्पण्णो ।
सोइअ-विलविअ-पम्हाण,-रुण्णलिंगो एसो करुणो ॥१॥
पज्झायकिलामिअयं, वाहागयपप्पुअच्छिअं वहुसो ।
तस्स विओगे पुत्तिय !, दुव्वलयं ते मुहं जायं ॥२॥

पसंतो रसो जहाः—

(९) निद्दोस-मण-समाहाण, संभवो जो पसंतभावेणं ।
अविकारलक्खणो सो, रसो पसंतो त्ति णायव्वो ॥१॥
सब्भाव-निव्विगारं, उवसंत-पसंत-सोमदिट्ठीअं ।
ही जह मुणिणो सोहइ, मुहकमलं पीवरसिरीअं ॥२॥
एए नव-कव्व-रसा, बत्तीसादोसविहिसमुप्पण्णा ।
गाहाहिं मुणियव्वा, हवंति सुद्धा वा मीसा वा ॥३॥
से त्तं णवणामे ।

सु०-१३० प्र० से किं तं दसनामे ?

उ० दसनामे दसविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ गोण्णे २ नोगोण्णे ३ आयाणपएणं ४ पडिवक्खपएणं
५ पहाणयाए ६ अणाइअसिद्धंतेणं ७ नामेणं ८ अवयवेणं
९ संजोगेणं १० पमाणेणं ।

प्र० (१) से किं तं गोण्णे ?

उ० गोण्णे—

खमइ त्ति खमणो
तवइ त्ति तवणो
जलइ त्ति जलणो
पवइ त्ति पवणो
से त्तं गुण्णे ।

प्र० (२) से किं तं नोगोण्णे ?

उ० अकुंतो सकुंतो
अमुग्गो समुग्गो

अमुद्दो समुद्दो
अलालं पलालं
अकुलिया सकुलिआ
नो पलं असइ त्ति पलासो
अमाइवाहए माइवाहए
अबीअवावए बीअवावए
नो इंदगोवए इंदगोवे
से त्तं नोगोराणे ।

प्र० (३) से किं तं आयाणपएणं ?

उ० आयाणपएणं– (धम्मोमंगलं चूलिआ)
आवंती चाउरंगिज्जं
असंखयं अहातत्थिज्जं
अद्दइज्जं जराणइज्जं
पुरिसइज्जं (उसुकारिज्जं)
एलइज्जं वीरियं
धम्मो मग्गो
समोसरणं जम्मइअं ।
से त्तं आयाणपएणं ।

प्र० (४) से किं तं पडिवक्खपएणं ?

उ० पडिवक्खपएणं–
नवसु गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-
दोणमुह-पट्टणासम-संवाह-सन्निवेसेसु सन्निविस्समाणेसु
असिवा सिवा
अग्गी सीअलो

विसं महुरं
कल्लालघरेसु अंबिलं साउअं,
जे रत्तए से अलत्तए
जे लाउए से अलाउए
जे सुंभए से कुसुंभए
आलवंते विवलीअभासए
से त्तं पडिवक्खपएणं।

प्र० (५) से किं तं पाहएणयाए ?

उ० पाहएणयाए–
असोगवणे सत्तवएणवणे
चंपगवणे चूअवणे
नागवणे पुन्नागवणे
उच्छुवणे दक्खवणे सालिवणे।
से त्तं पाहएणयाए।

प्र० (६) से किं तं अणाइ-सिद्धंतेणं ?

उ० अणाइसिद्धंतेणं–
धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए
जीवत्थिकाए, पुग्गलत्थिकाए, अद्धासमए।
से त्तं अणाइयसिद्धंतेणं।

प्र० (७) से किं तं नामेणं ?

उ० नामेणं–
पिउ-पिआमहस्स नामेणं उन्नामिज्जइ।
से त्तं नामेणं।

प्र० (८) से किं तं अवयवेणं–

उ० अवयवेणं–

सिंगी सिही विसाणी, दाढी पक्खी खुरी नही वाली ।
दुपय-चउप्पय-बहुप्पया, नंगुली केसरी काउही ॥१॥
परिअरबंधेण भडं जाणिज्जा, महिलिअं निवसणेणं ।
सित्थेणं दोणवायं, कविं च इक्काए गाहाए ॥२॥

से त्तं अवयवेणं ।

प्र० (९) से किं तं संजोएणं ?

उ० संजोगे चउव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ दव्वसंजोगे २ खेत्तसंजोगे
३ कालसंजोगे ४ भावसंजोगे ।

प्र० (१) से किं तं दव्वसंजोगे ?

उ० दव्वसंजोगे तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ सचित्ते २ अचित्ते ३ मीसए ।

प्र० (१) से किं तं सचित्ते ?

उ० सचित्ते–

गोहिं गोमिए
महिसीहिं महिसए
उरणीहिं उरणीए
उट्टीहिं उट्टीवाले
से त्तं सचित्ते ।

प्र० (२) से किं तं अचित्ते ?

उ० अचित्ते–
छत्तेणं छत्ती
दंडेणं दंडी
पडेणं पडी
घडेणं घडी
कडेणं कडी
से त्तं अचित्ते ।

प्र० (३) से किं तं मीसए ?

उ० मीसए–
हलेणं हालिए
सगडेणं सागडिए
रहेणं रहिए
नावाए नाविए
से त्तं मीसए ।
से त्तं दव्वसंजोगे ।

प्र० (४) से किं तं खेत्तसंजोगे ?

उ० खेत्तसंजोगे–
भारहे एरवए
हेमवए एरण्णवए
हरिवासए रम्मगवासए
देवकुरुए उत्तरकुरुए
पुव्वविदेहए अवरविदेहए ।

अहवा—

मागहे मालवए
सोरट्ठए मरहट्ठए कुंकणए।
से त्तं खेत्तसंजोगे।

प्र० (३) से किं तं कालसंजोगे ?

उ० कालसंजोगे—

१ सुसमसुसमाए २ सुसमाए
३ सुसमदूसमाए ४ दूसमसुसमाए
५ दूसमाए ६ दूसमदूसमाए।

अहवा—

१ पावसए २ वासारत्तए ३ सरदए
४ हेमंतए ५ वसंतए ६ गिम्हए।
से त्तं कालसंजोगे।

प्र० (४) से किं तं भावसंजोगे ?

उ० भावसंजोगे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ पसत्थे अ २ अपसत्थे अ।
से किं तं पसत्थे ?
पसत्थे—
नाणेणं नाणी
दंसणेणं दंसणी
चरित्तेणं चरित्ती
से त्तं पसत्थे।

प्र० से किं तं अपसत्थे ?

उ० अपसत्थे–
कोहेणं कोही
माणेणं माणी
मायाए मायी
लोहेणं लोही
से त्तं अपसत्थे।
से त्तं भावसंजोगे।
से त्तं संजोएणं।

प्र० (१०) से किं तं पमाणेणं ?

उ० पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ नाम-प्पमाणे २ ठवणा-प्पमाणे
३ दव्व-प्पमाणे ४ भाव-प्पमाणे।

प्र० से किं तं नाम-प्पमाणे ?

उ० नामप्पमाणे–
जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा
जीवाण वा अजीवाण वा
तदुभयस्स वा तदुभयाण वा
'पमाणे' त्ति नामं कज्जइ,
से त्तं णामप्पमाणे।

प्र० से किं तं ठवणा-प्पमाणे ?

उ० ठवणा-प्पमाणे सत्तविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

गाहा— णक्खत्त[1]-देवय[2]-कुले[3] पासंड[4]गणे[5] अ जीविआहेउं[6] ।
आभिप्पाइअणामे[7] ठवणानामं तु सत्तविहं ॥

प्र० (१) से किं तं णक्खत्तणामे ?

उ० णक्खत्तणामे—

कित्तिआहिं जाए—कित्तिए, कित्तिआदिण्णे
कित्तिआधम्मे कित्तिआसम्मे
कित्तिआदेवे कित्तिआदासे
कित्तिआसेणे कित्तिआरक्खिए ।

रोहिणीहिं जाए—
रोहिणिए, रोहिणिदिन्ने
रोहिणिधम्मे रोहिणिसम्मे
रोहिणिदेवे रोहिणिदासे
रोहिणिसेणे रोहिणिरक्खिए य ।

एवं सव्वनक्खत्तेसु नामा भाणिअव्वा ।

एत्थ संगहणि-गाहाओ—

कित्तिअ[1]-रोहिणि[2]-मिगसर[3]-अद्दा[4] य पुणव्वसू[5] अ पुस्से अ[6] ।
तत्तो अ अस्सिलेसा[7] महा[8] उ दो फग्गुणीओ[9] अ[10] ॥१॥

हत्थो[11] चित्ता[12] साती[13], विसाहा[14] तह य होइ अणुराहा[15] ।
जेट्ठा[16] मूला[17] पुव्वासाढा[18], तह उत्तरा[19] चेव ॥२॥

अभिई[20] सवण[21] धणिट्ठा[22], सतभिसदा[23] दोअ होंति[24] भद्दवया[25] ।
रेवइ[26] अस्सिणि[27] भरणी[28], ऐसा नक्खत्तपरिवाडी ॥३॥

से त्तं नक्खत्तणामे ।

प्र० (२) से किं तं देवया-णामे ?

उ० देवया-णामे–

अग्गिदेवयाहिं जाए–
अग्गिए, अग्गिदिण्णे
अग्गिधम्मे अग्गिसम्मे
अग्गिदेवे अग्गिदासे
अग्गिसेणे अग्गिरक्खिए ।
एवं सव्वनक्खत्त-देवयानामा भाणिअव्वा ।

एत्थ पि संगहणिगाहाओः—

अग्गी[1]-पयावइ[2]-सोमे[3], रुद्दो[4] अदिति[5]-विहस्सई[6] सप्पे[7] ।
पिति[8]-भग[9]-अज्जम[10]-सविआ[11] तट्ठा[12] वाऊ[13] य इंदग्गी[14] ॥१॥
मित्तो[15] इंदो[16] निरई[17] आऊ[18] विस्सो[19] अ बंभ[20] विण्हू[21] अ ।
वसु[22]-वरुण[23]-अय-[24] विवद्धि[25],पूसे[26] आसे[27] जमे[28] चेव ॥

से त्तं देवयाणामे ।

प्र० (३) से किं तं कुलनामे ?

उ० कुलनामे–

उग्गे भोग्गे रायण्णे खत्तिए
इक्खागे णाए कोरव्वे ।
से त्तं कुलनामे ।

प्र० (४) से किं तं पासंडणामे ?

उ० पासंडणामे–

'समणे य पंडुरंगे भिक्खू कावालिए अ तावसए ।
परिवायगे'
से त्तं पासंडनामे ।

प्र० (५) से किं तं गणनामे ?

उ० गणनामे—

मल्ले मल्लदिण्णे
मल्लधम्मे मल्लसम्मे
मल्लदेवे मल्लदासे
मल्लसेणे मल्लरक्खिए ।
से त्तं गणनामे ।

प्र० (६) से किं तं जीविय-नामे ?

उ० जीविय-नामे—

अवकरए उक्कुरुडए उज्झिअए
कज्जवए सुप्पए ।
से त्तं जीविय-नामे ।

प्र० (७) से किं तं आभिप्पाइअ-नामे ?

उ० आभिप्पाइअ-नामे—

अंबए निंबए बकुलए
पलासए सिणए पिलुए करीरए ।
से त्तं आभिप्पाइअ-णामे ।
से त्तं ठवणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं दव्वप्पमाणे ?

उ० दव्वप्पमाणे छव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—

धम्मत्थिकाए ···जाव··· अद्धासमए ।
से त्तं दव्वप्पमाणे ।

प्र० से किं तं भावप्पमाणे ?

उ० भावप्पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सामासिए २ तद्धियए ३ धाउए ४ निरुत्तिए।

प्र० (१) से किं तं सामासिए ?

उ० सामासिए–सत्त समासा भवंति,
तं जहा—

गाहा– दंदे[1] अ बहुव्वीही[2], कम्मधारय[3] दिग्गु अ[4]।
तप्पुरिस[5] अव्वईभावे[6], एक्कसेसे[7] अ सत्तमे ॥ १ ॥

प्र० (१) से किं तं दंदे ?

उ० दंदे–
दन्ताश्च =ओष्ठौ च दन्तोष्ठम्
स्तनौ च =उदरं च स्तनोदरम्
वस्त्रं च = पात्रं च वस्त्रपात्रम्
अश्वाश्च = महिषाश्च अश्वमहिषम्
अहिश्च = नकुलश्च अहिनकुलम्।
से त्तं दंदे समासे।

प्र० (२) से किं तं बहुव्वीही समासे ?

उ० बहुव्वीही समासे–
फुल्ला इमंमि गिरिम्मि कुडयकयंबा
सो इमो गिरीफुल्लियकुडयकयंबो।
से त्तं बहुव्वीही समासे।

प्र० (३) से किं तं कम्मधारए ?

उ० कम्मधारए–

धवलो= वसहो धवलवसहो
किण्हो= मियो किण्हमियो
सेतो = पडो सेतपडो
रत्तो = पडो रत्तपडो
से त्तं कम्मधारए।

प्र० (४) से किं तं दिगुसमासे ?
उ० दिगुसमासे—
तिण्णि= कडुगाणि तिकडुगं
तिण्णि= महुराणि तिमहुरं
तिण्णि= गुणाणि तिगुणं
तिण्णि= पुराणि तिपुरं
तिण्णि= सराणि तिसरं
तिण्णि= पुक्खराणि तिपुक्खरं
तिण्णि= विंदुआणि तिविंदुअं
तिण्णि= पहाणि तिपहं
पंच= णईओ पंचणयं
सत्त= गया सत्तगयं
नव= तुरंगा नवतुरंगं
दस= गामा दसगामं
दस= पुराणि दसपुरं।
से त्तं दिग्गुसमासे।

प्र० (५) से किं तं तप्पुरिसे ?
उ० तप्पुरिसे—
तित्थे= कागो तित्थकागो
वणे = हत्थी वणहत्थी

वणे= वराहो वणवराहो
वणे= महिसो वणमहिसो
वणे= मयूरो वणमयूरो,
से त्तं तप्पुरिसे।

प्र० (६) से किं तं अव्वईभावे ?
उ० अव्वईभावे—
अणुगामं अणुणइयं
अणुफरिहं अणुचरिअं।
से त्तं अव्वईभावे समासे।

प्र० (७) से किं तं एगसेसे ?
उ० एगसेसे—
जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा
जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो
जहा एगो करिसावणो तहा बहवे करिसावणा
जहा बहवे करिसावणा तहा एगो करिसावणो
जहा एगो साली तहा बहवे साली
जहा बहवे साली तहा एगो साली
से त्तं एगसेसे समासे।
से त्तं सामासिए।

प्र० (२) से किं तं तद्धितए ?
उ० तद्धितए अट्ठविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

गाहा— कम्मे[1] सिप्प[2] सिलोए[3], संजोग[4] समीअवो[5] अ संजूहो[6]।
इस्सरिअ[7] अवच्चेण[8] य, तद्धितणामं तु अट्ठविहं ॥

प्र० (१) से किं तं कम्मणामे ?

उ० कम्मणामे–

तणहारए कट्ठहारए पत्तहारए,
दोसिए सोत्तिए कप्पासिए
भंडवेयालिए कोलालिए।

से त्तं कम्मणामे।

प्र० (२) से किं तं सिप्प-णामे ?

उ० सिप्प-णामे–

तुण्णाए तंतुवाए पट्टकारे उएट्टे वरुडे
मुंजकारे कट्ठकारे छत्तकारे वज्झकारे
पोत्थकारे चित्तकारे दंतकारे लेप्पकारे
सेलकारे कोट्टिमकारे

से त्तं सिप्प-नामे।

प्र० (३) से किं तं सिलोअ-नामे ?

उ० सिलोअ-नामे–

समणे माहणे सव्वातिही

से त्तं सिलोअ-नामे।

प्र० (४) से किं तं संजोग-नामे ?

उ० संजोग-नामे–

रण्णो ससुरए
रण्णो जामाउए
रण्णो साले
रण्णो भाउए
रण्णो भगणीवई

से त्तं संजोग-नामे।

प्र० (५) से किं तं समीव-नामे ?

उ० समीव-नामे–

गिरिसमीवे = णयरं गिरिणयरं
विदिसासमीवे = णयरं वेदिसंणयरं
वेन्नाए समीवे = णयरं बेन्नायडं
तगराए समीवे = णयरं तगरायडं

से त्तं समीव-नामे ।

प्र० (६) से किं तं संजूह-नामे ?

उ० संजूह-नामे–

तरंगवइक्कारे मलयवइक्कारे
अत्ताणुसट्ठिकारे विंदुकारे ।

से त्तं संजूह-नामे ।

प्र० (७) से किं तं ईसरिअ-नामे ?

उ० ईसरिअ-नामे–

राईसरे तलवरे माडंबिए कोडुंबिए
इब्भे सेट्ठी सत्थवाहे सेणावई ।

से त्तं ईसरिअ-णामे ।

प्र० (८) से किं तं अवच्च-नामे ?

उ० अवच्च-नामे–

अरिहंतमाया चक्कवट्टिमाया
बलदेवमाया वासुदेवमाया
रायमाया मुणिमाया वायगमाया ।

से त्तं अवच्चनामे ।

से त्तं तद्धियए ।

प्र० (३) से किं तं धाउए ?

उ० धाउए—

भूसत्तायां परस्मैभाषा

एध वृद्धौ

स्पर्द्ध संहर्षे

गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च,

बाधृ लोडने ।

से त्तं धाउए ।

प्र० (४) से किं तं निरुत्तिए ?

उ० निरुत्तिए—

मह्यां शेते = महिषः

भ्रमति च रौति च = भ्रमरः

मुहुर्मुहुर्लसतीति = मुसलं

कपेरिवलम्बते त्थेतिं च करोति = कपित्थं,

चिदितिकरोति खल्लं च भवति = चिक्खलं

ऊर्ध्वकर्णः = उलूकः

मेखस्य माला = मेखला ।

से त्तं निरुत्तिए ।

से त्तं भावप्पमाणे ।

से त्तं पमाणनामे ।

से त्तं दसनामे ।

से त्तं नामे ।

नाम त्ति पयं समत्तं ।

प्रमाणाधिकारः—

सु०-१३१ प्र० से किं तं पमाणे ?

उ० पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ दव्वप्पमाणे २ खेत्तप्पमाणे
३ कालप्पमाणे ४ भावप्पमाणे ।

सु०-१३२ प्र० (१) से किं तं दव्व-प्पमाणे ?

उ० दव्व-प्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ पएसनिप्फण्णे अ २ विभागनिप्फण्णे अ ।

प्र० (१) से किं तं पएसनिप्फण्णे ?

उ० पएसनिप्फण्णे—
परमाणुपोग्गले
दुपएसिए...जाव...दसपएसिए
संखिज्जपएसिए
असंखिज्जपएसिए
अणंतपएसिए ।
से त्तं पएसनिप्फण्णे ।

प्र० से किं तं विभागनिप्फण्णे ?

उ० विभागनिप्फण्णे पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ माणे २ उम्माणे ३ अवमाणे
४ गणिमे ५ पडिमाणे ।

प्र० (१) से किं तं माणे ?

उ० माणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ धन्नमाणप्पमाणे अ २ रसमाणप्पमाणे अ।

प्र० (१) से किं तं धन्नमाण-प्पमाणे ?

उ० धन्नमाण-प्पमाणे—
दो असईओ = पसइ
दो पसईओ = सेतिया
चत्तारि सेइआओ = कुलओ
चत्तारि कुलया = पत्थो
चत्तारि पत्थया = आढगं
चत्तारि आढगाइं = दोणो
सट्ठि आढयाइं = जहन्नए कुंभे
असीइ आढयाइं = मज्झिमए कुंभे
आढयसयं = उक्कोसए कुंभे
अट्ठ य आढयसइए = वाहे।

प्र० एएणं धन्नमाणपमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं धण्णमाणपमाणेणं
मुत्तोली-मुख-इदुर-अलिंद-ओचारसंसियाणं धण्णाणं
धण्णमाणप्पमाणनिव्वित्तिलक्खणं भवइ।
से त्तं धण्णमाणपमाणे।

प्र० (२) से किं तं रसमाणप्पमाणे ?

उ० रसमाणप्पमाणे—

धण्णमाणप्पमाणाओ चउभागविवड्ढिए
अब्भिंतरसिहाजुत्ते रसमाणप्पमाणे विहिज्जइ,
तं जहा—

चउसट्ठिआ (४ चउपलपमाणा ।
बत्तीसिआ (८ अट्ठपलपमाणा)
सोलसिआ (१६ सोलसपलपमाणा)
अट्ठभाइआ (३२ बत्तीसपलपमाणा)
चउभाइआ (६४ चउसट्ठिपलपमाणा)
अद्धमाणी (१२८ सयाहिअ अट्ठाइसपलपमाणा)
माणी (२५६ दु सयाहिअ छप्पण्णपलपमाणा)
दो चउसट्ठिआओ = बत्तीसिआ
दो बत्तिसिआओ = सोलसिआ
दो सोलसिआओ = अट्ठभाइआ
दो अट्ठभाइआओ = चउभाइया
दो चउभाइआओ = अद्धमाणि
दो अद्धमाणीओ = माणी ।

प्र० एएणं रसमाणपमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं रसमाणेणं—
वारक-घडक-करक-कलसिअ-गागरी-
दइअ-करोडिअ-*कुंडिअ-संसियाणं रसाणं
रसमाणप्पमाण-निव्वित्तिलक्खणं भवइ ।
से त्तं रसमाणपमाणे ।
से त्तं माणे ।

* कुंडिअ दोसंसिआणं !

प्र० (२) से किं तं उम्माणे ?

उ० उम्माणे—जं णं उम्मिणिज्जइ,

तं जहा—

अद्धकरिसो करिसो, अद्धपलं पलं
अद्धतुला तुला अद्धभारो भारो ।
दो अद्धकरिसा = करिसो
दो करिसा = अद्धपलं
दो अद्धपलाइं = पलं
पंच पलसइआ = तुला
दसतुलाओ = अद्धभारो
वीसं तुलाओ = भारो ।

प्र० एएणं उम्माणपमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं उम्माणपमाणेणं पत्ताऽगर-तगर-चोअअ-कुंकुम-खंड-गुल-मच्छंडिआईणं दव्वाणं उम्माणपमाणनिव्वित्तिलक्खणं भवइ ।
से त्तं उम्माणपमाणे ।

प्र० (३) से किं तं ओमाणे ?

उ० ओमाणे—जं णं ओमिणिज्जइ,

तं जहा—

हत्थेण वा दण्डेण वा धणुक्केण वा जुगेण वा,
नालिआए वा अक्खेण वा मुसलेण वा ।

गाहा— दंड-धणु-जुग-नालिआ य, अक्ख-मुसलं च चउहत्थं ।
दसनालिअं च रज्जुं, विआण ओमाणसण्णाए ॥१॥

वत्थुम्मि हत्थमेज्जं, खित्ते दंडं धणु च पत्थम्मि ।
खायं च नालिआए, विआण ओमाणसण्णाए ॥२॥

प्र० एएणं अवमाणपमाणेणं किं पओअणं ?
उ० एएणं अवमाणपमाणेणं खाय-चिअ-रइअ-
करकचिण-कड-पड-भित्ति-परिक्खेवसंसियाणं दव्वाणं
अवमाणपमाणनिव्वित्तिलक्खणं भवइ ।
से त्तं अवमाणे ।

प्र० (४) से किं तं गणिमे ?
उ० गणिमे—जं णं गणिज्जइ,
तं जहा—
एगो दस सयं सहस्सं दससहस्साइं,
सयसहस्सं दससयसहस्साइं कोडी ।

प्र० एएणं गणिम-प्पमाणेणं किं पओअणं ?
उ० एएणं गणिम-प्पमाणेणं भितग-भिति-भत्त-वेअण-
आय-व्वयसंसिआणं दव्वाणं
गणिम-पमाणनिव्वित्तिलक्खणं भवइ ।
से त्तं गणिमे ।

प्र० से किं तं पडिमाणे ?
उ० पडिमाणे—जं णं पडिमिणिज्जइ,
तं जहा—
गुंजा कागणी निप्फावो कम्समासओ मंडलओ सुवण्णो ।
पंच गुंजाओ = कम्ममासओ
चत्तारि कागणीओ = कम्ममासओ

तिण्णि निप्फावा = कम्ममासओ
एवं चउक्को कम्ममासओ। (काकिण्यपेक्षया)
बारस कम्ममासया = मंडलओ
एवं अडयालिसंकागणीओ = मंडलओ
सोलसकम्ममासया = सुवण्णो
एवं चउसट्ठिकागणीओ = सुवण्णो।

प्र० एएणं पडिमाणप्पमाणेणं किं पओअणं ?

उ० एएणं पडिमाणप्पमाणेणं सुवण्ण-रजत-मणि-मोत्तिअ,
संख-सिल-प्पवालाईणं दव्वाणं
पडिमाणप्पमाण-निव्वित्तिलक्खणं भवइ।
से त्तं पडिमाणे।
से त्तं विभागनिप्फण्णे।
से त्तं दव्वप्पमाणे।

सु०-१३३ प्र० (प० २) से किं तं खेत्तपमाणे ?

उ० खेत्तपमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ पएसनिप्फण्णे अ २ विभागनिप्फण्णे अ।

प्र० (खे० १) से किं तं पएसनिप्फण्णे ?

उ० पएसनिप्फण्णे—
एगपएसोगाढे दुपएसोगाढे तिपएसोगाढे,
संखिज्जपएसोगाढे असंखिज्जपएसोगाढे।
से त्तं पएसनिप्फण्णे।

प्र० (खे०२) से किं तं विभागणिप्फण्णे ?

उ० विभागणिप्फण्णे—

गाहा— अंगुल-विहत्थि-रयणी, कुच्छी धणु गाउअं च बोद्धव्वं।
जोयण-सेढी-पयरं, लोगमलोगे वि य तहेव ॥

प्र० से किं तं अंगुले ?

उ० अंगुले तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ आयंगुले २ उस्सेहंगुले ३ पमाणंगुले ।

प्र० (१) से किं तं आयंगुले ?
आयंगुले—
जे णं जया मणुस्सा भवंति तेसिं णं तया
अप्पणो अंगुलेणं दुवालसअंगुलाइं मुहं,
नवमुहाइं पुरिसे पमाणजुत्ते भवइ,
दोणिए पुरिसे माणजुत्ते भवइ,
अद्धभारं तुल्लमाणे पुरिसे उम्माणजुत्ते भवइ ।

गाहाओ— माणुम्माणपमाण जुत्ता, लक्खणवंजणगुणेहिं उववेआ ।
उत्तमकुलप्पसूआ, उत्तमपुरिसा मुणेअव्वा ॥ १ ॥
होंति पुण अहियपुरिसा, अट्ठसयं अंगुलाण उव्विद्धा ।
छण्णउइ अहमपुरिसा, चउरुत्तरमज्झिमिल्ला उ ॥ २ ॥
हीणा वा अहिया वा, जे खलु सरसत्तसारपरिहीणा ।
ते उत्तमपुरिसाणं, अवस्स पेसत्तणमुवेंति ॥ ३ ॥

एएणं अंगुलपमाणेणं
छ अंगुलाइं = पाओ
दो पाया = विहत्थी
दो विहत्थीओ = रयणी
दो रयणीओ = कुच्छी

दो कुच्छीओ = दंडं धणू जुगं नालिआ अक्खे मुसले।
दो धणुसहस्साइं = गाउअं
चत्तारिगाउआइं = जोअणं।

प्र० एएणं आयंगुलपमाणेणं किं पओअणं ?
उ० एएणं आयंगुलेणं जे णं जया मणुस्सा हवंति,
तेसिं णं तया णं आयंगुलेणं,
अगड-तलाग-दह-नदी-वावि-पुक्खरिणी-दीहिय-
गुंजालिआओ सरा सरपंतिआओ सरसरपंतिआओ
बिलपंतिआओ,
आरामुज्जाण-काणण-वण-वणसंड-वणराईओ,
देउल-सभा-पवा-थूभ-खाइअ-परिहाओ
पागार-अट्टालय-चरिअ-दार-गोपुर-पासाय-घर-
सरण-लयण-आवण-सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-
चउम्मुह-महापह-पह-सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्ली-
थिल्ली-सिविअ-संदमाणिआओ,
लोही-लोहकडाह-कडिल्लय-भंडमत्तोवगरणमाईणि
अज्जकालिआइं च जोअणाइं मविज्जंति।
से समासओ तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ सूई अंगुले २ पयरंगुले ३ घणंगुले।
अंगुलायया एगपएसिया सेढी सूइ अंगुले
सूइ सूइगुणिआ पयरंगुले
पयरं सूइए गुणिअं घणंगुले।

प्र० एएसिं णं भंते !
सूइअंगुल-पयरंगुल-घणंगुलाणं कयरे कयरेहिंतो ।
अप्पा वा बहुया वा
तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

उ० सव्वत्थोवे सूइअंगुले
पयरंगुले असंखेज्जगुणे
घणंगुले असंखिज्जगुणे ।
से त्तं आयंगुले ।

प्र० (१) से किं तं उस्सेहंगुले ?
उ० उस्सेहंगुले अणेगविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

गाहा— परमाणू तसरेणू, रहरेणू अग्गयं च वालस्स ।
लिक्खा जूआ य जवो, अट्ठगुण विवड्ढिआ कमसो ॥१॥

प्र० से किं तं परमाणू ?
उ० परमाणू दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सुहुमे अ २ ववहारिए अ ।
तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे ।
(प०२) तत्थ णं जे से ववहारिए से णं अणंताणंताणं
सुहुमपोग्गलाणं समुदयसमिति-समागमेणं—
ववहारिए परमाणुपोग्गले निप्फज्जइ ।

प्र० से णं भंते ! असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?
उ० हन्ता, ओगाहेज्जा ।

प्र० से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
उ० नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ।

प्र० से णं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
उ० हंता, वीइवएज्जा।

प्र० से णं भंते ! तत्थ डहेज्जा ?
उ० नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ।

प्र० से णं भंते !
पुक्खरसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
उ० हंता, वीइवएज्जा।

प्र० से णं तत्थ उदउल्ले सिया ?
उ० नो इणट्ठे समट्ठे, णो खलु तत्थ सत्थं कमइ।

प्र० से णं भंते !
गंगाए महाणईए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?
उ० हंता हव्वमागच्छेज्जा।

प्र० से णं तत्थ विणिघायमावज्जेज्जा ?
उ० नो इणट्ठे समट्ठे ! नो खलु तत्थ सत्थं कमइ।

प्र० से णं भंते ! उदगावत्तं वा उदगबिंदु वा ओगाहेज्जा ?
उ० हंता, ओगाहेज्जा।

प्र० से णं तत्थ कुच्छेज्जा वा ? परियावज्जेज्ज वा ?
उ० णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ।

गाहा– सत्थेण सुतिक्खेण वि, छित्तुं भेत्तुं च जं किर न सक्का।
तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आइं पमाणाणं ॥ १ ॥

अणंताणं ववहारिअ-परमाणुपोग्गलाणं
समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा–
उसण्हसण्हिआ इ वा, सण्हसण्हिआ इ वा,
उड्ढरेणू इ वा, तसरेणू इ वा, रहरेणू इ वा।
अट्ठ उसण्हसण्हिआओ सा एगा = सण्हसण्हिआ
अट्ठ सण्हसण्हिआओ सा एगा = उड्ढरेणू
अट्ठ उड्ढरेणुओ सा एगा = तसरेणू
अट्ठ तसरेणूओ सा एगा = रहरेणू
अट्ठ रहरेणूओ = देवकुरु-उत्तरकुरुणं–
मणुआणं से एगे वालग्गे,
अट्ठ देवकुरु-उत्तरकुरूणं मणुआणं वालग्गा =
हरिवास-रम्मगवासाणं मणुआणं से एगे वालग्गे
अट्ठ हरिवास-रम्मगवासाणं मणुस्साणं वालग्गा =
हेमवय-हेरण्णवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे
अट्ठ हेमवय.हेरण्णवयाणं मणुस्साणं वालग्गा =
पुव्वविदेह-अवरविदेहाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे
अट्ठ पुव्वविदेह-अवरविदेहाणं मणुस्साणं वालग्गा =
भरह-एरवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे
अट्ठ भरह-एरवयाणं मणुस्साणं वालग्गा =
सा एगा लिक्खा,
अट्ठ लिक्खाओ = सा एगा जूआ
अट्ठ जूआओ = से एगे जवमज्झे
अट्ठ जवमज्झे = से एगे अंगुले।

एएणं अंगुलाण पमाणेणं

छ अंगुलाइं = पादो
बारस अंगुलाइं = विहत्थी
चउवीसं अंगुलाइं = रयणी
अडयालीसं अंगुलाइं = कुच्छी
छन्नवइ अंगुलाइं = से एगे दंडे इवा, धणू इ वा
जुगेइ वा, नालिआइ वा
अक्खेइ वा, मुसलेइ वा ।
एएणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं = गाउअं
चत्तारि गाउआइं = जोअणं ।

प्र० एएणं उस्सेहंगुलेणं किं पओअणं ?
उ० एएणं उस्सेहंगुलेणं णेरइय-तिरिक्खजोणिअ
मणुस्स-देवाणं सरीरोगाहणा मविज्जइ ।

प्र० णेरइआणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ भवधारणिज्जा अ २ उत्तरवेउव्विआ य ।
तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा णं—
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।
उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं ।
तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा—
जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं ।
उक्कोसेणं धणुसहस्सं ।

प्र० रयणप्पहाए पुढवीए नेरइआणं भंते !
के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पएणत्ता,
तं जहा—
१ भवधारणिज्जा य २ उत्तरवेउव्विआ य ।
तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा
जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं
उक्कोसेणं–सत्तधणूइं तिण्णिरयणीओ छच्च अंगुलाइं ।
तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विआ सा
जहएणेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं पएणरसधणूइं दोण्णि रयणीओ–
बारस अंगुलाइं ।

प्र० *सक्करप्पहापुढवीए णेरइआणं भंते !
के महालिआ सरीरोगाहणा पएणत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पएणत्ता,
तं जहा—
१ भवधारणिज्जा य २ उत्तरवेउव्विया य ।
तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा
जहएणेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं पएणरसधणूइं,
दुण्णि रयणीओ बारसअंगुलाइं ।
तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा
जहएणेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं एकतीसं धणूइं इक्करयणी अ ।

* एवं सव्वाणं दुविहा भवधारणिज्जा–

प्र० वालुअप्पहापुढवीए णेरइयाणं भंते !
के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ भवधारणिज्जा य २ उत्तरवेउव्विया य।
तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं एकतीसं धणूइं इक्करयणी अ।
तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा
जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं बासट्ठिधणूइं दो रयणीओ अ।

प्र० एवं सव्वासिं पुढवीणं पुच्छा भाणिअव्वा।
उ० पंकप्पहाए पुढवीए भवधारणिज्जा
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं बासट्ठि धणूइं दो रयणीओ।
उत्तरवेउव्विया—
जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं पणवीसं धणुसयं।

प्र० धूमप्पहाए भवधारणिज्जा
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं पणवीसं धणुसयं।
उत्तरवेउव्विया—
जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं।

उ० तमाए भवधारणिज्जा
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं ।
उत्तरवेउव्विया—
जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं
प्र० तमतमाए पुढवीए नेरइयाणं भंते !
के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ भवधारणिज्जा य २ उत्तरवेउव्विया य ।
तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं ।
तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा
जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं धणुसहस्साइं ।
प्र० असुरकुमाराणं भंते !
के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ भवधारणिज्जा य २ उत्तरवेउव्विया य ।
तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं सत्तरयणीओ,

तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा
जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं ।
एवं असुरकुमारगमेणं जाव--थणियकुमाराणं भाणिअव्वं ।

प्र० पुढविकाइआणं भंते !
के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।
एवं सुहुमाणं ओहिआणं
अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं च भाणिअव्वं ।
एवं जाव बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं भाणिअव्वं ।

प्र० वणस्सइकाइयाणं भंते !
के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं ।
सुहुमवणस्सइकाइयाणं ओहिआणं–
अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं तिण्हं पि
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।
बायरवणस्सइकाइयाणं–ओहिआणं
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं
अपज्जत्तगाणं–
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

पज्जत्तगाणं—
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं सातिरेगं जोअणसहस्सं ।

प्र० बेइंदिआणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं बारसजोअणाइं
अपज्जत्तगाणं—
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।
पज्जत्तगाणं—
जहण्णेण अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं बारसजोअणाइं ।

प्र० तेइंदियाणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं तिण्णि गाउआइं ।
अपज्जत्तगाणं—
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।
पज्जत्तगाणं—
जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं तिण्णि गाउआइं ।

प्र० चउरिंदिआणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं चत्तारि गाउआइं ।

अपज्जत्तगाणं—

जहण्णेणं उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं।

पज्जत्तगाणं—

जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं।

प्र० पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते !
के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोयणसहस्सं।

प्र० जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा—

उ० गोयमा ! एवं चेव।

प्र० सम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोयणसहस्सं।

प्र० अपज्जत्तगसम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्ख-
जोणियाणं पुच्छा—

जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं।

प्र० पज्जत्तगसंमुच्छिमजलयरपंचिंदिय-
तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोयणसहस्सं।

प्र० सम्मुच्छिम-मणुस्साणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं तिण्णि गाउआइं ।

वाणमंतराणं भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विआ य
जहा असुरकुमाराणं तहा भाणिअव्वा ।
जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाण वि ।

प्र० सोहम्मे कप्पे देवाणं भंते !
के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ भवधारणिज्जा अ २ उत्तरवेउव्विआ य ।
तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा—
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं सत्तरयणीओ ।
तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा—
जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं ।
उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं ।

एवं ईसाणकप्पे वि भाणिअव्वं
जहा सोहम्मकप्पाणं देवाणं पुच्छा
तहा सेसकप्पदेवाणं पुच्छा भाणिअव्वा,
जाव—अच्चुअकप्पो ।

सणंकुमारे भवधारणिज्जा—
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं छ रयणीओ ।
उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे तहा भाणिअव्वा ।
जहा सणंकुमारे तहा माहिंदे वि भाणिअव्वा ।

बंभलंतगेसु भवधारणिज्जा—
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं पंचरयणीओ
उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे ।

महासुक्क-सहस्सारेसु भवधारणिज्जा—
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ ।
उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे—
आणत-पाणत-आरण-अच्चुएसु चउसु वि
भवधारणिज्जा—
जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं तिण्णि रयणीओ ।
उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे ।

प्र० गेवेज्जगदेवाणं भंते !
के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरगे पण्णत्ते,
से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं दुण्णि रयणीओ।

प्र० अणुत्तरोववाइअदेवाणं भंते !
के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरगे पण्णत्ते,
से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं एगा रयणीउ।
से समासओ तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सूइअंगुले २ पयरंगुले ३ घणंगुले।
एगंगुलायया एगपएसिआ सेढी सूइअंगुले।
सूई सूईए गुणिआ पयरंगुले।
पयरं सूईए गुणियं घणंगुले।

प्र० एएसिं णं सूइअंगुल-पयरंगुल-घणंगुलाणं
कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा बहुए वा,
तुल्ले वा विसेसाहिए वा ?

उ० सव्वत्थोवे सूइ-अंगुले
पयरंगुले असंखेज्जगुणे
घणंगुले असंखेज्जगुणे।
से त्तं उस्सेहंगुले।

प्र० से किं तं पमाणंगुले ?

उ० पमाणंगुले—
एगमेगस्स रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए

कागणीरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए
अहिगरण-संठाणसंठिए पण्णत्ते,
तस्स णं एगमेगा कोडी उस्सेहंगुलविक्खंभा
तं समणस्स भगवओ महावीरस्स अद्धंगुलं,
तं सहस्सगुणं पमाणंगुलं भवइ ।

एएणं अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाइं = पादो
दुवालसअंगुलाइं = विहत्थी
दो विहत्थीओ = रयणी
दो रयणीओ = कुच्छी
दो कुच्छीओ = धणू
दो धणुसहस्साइं = गाउअं
चत्तारिगाउआइं = जोअणं ।

प्र० एएणं पमाणंगुलेणं किं पओअणं ?
उ० एएणं पमाणंगुलेणं
पुढवीणं कंडाणं पातालाणं
भवणाणं भवणपत्थडाणं
निरयाणं निरयावलीणं निरयपत्थडाणं
कप्पाणं विमाणाणं विमाणावलीणं विमाणपत्थडाणं
टंकाणं कूडाणं सेलाणं सिहरीणं
पब्भाराणं विजयाणं वक्खाराणं
वासाणं वासहराणं वासहरपव्वयाणं
*वेलाणं वेइयाणं दाराणं तोरणाणं
दीवाणं समुद्दाणं,

* वलयाणं ।

प्र० गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं
उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-जलचर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-जलयरपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोअणसहस्सं ।

प्र० चउप्पय-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं छ गाउआइं ।

प्र० सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयरपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं ।

प्र० अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयरपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयरपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं ।

प्र० गब्भवक्कंतिय-चउप्पय-थलयरपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं छ गाउआइं ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयरपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पय-थलयरपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं छ गाउआइं ।

प्र० उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोअणसहस्सं ।

प्र० सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोअणपुहुत्तं

प्र० अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोअणपुहुत्तं ।

प्र० गब्भवक्कंतिअ-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोअणसहस्सं ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं जोअणसहस्सं ।

प्र० भुअपरिसप्प-थलयरपंचिंदियाणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं ।

प्र० सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियाणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं ।

प्र० अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयराणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्पाणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं ।

प्र० गब्भवक्कंतिय-भुअपरिसप्प-थलयराणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं ।

प्र० अपज्जत्तग-भुअपरिसप्पाणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-भुअपरिसप्पाणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं गाउअपुहुत्तं ।

प्र० खहयर-पंचिंदियपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं ।

सम्मुच्छिम-खहयराणं जहा भुअग-परिसप्प-सम्मुच्छियाणं
तिसु वि गमेसु, तहा भाणिअव्वं ।

प्र० गब्भवक्कंतिअ-खहयरपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-खहयरपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-खहयरपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं
उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं ।

एत्थ संगहणिगाहाओ हवंति,
तं जहा—

जोअणसहस्स-गाउयपुहुत्त, तत्तो अ जोअणपुहुत्तं ।
दोण्हं तु धणुपुहुत्तं, सम्मुच्छिमे होइ उच्चत्तं ॥ १ ॥
जोअणसहस्स छग्गाउआइं, तत्तो अ जोयणसहस्सं ।
गाउअपुहुत्तभुअगे, पक्खीसु भवे धणुपुहुत्तं ॥ २ ॥

प्र० मणुस्साणं भंते ! के महालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं तिण्णि गाउआइं ।

आयाम-विक्खंभोच्चत्तोव्वेह परिक्खेवा मविज्जंति।
से समासओ तिविहे पण्णत्ते,
तंजहा—
१ सेढी अंगुले। २ पयरंगुले। ३ घणंगुले।
असंखेज्जाओ जोयण-कोडाकोडीओ सेढी,
सेढी सेढीए गुणिया पयरं,
पयरं सेढीए गुणियं लोगो
संखेज्जएणं लोगो गुणिओ संखेज्जा लोगा,
असंखेज्जएणं लोगो गुणिओ असंखेज्जा लोगा,
अणंतेणं लोगो गुणिओ अणंता लोगा।

प्र० एएसिं णं सेढीअंगुल-पयरंगुल-घणंगुलाणं
कयरे कयरेहिंतो
अप्पे वा बहुए वा
तुल्ले वा विसेसाहिए वा?
उ० सव्वत्थोवे सेढीअंगुले
पयरंगुले असंखेज्जगुणे
घणंगुले असंखिज्जगुणे
से त्तं पमाणंगुले।
से त्तं विभागनिप्फण्णे।
से त्तं खेत्तप्पमाणे।

सु०-१३४ प्र० से किं तं कालप्पमाणे?
उ० कालप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ पएसनिप्फण्णे अ २ विभागनिप्फण्णे अ।

सु०-१३५ प्र० से किं तं पएसनिप्फएणे ?

उ० पएसनिप्फएणे–

एगसमयट्ठिईए दुसमयट्ठिईए तिसमयट्ठिईए
...जाव...दससमय-ट्ठिईए,
संखिज्जसमयट्ठिईए असंखिज्जसमयट्ठिईए,
से तं पएस-निप्फएणे ।

सु०-१३६ प्र० से किं तं विभाग-णिप्फएणे ?

उ० विभाग-णिप्फएणे–

गाहा– "समयावलिअ-मुहुत्ता, दिवस-अहोरत्त पक्ख-मासा य ।
संवच्छर-जुग-पलिआ, सागर ओसप्पि-परिअट्टा ॥१॥"

सु०-१३७ प्र० से किं तं समए ?

समयस्स णं परूवणं करिस्सामि–
से जहानामए तुएणागदारए सिआ,
तरुणे वलवं जुगवं जुवाणे,
अप्पातंके थिरग्गहत्थे,
दढ-पाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरू परिणते,
तल-जमल-जुयल-परिघ-णिभ-बाहू,
चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिअ-समाहत-निचित-गत्तकाए
उरस्सवलसमएणागए,
लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे,
छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले
मेहावी निउणे निउणसिप्पोवगए
एगां महतीं पडसाडियं वा पट्टसाडियं वा गहाय
सयराहं हत्थमेत्तं ओसारेज्जा,

तत्थ चोअए पण्णवयं एवं वयासी–
जेणं कालेणं तेणं तुण्णागदारए णं
तीसे पडसाडिआए वा पट्टसाडिआए वा
सयराहं हत्थमेत्ते ओसारिए
से समए भवइ ?
उ० नो इणट्ठे समट्ठे ।
कम्हा ?
जम्हा संखेज्जाणं तंतूणं समुदय-समिति-समागमेणं
एगा पडसाडिआ निप्फज्जइ ।
उवरिल्लम्मि तंतुम्मि अच्छिण्णे
हिट्ठिल्ले तंतू न छिज्जइ ।
अण्णम्मि काले उवरिल्ले तंतू छिज्जइ
अण्णम्मि काले हिट्ठिल्ले तंतू छिज्जइ
तम्हा से समए न भवइ ,
एवं वयंतं पण्णवयं चोयए एवं वयासी–
प्र० जेणं कालेणं तेणं तुण्णागदारए णं
तीसे पडसाडिआए वा पट्टसाडियाए वा
उवरिल्ले तंतू छिण्णे से समए भवइ ?
उ० न भवइ ?
कम्हा ?
जम्हा संखेज्जाणं पम्हाणं समुदय-समिति-समागमेणं
एगे तंतू निप्फज्जइ,
उवरिल्ले पम्हे अच्छिण्णे हिट्ठिल्ले पम्हे न छिज्जइ
अण्णम्मि काले उवरिल्ले पम्हे छिज्जइ
अण्णम्मि काले हेट्ठिल्ले पम्हे छिज्जइ,
तम्हा से समए न भवइ ।

एवं वयंतं पण्णवयं चोअए एवं वयासी—

प्र० जेणं कालेणं तेणं तुण्णागदारए णं
तस्स तंतुस्स उवरिल्ले पम्हे छिण्णे
से समए भवइ ?

उ० न भवइ ।
कम्हा ?
जम्हा अणंताणं संघायाणं समुदय-समिति समागमेणं
एगे पम्हे निष्फज्जइ,
उवरिल्ले संघाए अविसंघाइए
हेट्ठिले संघाए न विसंघाइज्जइ,
अण्णम्मि काले उवरिल्ले संघाए विसंघाइज्जइ
अण्णम्मि काले हिट्ठिल्ले संघाए विसंघाइज्जइ,
तम्हा से समए न भवइ ।

एत्तो वि अ णं सुहुमतराए समए पण्णत्ते समणाउसो !
असंखिज्जाणं समयाणं समुदय-समिति-समागमेणं
सा एगा 'आवलिअ' त्ति वुच्चइ,
संखिज्जाओ आवलिआओ = ऊसासो
संखिज्जाओ आवलिआओ = नीसासो ।

गाहाओ— हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स जंतुणो ।
एगे उसासनीसासे, एस पाणुत्ति वुच्चइ ॥ १ ॥
सत्तपाणूणि से थोवे, सत्त थोवाणि से लवे ।
लवाणं सत्तहत्तरीए, एस मुहुत्ते वि आहिए ॥ २ ॥
तिण्णि सहस्सा सत्त य, सयाइं तेहुत्तरिं च ऊसासा ।
एस मुहुत्तो भणिओ, सव्वेहिं अणंतनाणीहिं ॥ ३ ॥

एएणं मुहुत्तपमाणेणं तीसं मुहुत्ता = अहोरत्तं,
पण्णरस अहोरत्ता = पक्खो,
दो पक्खा = मासो,
दो मासा = उऊ,
तिण्णि उऊ = अयणं,
दो अयणाइं = संवच्छरे,
पंच संवच्छराइं = जुगे,
वीसं जुगाइं = वाससयं,
दस वाससयाइं = वास-सहस्सं,
सयं वास-सहस्साणं = वास-सयसहस्सं,
चोरासीइं वाससय-सहस्साइं = से एगे पुव्वंगे,
चउरासीइं पुव्वंग सयसहस्साइं = से एगे पुव्वे
चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं = से एगे तुडिअंगे,
चउरासीइं तुडिअंग सयसहस्साइं = से एगे तुडिए,
चउरासीइं तुडिअ-सयसहस्साइं = से एगे अडडंगे,
चउरासीइं अडडं-सयसहस्साइं = से एगे अडडे,

एवं अववंगे, अववे
हुहुअंगे, हुहुए
उप्पलंगे, उप्पले
पउमंगे, पउमे
नलिणंगे, नलिणे
अच्छनिउरंगे अच्छनिउरे
अउअंगे अउए
पउअंगे पउए
णउअंगे णउए

चूलिअंगे चूलिया
सीसपहेलियंगे
चउरासीइं सीसपहेलियंग-सयसहस्साइं =
सा एगा सीसपहेलिआ
एयावया चेव गणिए
एयावया चेव गणिअस्स विसए
एत्तोऽवरं ओवमिए पवत्तइ ।

सु०-१३८ प्र० से किं तं ओवमिए ?
उ० ओवमिए दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ पलिओवमे य २ सागरोवमे य ।

प्र० से किं तं पलिओवमे ?
उ० पलिओवमे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ उद्धारपलिओवमे
२ अद्धापलिओवमे
३ खेत्तपलिओवमे अ ।

प्र० से किं तं उद्धारपलिओवमे ?
उ० उद्धारपलिओवमे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सुहुमे अ २ ववहारिए य ।
तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे ।
तत्थ णं जे से ववहारिए—
से जहानामए पल्ले सिया,

जोयणं आयामविक्खंभेणं
जोअणं उड्ढं उच्चत्तेणं
तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं
से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिअ···जाव···
उक्कोसेणं सत्तरत्तरूढाणं संसट्ठे संनिचिते
भरिए वालग्गकोडीणं,
ते णं वालग्गा नो अग्गी डहेज्जा
नो वाऊ हरेज्जा
नो कुहेज्जा
नो पलिविद्धंसिज्जा
नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा
तओ णं समए समए एगमेगं वालग्गं अवहाय
जावइएणं कालेणं से पल्ले
खीणे नीरए निल्लेवे णिट्ठिए भवइ
से तं ववहारिए उद्धार-पलिओवमे

गाहा—एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
(२) तं ववहारियस्स उद्धार सागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥

प्र० एएहिं वावहारिअ-उद्धारपलिओवम सागरोवमेहिं
किं पओअणं ?
उ० एएहिं वावहारिअ-उद्धार पलिओवम सागरोवमेहिं—
णत्थि किंचिप्पओअणं, केवलं पण्णवणा पण्णविज्जइ।
से त्तं वावहारिए उद्धार-पलिओवमे।

प्र० से किं तं सुहुमे उद्धार पलिओवमे ?
उ० सुहुमे उद्धार पलिओवमे—

से जहानामए पल्ले सिआ,
जोअणं आयाम-विक्खंभेणं
जोअणं उव्वेहेणं
तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं,
से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिअ उक्कोसेणं
सत्त रत्त परूढाणं संसट्ठे संनिचिते भरिए वालग्ग कोडीणं
तत्थ णं एगमेगे वालग्गे असंखिज्जाइं खंडाइंकज्जइ,
ते णं वालग्गा दिट्ठि-ओगाहणाओ असंखेज्जइभागमेत्ता
सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाउ असंखेज्जगुणा,
ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा
णो वाऊ हरेज्जा,
णो कुहेज्जा,
णो पलिविद्धंसिज्जा,
णो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा,
तओ णं समए समए एगमेगं वालग्गं अवहाय
जावइएणं कालेणं से पल्ले
खीणे नीरए निल्लेवे निट्ठिए भवइ,
से त्तं सुहुमे उद्धार-पलिओवमे ।

गाहा— एएसिं पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिआ ।
तं सुहुमस्स उद्धारसागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥३॥

प्र० एएहिं सुहुमउद्धार-पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पओअणं ?
उ० एएसिं सुहुम-उद्धार-पलिओवम-सागरोवमेहिं
दीवसमुद्दाणं उद्धारो घेप्पइ ।

प्र० केवइआ णं भंते ! दीवसमुद्दा उद्धारेणं पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जावइआणं अड्ढाइज्जाणं
उद्धारसागरोवमाणं उद्धारसमया,
एवइयाणं दीवसमुद्दा उद्धारेणं पण्णत्ता ।
से त्तं सुहुमे उद्धारपलिओवमे ।
से त्तं उद्धारपलिओवमे ।

प्र० से किं तं अद्धापलिओवमे ?

उ० अद्धापलिओवमे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सुहुमे अ २ वावहारिए अ ।
तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे ।
तत्थ णं जे से वावहारिए—
से जहानामए पल्ले सिया
जोअणं आयामविक्खंभेणं
जोअणं उव्वेहेणं
तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं,
से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिअ'''जाव'''
भरिए वालग्गकोडीणं,
ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा
'''जाव'''नो पलिविद्धंसिज्जा
नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा
तओ णं वाससए वाससए
एगमेगं वालग्गं अवहाय
जावइएणं कालेणं से पल्ले

खीणे नीरए निल्लेवे णिट्ठिए भवइ
से तं वावहारिए अद्धापलिओवमे

(४) गाहा—एएसिं पल्लाणं, कोडाकोडी भविज्जदसगुणिया ।
तं ववहारिअस्स अद्धासागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥

प्र० एएहिं वावहारिअ-अद्धापलिओवम-सागरोवमेहिं
किं पओअणं ?

उ० एएहिं वावहारिएहिं-अद्धापलिओवम-सागरोवमेहिं—
णत्थि किंचिप्पओअणं,
केवलं पण्णवणा पण्णविज्जइ ।
से त्तं वावहारिए अद्धापलिओवमे ।

प्र० से किं तं सुहुमे अद्धापलिओवमे ?

उ० सुहुमे अद्धापलिओवमे—
से जहाणामए पल्ले सिया,
जोअणं आयामेणं
जोअणं उव्वेहेणं
तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं,
से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिए'''जाव'''
भरिए वालग्गकोडीणं,
तत्थ णं एगमेगे वालग्गे असंखिज्जाइं खंडाइं कज्जइ,
ते णं वालग्गा दिट्ठि-ओगाहणाओ असंखेज्जइभागमेत्ता
सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाओ असंखेज्जगुणा,
ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा
'''जाव'''नो पलिविद्धंसिज्जा,
नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा,

तओ णं वाससए वाससए एगमेगं वालग्गं अवहाय
जावइएणं कालेणं से पल्ले
खीणे नीरए निल्लेवे निट्ठिए भवइ
से त्तं सुहुमे अद्धापलिओवमे ।

गाहा— एएसिं पल्लाणं, कोडाकोडी भवेज्ज दसगुणिआ ।
तं सुहुमस्स अद्धासागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥५॥

प्र० एएहिं सुहुमेहिं अद्धापलिओवम-सागरोवमेहिं किं पओअणं ?

उ० एएसिं सुहुमेहिं अद्धापलिओवम-सागरोवमेहिं
णेरइअ-तिरिक्खजोणिअ-मणुस्स-देवाणं आउयं मविज्जइ ।

सु०-१३९ प्र० णेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवास-सहस्साइं
उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।

प्र० रयणप्पहा-पुढवि-णेरइयाणं भंते !
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवास-सहस्साइं
उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ।

प्र० अपज्जत्तग-रयणप्पहापुढवि-णेरइयाणं भंते !
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र० पज्जत्तग-रयणप्पहापुढवि-णेरइयाणं भंते !
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवास-सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं
उक्कोसेणं एगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं ।

प्र० सक्करप्पहापुढवि-णेरइयाणं भंते !
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं एगं सागरोवमं
उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ।

एवं सेसपुढवीसु पुच्छा भाणिअव्वा ।

प्र०-उ० वालुअप्पहापुढवि-णेरइयाणं-
जहण्णेणं तिण्णि सागरोममाइं
उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ।

प्र०-उ० पंकप्पहापुढवि-णेरइयाणं-
जहण्णेणं सत्तसागरोवमाइं
उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ।

प्र०-उ० धूमप्पभापुढवि-णेरइयाणं-
जहण्णेणं दससागरोवमाइं
उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ।

प्र०-उ० तमप्पहापुढवि-णेरइयाणं-
जहण्णेणं सत्तरससागरोवमाइं
उक्कोसेणं बावीससागरोवमाइं ।

प्र० तमतमापुढवि-णेरइयाणं भंते !
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।

प्र० असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं,
उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं ।

प्र० असुरकुमार-देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं,
उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं ।

प्र० नागकुमाराणं भंते ! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं,
उक्कोसेणं देसूणाइं दुण्णि पलिओवमाइं ।

प्र० नागकुमारीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं,
उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं ।

एवं जहा णागकुमारदेवाणं देवीणं य,
तहा... जाव... थणियकुमाराणं देवाणं देवीणं य भाणियव्वं ।

प्र० पुढवीकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ।

प्र० सुहुम-पुढवीकाइयाणं
ओहियाणं
अपज्जत्तयाणं
पज्जत्तयाणं य ।
तिसु वि पुच्छा—

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र० बादर पुढवि-काइयाणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ।
प्र० अपज्जत्तग-बायर-पुढवि-काइयाणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।
प्र० पज्जत्तग-बायर-पुढवि-काइयाणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कसेणं बावीसं वास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।
एवं सेसकाइयाणं वि पुच्छावयणं भाणियव्वं ।
प्र०-उ० आउकाइयाणं—
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं ।
प्र०-उ० सुहुमआउकाइयाणं ओहिआणं
अपज्जत्तगाणं
पज्जत्तगाणं तिण्हवि—
जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र०-उ० बादर-आउकाइयाणं जहा ओहिआणं,
प्र०-उ० अपज्जत्तग-बादर-आउकाइयाणं—
जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।
पज्जत्तग-बादर आउकाइयाणं—
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं सत्त-वास-सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र०-उ० तेउकाइआणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
　　उक्कोसेणं तिण्णि राइंदिआइं।

प्र०-उ० सुहुम-तेउकाइयाणं ओहिआणं
　　अपज्जत्तगाणं
　　पज्जत्तगाणं तिण्ह वि—
　　　जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं
　　　उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं।

प्र०-उ० बादरतेउकाइयाणं—
　　　जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
　　　उक्कोसेणं तिण्णि राइंदिआइं

प्र०-उ० अपज्जत्त बायर-तेउकाइयाणं—
　　　जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं
　　　उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं।

प्र०-उ० पज्जत्तग-बायर-तेउकाइयाणं—
　　　जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
　　　उक्कोसेणं तिण्णि राइंदिआइं अंतोमुहुत्तूणाइं।

प्र०-उ० वाउकाइयाणं—
　　　जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
　　　उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं।
　　सुहुम-वाउकाइयाणं-ओहिआणं
　　अपज्जत्तगाणं
　　पज्जत्तगाणं य तिण्ह वि—
　　　जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं
　　　उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं।

प्र०-उ० बायर-वाउकाइयाणं—
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं।

प्र०-उ० अपज्जत्तग बायर-वाउकाइयाणं—
जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र०-उ० पज्जत्तग-बादरवाउकाइआणं—
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णि वास-सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं

प्र०-उ० वणस्सइकाइयाणं—
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं दसवास-सहस्साइं ।

प्र०-उ० सुहुमवणस्सइ-काइआणं ओहिआणं
अपजत्तगाणं
पज्जत्तगाणं य तिण्ह वि ।
जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र०-उ० बादरवणस्सइकाइआणं—
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ।

प्र०-उ० अपज्जत्तग-बायर-वणस्सइकाइआणं—
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

प्र०-उ० पज्जत्तग-बायरवणस्सइकाइआणं—
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र० बेइंदिआणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं बारस संवच्छराणि ।

प्र० अपज्जत्तग बेइंदिआणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-बेइंदिआणं—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं बारससंवच्छराणि अंतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र० तेइंदिआणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं एगूणपण्णासं राइंदिआणं ।

प्र० अपज्जत्तग-तेइंदिआणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-तेइंदिआणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं एगूणपण्णासं राइंदिआइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र० चउरिंदिआणं भंते ! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं छम्मासा ।

प्र० अपज्जत्तग-चउरिंदिआणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-चउरिंदिआणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं छम्मासा अंतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र० पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते !
केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

प्र० जलयर-पंचिंदियतिरिक्खजोणिआणं भंते !
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।

प्र० सम्मुच्छिम-जलयरपंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।

प्र० अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-जलयरपंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तय-सम्मुच्छिम-जलयरपंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ।

प्र० गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-जलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ।

प्र० चउप्पय-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

प्र० सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं ।

प्र० अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तय-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं

प्र० गब्भवक्कंतिय-चउप्पय-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पयथलयरपंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-चउप्पयथलयरपंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र० उरपरिसप्प-थलयरपंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।

प्र० सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्साइं ।

प्र० अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तय-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र० गब्भवक्कंतिअ-उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ।

प्र० भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।

प्र० सम्मुच्छिम-भुयपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ।

प्र० अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं

प्र० गब्भवक्कंतिअ-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।

प्र० अपज्जत्तय-गब्भवक्कंतिय-भुअपरिसप्पथलयरपंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तय-गब्भवक्कंतिअ-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिंदियपुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ।

प्र० खहयरपंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो ।

प्र० सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं ।

प्र० अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं

प्र० गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-खहयर-पंचिंदियपुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ-खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिआणं भंते ! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखिज्जइभागो अंतोमुहुत्तूणो।
एत्थ एएसिं णं संगहणिगाहाओ भवंति,
तं जहा—

गाहा– सम्मुच्छिम पुव्वकोडी, चउरासीइं भवे सहस्साइं ।
तेवण्णा बायाला, बावत्तरिमेव पक्खीणं ॥१॥
गब्भंमि पुव्वकोडी, तिण्णि य पलिओवमाइं परमाऊ ।
उरग-भुअ-पुव्वकोडी, पलिओवमा संखभागो अ ॥२॥

प्र० मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

प्र० सम्मुच्छिम मणुस्साणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं ।

प्र० गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं पुच्छा–
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

प्र० अपज्जत्तग-गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं भंते !
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिअ मणुस्साणं भंते !
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

प्र० वाणमंतराणं देवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं
उक्कोसेणं पलिओवमं ।

प्र० वाणमंतरीणं देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं दसवास-सहस्साइं
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ।

प्र० जोइसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं अट्ठभाग पलिओवमं
उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहिअं ।

प्र० जोइसिय देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवमं
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए-
वाससहस्सेहिं अब्भहिअं ।

प्र० चंदविमाणाणं भंते ! देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं
उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहिअं

प्र० चंदविमाणाणं भंते ! देवीणं पुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं
पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिअं ।

प्र० सूरविमाणाणं भंते ! देवाणं पुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं
उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहिअं ।

प्र० सूरविमाणाणं देवीणं पुच्छा-
उ० गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं
पंचहिं वाससएहिं अब्भहिअं ।

प्र० गह-विमाणाणं भंते! देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता?
उ० गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं
उक्कोसेणं पलिओवमं।

प्र० गह-विमाणाणं भंते! देवीणं पुच्छा–
उ० गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं।

प्र० णक्खत्तविमाणाणं भंते! देवाणं पुच्छा–
उ० गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं
उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं।

प्र० णक्खत्तविमाणाणं देवीणं पुच्छा–
उ० गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं
उक्कोसेणं साइरेगं चउभागपलिओवमं।

प्र० ताराविमाणाणं भंते! देवाणं पुच्छा–
उ० गोयमा! जहण्णेणं साइरेगं अट्ठभाग पलिओवमं
उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं।

प्र० ताराविमाणाणं देवीणं भंते! केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता?
उ० गोयमा! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं
उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं।

प्र० वेमाणिआणं भंते! देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता?
उ० गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमं
उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं।

प्र० वेमाणियाणं भंते! देवीणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता?
उ० गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमं
उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं।

प्र० सोहम्मे णं भंते ! कप्पे देवाणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं
उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ।
प्र० सोहम्मे णं भंते ! कप्पे परिग्गहिआदेवीणं पुच्छा ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं
उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ।
प्र० सोहम्मे णं भंते ! कप्पे अपरिग्गहिआदेवीणं—
केवइअं कालं ठिती पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं
उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमं ।
प्र० ईसाणे णं भंते ! कप्पे देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं
उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ।
प्र० ईसाणे णं भंते ! कप्पे परिग्गहिआदेवीणं—
केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं
उक्कोसेणं नवपलिओवमाइं ।
प्र० ईसाणे णं भंते ! कप्पे अपरिग्गहिआदेवीणं—
केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं
उक्कोसेणं पण्णपण्णं पलिओवमाइं ।
प्र० सणंकुमारे णं भंते ! कप्पे देवाणं पुच्छा—
उ० गोयमा ! जहण्णेणं दो सागरोवमाइं
उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ।

प्र० माहिंदे णं भंते ! कप्पे देवाणं पुच्छा ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं
उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्तसागरोवमाइं ।

प्र० बंभलोए णं भंते ! कप्पे देवाणं पुच्छा ?

उ० गोयमा ! जहण्णेण सत्तसागरोवमाइं
उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ।

प्र० एवं कप्पे कप्पे केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! एवं भाणिअव्वं—

लंतए— जहण्णेणं दस सागरोवमाइं
उक्कोसेणं चउद्दससागरोवमाइं ।

महासुक्के—जहण्णेणं चउद्दस सागरोवमाइं
उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ।

सहस्सारे—जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं
उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ।

आणए— जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं
उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ।

पाणए— जहण्णेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ।

आरणे— जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ।

अच्चुए— जहण्णेणं इक्कवीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ।

प्र० हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेविज्जविमाणेसु णं भंते !
देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं ।

प्र० हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्जविमाणेसुणं भंते ! देवाणं० ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ।

प्र० हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते देवाणं० ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ।

प्र० मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं० ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं पणवीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ।

प्र० मज्झिम-मज्झिम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं० ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ।

प्र० मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं० ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ।

प्र० उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं० ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ।

प्र० उवरिम-मज्झिम-गेविज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं० ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं ।

प्र० उवरिम-उवरिम-गेविज्जमाणेसु णं भंते ! देवाणं० ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं इक्कतीसं सागरोवमाइं ।
प्र० विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजितविमाणेसु णं भंते !
देवाणं केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहण्णेणं इक्कतीसं सागरोवमाइं
उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।
प्र० सव्वट्ठसिद्धे णं भंते ! महाविमाणे देवाणं–
केवइअं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।
से त्तं सुहुमे अद्धापलिओवमे ।
से त्तं अद्धापलिओवमे ।

सु०-१४० प्र० से किं तं खेत्तपलिओवमे ?
उ० खेत्तपलिओवमे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सुहुमे अ २ वावहारिए अ ।
तत्थ णं जे से सुहुमे से ठप्पे ।
तत्थ णं जे से वावहारिए–
से जहानामए पल्ले सिया
जोअणं आयामविक्खंभेणं
जोअणं उव्वेहेणं
तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं,
से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिअ ... *जाव ...
भरिए वालग्गकोडीणं,

* पृष्ठ–४९६ पंक्ति ५, ६ के समान जानना ।

ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा
···*जाव···णो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा
जे णं तस्स पल्लस्स आगासपएसा तेहिं वालग्गेहिं अप्फुण्णा
तओ णं समए समए
एगमेगं आगासपएसं अवहाय
जावइएणं कालेणं से पल्ले
खीणे···*जाव···णिट्ठिए भवइ
से तं वावहारिए खेत्तपलिओवमे ।

गाहा—एएसिं पल्लाणं, कोडाकोडी भवेज्जदसगुणिया ।
तं ववहारिअस्स खेत्तसागरोवमस्स भवे परिमाणं ॥

प्र० एएहिं वावहारिएहिं खेत्तपलिओवम-सागरोवमेहिं—
किं पओअणं ?
उ० एएहिं वावहारिएहिं खेत्तपलिओवम-सागरोवमेहिं—
णत्थि किंचिप्पओअणं,
केवलं पण्णवणा पण्णविज्जइ ।
से त्तं वावहारिए खेत्तपलिओवमे ।

प्र० से किं तं सुहुमे खेत्तपलिओवमे ?
उ० सुहुमे खेत्तपलिओवमे—
से जहाणामए पल्ले सिया,
जोअणं आयामविक्खंभेणं
···*जाव···तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं,

* पृष्ठ–४६६ पंक्ति १० से १३ के समान जानना
* पृष्ठ–४६६ पंक्ति १७ के समान जानना ।
* पृष्ठ–४६६ पंक्ति ३ के समान जानना ।

से णं पल्ले एगाहिअ-बेआहिअ-तेआहिए···*जाव···
भरिए वालग्गकोडीणं,
तत्थ णं एगमेगे वालग्गे असंखिज्जाइं खंडाइं कज्जइ,
ते णं वालग्गा दिट्ठि-ओगाहणाओ असंखेज्जइभागमेत्ता
सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाओ असंखेज्जगुणा,
ते णं वालग्गा णो अग्गी डहेज्जा
···*जाव···नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा,
जे णं तस्स पल्लस्स आगासपएसा
तेहिं वालग्गेहिं अप्फुण्णा वा अणाफुण्णा वा
तओ णं समए समए एगमेगं आगासपएसं अवहाय
जावइएणं कालेणं से पल्ले
खीणे···*जाव···निट्ठिए भवइ
से त्तं सुहुमे खेत्तपलिओवमे।
तत्थ णं चोअए पण्णवगं एवं वयासी–
"अत्थि णं तस्स पल्लस्स आगासपएसा
जे णं तेहिं वालग्गेहिं अणाफुण्णा ?"
हंता अत्थि।
"जहा को दिट्ठंतो ?"
से जहाणामए कोट्ठए सिआ कोहंडाणं भरिए
तत्थ णं माउलिंगा पक्खित्ता ते वि माया
तत्थ णं बिल्ला पक्खित्ता ते वि माया
तत्थ णं आमलगा पक्खित्ता ते वि माया

* पृष्ठ–४६६ पंक्ति ५, ६ के समान जानना।
* पृष्ठ–४६६ पंक्ति १० से १२ के समान जानना।
* पृष्ठ–४६६ पंक्ति १७ के समान जानना।

तत्थ णं वयरा पक्खित्ता ते वि माया
तत्थ णं चणगा पक्खित्ता ते वि माया
तत्थ णं मुग्गा पक्खित्ता ते वि माया
तत्थ णं सरिसवा पक्खित्ता ते वि माया
तत्थ णं गंगावालुआ पक्खित्ता सा वि माया
एवमेव एएणं दिट्ठंतेण अत्थि णं तस्स पल्लस्स
आगासपएसा जे णं तेहिं वालग्गेहिं अणाफुण्णा ।

गाहा– एएसिं पल्लाणं, कोडाकोडी भवेज्ज दसगुणिआ ।
तं सुहुमस्स खेत्तसागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥४॥

प्र० एएहिं सुहुमेहिं खेत्तपलिओवम-सागरोवमेहिं किं पओअणं ?
उ० एएसिं सुहुमेहिं खेत्तपलिओवम-सागरोवमेहिं
दिट्ठिवाए दव्वा मविज्जंति ।

सु०-१४१ प्र० कइविहा णं भंते ! दव्वा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ जीव-दव्वा य २ अजीव-दव्वा य ।

प्र० अजीवदव्वा णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा–
१ रूवी-अजीवदव्वा य २ अरूवी-अजीवदव्वा य ।

प्र० अरूवी-अजीवदव्वा णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता,
तं जहा–

१ धम्मत्थिकाए

२ धम्मत्थिकायस्स देसा

३ धम्मत्थिकायस्स पएसा

४ अधम्मत्थिकाए

५ अधम्मत्थिकायस्स देसा

६ अधम्मत्थिकायस्स पएसा

७ आगासत्थिकाए

८ आगासत्थिकायस्स देसा

९ आगासत्थिकायस्स पएसा

१० अद्धा समए।

प्र० रूवी-अजीवदव्वा णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता,
तंजहा—

१ खंधा २ खंधदेसा
३ खंधपएसा ४ परमाणुपोग्गला।

प्र० ते णं भंते ! किं संखिज्जा असंखिज्जा अणंता ?

उ० गोयमा ! नो संखिज्जा, नो असंखिज्जा, अणंता।

प्र० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—
"नो संखिज्जा, नो असंखिज्जा, अणंता" ?

उ० गोयमा ! अणंता परमाणुपोग्गला
अणंता दुपएसिआ खंधा
...जाव...अणंता अणंतपएसिआ खंधा

से एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–
"नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता" ।
जीवदव्वाणं भंते ! किं संखिज्जा असंखिज्जा अणंता ?
गोयमा ! नो संखिज्जा, नो असंखिज्जा, अणंता ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–
"नो संखिज्जा, नो असंखिज्जा, अणंता" ।
गोयमा ! असंखेज्जा णेरइया
असंखेज्जा असुरकुमारा
...जाव...असंखेज्जा थणियकुमारा
असंखेज्जा पुढविकाइया
...जाव...असंखिज्जा वाउकाइया
अणंता वणस्सइकाइया
असंखिज्जा बेइंदिआ
...जाव...असंखिज्जा चउरिंदिआ
असंखिज्जा पंचिंदिअतिरिक्खजोणिया
असंखिज्जा मणुस्सा
असंखिज्जा वाणमंतरा
असंखिज्जा जोइसिया
असंखेज्जा वेमाणिआ
अणंता सिद्धा
से एएण अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–
"नो संखिज्जा, नो असंखिज्जा, अणंता" ।

सु०-१४२ प्र० कइविहा णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! पंचसरीरा पण्णत्ता,
तं जहा—

१ ओरालिए २ वेउव्विए
३ आहारए ४ तेअए ५ कम्मए ।

प्र० णेरइआणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! तओ सरीरा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ वेउव्विए २ तेअए ३ कम्मए ।

प्र० असुरकुमाराणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! तओ सरीरा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ वेउव्विए २ तेअए ३ कम्मए ।
एवं तिण्णि तिण्णि एए चेव सरीरा...जाव...
थणियकुमाराणं भाणिअव्वा ।

प्र० पुढविकाइआणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! तओ सरीरा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ ओरालिए २ तेअए ३ कम्मए ।
एवं आउ-तेउ-वणस्सइकाइयाण वि एए चेव
तिण्णि सरीरा भाणिअव्वा ।

प्र० वाउकाइयाणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! चत्तारि सरीरा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ ओरालिए २ वेउव्विए
३ तेयए ४ कम्मए ।
बेइंदिअ-तेइंदिअ-चउरिंदियाणं जहा पुढवीकाइयाणं
पंचिदिअ-तिरिक्खजोणिआणं जहा वाउकाइयाणं ।

प्र० मणुस्साणं भंते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ ओरालिए २ वेउव्विए ३ आहारए

४ तेअए ५ कम्मए।

वाणमंतराणं जोइसिआणं वेमाणिआणं जहा णेरइयाणं।

प्र० केवइआ णं भंते ! ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा दुविहा पण्णत्ता

तंजहा—

१ बद्धेल्लगा य २ मुक्केल्लगा य।

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखिज्जा

असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ

खेत्तओ असंखेज्जा लोगा।

तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं अणंता,

अणंताहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ

खेत्तओ अणंता लोगा

दव्वओ अभवसिद्धिएहिं अणंतगुणा

सिद्धाणं अणंतभागो।

प्र० केवइआ णं भंते ! वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ बद्धेल्लगा य, २ मुक्केल्लगा य।

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा
असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ
खेत्तओ असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइभागो।
तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते णं अणंता
अणंताहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ
सेसं जहा ओरालियस्स मुक्केल्लया तहा एएवि भाणिअव्वा ।

प्र० केवइआ णं भंते ! आहारग सरीर पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं सिअ अत्थि, सिअ णत्थि
जइ अत्थि जहण्णेणं एगो वा दो वा, तिण्णि वा
उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं ।
मुक्केल्लया जहा ओरालिया तहा भाणिअव्वा।

प्र० केवइआ णं भंते ! तेअगसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं अणंता—
अणंताहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ
खेत्तओ अणंता लोगा
दव्वओ सिद्धेहिं अणंतगुणा
सव्वजीवाणं अणंतभागूणा ।

तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते णं अणंता
अणंताहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ
खेत्तओ अणंता लोगा
दव्वओ सव्वजीवेहिं अणंतगुणा
सव्वजीववग्गस्स अणंतभागो ।

प्र० केवइआ णं भंते ! कम्मगसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
जहा तेअगसरीरा तहा कम्मगसरीरा वि भाणिअव्वा ।

प्र० णेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं णत्थि ।
तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते
जहा ओहिआ ओरालिअ-सरीरा तहा भाणिअव्वा ।

प्र० णेरइयाणं भंते ! केवइआ वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखिज्जा
असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ

खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागो तासि णं सेढीणं विक्खंभसूइ-अंगुलपढमवग्गमूलं-बिइअवग्गमूलपडुप्पण्णं ।
अहवा णं अंगुलविइअवग्गमूलघणपमाणमेत्ताओ सेढीओ।
तत्थ णं जे ते मुक्केलया ते णं जहा ओहिआ-ओरालिअसरीरा तहा भाणिअव्वा ।

प्र० णेरइयाणं भंते ! केवइआ आहारगसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लगा य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं णत्थि ।
तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया-
ते जहा ओहिआ तहा भाणिअव्वा ।
तेयग-कम्मगसरीरा
जहा एएसिं चेव वेउव्विअसरीरा तहा भाणिअव्वा ।

प्र० असुरकुमाराणं भंते ! केवइआ ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! जहा णेरइयाणं ओरालियसरीरा तहा भाणिअव्वा ।

प्र० असुरकुमाराणं भंते ! केवइआ वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा
असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ
खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागो

तासि णं सेढीणं विक्खंभसूइ-अंगुलपढमवग्गमूलस्स—
असंखिज्जइभागो ।
मुक्केल्लया जहा ओहिया ओरालिअसरीरा ।

प्र० असुरकुमाराणं केवइया आहारगसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
जहा एएसिं चेव ओरालियासरीरा तहा भाणिअव्वा ।
तेअगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव वेउव्वियसरीरा—
तहा भाणिअव्वा ।
जहा असुरकुमाराणं तहा···जाव···थणियकुमाराणं
···ताव···भाणिअव्वा

प्र० पुढविकाइआणं भंते ! केवइया ओरालिअसरीरा पण्णत्ता ।
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
एवं जहा ओहिआ ओरालियसरीरा तहा भाणिअव्वा ।

प्र० पुढविकाइयाणं भंते ! केवइआ वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं णत्थि,
मुक्केल्लया जहा ओहिआणं ओरालिअसरीरा—
तहा भाणिअव्वा ।

*आहारगसरीरा वि एवं चेव भाणिअव्वा ।
तेअग-कम्मसरीरा जहा एएसिं चेव ओरालिअसरीरा—
तहा भाणिअव्वा ।
एवं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं य—
सव्वसरीरा भाणियव्वा ।

प्र० वाउकाइयाणं भंते ! केवइआ ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।
जहा पुढविकाइयाणं ओरालियसरीरा तहा भाणियव्वा ।

प्र० वाउकाइयाणं केवइया वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
बंधेल्लग्गा य मुक्केल्लगा य,
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा,
समए समए अवहीरमाणा खेत्तपलिओवमस्स
असंखिज्जइभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति,
नो चेव णं अवहिआ सिआ ।
मुक्केल्लया वेउव्वियसरीरा आहारगसरीरा य—
जहा पुढविकाइआणं तहा भाणिअव्वा ।
तेअग-कम्मसरीरा जहा पुढविकाइयाणं तहा भाणिअव्वा ।
वणस्सइकाइयाणं *ओरालिअ वेउव्विअ-आहारगसरीरा
जहा पुढविकाइयाणं तहा भाणिअव्वा ।

* पृष्ठ—५२८ पंक्ति १३ से पृष्ठ ५२९ पंक्ति ३ तक के समान है ।

प्र० वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवइआ तेअगसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा दुविहा पण्णत्ता,

जहा ओहिआ तेअग-कम्मसरीरा तहा वणस्सइकाइयाण वि तेअग-कम्मगसरीरा भाणिअव्वा ।

प्र० बेइंदियाणं भंते ! केवइआ ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा

असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ

खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ, पयरस्स असंखिज्जइभागो

तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई, असंखेज्जाओ—

जोअण-कोडाकोडीओ असंखिज्जाइं सेढिवग्गमूलाइं

बेइंदियाणं ओरालियबद्धेल्लएहिं पयरं अवहीरइ

असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं कालओ ।

खेत्तओ अंगुलपयरस्स आवलिआए—

असंखिज्जइभागपडिभागेणं ।

मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिअसरीरा तहा भाणिअव्वा

वेउव्विय-आहारगसरीरा बद्धेल्लया नत्थी,

मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिअसरीरा तहा भाणिअव्वा

तेअगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव ओरालिअसरीरा—

तहा भाणिअव्वा ।

जहा बेइंदिआणं तहा तेइंदिय-चउरिंदियाण वि भाणिअव्वा ।

---

* पृष्ठ– ५२५ पंक्ति ७ से १४ के समान है।

२ * पृष्ठ–५२४ पंक्ति १४ से १८ के समान है।

पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण वि ओरालिअसरीरा–
एवं चेव भाणिअव्वा ।

प्र० पंचिंदियतिरिक्खजोणिआणं भंते !
केवइआ वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा
असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ,
खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ, पयरस्स असंखिज्जइभागो,
तासिं णं सेढीणं विक्खंभसूइ-अंगुलपढमवग्गमूलस्स–
असंखिज्जइभागो ।
मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिआ तहा भाणिअव्वा ।
आहारयसरीरा *जहा बेइंदिआणं तेअग-कम्मसरीरा
जहा ओरालिया ।

प्र० मणुस्साणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेलया ते णं–
सिअ संखिज्जा सिअ असंखिज्जा
जहण्णपए संखेज्जा

* पृष्ठ–५२४ पंक्ति १४ से १८ के समान है
* पृष्ठ–५३० पंक्ति २१ के समान है

संखिज्जाओ कोडाकोडीओ, एगूणतीसं ठाणाई—
ति-जमलपयस्स उवरिं चउ-जमलपयस्स हेट्ठा ।
अहव णं छट्ठो वग्गो पंचमवग्गपडुप्पण्णो ।
अहव णं छण्णउइ-छेअणगदायिरासी ।
उक्कोसपए असंखेज्जा,
असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ,
खेत्तओ उक्कोसपए रूवपक्खित्तेहिं मणुस्सेहिं—
सेढी अवहीरइ कालओ—
असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं ।
खेत्तओ अंगुलपढमवग्गमूलं तइयवग्गमूलपडुप्पण्णं ।
मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिआ तहा भाणिअव्वा ।

प्र० मणुस्साणं भंते ! केवइआ वेउव्वियसरीर पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं संखिज्जा—
समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा—
संखेज्जेणं कालेणं अवहीरंति,
नो चेव णं अवहिआ सिया ।
मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिआणं मुक्केल्लया
तहा भाणिअव्वा ।

२ * पृष्ठ-५२४ पंक्ति १४ से १८ के समान है ।

प्र० मणुस्साणं भंते ! केवइआ आहारगसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लगा य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं सिअ अत्थि, सिअ णत्थि
जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिण्णि वा
उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं ।
मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिया तहा भाणियव्वा ।
तेअग-कम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव ओरालिया—
तहा भाणिअव्वा ।
वाणमंतराणं ओरालियसरीरा *जहा णेरइयाणं ।
प्र० वाणमंतराणं भंते ! केवइआ वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ?
उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखेज्जा,
असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ
खेत्तओ असंखिज्जाओ सेढीओ, पयरस्स असंखेज्जइभागो ।
तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई संखेज्ज-जोअण-
सयवग्गपलिभागो पयरस्स ।
मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिआ तहा भाणिअव्वा ।
आहारयसरीरा दुविहा वि *जहा असुरकुमाराणं—
तहा भाणिअव्वा ।

---

२ * पृष्ठ ५२४ पंक्ति १४ से १८ तक के समान है
* पृष्ठ-५२६ पंक्ति ११ से १७ के समान है
* पृष्ठ ५२८ पंक्ति ४ से ८ तक के समान है

प्र० वाणमंतराणं भंते ! केवइआ तेअग-कम्मसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! जहा एएसिं चेव वेउव्वियसरीरा–
तहा तेअग-कम्मगसरीरा भाणिअव्वा ।

प्र० जोइसियाणं भंते ! केवइआ वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ।

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लगा य २ मुक्केल्लगा य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ···जाव··· तासिं णं
सेढीणं विक्खंभसूई, बेछप्पण्णंगुलसयवग्गपलिभागो पयरस्स
मुक्केल्लया *जहा ओहिया ओरालिया तहा भाणिअव्वा ।
आहारयसरीरा *जहा णेरइयाणं तहा भाणिअव्वा ।
तेअग-कम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव वेउव्विया–
तहा भाणिअव्वा ।

प्र० वेमाणियाणं भंते ! केवइआ ओरालियसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! *जहा णेरइयाणं तहा भाणिअव्वा ।

प्र० वेमाणिआणं भंते ! केवइया वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता,
तंजहा–
१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।
तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखिज्जा
असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ,

* पृष्ठ ५२४ पंक्ति १४ से १८ तक के समान है
* पृष्ठ-५२६ पंक्ति ११ से १७ के समान है
* पृष्ठ ५२७ पंक्ति ७ से १३ तक के समान है ।

खेत्तओ असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइभागो,
तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलबीयवग्गमूलं-
तइगवग्गमूलपडुप्पण्णं
अहव णं अंगुलतइअवग्गमूलघणपमाणमेत्ताओ सेढीओ।
मुक्केल्लया *जहा ओहिआ ओरालिया तहा भाणिअव्वा।
आहारगसरीरा *जहा णेरइयाणं।
तेअग-कम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव-
वेउव्वियसरीरा तहा भाणिअव्वा।
से त्तं सुहुमे खेत्तपलिओवमे।
से त्तं खेत्तपलिओवमे।
से त्तं पलिओवमे।
से त्तं विभागनिप्फण्णे।
से त्तं कालप्पमाणे।

सु०-१४३ प्र० से किं तं भावप्पमाणे ?
उ० भावप्पमाणे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ गुणप्पमाणे
२ नयप्पमाणे
३ संखप्पमाणे।

सु०-१४४ प्र० से किं तं गुणप्पमाणे ?
उ० गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

* पृष्ठ ५२४ पंक्ति १४ से १८ के समान है
* पृष्ठ ५२७ पंक्ति ७ से १३ तक के समान हैं।

१ जीवगुणप्पमाणे २ अजीवगुणप्पमाणे अ ।

प्र० से किं तं अजीवगुणप्पमाणे ?
उ० अजीवगुणप्पमाणे पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ वण्णगुणप्पमाणे २ गंधगुणप्पमाणे
३ रसगुणप्पमाणे ४ फासगुणप्पमाणे
५ संठाणगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं वण्णगुणप्पमाणे ?
उ० वण्णगुणप्पमाणे पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ कालवण्ण-गुणप्पमाणे ... जाव ...
५ सुक्किल्लवण्णगुणप्पमाणे ।
से त्तं वण्णगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं गंधगुणप्पमाणे ?
उ० गंधगुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सुरभिगंधगुणप्पमाणे २ दुरभिगंधगुणप्पमाणे ।
से त्तं गंधगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं रसगुणप्पमाणे ?
उ० रसगुणप्पमाणे पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
तित्तरसगुणप्पमाणे ... जाव ... महुररसगुणप्पमाणे ।
से त्तं रसगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं फासगुणप्पमाणे ?

उ० फासगुणप्पमाणे अट्ठविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
कक्खडफासगुणप्पमाणे ''जाव'' लुक्खफासगुणप्पमाणे
से त्तं फासगुणप्पमाणे।

प्र० से किं तं संठाणगुणप्पमाणे ?

उ० संठाणगुणप्पमाणे पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ परिमण्डल-संठाणगुणप्पमाणे
२ वट्ट-संठाणगुणप्पमाणे
३ तंस-संठाणगुणप्पमाणे
४ चउरंस-संठाणगुणप्पमाणे
५ आयय-संठाणगुणप्पमाणे।
से त्तं संठाणगुणप्पमाणे।
से त्तं अजीवगुणप्पमाणे।

प्र० से किं तं जीवगुणप्पमाणे ?

उ० जीवगुणप्पमाणे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ णाणगुणप्पमाणे
२ दंसणगुणप्पमाणे
३ चरित्तगुणप्पमाणे।

प्र० से किं तं णाणगुणप्पमाणे ?

उ० णाणगुणप्पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ पच्चक्खे २ अणुमाणे ३ ओवम्मे ४ आगमे ।

से किं तं पच्चक्खे ?

पच्चक्खे दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा--

१ इंदिअपच्चक्खे अ

२ णोइंदिअ-पच्चक्खे अ ।

प्र० से किं तं इंदिअपच्चक्खे ?

उ० इंदिअपच्चक्खे पंचविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ सोइंदियपच्चक्खे

२ चक्खुरिंदियपच्चक्खे

३ घाणिंदिअपच्चक्खे

४ जिब्भिदिअपच्चक्खे

५ फासिंदिअपच्चक्खे ।

से त्तं इंदियपच्चक्खे ।

प्र० से किं तं णोइंदियपच्चक्खे ?

उ० णोइंदियपच्चक्खे तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ ओहि-णाणपच्चक्खे

२ मणपज्जव-णाणपच्चक्खे

३ केवल-णाणपच्चक्खे ।

से त्तं णोइंदियपच्चक्खे ।

से त्तं पच्चक्खे ।

प्र० से किं तं अणुमाणे ?

उ० अणुमाणे तिविहे पण्णत्ते

तं जहा—

१ पुव्ववं २ सेसवं ३ दिट्ठसाहम्मवं ।

प्र० से किं तं पुव्ववं ?

उ० पुव्ववं—

गाहा— माया पुत्तं जहा नट्ठं, जुवाणं पुणरागयं ।
काइ पच्चभिजाणेज्जा, पुव्वलिंगेण केणइ ॥१॥

तं जहा—

खतेण वा, वण्णेण वा
लंछणेण वा, मसेण वा, तिलएण वा ।
से त्तं पुव्ववं ।

प्र० से किं तं सेसवं ?

उ० सेसवं पंचविहं पण्णत्तं

तं जहा—

१ कज्जेणं २ कारणेणं ३ गुणेणं
४ अवयवेणं ५ आसएणं ।

प्र० से किं तं कज्जेणं ?

उ० कज्जेणं—

संखं सद्देणं, भेरिं ताडिएणं
वसभं ढक्किएणं, मोरं किंकाइएणं
हयं हेसिएणं, गयं गुलगुलाइएणं
रहं घणघणाइएणं ।
से त्तं कज्जेणं ।

प्र० से किं तं कारणेणं ?

उ० कारणेणं—

तंतवो पडस्स कारणं, ण पडो तंतु कारणं
वीरणा कडस्स कारणं, ण कडो वीरणा कारणं
मिप्पिंडो घडस्स कारणं, ण घडो मिप्पिंडकारणं
से त्तं कारणेणं ।

प्र० से किं तं गुणेणं ?

उ० गुणेणं—

सुवण्णं निकसेणं, पुप्फं गंधेणं
लवणं रसेणं, मइरं आसायएणं
वत्थं फासेणं
से त्तं गुणेणं ।

प्र० से किं तं अवयवेणं ?

उ० अवयवेणं—

महिसं सिंगेणं, कुक्कुडं सिहाएणं
हत्थि विसाणेणं, वराहं दाढाए
मोरं पिच्छेणं, आसं खुरेणं
वग्घं नहेणं, चमरिं वालग्गेणं
वाणरं लंगुलेणं
दुपयं मणुस्सादि चउप्पयं गवयादि
बहुपयं गोमिआदि
सीहं केसरेणं, वसहं कुकुहेणं
महिलं वलयवाहाए,

गाहा— परिअरबंधेण भडं, जाणिज्जा महिलियं निवसणेणं ।
सित्थेण दोणपागं, कविं च एक्काए गाहाए ॥२॥
से त्तं अवयवेणं ।

प्र० से किं तं आसएणं ?

उ० आसएणं—
अग्गिं धूमेणं, सलिलं बलागेणं
वुट्ठिं अब्भविगारेणं, कुलपुत्तं सीलसमायारेणं
से त्तं आसएणं ।
से त्तं सेसवं ।

प्र० से किं तं दिट्ठसाहम्मवं ?

उ० दिट्ठसाहम्मवं दुविहं पण्णत्तं,
जहा—
१ सामन्नदिट्ठं च २ विसेसदिट्ठं च ।

प्र० से किं तं सामण्णदिट्ठं ?

उ० सामण्णदिट्ठं—
जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा,
जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो,
जहा एगो करिसावणो तहा बहवे करिसावणा,
जहा बहवे करिसावणा तहा एगो करिसावणो,
से त्तं सामण्णदिट्ठं ।

प्र० से किं तं विसेसदिट्ठं ?

उ० विसेसदिट्ठं—
से जहाणामए केइ पुरिसे ंचि पुरिसं—

बहूणं पुरिसाणं मज्झे पुव्वदिट्ठं पच्चभिजाणेज्जा—
'अयं से पुरिसे',
बहूणं करिसावणाणं मज्झे पुव्वदिट्ठं करिसावणं—
पच्चभिजाणेज्जा—"अयं से करिसावणे"।
तस्स समासओ तिविहं गहणं भवइ
तं जहा—
१ अतीयकालगहणं
२ पडुप्पण्णकालगहणं
३ अणागयकालगहणं।

प्र० से किं तं अतीयकालगहणं ?
उ० अतीयकालगहणं—
उत्तणाणि वणाणि निप्फण्णसस्सं वा मेइणिं,
पुण्णाणि अ कुण्ड-सर-णई-दीहिआ-तडागाइं पासित्ता
तेणं साहिज्जइ, जहा—सुवुट्ठी आसी।
से त्तं अतीतकालगहणं।

प्र० से किं तं पडुप्पण्णकालगहणं ?
उ० पडुप्पण्णकालगहणं—
साहुं गोयरग्गगयं विच्छड्डिअपउरभत्तपाणं पासित्ता
ते णं साहिज्जइ—जहा सुभिक्खे वट्टइ।
से त्तं पडुप्पण्णकालगहणं।

प्र० से किं तं अणागयकालगहणं ?
उ० अणागयकालगहणं—
अब्भस्स निम्मलत्तं, कसिणा य गिरी सविज्जुआ मेहा।
थणियं वाउब्भामो, संझा रत्ता पणिद्धा य ॥३॥

वारुणं वा महिंदं वा अण्णयरं वा पसत्थं उप्पायं पासित्ता
तेणं साहिज्जइ जहा—सुवुट्ठी भविस्सइ।
से त्तं अणागयकालगहणं।
एएसिं चेव विवज्जासे तिविहं गहणं भवइ,
तं जहा—
१ अतीयकालगहणं २ पडुप्पण्णकालगहणं
३ अणागयकालगहणं।

प्र० से किं तं अतीयकालगहणं ?
उ० नित्तिणाइं वणाइं अनिप्फण्णसस्सं वा मेइणिं,
सुक्काणि अ कुण्ड-सर-णई-दीहिआ-तडागाइं पासित्ता—
तेणं साहिज्जइ जहा—कुवुट्ठी आसी,
से त्तं अतीयकालगहणं।

प्र० से किं तं पडुप्पण्णकालगहणं ?
उ० पडुप्पण्णकालगहणं—साहुं गोअरग्गगयं
भिक्खं अलभमाणं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा—दुब्भिक्खे वट्टइ
से त्तं पडुप्पण्णकालगहणं।

प्र० से किं तं अणागयकालगहणं ?
उ० अणागयकालगहणं—
गाहा— धूमायंति दिसाओ, संविअ मेइणी अपडिबद्धा।
वाया णेरइआ खलु, कुवुट्ठिमेवं निवेयंति ॥४॥
अग्गेयं वा वायव्वं वा अण्णयरं वा अप्पसत्थं उप्पायं
पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा—कुवुट्ठी भविस्सइ।
से त्तं अणागयकालगहणं।
से त्तं विसेसदिट्ठं।

से त्तं दिट्ठसाहम्मवं ।

से त्तं अणुमाणे ।

प्र० से किं तं ओवम्मे ?

उ० ओवम्मे दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ साहम्मोवणीए २ वेहम्मोवणीए अ ।

प्र० से किं तं साहम्मोवणीए ?

उ० साहम्मोवणीए तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ किंचि साहम्मोवणीए २ पायसाहम्मोवणीए

३ सव्वसाहम्मोवणीए ।

प्र० से किं तं किंचि साहम्मोवणीए ?

उ० किंचि साहम्मोवणीए—

जहा मंदरो तहा सरिसवो, जहा सरिसवो तहा मंदरो

जहा समुद्दो तहा गोप्पयं, जहा गोप्पयं तहा समुद्दो

जहा आइच्चो तहा खज्जोतो, जहा खज्जोतो तहा आइच्चो

जहा चंदो तहा कुमुदो, जहा कुमुदो तहा चंदो,

से त्तं किंचि साहम्मोवणीए ।

प्र० से किं तं पायसाहम्मोवणीए ?

उ० पायसाहम्मोवणीए—

जहा गो तहा गवओ, जहा गवओ तहा

से त्तं पायसाहम्मोवणीए ।

प्र० से किं तं सव्वसाहम्मोवणीए ?

उ० सव्वसाहम्मे ओवम्मे णत्थि,
तहावि तेणेव तस्स ओवम्मं कीरइ, जहा—
अरिहंतेहिं अरिहंतसरिसं कयं
चक्कवट्टिणा चक्कवट्टिसरिसं कयं
बलदेवेण बलदेवसरिसं कयं
वासुदेवेण वासुदेवसरिसं कयं
साहुणा साहुसरिसं कयं,
से त्तं सव्वसाहम्मे ।
से त्तं साहम्मोवणीए ।

प्र० से किं तं वेहम्मोवणीए ?

उ० वेहम्मोवणीए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ किंचिवेहम्मे २ पायवेहम्मे ३ सव्ववेहम्मे ।

प्र० से किं तं किंचिवेहम्मे ?

उ० किंचिवेहम्मे—
जहा सामलेरो न तहा बाहुलेरो,
जहा बाहुलेरो न तहा सामलेरो,
से त्तं किंचिवेहम्मे ।

प्र० से किं तं पायवेहम्मे ?

उ० पायवेहम्मे— जहा वायसो न तहा पायसो
जहा पायसो न तहा वायसो,
से त्तं पायवेहम्मे ।

प्र० से किं तं सव्ववेहम्मे ?

उ० सव्ववेहम्मे ओवम्मे णत्थि,
तहावि तेणेव तस्स ओवम्मं कीरइ, जहा—
णीएणं णीअसरिसं कयं
दासेणं दाससरिसं कयं
काकेणं काकसरिसं कयं
साणेणं साणसरिसं कयं
पाणेणं पाणसरिसं कयं
से त्तं सव्ववेहम्मे।
से त्तं वेहम्मोवणीए।
से त्तं ओवम्मे।

प्र० से किं तं आगमे ?

उ० आगमे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ लोइए अ २ लोउत्तरिए अ।

प्र० से किं तं लोइए ?

उ० लोइए—जं णं इमं अण्णाणिएहिं
मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धिमइविगप्पियं,
तं जहा—
भारहं रामायणं...जाव...चत्तारि वेआ संगोवंगा।
से त्तं लोइए आगमे।

प्र० से किं तं लोउत्तरिए ?

उ० लोउत्तरिए—जं णं इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं
उप्पण्ण-णाणदंसणधरेहिं तीय-पच्चुप्पण्णमणागयजाणएहिं

तिलुक्कवहिअ-महिअ-पूइएहिं, सव्वण्णूहिं
सव्वदरिसीहिं पणीअं दुवालसंगं गणिपिडगं,
तं जहा—
आयारो ... जाव ... दिट्ठिवाओ ।
अहवा आगमे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सुत्तागमे २ अत्थागमे ३ तदुभयागमे ।
अहवा—आगमे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ अत्तागमे २ अणंतरागमे ३ परंपरागमे ।
तित्थगराणं अत्थस्स अत्तागमे,
गणहराणं सुत्तस्स अत्तागमे, अत्थस्स अणंतरागमे,
गणहरसीसाणं सुत्तस्स अणंतरागमे, अत्थस्स परंपरागमे ।
तेण परं सुत्तस्स वि अत्थस्स वि णो अत्तागमे,
णो अणंतरागमे,
परंपरागमे ।
से त्तं आगमे ।
से त्तं णाणगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं दंसणगुणप्पमाणे ?
उ० दंसणगुणप्पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ चक्खुदंसणगुणप्पमाणे
२ अचक्खुदंसणगुणप्पमाणे
३ ओहिदंसणगुणप्पमाणे

४ केवलदंसणगुणप्पमाणे ।
चक्खुदंसणं चक्खुदंसणिस्स घडपडकडरहाइएसु दव्वेसु,
अचक्खुदंसणं अचक्खुदंसणिस्स आयभावे,
ओहिदंसणं ओहिदंसणिस्स सव्वरूविदव्वेसु–
न पुण सव्वपज्जवेसु,
केवलदंसणं केवलदंसणिस्स
सव्वदव्वेसु अ–सव्वपज्जवेसु अ ।
से त्तं दंसणगुणप्पमाणे ।

प्र० से किं तं चरित्त-गुणप्पमाणे ?
उ० चरित्त-गुणप्पमाणे पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सामाइअ-चरित्त-गुणप्पमाणे
२ छेओवट्ठावण-चरित्त-गुणप्पमाणे
३ परिहार विसुद्धिअ-चरित्त-गुणप्पमाणे
४ सुहुमसंपराय चरित्त-गुणप्पमाणे
५ अहक्खाय चरित्त-गुणप्पमाणे ।
(१) सामाइअ-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ इत्तरिए अ २ आवकहिए अ ।
(२) छेओवट्ठावण-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ साइआरे अ २ निरइआरे अ ।
(३) परिहार विसुद्धिअ-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ णिव्विसमाणए अ २ णिविट्ठकाइए अ ।

(४) सुहुमसंपराय-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ संकिलिस्समाणए य २ विसुज्झमाणए य ।

अहवा—सुहुमसंपरायचरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
पडिवाई अ, अपडिवाई अ ।

(५) अहक्खाय चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ पडिवाई अ २ अपडिवाई अ ।

अहवा—अहक्खाय चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ छउमत्थिए अ २ केवलिए य ।
से त्तं चरित्त-गुणप्पमाणे ।
से त्तं जीवगुणप्पमाणे
से त्तं गुणप्पमाणे ।

सु०-१४५ प्र० से किं तं नयप्पमाणे ?
उ० नयप्पमाणे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ पत्थगदिट्ठंतेणं
२ वसहिदिट्ठंतेणं
३ पएसदिट्ठंतेणं ।

प्र० से किं तं पत्थगदिट्ठंतेणं ?
उ० पत्थगदिट्ठंतेणं—

से जहाणामए केई पुरिसे परसुं गहाय अडविसमहुत्तो-
गच्छेज्जा, तं पासित्ता केई वएज्जा—'कहिं भवं गच्छसि ?'
अविसुद्धो नेगमो भणइ—"पत्थगस्स गच्छामि।"

तं च केई छिंदमाणं पासित्ता वएज्जा—'किं भवं छिंदसि' ?
विसुद्धो णेगमो भणइ—'पत्थयं छिंदामि'।

तं च केई तच्छमाणं पासित्ता वएज्जा—'किं भवं तच्छसि' ?
विसुद्धतराओ णेगमो भणइ—'पत्थयं तच्छामि'।

तं च केइ उक्कीरमाणं पासित्ता वएज्जा—'किं भवं उक्कीरसि' ?
विसुद्धतराओ णेगमो भणइ—'पत्थयं उक्कीरामि'।

तं च केइ विलिहमाणं पासित्ता वएज्जा—'किं भवं विलिहसि' ?
विसुद्धतराओ णेगमो भणइ—'पत्थयं विलिहामि'।
एवं विसुद्धतरस्स णेगमस्स नामाउडिओ पत्थओ।
एवमेव ववहारस्स वि।
संगहस्स चियमियमेज्जसमारूढो पत्थओ।
उज्जुसुयस्स पत्थओ वि पत्थओ, मेज्जंपि पत्थओ।
तिण्हं सद्दनयाणं पत्थयस्स अत्थाहिगारजाणओ
जस्स वा वसेणं पत्थओ निप्फज्जइ।
से त्तं पत्थयदिट्ठंतेणं।

प्र० से किं वसहिदिट्ठंतेणं ?

उ० वसहिदिट्ठंतेणं—
से जहानामए केई पुरिसे कंचि पुरिसं वएज्जा—
'कहिं भवं वससि ?'
तं अविसुद्धो णेगमो भणइ—
'लोगे वसामि।'

'लोगे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ उड्ढलोए २ अहोलोए ३ तिरियलोए
तेसुसव्वेसु भवं वससि ?'
विसुद्धो णेगमो भणइ—
'तिरिअलोए वसामि।'
'तिरिअलोए जंबुद्दीवाइआ सयंभूरमणपज्जवसाणा—
असंखिज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता तेसु सव्वेसु भवं वससि ?'
विसुद्धतराओ णेगमो भणइ—
'जम्बुद्दीवे वसामि।'
'जम्बुद्दीवे दसखेत्ता पण्णत्ता,
तं जहा—
भरहे, एरवए, हेमवए, एरण्णवए, हरिवस्से,
रम्मगवस्से, देवकुरु, उत्तरकुरु, पुव्वविदेहे, अवरविदेहे
तेसु सव्वेसु भवं वससि ?'
विसुद्धतराओ णेगमो भणइ—
'भरहे वासे वसामि।'
'भरहे वासे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
दाहिणड्ढ भरहे, उत्तरड्ढ भरहे अ।
तेसु *सव्वेसु भवं वससि ?'
विसुद्धतराओ णेगमो भणइ—
'दाहिणड्ढे भरहे वसामि।'

* दोसु

'दाहिणड्ढभरहे अणेगाइं गामागर-णगर-खेड-कव्वड-
मडंब-दोणमुह-पट्टणासमसंवाह-सण्णिवेसाइं,
तेसु सव्वेसु भवं वससि ?'
विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–
'पाडलिपुत्ते वसामि।'
'पाडलिपुत्ते अणेगाइं गिहाइं, तेसु सव्वेसु भवं वससि ?
विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–
'देवदत्तस्स घरे वसामि'।
'देवदत्तस्स घरे अणेगा कोट्ठगा, तेसु सव्वेसु भवं वससि
विसुद्धतराओ णेगमो भणइ–
'गब्भघरे वसामि'।
एवं विसुद्धस्स णेगमस्स वसमाणो।
एवमेव ववहारस्स वि।
संगहस्स संथारसमारूढो वसइ।
उज्जुसुअस्स जेसु आगासपएसेसु ओगाढो तेसु वसइ।
तिण्हं सद्दणयाणं आयभावे वसइ।
से त्तं वसहिदिट्ठंतेणं।

प्र० से किं तं पएसदिट्ठंतेणं ?
उ० पएसदिट्ठंतेणं–
णेगमो भणइ–'छण्हं पएसो,
तं जहा—
धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो,
जीवपएसो खंधपएसो देसपएसो।'
एवं वयंतं णेगमं संगहो भणइ–

जं भणसि–छण्हं पएसो तं न भवइ
कम्हा ?
जम्हा जो देसपएसो सो तस्सेव दव्वस्स ।
जहा को दिट्ठंतो ?
दासेण मे खरो कीओ, दासो वि मे खरो वि मे,
तं मा भणाहि–छण्हं पएसो, भणाहि पंचण्हं पएसो,
तं जहा—
धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो,
जीवपएसो खंधपएसो ।'
एवं वयंतं संगहं ववहारो भणइ–
'जं भणसि पचण्हं पएसो, तं न भवइ ।'
कम्हा ?
जइ जहा पंचण्हं गोट्ठिआणं पुरिसाणं केइ दव्वजाए
सामण्णे भवइ,
तं जहा—
हिरण्णे वा सुवण्णे वा
धणे वा धण्णे वा
तं न ते जुत्तं वत्तुं जहा पंचण्हं पएसो
तं मा भणाहि–पंचण्हं पएसो, भणाहि पंचविहो पएसो
तं जहा—
धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो
जीवपएसो खंधपएसो ।'
एवं वयंतं ववहारं उज्जुसुओ भणइ–
'जं भणसि-पंचविहो पएसो तं न भवइ ।'

कम्हा ?
जइ ते पंचविहो पएसो, एवं ते एक्केक्को पएसो पंचविहो–
एवं ते पणवीसइविहो पएसो भवइ
तं मा भणाहि-पंचविहो पएसो, भणाहि-भइयव्वो पएसो–
सिअ धम्मपएसो, सिअ अधम्मपएसो, सिअ आगासपएसं
सिअ जीवपएसो, सिअ खंधपएसो ।'
एवं वयंतं-उज्जुसुयं संपइ सद्दनओ भणइ–
'जं भणासि भइयव्वो पएसो तं न भवइ ।'
'कम्हा ?'

'जइ भइअव्वो पएसो एवं ते धम्मपएसो वि–
सिअ धम्मपएसो सिय अधम्मपएसो सिअ आगासपएसो
सिय जीवपएसो सिअ खंधपएसो ।
अधम्मपएसो वि सिअ धम्मपएसो…जाव…सिअ खंधपएसं
जीवपएसो वि सिअ धम्मपएसो…जाव…सिअ खंधपएसो
खंधपएसो वि सिअ धम्मपएसो…जाव…सिअ खंधपएसो
एवं ते अणवत्था भविस्सइ
तं मा भणाहि–भइयव्वो पएसो, भणाहि–धम्मे पएसे
से पएसे धम्मे, अहम्मे पएसे से पएसे अहम्मे
आगासे पएसे से पएसे आगासे
जीवे पएसे से पएसे नोजीवे
खंधे पएसे से पएसे नोखंधे ।
एवं वयंतं सद्दनयं समभिरूढो भणइ–
'जं भणासि–धम्मपएसे से पएसे धम्मे…जाव…
जीवे पएसे से पएसे नो जीवे
खंधे पएसे से पएसे नोखंधे तं न भवइ ।'

कम्हा ?
इत्थं खलु दो समासा भवंति,
तं जहा—
१ तप्पुरिसे अ २ कम्मधारए अ ।
तं ण णज्जइ कयरेणं समासेणं भणसि ?
किं तप्पुरिसेणं, किं कम्मधारएणं ?
जइ तप्पुरिसेणं भणसि तो मा एवं भणाहि,
अह कम्मधारएणं भणसि तो विसेसओ भणाहि—
'धम्मे अ से पएसे अ से पएसे धम्मे,
अधम्मे अ से पएसे अ से पएसे अहम्मे,
आगासे अ से पएसे अ से पएसे आगासे,
जीवे अ से पएसे अ से पएसे नो जीवे,
खंधे अ से पएसे अ से पएसे नो खंधे ।'
एवं वयंतं समभिरूढं संपइ एवंभूओ भणइ—
'जं जं भणसि तं तं सव्वं कसिणं पडिपुण्णं निरवसेसं
एगगहणगहियं देसे वि मे अवत्थू, पएसे वि मे अवत्थू ।'
से त्तं पएसदिट्ठंतेणं ।
से त्तं नयप्पमाणे ।

सु०-१४६ प्र० से किं तं संखप्पमाणे ?
उ० संखप्पमाणे अट्ठविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ णामसंखा २ ठवणासंखा
३ दव्वसंखा ४ ओवम्मसंखा
५ परिमाणसंखा ६ जाणणासंखा
७ गणणासंखा ८ भावसंखा ।

प्र० से किं तं नामसंखा ?

उ० नामसंखा–जस्स णं जीवस्स वा ···*जाव···
से त्तं णामसंखा ।

प्र० से किं तं ठवणासंखा ?

उ० ठवणासंखा–जं णं कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा ···*जाव···
से त्तं ठवणासंखा ।

प्र० नामठवणाणं को पइविसेसो ?

उ० नामं आवकहिअं, ठवणा इत्तरिया वा होज्जा,
आवकहिआ वा होज्जा ।

प्र० से किं तं दव्वसंखा ?

उ० दव्वसंखा दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ आगमओ य २ नो आगमओ य ।···❀जाव···

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ता दव्वसंखा ?

उ० जाणयसरीरभविअसरीरवइरित्ता दव्वसंखा तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ एगभविए २ बद्धाउए ३ अभिमुहणामगोत्ते अ ।

प्र० एगभविए णं भंते ! 'एगभविए' त्ति कालओ केवचिरं होइ ?

उ० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।

प्र० बद्धाउए णं भंते ! 'बद्धाउए' त्ति कालओ केवचिरं होइ ?

उ० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीतिभागं ।

* देखो सूत्र नं० ६ * देखो सूत्र नं० १० ।
❀ देखो सूत्र नं० १३ से १७ तक ।

प्र० अभिमुहनामगोत्तं णं भंते ! 'अभिमुहनामगोए' त्ति कालओ केवचिरं होइ ?
उ० जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।

प्र० इयाणीं को नओ कं संखं इच्छइ ?
उ० तत्थ णेगम-संगह-ववहारा तिविहं संखं इच्छंति,
तं जहा—
१ एगभविअं २ बद्धाउयं ३ अभिमुहनामगोत्तं च।
उज्जुसुओ दुविहं संखं इच्छइ,
तं जहा—
१ बद्धाउयं च २ अभिमुह नामगोत्तं च ।
तिण्णि सद्दणया अभिमुहनामगोत्तं संखं इच्छंति ।
से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीर वइरित्ता दव्वसंखा।
से त्तं नो आगमओ दव्वसंखा।
से त्तं दव्वसंखा ।

प्र० से किं तं ओवम्मसंखा ?
उ० ओवम्मसंखा चउव्विहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ अत्थि संतयं संतएणं उवमिज्जइ
२ अत्थि संतयं असंतएणं उवमिज्जइ
३ अत्थि असंतयं संतएणं उवमिज्जइ
४ अत्थि असंतयं असंतएणं उवमिज्जइ ।
तत्थ संतयं संतएणं उवमिज्जइ
जहा—संता अरिहंता संतएहिं पुरवरेहिं
संतएहिं कवाडेहिं संतएहिं वच्छेहिं उवमिज्जइ,

तं जहा--

गाहा– पुरवर-कवाड-वच्छा, फलिहभुआ दुंदहि-त्थणिअघोसा ।
सिरिवच्छंकिअ वच्छा, सव्वे वि जिणा चउव्वीसं ॥१॥
संतयं असंतएणं उवमिज्जइ जहा–
संताइं नेरइअ-तिरिक्खजोणिअ-मणुस्स-देवाणं आउआइं
असंतएहिं पलिओवम सागरोवमेहिं उवमिज्जंति ।
असंतयं संतएणं उवमिज्जइ,
तं जहा—

गाहाओ– परिजूरिअपेरंतं, चलंतविंटं पडंतनिच्छीरं ।
पत्तं व वसणपत्तं, कालप्पत्तं भणइ गाहं ॥१॥
जह तुब्भे तह अम्हे, तुम्हे वि अहोहिहा जहा अम्हे ।
अप्पाहेइ पडंतं, पंडुअपत्तं किसलयाणं ॥२॥
णवि अत्थि णवि अ होहि, उल्लावो किसल-पंडुपत्ताणं ।
उवमा खलु एस कया, भविअ-जण-विबोहणट्ठाए ॥३॥
असंतयं असंतएहिं उवमिज्जइ–
जहा खरविसाणं तहा ससविसाणं ।
से त्तं ओवम्मसंखा ।

प्र० से किं तं परिमाणसंखा ?

उ० परिमाणसंखा दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ कालिअ-सुअ-परिमाणसंखा
२ दिट्ठिवाअ-सुअ-परिमाणसंखा अ ।

प्र० से किं तं कालिअ-सुअ-परिमाणसंखा ?

उ० कालिअ-सुअ-परिमाणसंखा अणेगविहा पण्णत्ता,

तं जहा—
पज्जवसंखा अक्खरसंखा संघायसंखा
पयसंखा पायसंखा गाहासंखा
सिलोगसंखा वेढसंखा निज्जुत्तिसंखा
अणुओगदारसंखा उद्देसगसंखा अज्झयणसंखा
सुअखंधसंखा अंगसंखा।
से त्तं कालिअ-सुअ-परिमाणसंखा।

प्र० से किं तं दिट्ठिवाय-सुअ-परिमाणसंखा ?
उ० दिट्ठिवाय-सुअ-परिमाणसंखा अणेगविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
पज्जवसंखा ... जाव ... अणुओगदारसंखा
पाहुडसंखा पाहुडिआसंखा पाहुडपाहुडिआसंखा
वत्थुसंखा।
से त्तं दिट्ठिवाय-सुअ-परिमाणसंखा।
से त्तं परिमाणसंखा।

प्र० से किं तं जाणणासंखा ?
उ० जाणणासंखा—जो जं जाणइ,
तं जहा—
सद्दं सद्दिओ, गणियं गणिओ
निमित्तं नेमित्तिओ, कालं कालणाणी
वेज्जयं वेज्जो।
से त्तं जाणणासंखा।

प्र० से किं तं गणणासंखा ?
उ० गणणासंखा—एक्को गणणं न उवेइ,

दुप्पभिइ संखा
तं जहा—
संखेज्जए असंखेज्जए अणंतए ।

प्र० से किं तं संखेज्जए ?
उ० संखेज्जए तिविहे पएणत्ते,
तं जहा—
१ जहएणए २ उक्कोसए ३ अजहएणमणुक्कोसए ।

प्र० से किं तं असंखेज्जए ?
उ० असंखेज्जए तिविहे पएणत्ते,
तं जहा—
१ परित्तासंखेज्जए २ जुत्तासंखेज्जए ३ असंखेज्जासंखेज्जए ।

प्र० से किं तं परित्तासंखेज्जए ?
उ० परित्तासंखेज्जए तिविहे पएणत्ते,
तं जहा—
१ जहएणए २ उक्कोसए ३ अजहएणमणुक्कोसए ।
प्र० से किं तं जुत्तासंखेज्जए ?
उ० जुत्तासंखेज्जए तिविहे पएणत्ते,
तं जहा—
१ जहएणए २ उक्कोसए ३ अजहएणमणुक्कोसए ।

प्र० से किं तं असंखेज्जासंखेज्जए ?
उ० असंखेज्जासंखेज्जए तिविहे पएणत्ते,
तं जहा—
१ जहएणए २ उक्कोसए ३ अजहएणमणुक्कोसए ।

प्र० से किं तं अणंतए ?

उ० अणंतए तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ परित्ताणंतए २ जुत्ताणंतए ३ अणंताणंतए ।

प्र० से किं तं परित्ताणंतए ?

उ० परित्ताणंतए तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ जहण्णए २ उक्कोसए ३ अजहण्णमणुक्कोसए ।

प्र० से किं तं जुत्ताणंतए ?

उ० जुत्ताणंतए तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ जहण्णए २ उक्कोसए ३ अजहण्णमणुक्कोसए ।

प्र० से किं तं अणंताणंतए ?

उ० अणंताणंतए दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ जहण्णए २ अजहण्णमणुक्कोसए ।

प्र० जहण्णयं संखेज्जयं केवइअं होइ ?

उ० दोरूवयं । तेणं परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं ठाणाइं ···जाव···उक्कोसयं संखेज्जयं न पावइ ।

प्र० उक्कोसयं संखेज्जयं केवइअं होइ ?

उ० उक्कोसयस्स संखेज्जयस्स परूवणं करिस्सामि—

से जहानामए पल्ले सिआ,

एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णि अ-
सत्तावीसे जोअणसए तिण्णि अ कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं,
तेरस य अंगुलाइं, अद्धं अंगुलं च किंचि विसेसाहिअं-
परिक्खेवेणं पण्णत्ते,
से णं पल्ले सिद्धत्थयाणं भरिए ।
तओ णं तेहिं सिद्धत्थएहिं दीवसमुद्दाणं उद्धारो घेप्पइ ।
एगे दीवे एगे समुद्दे एवं पक्खिप्पमाणेणं पक्खिप्पमाणेणं
जावइआ दीवसमुद्दा तेहिं सिद्धत्थएहिं अप्फुण्णा,
एस णं एवइए खेत्ते पल्ले पढमा सलागा ।
एवइआणं सलागाणं असंलप्पा लोगा भरिआ तहा वि
उक्कोसयं संखेज्जयं न पावइ ।

प्र० जहा को दिट्ठंतो ?
उ० से जहानामए मंचे सिआ आमलगाणं भरिए
तत्थ एगे आमलए पक्खित्ते से वि माए
अण्णे वि पक्खित्ते से वि माए
एवं पक्खिप्पमाणेणं पक्खिप्पमाणेणं होहि सेऽवि आमलए
जंसि पक्खित्ते से मंचए भरिज्जिहिइ,
जे तत्थ आमलए न माहिइ,
एवामेव उक्कोसए संखेज्जए रूवे पक्खित्ते
जहण्णयं परित्तासंखेज्जयं भवइ ।
तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं ठाणाइं...जाव...
उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं न पावइ ।

प्र० उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं केवइअं होइ ?
उ० जहण्णयं परित्तासंखेज्जयं जहण्णयं परित्तासंखेज्जयमेत्ताणं

रासीणं अण्णमण्णब्भासो रूवूणो
उक्कोसं परित्तासंखेज्जयं होइ ।
अहवा जहन्नयं जुत्तासंखेज्जयं रूवूणं
उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं होइ ।

प्र० जहण्णयं जुत्तासंखेज्जयं केवइअं होइ ?
उ० जहण्णयपरित्तासंखेज्जयमेत्ताणं रासीणं अण्णमण्णब्भासो
पडिपुण्णो जहण्णयं जुत्तासंखेज्जयं होइ ।
अहवा उक्कोसए परित्तासंखेज्जए रूवं पक्खित्तं
जहण्णयं जुत्तासंखेज्जयं होइ ।
आवलिआ वि तत्तिआ चेव ।
तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं ठाणाइं ... जाव ...
उक्कोसयं जुत्तासंखिज्जयं न पावइ ।

प्र० उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं केवइअं होइ ?
उ० जहण्णएणं जुत्तासंखेज्जएणं आवलिआ गुणिआ
अण्णमण्णब्भासो रूवूणो उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं होइ ।
अहवा जहण्णयं असंखेज्जासंखेज्जयं रूवूणं
उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं होइ ।

प्र० जहण्णयं असंखेज्जासंखेज्जयं केवइअं होइ ?
उ० जहण्णएणं जुत्तासंखेज्जएणं आवलिआ गुणिआ
अण्णमण्णब्भासो पडिपुण्णो
जहण्णयं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ ।
अहवा उक्कोसए जुत्तासंखेज्जए रूवं पक्खित्तं
जहण्णयं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ ।
तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं ठाणाइं ... जाव ...
उक्कोसयं असंखेज्जासंखेज्जयं ण पावइ ।

प्र० उक्कोसयं असंखेज्जासंखेज्जयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णयं असंखेज्जासंखेज्जयमेत्ताणं रासीणं
अण्णमण्णब्भासो रूवूणो उक्कोसयं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ।
अहवा जहण्णयं परित्ताणंतयं रूवूणं
उक्कोसयं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ ।

प्र० जहण्णयं परित्ताणंतयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णयं असंखेज्जासंखेज्जयमेत्ताणं रासीणं
अण्णमण्णब्भासो पडिपुण्णो जहण्णयं परित्ताणंतयं होइ।
अहवा उक्कोसए असंखेज्जासंखेज्जए रूवं पक्खित्तं
जहण्णयं परित्ताणंतयं होइ। तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं
ठाणाइं ···जाव··· उक्कोसयं परित्ताणंतयं ण पावइ ।

प्र० उक्कोसयं परित्ताणंतयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णयपरित्ताणंतयमेत्ताणं रासीणं अण्णमण्णब्भासो
रूवूणो उक्कोसयं परित्ताणंतयं होइ ।
अहवा जहण्णयं जुत्ताणंतयं रूवूणं उक्कोसयं परित्ताणंतयं होइ।

प्र० जहण्णयं जुत्ताणंतयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णयपरित्ताणंतयमेत्ताणं रासीणं अण्णमण्णब्भासो
पडिपुण्णो जहण्णयं जुत्ताणंतयं होइ,
अहवा उक्कोसए परित्ताणंतए रूवं पक्खित्तं
जहण्णयं जुत्ताणंतयं होइ ।
अभवसिद्धिआ वि तत्तिआ होंति ।
तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं ठाणाइं ···जाव···
उक्कोसयं जुत्ताणंतयं ण पावइ ।

प्र० उक्कोसयं जुत्ताणंतयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णएणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिआ गुणिया–
अण्णमण्णब्भासो रूवूणो उक्कोसयं जुत्ताणंतयं होइ ।

अहवा जहण्णयं अणंताणंतयं रूवूणं उक्कोसयं जुत्ताणंतयं होइ ।

प्र० जहण्णयं अणंताणंतयं केवइअं होइ ?

उ० जहण्णएणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिआ गुणिआ
अण्णमण्णब्भासो पडिपुण्णो जहण्णयं अणंताणंतयं होइ ।

अहवा उक्कोसए जुत्ताणंतए रूवं पक्खित्तं
जहण्णयं अणंताणंतयं होइ ।
तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाइं ठाणाइं ।
से त्तं गणणासंखा ।

प्र० से किं तं भावसंखा ?

उ० भावसंखा–जे इमे जीवा संखगइनामगोत्ताइं कम्माइं वेदेंति,
से त्तं भावसंखा ।
से त्तं संखापमाणे ।
से त्तं भावप्पमाणे ।
से त्तं प्पमाणे ।
पमाणे त्ति पयं समत्तं ।

卐..卐

सु०-१४७ प्र० से किं तं वत्तव्वया ?

उ० वत्तव्वया तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ ससमयवत्तव्वया
२ परसमयवत्तव्वया
३ ससमय-परसमयवत्तव्वया ।

प्र० से किं तं ससमयवत्तव्वया ?

उ० ससमयवत्तव्वया—जत्थ णं ससमए
आघविज्जइ, पण्णविज्जइ परूविज्जइ
दंसिज्जइ निदंसिज्जइ उवदंसिज्जइ,
से त्तं ससमयवत्तव्वया ।

प्र० से किं तं परसमयवत्तव्वया ?

उ० परसमयवत्तव्वया—जत्थ णं परसमए
आघविज्जइ ''जाव'' उवदंसिज्जइ,
से त्तं परसमयवत्तव्वया ।

प्र० से किं तं ससमय-परसमयवत्तव्वया ?

उ० ससमय-परसमयवत्तव्वया—जत्थ णं
ससमए परसमए आघविज्जइ ''जाव'' उवदंसिज्जइ,
से त्तं ससमय-परसमयवत्तव्वया ।

प्र० इआणीं को णओ कं वत्तव्वयं इच्छइ ?

उ० तत्थ णेगम-संगह-ववहारा तिविहं वत्तव्वयं इच्छंति,
तं जहा—
१ ससमयवत्तव्वयं २ परसमयवत्तव्वयं
३ ससमय-परसमयवत्तव्वयं ।
उज्जुसुओ दुविहं वत्तव्वयं इच्छइ,
तं जहा—
१ ससमयवत्तव्वयं २ परसमयवत्तव्वयं ।

तत्थ णं जा सा ससमयवत्तव्वया सा ससमयं पविट्ठा,
जा सा परसमयवत्तव्वया सा परसमयं पविट्ठा ।
तम्हा दुविहा वत्तव्वया, नत्थि तिविहा वत्तव्वया ।

तिण्णि सद्दणया एगं ससमयवत्तव्वयं इच्छंति,
नत्थि परसमयवत्तव्वया ।
कम्हा ?
जम्हा परसमए अणट्ठे अहेऊ असब्भावे अकिरिए
उम्मग्गे अणुवएसे मिच्छादंसणमितिकट्टु ।
तम्हा सव्वा ससमयवत्तव्वया
णत्थि परसमयवत्तव्वया, णत्थि ससमय-परसमयवत्तव्वया ।
से त्तं वत्तव्वया ।

सु०-१४८ प्र० से किं तं अत्थाहिगारे ?
उ० अत्थाहिगारे—जो जस्स अज्झयणस्स अत्थाहिगारो
तं जहा—
गाहा—सावज्जजोगविरई, उक्कित्तण गुणवओ य पडिवत्ती ।
खलियस्स निंदणा, वणतिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥१॥
से त्तं अत्थाहिगारे ।

卐...卐

सु०-१४९ प्र० से किं तं समोआरे ?
उ० समोआरे छव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ णामसमोआरे २ ठवणासमोआरे
३ दव्वसमोआरे ४ खेत्तसमोआरे
५ कालसमोआरे ६ भावसमोआरे ।
णामठवणाओ पुव्वं वण्णिआओ ...जाव...
से त्तं भविअसरीरदव्वसमोआरे ।

प्र० से किं तं जाणय-सरीर भविअसरीरवइरित्ते दव्वसमोआरे ?
उ० जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वसमोआरे तिविहे पण्णत्ते

तं जहा—

१ आयसमोआरे २ परसमोआरे

३ तदुभयसमोआरे ।

सव्वदव्वा वि णं आयसमोआरेणं आयभावे समोअरंति

परसमोआरेणं जहा कुंडे बदराणि ।

तदुभयसमोआरे जहा घरे खंभो आयभावे अ,

जहा घडे गीवा आयभावे अ ।

अहवा जाणयसरीर-भवियसरीरवइरित्ते दव्वसमोआरे—

दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

आयसमोआरे अ, तदुभयसमोआरे अ ।

चउसट्ठिआ आयसमोआरेणं आयभावे समोयरइ,

तदुभयसमोआरेणं बत्तीसिआए समोअरइ आयभावे य ।

बत्तीसिआ आयसमोआरेणं आयभावे समोयरइ,

तदुभयसमोआरेणं सोलसियाए समोयरइ आयभावे य ।

सोलसिया आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ,

तदुभयसमोआरेणं अट्ठभाइआए समोअरइ आयभावे अ ।

अट्ठभाइआ आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ,

तदुभयसमोआरेणं चउभाइयाए समोअरइ आयभावे अ ।

चउभाइया आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ,

तदुभयसमोआरेणं अद्धमाणीए समोअरइ आयभावे अ ।

अद्धमाणी आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ,

तदुभयसमोआरेणं माणीए समोअरइ आयभावे अ ।

से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वसमोआरे।
से त्तं नो आगमओ दव्वसमोआरे।
से त्तं दव्वसमोआरे।

प्र० से किं तं खेत्तसमोआरे ?
उ० खेत्तसमोआरे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

आयसमोआरे अ, तदुभयसमोआरे अ।
भरहे वासे आयसमोयारेणं आयभावे समोअरइ,
तदुभयसमोआरेणं जंबुद्दीवे समोअरइ आयभावे अ।
जंबुद्दीवे आयसमोयारेणं आयभावे समोअरइ,
तदुभयसमोआरेणं तिरियलोए समोयरइ आयभावे अ।
तिरियलोए आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ,
तदुभयसमोआरेणं लोए समोअरइ आयभावे *अ।
से त्तं खेत्तसमोआरे।

प्र० से किं तं कालसमोआरे ?
उ० कालसमोआरे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

आयसमोआरे अ, तदुभयसमोआरे अ।
समए आयसमोआरेणं आयभावे समोयरइ,
तदुभयसमोआरेणं आवलियाए समोयरइ आयभावे य।

---

*लोए आयसमोआरेण आयभावे समोयरइ।
तदुभयसमोआरेणं अलोए समोयरइ आयभावे अ।
इत्यधिकम् प्रत्यन्तरे।

एवमाणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्खे मासे
उऊ अयणे संवच्छरे जुगे वाससए वाससहस्से
वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे तुडियंगे तुडिए
अडडंगे अडडे अववंगे अववे हूहूअंगे हूहूए
उप्पलंगे उप्पले पउमंगे पउमे णलिणंगे णलिए
अत्थनिउरंगे अत्थनिउरे अउअंगे अउए
नउअंगे नउए पउअंगे पउए चूलिअंगे चूलिआ
सीसपहेलिअंगे सीसपहेलिआ
पलिओवमे सागरोवमे—

आयसमोआरेणं आयभावे समोयरइ
तदुभयसमोआरेणं ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीसु
समोयरइ आयभावे अ ।

ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ आयसमोआरेणं
आयभावे समोयरंति,
तदुभयसमोआरेणं पोग्गलपरिअट्टे समोयरंति आयभावे अ ।

पोग्गलपरिअट्टे आयसमोआरेणं आयभावे समोयरइ,
तदुभयसमोयारेणं तीतद्धा-अणागतद्धासु समोअरइ ।

तीतद्धा-अणागतद्धाउ आयसमोयारेणं आयभावे समोअरंति
तदुभयसमोआरेणं सव्वद्धाए समोयरंति आयभावे अ ।
से त्तं कालसमोआरे ।

प्र० से किं तं भावसमोआरे ?
उ० भावसमोआरे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
आयसमोआरे अ तदुभयसमोआरे य ।

कोहे आयसमोयारेणं आयभावे समोअरइ,
तदुभयसमोआरेणं माणे समोअरइ आयभावे अ ।
एवं माणे माया लोभे रागे मोहणिज्जे ।
अट्ठकम्मपयडीओ आयसमोआरेणं आयभावे समोअरंति,
तदुभयसमोआरेणं छव्विहे भावे समोयरंति आयभावे अ ।
एवं छव्विहे भावे ।
जीवे जीवत्थिकाए आयसमोआरेणं आयभावे समोअरइ,
तदुभयसमोआरेणं सव्वदव्वेसु समोअरइ आयभावे य ।

एत्थ संगहणी गाहा–

कोहे माणे माया, लोभे रागे य मोहणिज्जे अ ।
पगडी भावे जीवे, जीवत्थिकाय दव्वा य ॥१॥

से त्तं भावसमोआरे ।
से त्तं समोआरे ।
से त्तं उवक्कमे ।
उवक्कम इति पढमं दारं ।

卐...卐

सु०-१५० प्र० से किं तं निक्खेवे ?

उ० निक्खेवे तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ ओहणिप्फण्णे
२ णामनिप्फण्णे
३ सुत्तालावगनिप्फण्णे ।

प्र० से किं तं ओहनिप्फण्णे ?

उ० ओहनिप्फण्णे चउव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ अज्झयणे २ अज्झीणे ३ आया ४ खवणा ।

प्र० से किं तं अज्झयणे ?

उ० अज्झयणे चउव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ णामज्झयणे २ ठवणज्झयणे

३ दव्वज्झयणे ४ भावज्झयणे ।

णाम-ठवणाओ पुव्वं वण्णिआओ ।

प्र० से किं तं दव्वज्झयणे ?

उ० दव्वज्झयणे दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ आगमओ अ २ णो आगमओ य ।

प्र० से किं तं आगमओ दव्वज्झयणे ?

उ० आगमओ दव्वज्झयणे—जस्स णं 'अज्झयणे' त्ति

पयं सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजियं···*जाव···

एवं जावइआ अणुवउत्ता आगमओ तावइआइं दव्वज्झयणाइं

एवमेव ववहारस्स वि ।

संगहस्स णं एगो वा अणेगो वा···*जाव···

से त्तं आगमओ दव्वज्झयणे ।

प्र० से किं तं णोआगमओ दव्वज्झयणे ?

उ० णोआगमओ दव्वज्झयणे तिविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

---

* देखो सूत्र नं० १३-१४ * देखो सूत्र नं० १४ ।

१ जाणयसरीरदव्वज्झयणे
२ भविअसरीरदव्वज्झयणे
३ जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वज्झयणे ।

प्र० से किं तं जाणयसरीरदव्वज्झयणे ?
उ० अज्झयणपयत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरं
ववगय-चुअ-चाविअ-चत्तदेहं जीवविप्पजढं ...जाव...
अहो णं इमेणं सरीर-समुस्सएणं जिणदिट्ठेणं भावेणं
'अज्झयणे' त्ति पयं आघवियं ...जाव... उवदंसियं,
जहा को दिट्ठंतो ?
अयं घयकुंभे आसी,
अयं महुकुंभे आसी,
से त्तं जाणयसरीरदव्वज्झयणे ।

प्र० से किं तं भविअसरीरदव्वज्झयणे ?
उ० भविअसरीरदव्वज्झयणे—जे जीवे जोणि-जम्मण-
निक्खंते इमेणं चेव आयत्तएणं सरीरसमुस्सएणं
जिणदिट्ठेणं भावेणं 'अज्झयणे' त्ति पयं
सेअकाले सिक्खिस्सइ न ताव सिक्खइ,
जहा को दिट्ठंतो ?
अयं महुकुंभे भविस्सइ,
अयं घयकुंभे भविस्सइ ।
से त्तं भविअसरीरदव्वज्झयणे ।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वज्झयणे ?
उ० पत्तयपोत्थयलिहियं,

से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वज्झयणे।
से त्तं णो आगमओ दव्वज्झयणे।
से त्तं दव्वज्झयणे।

प्र० से किं तं भावज्झयणे ?
उ० भावज्झयणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
आगमओ अ, णो आगमओ अ।

प्र० से किं तं आगमओ भावज्झयणे ?
उ० आगमओ भावज्झयणे—जाणए उवउत्ते।
से त्तं आगमओ भावज्झयणे।

प्र० से किं तं नोआगमओ भावज्झयणे ?
उ० नो-आगमओ भावज्झयणे—
गाहा— अज्झप्पस्साणयणं, कम्माणं अवचओ उवचिआणं।
अणुवचओ अ नवाणं, तम्हा अज्झयणमिच्छंति॥
से त्तं णो आगमओ भावज्झयणे।
से त्तं भावज्झयणे।
से त्तं अज्झयणे।

卐..卐

प्र० से किं तं अज्झीणे ?
उ० अज्झीणे चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
णामज्झीणे ठवणज्झीणे
दव्वज्झीणे भावज्झीणे।
नाम-ठवणाओ पुव्वं वणिणआओ।

प्र० से किं तं दव्वज्झीणे ?
उ० दव्वज्झीणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ आगमओ य नो आगमओ य ।

प्र० से किं तं आगमओ दव्वज्झीणे ?
उ० आगमओ दव्वज्झीणे—जस्स णं 'अज्झीणे' त्ति पयं
सिक्खियं जियं मियं परिजियं···जाव···
से त्तं आगमओ दव्वज्झीणे ।

प्र० से किं तं नो आगमओ दव्वज्झीणे ?
उ० नो आगमओ दव्वज्झीणे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ जाणयसरीरदव्वज्झीणे
२ भविअसरीरदव्वज्झीणे
३ जाणयसरीर भविअसरीर वइरित्ते दव्वज्झीणे ।

प्र० से किं तं जाणयसरीरदव्वज्झीणे ।
उ० जाणयसरीरदव्वज्झीणे—'अज्झीण' पयत्थाहियार-
जाणयस्स जं सरीरयं ववगय-चुय-चाविअ चत्तदेहं
जहा दव्वज्झयण तहा भाणिअव्वं···जाव···
से त्तं जाणयसरीरदव्वज्झीणे ।

प्र० से किं तं भविअसरीरदव्वज्झीणे ?
उ० भविअसरीरदव्वज्झीणे—जे जीवे जोणि-जम्मण-
निक्खंते जहा दव्वज्झयणे···जाव···
से त्तं भविअसरीरदव्वज्झयणे ।

❀ देखो सूत्र नं० १३ से १४ तक ।

प्र० से किं तं जाणयसरीर भविअसरीर वइरित्ते दव्वज्झीणे।

उ० जाणयसरीर भविअसरीर वइरित्ते दव्वज्झीणे
सव्वागाससेढी।
से त्तं जाणयसरीर-भविअसरीर वइरित्ते दव्वज्झीणे।
से त्तं नो आगमओ दव्वज्झीणे।
से त्तं दव्वज्झीणे।

प्र० से किं तं भावज्झीणे ?

उ० भावज्झीणे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
आगमओ य नो आगमओ य।

प्र० से किं तं आगमओ भावज्झीणे ?

उ० आगमओ भावज्झीणे जाणए उवउत्ते।
से त्तं आगमओ भावज्झीणे।

प्र० से किं तं नो आगमओ भावज्झीणे ?

उ० नो आगमओ भावज्झीणे—

गाहा— जह दीवा दीवसयं पइप्पइ, दिप्पए अ सो दीवो।
दीवसया आयरिया, दिप्पंति परं च दीवंति ॥१॥
से त्तं नो आगमओ भावज्झीणे।
से त्तं भावज्झीणे।
से त्तं अज्झीणे।

卐...卐

प्र० से किं तं आए ?

उ० आए चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ नामाए २ ठवणाए ३ दव्वाए ४ भावाए।
नाम-ठवणाओ पुव्वं भणिआओ।

प्र० से किं तं दव्वाए ?

उ० दव्वाए दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ आगमओ अ नो आगमओ अ ।

प्र० से किं तं आगमओ दव्वाए ?

उ० आगमओ दव्वाए—जस्स णं 'आए' त्ति पयं
सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजियं...जाव...
कम्हा ?
अणुवओगो दव्वमिति कट्टु ।
णेगमस्स णं जावइआ अणुवउत्ता—
आगमओ तावइआ ते दव्वाया...जाव...
से त्तं आगमओ दव्वाए ।

प्र० से किं तं नो आगमओ दव्वाए ?

उ० नो आगमओ दव्वाए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
जाणयसरीरदव्वाए
भविअसरीरदव्वाए
जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वाए ।

प्र० से किं तं जाणयसरीरदव्वाए ?

उ० जाणयसरीरदव्वाए—'आय' पयत्थाहिगारजाणयस्स
जं सरीरयं ववगय-चुअ-चाविअ चत्तदेहं
जहा दव्वज्झयणे...जाव...
से त्तं जाणयसरीरदव्वाए ।

प्र० से किं तं भविअसरीरदव्वाए ?

उ० भविअसरीरदव्वाए—जे जीवे जोणि-जम्मण-णिक्खंते
जहा दव्वज्झयणे…जाव…
से त्तं भविअसरीरदव्वाए ।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वाए ।

उ० जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वाए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ लोइए २ कुप्पावयणिए ३ लोगुत्तरिए ?

प्र० से किं तं लोइए ?

उ० लोइए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सचित्ते २ अचित्ते ३ मीसए अ ।

प्र० से किं तं सचित्ते ?

उ० सचित्ते तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ दुपयाणं २ चउप्पयाणं ३ अपयाणं ।
दुपयाणं दासाणं दासीणं
चउप्पयाणं आसाणं हत्थीणं
अपयाणं अंबाणं अंबाडगाणं आए ।
से त्तं सचित्ते ।

प्र० से किं तं अचित्ते ?

उ० अचित्ते—सुवण्ण-रयय-मणि-मोत्तिअ-संख-सिल-
प्पवाल-रत्तरयणाणं संतसावएज्जस्स आए,
से त्तं अचित्ते ।

प्र० से किं तं मीसए ?

उ० मीसए–दासाणं दासीणं आसाणं हत्थीणं
समाभरिआउज्जालंकियाणं आए,
से तं मीसए।
से तं लोइए।

प्र० से किं तं कुप्पावयणिए ?

उ० कुप्पावयणिए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सचित्ते २ अचित्ते ३ मीसए अ।
तिण्णि वि जहा लोइए···*जाव···
से तं मीसए।
से तं कुप्पावयणिए।

प्र० से किं तं लोगुत्तरिए ?
उ० लोगुत्तरिए तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सचित्ते २ अचित्ते ३ मीसए अ।
से किं तं सचित्ते ?
सचित्ते–सीसाणं सिस्सणिआणं
से त्तं सचित्ते।

प्र० से किं तं अचित्ते ?
उ० अचित्ते–पडिग्गहाणं वत्थाणं कंबलाणं पायपुंछणाणं आए,
से त्तं अचित्ते।

* पृष्ठ ५७८ पंक्ति ६ से पृष्ठ ५७६ पंक्ति ५ तक के समान है।

प्र० से किं तं मीसए ?

उ० मीसए—सिस्साणं सिस्सणिआणं सभण्डोवगरणाणं आए,
से तं मीसए।
से तं लोगुत्तरिए।
से तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वाए।
से तं नो आगमओ दव्वाए।
से तं दव्वाए।

प्र० से किं तं भावाए ?

उ० भावाए दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ आगमओ अ नो आगमओ अ।

प्र० से किं तं आगमओ भावाए?

उ० आगमओ भावाए जाणए उवउत्ते।
से तं आगमओ भावाए।

प्र० से किं तं नो आगमओ भावाए ?

उ० नो आगमओ भावाए दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
पसत्थे अ अपसत्थे अ।

प्र० से किं तं पसत्थे ?

उ० पसत्थे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ णाणाए २ दंसणाए ३ चरित्ताए।
से त्तं पसत्थे।

प्र० से किं तं अपसत्थे ?

उ० अपसत्थे चउव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ कोहाए २ माणाए ३ मायाए ४ लोहाए।

से तं अपसत्थे।

से तं णो आगमओ भावाए।

से तं भावाए।

से तं आए।

卐.. 卐

प्र० से किं तं झवणा ?

उ० झवणा चउव्विहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ णामज्झवणा २ ठवणज्झवणा

३ दव्वज्झवणा ४ भावज्झवणा।

नाम-ठवणाओ पुव्वं भणिआओ।

प्र० से किं तं दव्वज्झवणा ?

उ० दव्वज्झवणा दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ आगमओ अ २ नो आगमओ अ।

प्र० से किं तं आगमओ दव्वज्झवणा ?

उ० आगमओ दव्वज्झवणा—जस्स णं 'झवणे' त्ति पयं सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजिअं...जाव...

से त्तं आगमओ दव्वज्झवणा।

प्र० से किं तं नो आगमओ दव्वज्झवणा ?

उ० नो आगमओ दव्वज्झवणा तिविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ जाणयसरीरदव्वज्झवणा

२ भविअसरीरदव्वज्झवणा

३ जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ता दव्वज्झवणा ।

प्र० से किं तं जाणयसरीरदव्वज्झवणा ?

उ० 'झवणा' पयत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरयं
ववगय-चुअ-चाविय-चत्तदेहं
सेसं जहा दव्वज्झयणे ... जाव ...
से तं जाणयसरीरदव्वज्झवणा ।

प्र० से किं तं भविअसरीरदव्वज्झवणा ?

उ० जे जीवे जोणि-जम्मण-णिक्खंते
सेसं जहा दव्वज्झयणे ... जाव ...
से तं भविअसरीरदव्वज्झवणा ।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ता दव्वज्झवणा ?

उ० जहा जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वाए
तहा भाणिअव्वा ... जाव ...
से तं मीसिआ ।
से तं लोगुत्तरिआ ।
से तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ता दव्वज्झवणा ।
से तं नो आगमओ दव्वज्झवणा ।
से तं दव्वज्झवणा ।

प्र० से किं तं भावज्झवणा ?

उ० भावज्झवणा दुविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

१ आगमओ अ २ णोआगमओ अ।

प्र० से किं तं आगमओ भावज्झवणा ?

उ० आगमओ भावज्झवणा–जाणए उवउत्ते।
से तं आगमओ भावज्झवणा।

प्र० से किं तं णोआगमओ भावज्झवणा ?

उ० णोआगमओ भावज्झवणा दुविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
पसत्था य अपसत्था य।

प्र० से किं तं पसत्था ?

उ० पसत्था तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ नाणज्झवणा
२ दंसणज्झवणा
३ चरित्तज्झवणा।
से त्तं पसत्था।

प्र० से किं तं अपसत्था ?

उ० अपसत्था चउव्विहा पण्णत्ता,
तं जहा—
१ कोहज्झवणा २ माणज्झवणा
३ मायज्झवणा ४ लोहज्झवणा।
से तं अपसत्था।
से तं नो आगमओ भावज्झवणा।

से तं भावज्झवणा ।

से तं झवणा ।

से तं ओहनिप्फण्णे ।

卐..卐

प्र० से किं तं नामनिप्फण्णे ?

उ० नामनिप्फण्णे सामाइए ।

से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ णामसामाइए २ ठवणासामाइए

३ दव्वसामाइए ४ भावसामाइए ।

णामठवणाओ पुव्वं भणिआओ ।

दव्वसामाइए वि तहेव...जाव...

से त्तं भविअसरीरदव्वसामाइए ।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वसामाइए ?

उ० पत्तयपोत्थयलिहियं,

से तं जाणयसरीर-भविअसरीरवइरित्ते दव्वसामाइए ।

से तं णो आगमओ दव्वसामाइए ।

से तं दव्वसामाइए ।

प्र० से किं तं भावसामाइए ?

उ० भावसामाइए दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ आगमओ अ २ नो आगमओ अ ।

प्र० से किं तं आगमओ भावसामाइए ?

उ० आगमओ भावसामाइए जाणए उवउत्ते,

से तं आगमओ भावसामाइए ।

प्र० से किं तं नो आगमओ भावसामाइए ?

उ० नो आगमओ भावसामाइए–

गाहाओ– जस्स सामाणिओ अप्पा, संजमे णिअमे तवे ।
तस्स सामाइअं होइ, इइ केवलिभासिअं ॥१॥
जो समो सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु अ ।
तस्स सामाइयं होइ, इइ केवलिभासिअं ॥२॥
जह मम ण पिअं दुक्खं, जाणिअ एमेव सव्वजीवाणं ।
न हणइ न हणावेइ अ, सममणइ तेण सो समणो ॥३॥
णत्थि य सि कोइ वेसो, पिओ अ सव्वेसु चेव जीवेसु ।
एएण होइ समणो, एसो अन्नोऽवि पज्जाओ ॥४॥
उरग-गिरि-जलण,-सागर नहतल-तरुगण समो अ जो होइ ।
भमर-मिय-धरणि-जलरूह-रवि-पवणसमो अ सो समणो ॥५॥
तो समणो जइ सुमणो,भावेण य जइ ण होइ पावमणो ।
सयणे अ जणे अ समो, समो अ माणावमाणेसु ॥६॥

से तं नो आगमओ भावसामाइए
से तं भावसामाइए
से तं सामाइए
से तं नामनिप्फण्णे ।

卐……………………………………………………卐

प्र० से किं तं सुत्तालावगनिप्फण्णे ?

उ० इआणिं सुत्तालावयनिप्फण्णं निक्खेवं इच्छावेइ,
से अ पत्तलक्खणे वि ण णिक्खिप्पइ ।
कम्हा ?
लाघवत्थं । अत्थि इओ तइए अणुओगदारे
अणुगमे त्ति । तत्थ णिक्खित्ते इहं णिक्खित्ते भवइ ।

इहं वा णिक्खित्ते तत्थ णिक्खित्ते भवइ ।
तम्हा इहं ण णिक्खिप्पइ, तहिं चेव णिक्खिप्पइ ।
से तं णिक्खेवे ।

सु०-१५१ प्र० से किं तं अणुगमे ?
उ० अणुगमे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सुत्ताणुगमे अ २ निज्जुत्तिअणुगमे अ ।

प्र० से किं तं निज्जुत्तिअणुगमे ?
उ० निज्जुत्तिअणुगमे तिविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ णिक्खेव-निज्जुत्तिअणुगमे
२ उवग्घाय-निज्जुत्तिअणुगमे
३ सुत्तप्फासिअ-निज्जुत्तिअणुगमे ।

प्र० से किं तं निक्खेव-निज्जुत्तिअणुगमे ?
उ० णिक्खेव-निज्जुत्तिअणुगमे अणुगए,
से तं णिक्खेव-निज्जुत्तिअणुगमे ।

प्र० से किं तं उवग्घायनिज्जुत्तिअणुगमे ?
उ० इमाहिं दोहिं मूलगाहाहिं अणुगंतव्वो,
तं जहा—
गाहाओ— उद्देसे[१] निद्देसे[२] अ, निग्गमे[३] खेत्त[४] काल[५] पुरिसे[६] य ।
कारण[७] पच्चय[८]-लक्खण[९] नए[१०] समोआरणाणुमए[११] ॥१॥
किं[१२] कइविहं[१३] कस्स[१४] कहिं[१५] केसु[१६] कहं[१७] किच्चिरं[१८] हवइ कालं ।
कइ[१९] संतर[२०] मविरहियं[२१] भवा[२२] गरिस-[२३] फासण[२४] निरुत्ती[२५] ॥२
से त्तं उवग्घायनिज्जुत्तिअणुगमे ।

प्र० से किं तं सुत्तप्फासिअनिज्जुत्तिअणुगमे ?

उ० सुत्तप्फासिअनिज्जुत्तिअणुगमे–

सुत्तं उच्चारेअव्वं–

अक्खलिअं, अमिलियं, अवच्चामेलियं

पडिपुण्णं, पडिपुण्णघोसं, कंठोट्ठविप्पमुक्कं,

गुरुवायणोवगयं ।

तओ तत्थ णज्जिहिति ससमयपयं वा परसमयपयं वा,

बंधपयं वा मोक्खपयं वा ।

सामाइअपयं वा नो सामाइअपयं वा ।

तओ तम्मि वुच्चारिए समाणे केसिं च णं

भगवंताणं केइ अत्थाहिगारा अहिगया भवंति,

केइ अत्थहिगारा अणहिगया भवंति ।

तओ तेसिं अणहिगयाणं अहिगमणट्ठाए

पयं पएणं वण्णइस्सामि–

गाहा— संहिया य पदं चेव, पयत्थो पयविग्गहो ।

चालणा य पसिद्धी अ, छव्विहं विद्धि लक्खणं ॥१॥

से तं सुत्तप्फासिअ-निज्जुत्ति अणुगमे ।

से तं निज्जुत्ति अणुगमे ।

से तं अणुगमे ।

卐..卐

सु०-१५२ प्र० से किं तं नए ?

उ० सत्त मूलणया पण्णत्ता,

तं जहा—

१ णेगमे २ संगहे ३ ववहारे ४ उज्जुसुए

५ सद्दे ६ समभिरूढे ७ एवंभूए ।

तत्थ गाहाओ—णेगेहिं माणेहिं, मिणइत्ति णेगमस्स य निरुत्ती ।
सेसाणं पि नयाणं, लक्खणमिणमो सुणह वोच्छं ॥१॥
संगहिअपिंडिअत्थं, संगहवयणं समासओ बिंति ।
वच्चइ विणिच्छिअत्थं, ववहारो सव्वदव्वेसु ॥२॥
पच्चुप्पन्नग्गाही, उज्जुसुओ णयविही मुणेअव्वो ।
इच्छइ विसेसियतरं, पच्चुप्पणं णओ सद्दो ॥३॥
वत्थूओ संकमणं होइ, अवत्थू नए समभिरुढे ।
वंजणअत्थतदुभयं, एवंभूओ विसेसेइ ॥४॥
णायम्मि गिण्हिअव्वे, अगिण्हिअव्वम्मि चेव अत्थम्मि ।
जइअव्वमेव इइ, जो उवएसो सो नओ नाम ॥५॥
सव्वेसिं पि नयाणं, बहुविहवत्तव्वयं निसामित्ता ।
तं सव्वनयविसुद्धं, जं चरणगुणट्ठिओ साहू ॥६॥
से त्तं नए ।

॥ अणुओगदारा समत्ता ॥

सोलससयाणि चउरुत्तराणि, होंति उ इमंमि गाहाणं ।
दुसहस्समणुट्ठुभ, छंदवित्तपमाणओ भणिओ ॥१॥
णयरमहादारा इव, उवक्कमदाराणुओगवरदारा ।
अक्खरबिंदुगमत्ता, लिहिया दुक्खक्खयट्ठाए ॥२॥

॥ अणुओगद्दारं सुत्तं समत्तं ॥

॥ मूलसुत्ताणि-समत्ताणि ॥